****

# SHREE GURU GRANTH SAHIB

# (HINDI)

****

# सत्य सिद्धान्त प्रकाश की विषयानुक्रमणिका

## प्रथम भाग


| | विषय | | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| १. | गुरुदेव का अंग | ... | ... | १ |
| २. | सुमर चेतावनी का अंग | ... | ... | १४ |
| ३. | सुमरन का अंग | ... | ... | १७ |
| ४. | विरह का अंग | ... | ... | ३२ |
| ५. | परचा का अंग | ... | ... | ५३ |
| ६. | रस का अंग | ... | ... | ७६ |
| ७. | लाभी का अंग | ... | ... | ८२ |
| ८. | हैरान का अंग | ... | ... | ८४ |
| ९. | हैरत का अंग | ... | ... | ८६ |
| १०. | जरना का अंग | ... | ... | ९० |
| ११. | लौ का अंग | ... | ... | ९४ |
| १२. | पतिव्रता का अंग | ... | ... | ९९ |
| १३. | चेतावणी का अंग | ... | ... | ११० |
| १४. | मन का अंग | ... | ... | १४१ |
| १५. | सूक्ष्म मार्ग का अंग | ... | ... | १५८ |
| १६. | माया का अंग | ... | ... | १६५ |
| १७. | चाणिक का अंग | ... | ... | १८२ |
| १८. | कामी का अंग | ... | ... | १९२ |

१९. सहज का अंग ... ... २०८
२०. साच का अंग ... ... २१२
२१. भरम विधूषण का अंग ... ... २१७
२२. भेष का अंग ... ... २२४
२३. कुसंग का अंग ... ... २२७
२४. सत्संग का अंग ... ... २३०
२५. असाध का अंग ... ... २३४
२६. साध का अंग ... ... २३७
२७. देखा देखी का अंग ... ... २४४
२८. साध साखी भूत का अंग ... ... २४६
२९. साध महिमा का अंग ... ... २५०
३०. मध्य का अंग ... ... २५३
३१. विचार का अंग ... ... २५५
३२. सार ग्राही का अंग ... ... २६०
३३. पीव पिछान का अंग ... ... २६४
३४. विश्वास का अंग ... ... २६८
३५. धीरज का अंग ... ... २७३
३६. कंकताई का अंग ... ... २७६
३७. सामरथाई का अंग ... ... २८०
३८. कुशब्द का अंग ... ... २८३
३९. सुशब्द का अंग ... ... २८५
४०. काल का अंग ... ... २८८
४१. सजीवन का अंग ... ... ३००
४२. साखी भूत का अंग ... ... ३०३
४३. चितकपटी का अंग ... ... ३०८

४४. गुरु शिष्य हेरा का अंग ... ... ३११
४५. हेत प्रीत का अंग ... ... ३१९
४६. शूरातन का अंग ... ... ३२६
४७. जीवत मृतक का अंग ... ... ३३९
४८. मांस आहार निषेध का अंग ... ... ३४४
४९. अपारख का अंग ... ... ३५०
५०. पारख का अंग ... ... ३५२
५१. निन्दा निषेध का अंग ... ... ३५६
५२. दुनियां निरवैर का अंग ... ... ३६३
५३. सुन्दर का अंग ... ... ३६५
५४. उपजन का अंग ... ... ३६६
५५. कस्तूरिया मृग का अंग ... ... ३६६
५६. निगुणा का अंग ... ... ३६७
५७. बीनती का अंग ... ... ३६८
५८. बेली कुबेली का अंग ... ... ३७४
५९. पक्षा पक्षी का अंग ... ... ३७५
६०. बेहद का अंग ... ... ३७६
६१. कबेली का अंग ... ... ३७९

# द्वितीय भाग


| | विषय | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १. | ब्रह्म स्तोत्र | ... | ३८१ |
| २. | बारह खड़ी | ... | ३९२ |
| ३. | गुरु वन्दन स्तोत्र | ... | ४०६ |
| ४. | तिलक मंत्र | ... | ४०९ |
| ५. | छप्पय-कबित्त तथा अरल | ... | ४१० |
| ६. | मंगलचरण शब्द १-राग विलावल गाइऐ | ... | ४१६ |
| ७. | मंगल आरती शब्द२-मंगल आरती राम जी | ... | ४१७ |
| ८. | आरती शब्द३-नमो-निरंजन नमो निरंजन | ... | ४१८ |
| ९. | शब्द ४-हर-हर जपता नाही रे | ... | ४१८ |
| १०. | शब्द ५-और बात कुछ काम न आवे | ... | ४१९ |
| ११. | शब्द ६-साधां को बादशाही | ... | ४२० |
| १२. | तरल गजल शब्द ७-तेरे चरण प्रीत से लागी | ... | ४२१ |
| १३. | शब्द ८-भक्त वत्सल भक्त न सुखदाई | ... | ४२१ |
| १४. | शब्द ९-जगन्नाथ जग जीवन जोगी | ... | ४२२ |
| १५. | शब्द १०-दरस देख दिल के छिकें | ... | ४२२ |
| १६. | कव्वाली शब्द ११-फिरूं प्यासी दरश की मैं | ... | ४२४ |
| १७. | शब्द १२-जग त्यारन आई सुखदायक गंगा | ... | ४२४ |
| १८. | शब्द १३-हर प्रीतम से प्रीत लगाकर | ... | ४२५ |
| १९. | शब्द १४-सुख सागर प्यारे हमारी सुध लीजै | ... | ४२५ |
| २०. | आसावरी शब्द १५-महबूब हमारे बिलंमे | ... | ४२६ |
| २१. | शब्द १६-उठ शून्य सिखर को चाल | ... | ४२६ |

२२. शब्द १७-ठाढे मतवारे दरबार तुम्हारे ... ४२७
२३. राग बिलावल शब्द १८-जाग-जाग नर जाग सवेरा ... ४२७
२४. राग पुरवी शब्द १९-मोरे मितवा मैं तोरे संग लागी ... ४२८
२५. रेखता शब्द २०-सजन ये प्रेम की घाटी ... ४२८
२६. शब्द २१-मुझे महबूब प्यारा है ... ४२९
२७. तर्ज गजल शब्द २२-अरे बेखबर गवार ... ४२९
२८. तर्ज गजल शब्द .२३-यह ख्वाब का तमाशा ... ४३०
२९. शब्द २४-परम गुरु दिया मुक्त का झण्डा ... ४३१
३०. होरी शब्द २५-मेरे मन बस गयो री ... ४३२
३१. ठुमरी शब्द २६-लगी तेरे पांय राम लीजै मेरी बन्दगी ४३३
३२. ठुमरी शब्द २७-पीव क्यों ना लेवै खबरियां हमारी ... ४३४
३३. होरी शब्द २८-है कोई मन मूर्ख समझावै ... ४३४
३४. राग गौरी शब्द २९-गुर हमको पार लगाओ जी ... ४३५
३५. राग गौरी शब्द ३०-जब कोई राम भक्त गत पावै ... ४३६
३६. शब्द ३१-पिया नेक चितौ हम चेरेरे ... ४३६
३७. शब्द ३२-सतगुर-सन्त सुजान तुम से नैन लगे हैं ... ४३७
३८. शब्द ३३-क्यों कर मीलू पिया आपे को ... ४३७
३९. तर्ज कव्वाली शब्द ३४-निभाओ प्रेम की घाटी ... ४३८
४०. शब्द ३५-हर बिन यहां नहीं कोई तेरा ... ४३८
४१. शब्द ३६-हर-हर जपते बारम्बार ... ४३८
४२. शब्द ३७-मनखा जन्म विगारा पोह तैने सितम गुजारा ४३९
४३. राग बसन्त शब्द ३८-साधू वसंत खेले हमेश ... ४४०
४४. राग बसन्त शब्द ३९-मिलना किस विधि होय सखीरी ४४१
४५. राग होरी शब्द ४०-अरी इस मोहन पास ठगाई ... ४४१
४६. राग होरी शब्द ४१-होरी के खेल में गुमान न किजै ... ४४२

४७. राग होरी शब्द ४२-पिया तुम मानत ना मैं हारी ... ४४३
४८. राग होरी शब्द ४३-अरी एरी सखी मोके कबहूं ... ४४३
४९. राग होरी शब्द ४४-सदा रंग हो हो हो होरी ... ४४४
५०. राग होरी शब्द ४५-राम रंग होरी हो होरी ... ४४४
५१. राग होरी शब्द ४६-लगी लगन हर सुन्दर बरसै ... ४४५
५२. राग होरी शब्द ४७-फागन आयो री मोहन ... ४४५
५३. राग होरी शब्द ४८-भर मारी पिचकारी ... ४४६
५४. राग होरी शब्द ४९-मारी प्रीत पिचकारी में सगरी ... ४४७
५५. राग होरी शब्द ५०-खेलो प्रभु मोसो होरी ... ४४७
५६. शब्द ५१-अधिक वर पाये अपरम्पार ... ४४८
५७. शब्द ५२-कृपा करी सांवरे सिरताज ... ४४८
५८. शब्द ५३-सतगुरु ब्रह्म अखण्ड ... ४४९
५९. शब्द ५४-आप परम गुरु दया करी ... ४४९
६०. शब्द ५५-परम गुरु के चरण सिंधु को ... ४५०
६१. शब्द ५६-प्रेम प्रीत की रीति दुहेली ... ४५०
६२. शब्द ५७-प्रीत लगा कर प्रीतम पावै ... ४५१
६३. शब्द ५८-कैसे हो कर मेला रे ... ४५१
६४. शब्द ५९-नेह लग्यो जब लाज कहां री ... ४५२
६५. शब्द ६०-नाहीं रे कोई धुर का मीता ... ४५२
६६. मंगल १-परम गुरु की मौज खोज सत लोक का ... ४५३
६७. मंगल २-सतगुरु गहर गम्भीर तान जिन को दिया ... ४५५
६८. मंगल ३-अमरपुरी अस्थान तेज घन पीव है ... ४५७
६९. मंगल ४-राम नाम की मौज गुरु से पाइये ... ४५८
७०. मंगल ५-तज दुनिया की प्रीत पीव धर चालरे ... ४५९
७१. शब्द ६१-हृदय बीच हरी है साधो हृदय भीतर हरी है ४६०

७२. शब्द ६२-बहुत दूर वह घर है साधो ... ४६१
७३. शब्द ६३- ज्ञान के ज्ञान गलतान नैन के नैन निरखें ... ४६२
७४. शब्द ६४-लगनरी अकथ कहानी हो ... ४६३
७५. शब्द ६५-राम भजन की बरियां तेरी ... ४६३
७६. शब्द ६६-धनवै अलख रंग महमंता ... ४६४
७७. शब्द ६७-प्यास परस की लाग रही ... ४६४
७८. शब्द ६८-हर अवनासी मिलियारी जिन की भली बनी ४६५
७९. शब्द ६९-साधू सदा सुखाते हो, दिल दिलदार गली ४६६
८०. शब्द ७०-म्हारे गुरु गोविन्द बताया है ... ४६७
८१. शब्द ७१-हर नाम बिना मन मैला है ... ४६७
८२. शब्द ७२-म्हारे मुन्दर, मंगलाचार सतगुरु आए जी ... ४६८
८३. शब्द ७३-पिया मैं चेरी रे तेरी ज्यों त्यारै ज्योत्यार ... ४६९
८४. शब्द ७४-नर जन्म अमोलक खोयो रे ... ४६९
८५. शब्द ७५-हर नाम भजन लौ लाओगे ... ४७०
८६. शब्द ७६-राग कल्याण शब्द ८६-जै-जै सतगुरु मेरे की ४७०
८७. शब्द ७७-मतवारों पैड़ों राम को ... ४७१
८८. शब्द ७८-दर्शन सदा राम मोहिं दीजै ... ४७१
८९. शब्द ७९-रावरी कुछ अक्थ कहानी ... ४७२
९०. शब्द ८०-रावरी गत अगम बखानी ... ४७२
९१. शब्द ८१-कब मिल हो मिलना ... ४७३
९२. शब्द ८२-जो कुछ कीजे रजा तुम्हारियां ... ४७३
९३. शब्द ८३-जगत तज चलना है नादान ... ४७४
९४. शब्द ८४-सतगुरु दीन दाल राम रस प्याया है ... ४७४
९५. शब्द ८५-सुन सरत सयानी है रंगी हर प्रेम मई ... ४७५
९६. शब्द ८६-राग हेली शब्द ९६-मिल बिछहन की प्रीत री ४७५

९७. शब्द ८७-कबहुं न रहिये सोय री हेली ... ४७६
९८. शब्द ८८-बिन पायन का पंथ है री हेली ... ४७६
९९. शब्द ८९-क्या सोवै सुख नींदड़ी री हेली ... ४७७
१००. शब्द ९०-क्या सोवै अज्ञान में री हेली ... ४७८
१०१. हेला शब्द ९१-हेला ॥ सतगुरु हेला देत ... ४७९
१०२. मारवाड़ी शब्द ९२-लगन रो पंथ हमारो हो ... ४७९
१०३. शब्द ९३-लागी हर भक्ति खुमारी हो ... ४८०
१०४. शब्द ९४-यै तो म्हाने लागो हो राजा प्यारा ... ४८१
१०५. शब्द ९५-त्यार लीजो हो साहिबां ... ४८१
१०६. शब्द ९६-दर्शन दीजो हो राजा, थे तो आजो म्हारे देश ४८२
१०७. शब्द ९७-लारा लागी हो राजा म्हें तो साहिबां थारे ४८२
१०८. शब्द ९८-मन मोहन मन भावै, म्हानै जग न सुहावै हो ४८३
१०९. शब्द ९९-लाल का मिलन उपाय करां ... ४८४
११०. राग सौरठा शब्द १००-भजन कर भजन कर ... ४८४
१११. राग सौरठा शब्द १०१-भजे भगवन्त सो सन्त अवयल ४८६
११२. ज्ञान जाँगड़ा शब्द १०२-गहे गुरु टेक से ... ४८८
११३. ज्ञान जाँगड़ा शब्द १०३-जमहुं को जेर कर ... ४९५
११४. शब्द १०४-मेरे हिबरै मैं बस गयो रामां ... ४९६
११५. शब्द १०५-म्हारे प्रेम संदेसी आप ... ४९६
११६. बारह मासा शब्द १०६-बेहद बादर गगन उमग्यो घोर ४९७
११७. शब्द १०७-तैने रमता राम भुलाना रे ... ४९९
११८. शब्द १०८-जगत में जीवन थोड़ा रे मत विसरै हर ५००
११९. शब्द १०९-पट दिये मलक रहयो है घट-घट मुकुट ५००
१२०. शब्द ११०-यूँ ही नर देहधरी रे हर नाम भुलाना ... ५०१
१२१. शब्द १११-मूरख क्यों गर भाया गंदी खोड़ ... ५०२

१२२. पंजाबी शब्द ११२-तैंदी वन्दिया हों सज्जना ... ५०२
१२३. शब्द ११३-जगत दिवाना साड़े दिल नहीं भावदा ... ५०३
१२४. शब्द ११४-सिपाहिड़ा बंगले नूं मोहड़ा मोड़वें ... ५०३
१२५. शब्द ११५-प्रदेशी से प्रीत न जोड़ वे ... ५०४
१२६. शब्द ११६-मेरे परदेशिया नूं कोई जाए सुनावै री ... ५०४
१२७. शब्द ११७-कोई बतलावै री मेरे परदेशियां नूं ... ५०४
१२८. शब्द ११८-सुन्दर सजन सुजान सांवरे ... ५०५
१२९. शब्द ११९-सखी तैं लाल अमोला भुलायानी ... ५०५
१३०. शब्द १२०-दिल दे दिया सतगुरु प्यारे नूं ... ५०६
१३१. शब्द १२१-तू तो बुझदा हाल न मेरा ... ५०७
१३२. शब्द १२२-काया नगरी दा साहेब वेली ... ५०७
१३३. शब्द १२३-बोल तैंदी रूसनाईया तन वीच ... ५०७
१३४. शब्द १२४-दिलदा महरम यार वै, तुक मिलना प्यार ५०८
१३५. शब्द १२५-साधो कीड़ी हस्ती जाया ... ५०८
१३६. शब्द १२६-प्रभु जी दीजे दर्स सुखारा ... ५०९
१३७. शब्द १२७-अब कै भव सागर से त्यारो ... ५१०
१३८. शब्द १२८-आज तो आनन्द भये कंथ घर आए हैं ५१०
१३९. शब्द १२९-कर महलों दी सैल महल मतवारा है ... ५११
१४०. सन्ध्या आरती शब्द १३०-हर-हर शब्द अनाहद घंटा ५१२
१४१. शब्द १३१-मिट गये सभ जंजाल जन्म के ... ५१२
१४२. शब्द १३२-गादी नींद न सोव आगे पंथ दुहेला ... ५१३
१४३. शब्द १३३-जिस नगरी मेरा साहेब बसता ... ५१४
१४४. शब्द १३४-कदम उठाय पांव धर आगे ... ५१४
१४५. शब्द १३५-क्या जन्म जगत से प्यार ... ५१४
१४६. राग घनासरी शब्द १३६-सोई संत सुजान ... ५१५

१४७. शब्द १३७-समरथ साहेब मेरा दया कर ... ५१५
१४८. शब्द १३८-हर प्रीतम ने म्हारी सुरत बिसारी हो ... ५१६
१४९. राग विहाग शब्द १३९-होय यारो होय यारो ... ५१६
१५०. शब्द १४०-अरे विदेशी प्यारे मेरी अखियां जो है बात ५१७
१५१. शब्द १४१-गुमानी गोविन्दा हो ... ५१७
१५२. शब्द १४२-मोहन की मूरत प्यारी रे ... ५१८
१५३. शब्द १४३-सहाब से धुन लायरे ... ५१९
१५४. राग झंझोटी शब्द १४४-बनजारन अखियां खोल ... ५१९
१५५. शब्द १४५-कर ले न सामान मुसाफिर वह दिन आया ५२०
१५६. शब्द १४६-नीका दाब रे प्रानी नीका दाब रे ... ५२०
१५७. शब्द १४७-अहो बिहारी सुनियो बिहारी ... ५२१
१५८. शब्द १४८-चेरी तुम्हारी साहेब अपनी कर क्यों बिसारी ५२१
१५९. शब्द १४९-परसे ब्रह्म अपारा अबगत दरसें ... ५२२
१६०. शब्द १५०-हुआ दिल राम से राजी ... ५२३
१६१. शब्द १५१-राम नाम धन पाया अब हम ... ५२३
१६२. शब्द १५२-यों मोहन बंसी वारो जी ... ५२४
१६३. शब्द १५३-मन मोहन प्यारो लागै जी ... ५२५
१६४. शब्द १५४-पिया तुमने दर्शन की प्यारी ... ५२५
१६५. राग सौरठा शब्द १५५-आओ जी सुखदीन सुजन कर ५२६
१६६. बंगला शब्द १५६-बंगला अजब दिया करतार ... ५२६
१६७. शब्द १५७-बंगला अजब बनाया ... ५२७
१६८. शब्द १५८-मतवाला मतवाला रे रहो अलमस्त गश्त ५२८
१६९. शब्द १५९-नाम के नाम से नेह लाग्या ... ५२८
१७०. शब्द १६०-मेरे दिल से छुटें नांहि साहेब ... ५२९
१७१. शब्द १६१-राम मिलैंगे आय कब ... ५३०

१७२. शब्द १६२-भली निबाही रे पिया ... ५३०
१७३. शब्द १६३-सोई जन मस्ताना मस्ताना ... ५३१
१७४. शब्द १६४-महबूबा हो दर्शन चलना ... ५३२
१७५. शब्द १६५-मेरी धुन राम से लागी ... ५३२
१७६. शब्द १६६-मतवाला गुरु कीन्हा ... ५३३
१७७. शब्द १६७-अमल एक हर नाम का दिल भर-२ पीजै ५३३
१७८. शब्द १६८-धन गुरु अपरम्पारा हो ... ५३४
१७९. शब्द १६९-नितानन्द हिल रहे नूर से ... ५३५
१८०. शब्द १७०-मतवारो साहिबो लग गई लगन ... ५३६
१८१. शब्द १७१-तेरे घट में मलका जोर बाहर क्या देखै ५३६
१८२. शब्द १७२-निरखत गोपाल भई अखियां मस्तानी ... ५३७
१८३. शब्द १७३-मेरा साहेब कब घरे आवै ... ५३७
१८४. शब्द १७४-कर गुजरान गरीबी ... ५३८
१८५. शब्द १७५-सुरत मेरी साहेब से राजी ... ५३८
१८६. शब्द १७६-भज मन सुख सागर अबनासी ... ५३९
१८७. शब्द १७७-दिल लगे तो दिल लगाइये ... ५३९
१८८. शब्द १७८-नितानन्द को दर्शन दिजो ... ५४०
१८९. शब्द १७९-क्या कहे सैं जानयेगा ... ५४०
१९०. शब्द १८०-क्या जगत का ध्यान अपना राम सुमर ले ५४१
१९१ शब्द १८१-गुजर गई गुजरान फकिरा, गुजर गई गुजरान ५४१
१९२. ग्रन्थ संग्रह कर्त्ता का निवेदन ... ५४२

इति श्री सत्य सिद्धान्त प्रकाश की विषयानुक्रमणिका समाप्तम्।
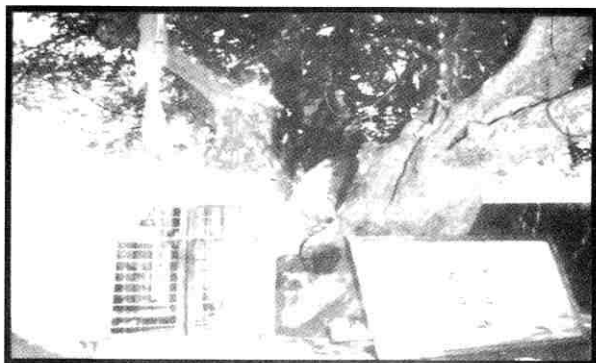
जाल वृक्ष जहाँ स्वामी नितानन्द जी
को ज्ञान प्राप्त हुआ (जटेला धाम)
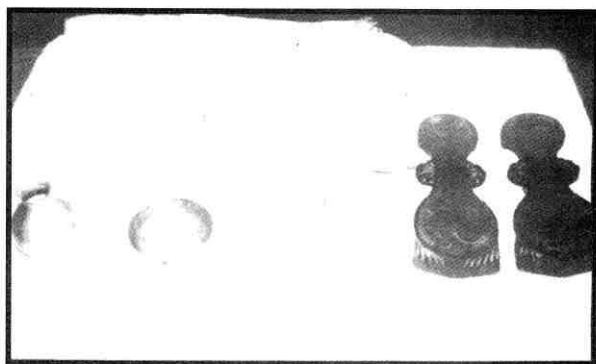
स्वामी नितानन्द महाराज जी की गुदड़ी
लोटा-कटोरी एवं चरण पादुकाएं

# ॐ सत्य सिद्धांत प्रकाश ॐ

## 卐 गुरुदेव का अंग १ 卐

नमो परम गुरु सर्व में, नमो संत बलवंत।
गुरु गुमानी दास जी, तुमको नमो अनन्त।।१।।
नमो गुमानी राम जी, नमो संत सिर मौर।
नितानन्द की बन्दना, तिहूं ठौर कर जोर।।२।।
विघन बिनासन भय हरण, परम गुरु सिर ताज।
मंगल दाता सकल के, नमो नमो महाराज।।३।।
अभय करण तारण तिरण, शरण पड़े की लाज।
नितानन्द की वीनती, नमो नमो महाराज।।४।।
आप निरंजन परम गुरु, निराकार अवतार।
धरे ध्यान सो अमर है, भवसागर से पार।।५।।
नमो निरंजन चरण कूं, सतगुरु शीश नवाय।
सन्तों के पग लाग कर, नितानन्द गुण गाय।।६।।
सतगुरु दाता भक्ति के, अवगत सन्त सहाय।
नितानन्द को लीजियो, सब मिल पार लंघांय।। ७।।
जिनके सिर साहब बसे, तिनको कैसी चिन्त।
नितानन्द लागी रहे, परम गुरु से प्रीत।। ८।।

परम गुरु की प्रीति से, कट गए काल कलंक ।
नितानन्द उपजे नहीं, जन्म मरण की संक ॥ ९॥
नितानन्द के शीश पर, परम गुरु का हाथ ।
हस्ती चढ़ लागे नहीं, जगत स्वान के साथ ॥१०॥
परम गुरु के चरण में, नितानन्द का शीश ।
क्या जानूं किस भाग से, मिले आप जगदीश ॥११॥
परम गुरु की मेहर से, निर्मल लहर शरीर ।
नितानन्द का मिल गया, दरयावों में शीर ॥१२॥
अलख स्वरूपी गैब गुरु, भक्ति मुक्ति दातार ।
नितानन्द सूभर भरे, एकै नजर निहार ॥१३॥
नितानन्द मायल हुआ, सतगुरु रूप निहार ।
कटे पाप मुख देख कर, बरसे रंग अपार ॥१४॥
सतगुरु भर प्याला दिया, अमल अमी रस सार ।
पीवत गगन कूं ले चढे, खुल गए मुक्त द्वार ॥१५॥
सतगुरु अंजन आंजि कर, खोलै नैन कपाट ।
औंधे से सूधे किए, झलक उठी वह बाट ॥१६॥
नूर तेज की सेज पर, सजे गुमानी दास ।
नितानन्द निरखे तहां, चरण कमल के पास ॥१७॥
नितानन्द गुरुदेव ने, देखत किये निहाल ।
जिनके घर कौड़ी नहीं, भर दिए हीरे लाल ॥१८॥

रिवाड़ी के जंगलमें नन्दलाल को
स्वामी गुमानीदास जी का उपदेश देना

भक्ति बिना भरमत फिरे, जन्म जन्म कंगाल।
गुरु गुमानी राम जी, पल में करें निहाल ॥१९॥
सतगुरु धोये पलक में, चौरासी के अंक।
गुरु गुमानी राम जी, हरि जन किए निसंक ॥२०॥
भली हुई सतगुरु मिले, नातर होते खवार।
रतन जन्म को खोय कर, उठ चलते झखमार।२१॥
भली हुई सतगुरु मिले, नातर खाता काल।
हीरा जाता हाथ से, पड़ता जम के जाल ॥२२॥
झूठे गुरु अनेक हैं, रहे जगत दह डूब।
नितानन्द गुरु कीजिये, साहब के महबूब ॥२३॥
जीसका गुरु अज्ञान है, चेला तिस का अन्ध।
दोनों के गल पड़ गया, नितानन्द जग फन्द ॥२४॥
ब्राह्मण कुल में जन्म था, करता बहुत मरोड़।
गुरु गुमानीदास जी, दिया कुबधगढ़ तोड़ ॥२५॥
टेढ़े टेढ़े चालते, टेढ़ी धरते पाग।
गुरु गुमानीदास जी, दिया ज्ञान बैराग ॥२६॥
कुमति निवारी जीव की, करी सुमति परकाश।
नितानन्द गुरु चरण की, कदे न छोड़ूं आस ॥२७॥
नाम जहाज चढ़ाय कर, करे जगत से पार।
नितानन्द निर्मल हुए, सतगुरु के दीदार ॥२८॥

नितानन्द आनन्द में, रहे छावनी छाय।
गुरु गुमानी दास जी, दई कुबुध उठाय।।२९।।
दाता ज्ञान अनन्त के, करण भक्ति परकाश।
नितानन्द के चित्त चढे, गुरु गुमानी दास।।३०।।
ताले कूची लाय कर, दिये किवार उघार।
भवन जोत जगमग करी, सतगुरु अपरमपार।।३१।।
मेहर करो रीते भरो, गुरु लहर दरयाव।
नितानन्द दामन लगे, बहुत दरश का चाव।।३२।।
भव समुंद्र में बुड़ते, गहे आन गुरु देव।
पल में पारांगत किए, नितानन्द गुरु सेव।।३३।।
नितानन्द बुड़त रहे, सत गुरु करी झलक्क।
क्या होते क्या हो गई, खुल गई अजब पलक्क।।३४।।
नितानन्द हम अन्ध थे, सत गुरु उठे चमक्क।
असंख नैन घट उघरियां, झिल मिल ब्रह्म झमक्क।।३५।।
नितानन्द रवि गुरु उगे, भरम निशा गई सरक्क।
कंथ निहारे नैन भर, दर्शन मांहि गरक्क।।३६।।
दुख तरंग औंधी पड़ी, लागी लहर आनन्द।
हम चकोर सन्मुख हुए, नितानन्द गुरु चन्द।।३७।।
नितानन्द निज महल में, किस बिध किया प्रवेश।
भाग हमारे हे सखी, सत गुरु दिया सन्देश।।३८।।

सत गुरु हम को ले गए, गही बांह सह जोर।
नितानन्द निर्मल किया, जन्म जन्म का चोर।।३९।।
शीश सहित आगे किया, नख सिख सकल शरीर।
मारो या भवें राखलो, नितानन्द गुरु पीर।।४०।।
सिर सौंप्या गुरुदेव को, सफल भया वह शीश।
नितानन्द उस शीश पर, सदा बसें जगदीश।।४१।।
हम सिर पासंग में दिया, मोल लगाया जीव।
गुरु तराजू हाथ ले, दिया तोल कर पीव।।४२।।
जो सतगुरु से बीछरे, तिन पर भारी मार।
जहां जाय तहां मारिये, ज्यों चौंपड़ की सार।।४३।।
सत गुरु संजुग बंधियां, कोई न सके मार।
चौरासी घर लंघ गई, नितानन्द भव सार।।४४।।
दूध फाट कांजी भया, फिर घी निकसे नाहिं।
सत गुरु तज हर को भजें, सो नर जमपुर जाहिं।।४५।।
जहां कसोटी गुरु कसी, कंचन किया सब अंग।
खोट निकास्या चोट से, मिला रंग में रंग।।४६।।
नितानन्द उस रंग का, कदे न होय कुरंग।
लाख लोग पचवो करो, दिन दिन होय सुरंग।।४७।।
गुरु बजाई गगन में, सुंदर अनहद बैन।
रोम रोम धुन लग रही, नितानन्द मन चैन।।४८।।

गगन माहिं मुरली बजी, मगन हुए सुन प्राण।
लगी लगन छूटे नहीं, नितानन्द गुरु ध्यान ।।४९।।
गुरु हमारे गगन चढ़, अजब बजाया नाद।
तन मन मोह्या मृग ज्यों, लग्या प्रेम का स्वाद ।।५०।।
गुरु हमारे गगन चढ़, दई शब्द की टेर।
काल जाल से नितानन्द, लिए पलक में फेर ।।५१।।
नितानन्द गुरु देव पर, वारूं पिंड शरीर।
भवसागर में बुड़ते, चढ़े हमारी भीर ।।५२।।
गुरु दया हम पर करी, धरी नीम पाताल।
सोत निकासे गैब के, धन गुरु दीन दयाल ।।५३।।
सतगुरु हम पर मेहर कर, कही पीव की बात।
अमरत के झड़ लग रहे, शीतल तन मन गात ।।५४।।
सतगुरु बरसे मेहर कर, बुझी बलन्ती भाह्य।
नितानन्द साहब मिले, अब किस की परवाह्य ।।५५।।
गुरु तीर बानी कही, लगी कलेजे मांहि।
भीतर घायल हो रहे, बाहर दीखे नांहि ।।५६।।
सतगुरु मारा बान भर, ग्यासी ज्ञान बिचार।
बाहर दीखें खेलते, भीतर डारा मार ।।५७।।
प्रेम बाण मारा गुरु, पहले तन दिया ताय।
नितानन्द कंचन किया, कुमत कलंक छुटाय ।।५८।।

अहंकार को मार ले, सतगुरु की शमशेर।
काल करम भ्रम वासना, होय पलक में ढेर ॥५९॥
अहंकार की नींद में, सोवे सब संसार।
नितानन्द चेतन हुआ, सतगुरु शब्द विचार ॥६०॥
सतगुरु शब्द लगाय कर, लिया शिष्य को मार।
हम जानी हम मर गए, किये जगत से पार ॥६१॥
सतगुरु मारे मेहर से, फिर न मुए वे प्रान।
अमर महल में मिल गए, नितानन्द गलतान ॥६२॥
सतगुरु मारे हेत सूं, बाहर करड़ी दीठ।
नितानन्द सन्मुख रहो, अब नहीं देनी पीठ ॥६३॥
जो सतगुरु करड़ी करी, मत कर काचा मन।
नितानन्द सन्मुख रहो, पावे राम रतन ॥६४॥
सतगुरु नजर निहाल हैं, रहे जो सन्मुख कोय।
नितानन्द एक पलक में, लोहा कंचन होय ॥६५॥
दिल दर्पण पड़ फूटियां, हो गया चूरम चूर।
गुरु गाल सारा किया, निरख नूर में नूर ॥६६॥
दिल दर्पण काई लगी, करम भरम रहा छाय।
गुरु पूरे मंजन किया, शब्द मसकला लाय ॥६७॥
अरस परस झांखी लगी, मुख से मुख बतराय।
नितानन्द दिल नूर का, सतगुरु दिया दिखाय ॥६८॥

मन भौरा काला हुआ, लेत विषय की बास।
नितानन्द उज्ज्वल हुए, चरण कंवल गुरु पास।।६९।।
सतगुरु बन्दी छोड़ ने, दीन्ही बन्ध छुड़ाय।
नितानन्द निर्भय हुआ, यह सुख कहा न जाय।।७०।।
कंकर से कंचन करे, करे पोत से लाल।
पत्थर से पारस करे, सतगुरु परम दयाल।।७१।।
भक्ति अटल साहेब अटल, अटल धारना धार।
राम गुमानी अटल गुरु, पटल उघाड़न हार।।७२।।
नितानन्द गोबिन्द से, सतगुरु हैं अधिकार।
गोबिन्द बान्ध्या जीवड़ा, गुरु छुड़ावन हार।।७३।।
चेतन के घर चमक कर, सतगुरु दीन्ही सैन।
यह अचरज कासे कहूं, रोम रोम भए नैन।।७४।।
सतगुरु की कृपा हुई, खुल्हे ज्ञान के नैन।
घट घट रवि ससि हो गए, नितानन्द गुरु सैन।।७५।।
सिन्ध सिन्ध दीपक धरे, इन्द्री इन्द्री चन्द।
नितानन्द गुरुदेव बिन, दृष्टि ज्ञान की बन्द।।७६।।
सकल पिंड ब्रहमांड में, चान्द सूर दरसाहीं।
नितानन्द गुरुदेव बिन, हृदय चान्दणा नांहि।।७७।।
बन बन ढूंढत हम फिरे, राम रहा हम मांहि।
नितानन्द गुरु शब्द बिन, हम गत जानी नांहि।।७८।।

राम हमीं में रम रहा, जगत ढंडोरा भ्रम्म।
नितानन्द गुरु शब्द बिन, हमको पड़ी न गम्म ।।७९।।
सहज स्वरूपी गुरु मिले, जिनकी दृष्टि दयाल।
नितानन्द पाखान था, किया अमोलक लाल ।।८०।।
नितानन्द वो गुरु बड़े, जिनके अगम विचार।
चलें चाल अज्ञान की, सो गुरु मुगद गवार ।।८१।।
भेदी मारग महल के, करें पलक में पार।
नितानन्द गुरु कीजिए, राम मिलावन हार ।।८२।।
कामी क्रोधी जगत के, भक्ति भाव से दूर।
गुरु गुमानी दास जी, करे खाक से नूर ।।८३।।
जिन के चरण प्रताप से, पारांगत पल मांहि।
नितानन्द उन गुरों से, कछू राखिए नांहि ।।८४।।
नितानन्द गुरु देव पर, तन मन धन सब वार।
तऊ उन्हों के मंगते, वे सतगुरु दातार ।।८५।।
नितानन्द गुरु देव पर, सर्वस देव चढ़ाय।
अन्तर कांती दूर कर, निर्भय बम्ब बजाय ।।८६।।
सतगुरु के लायक नहीं, भेटें लाख हजार।
चेरे हो कर गिर रहो, नितानन्द दरबार। ।।८७।।
नितानन्द गुरु चरण के, होय रहो पापोश।
जो गुरु तोड़ बगाय दें, तनक न कीजे रोष ।।८८।।

सतगुरु तोड़ बगाय दें, पड़ो द्वार दरबार।
एक पलक की मेहर में, लेंगे फेरे सुधार ।।८९।।
इस तन का पनहा करूं, पडूं गुरु के पांव।
तो भी थोड़ी बात है, अधिक गुरु का भाव ।।९०।।
गुरु चरनन की पाहिनीं, नन्हा मन कर होय।
नितानन्द तन खाल में, उठे नूर खशबोय ।।९१।।
सतगुरु चन्दन बावना, हम ढिग उगियां आय।
नितानन्द चन्दन किए, अपनी बास लगाय ।।९२।।
मलागीर गुरु देव तुम, काठ हमारो अंग।
चरण परस चन्दन हुए, नितानन्द तुम संग ।।९३।।
आक ढाक बम्बूल जहां, बसते बन बिया बान।
नितानन्द चन्दन किए, चढ़े दर्स दुक्खन ।।९४।।
मलागीर सेती मिले, शीतल होय भुवंग।
सब तन चन्दन होय गया, धन सतगुरु सतसंग ।।९५।।
ज्ञानी ध्यानी पंडिता, ऐसे गुरु अनेक।
नितानन्द साचे गुरु, अरब खरब में एक ।।९६।।
ज्ञानी ध्यानी पंडिता, बहे जात जग मांहि।
नितानन्द दीदार में, साचे गुरु ले जांहि ।।९७।।
ज्ञानी ध्यानी पंडिता, सिद्ध मुनी सुर देव।
नितानन्द सब त्याग कर, साचे गुरु कूं सेव ।।९८।।

ज्ञानी ध्यानी पंडिता, सिद्ध मुनी सुर कोट।
नितानन्द माने नहीं, रहें गुरु की ओट ॥९९॥
सतगुरु शब्द संदेस सुन, भाजे भरम अन्देस।
नितानन्द उस देस में, सहज हुआ परवेस ॥१००॥
कई जन्म भूले फिरे, अब कै जागे भाग।
नितानन्द सतगुरु मिले, बुझी बलन्ती आग ॥१०१॥
नितानन्द सब जगत में, सतगुरु बड़े दयाल।
बांह पकड़ कर ले गये, जहां हमारा लाल ॥१०२॥
नितानन्द भव सिन्ध में, सतगुरु मिले जहाज।
नातर यह जीव बूड़ता, झूठे कुल की लाज ॥१०३॥
तीन लोक से अगम घर, तहां न धरनि अकास।
जहां जोत जगमग करै, गुरु गुमानी दास ॥१०४॥
मन के पाट उघाड़ कर, दिया चरन में बास।
नितानन्द को मिल गये, गुरु गुमानी दास ॥१०५॥
घर घर में झड़ लग रहे, बरसे अमृत धार।
नितानन्द गुरु ज्ञान बिन, सूखा सब संसार ॥१०६॥
घर घर में बरसें सदा, मोती हीरा लाल।
नितानन्द गुरु ज्ञान बिन, बेमुख नर कंगाल ॥१०७॥
भूले बिछड़े जुगों के, बन बन के हैरान।
नितानन्द कूं राख लो, सतगुरु संत सुजान ॥१०८॥

गुरु तुम्हारे दास हम, बन्दे बन्दी वान।
नितानन्द की बन्दगी, अब लग करी न कान॥१०९॥
खानेजाद गुलाम हम, गुरु तुम्हारे दास।
भावें राखो बन्ध में, या भावें करो खलास॥११०॥
कर गह पार लंघाइयो, हम मूरख अज्ञान।
शरण पड़े कूं राख लो, सतगुरु सतं सुजान॥१११॥
अनसमझे को दुख सदा, समझे को सुख चैन।
पूरे गुरु बिन नितानन्द, ना कुछ लेन न देन॥११२॥
कामी क्रोधी गुरु घणे, लोभी गुरु जग मांहि।
नितानन्द वे गुरु सही, अमरपुरी ले जांहि॥११३॥
सबल साह्य सतगुरु मिले, किया दिलद्दर दूर।
भाव भक्ति का धन दिया, सौदा पूरम पूर॥११४॥
गुरु पूरे सूभर भरे, पूंजी दई बधाय।
नितानन्द धनवत हुआ, बैठया खरचे खाय॥११५॥
ऐसा धन सतगुरु दिया, तीन लोक में नांहि।
रिद्ध सिद्ध चारों मुक्त, नितानन्द ता मांहि॥११६॥
नितानन्द सौदा हुआ, गुरु पूरे की हाट।
कर्म करज कई जन्म के, दिए दया कर काट॥११७॥
साचा सतगुरु जो मिले, उठे जीव तब जाग।
नितानन्द बुड़े घणें, झूठे के संग लाग॥११८॥

साचा सतगुरु परस कर, तन मन पलटे अंग।
नितानन्द मुख देख कर, हो गया कीट भिरंग ॥११९॥
सतगुरु शब्द उलंग कर, चले मन मुखी चाल।
नितानन्द उन जीवों कूं, जहां जाय तहां काल ॥१२०॥
गुरु शब्द सिर पर धरै, कर सन्सुख तन मन।
एक पलक में पाइये, अमोलक राम रतन ॥१२१॥
साचा सतगुरु जो मिले, मार्ग देत बताय।
नितानन्द उस महल में निर्भय पहुंचे जाय ॥१२२॥
नितानन्द सतगुरु मिले, प्रगटे पूरण भाग।
जिस के थे उस के हुए, मिटे दिलों के दाग ॥१२३॥
अगम पुरी के चौक में, सतगुरु का निसान।
नितानन्द कोई सूरमा, पहुंच गये धर ध्यान ॥१२४॥
पांच तत्त गुण तीन सौं, अगम प्रेम की पौर।
नितानन्द आनन्द की, गुरु लखाई ठौर ॥१२५॥

सौरठा

श्री सतगुरु जगत जहाज, जीव को पार उतारना।
नितानन्द की लाज, महाराज तुम राखियो ॥१२६॥
गुरु गुमानीदास, करो बास मेरे हिये।
नितानन्द की प्यास, भक्ति आस पूरण करना ॥१२७॥

(इति गुरुदेव का अंग संपूर्णम्)

# 卐 सुमर चेतावनी का अंग २ 卐

गुरु गुमानीदास के, हित कर चरन संभाल।
मनुष जन्म की मौज है, सुमर गोपाल गोपाल।।१।।
सांई सेती बचन थे, सो क्यों दीन्हें टाल।
जान बूझ दह में पड़्या, सुमर गोपाल गोपाल।।२।।
भूला माया मोह में, देख स्वप्न का ख्याल।
फिर पछताया जाग कर, सुमर गोपाल गोपाल।।३।।
एक रैन का पाहुणां, रे जिव तज जंजाल।
जम जालिम सिर पर खड़ा, सुमर गोपाल गोपाल।।४।।
अपने नैनों देखते, गये हजारों चाल।
गया सो फेर न आइयां, सुमर गोपाल गोपाल।।५।।
चौरासी के फेर में, कदे न पाई ठाल।
अब है बरिया भजन की, सुमर गोपाल गोपाल।।६।।
मोहर रुपया जोड़ कर, फूल्या फिरे खुशहाल।
गिणती कर कर धर गये, सुमर गोपाल गोपाल।।७।।
नङ्गे पांवों जाहिगे, कोड़ी धज कंगाल।
आगे गारत गोल है, सुमर गोपाल गोपाल।।८।।
पर्वत पकड़ उखाड़ते, समन्दर एक कर छाल।
जिन की ढेरी को गई, सुमर गोपाल गोपाल।।९।।

काया नर नारायणी, बड़ी जवाहर लाल।
खो दई भाडे भाड़ के, सुमर गोपाल गोपाल ॥१०॥
हंसा हरकूं याद कर, दिन दिन सूखे ताल।
फेर न मिलना होयगा, सुमर गोपाल गोपाल ॥११॥
भक्ति हीन जो प्राणियां, कूकर सूकर स्याल।
जन्म जुवा ज्यों हारियां, सुमर गोपाल गोपाल ॥१२॥
जब लग साजन नगर में, जब लग सुमर दयाल।
कोई दिन रली मनायले, सुमर गोपाल गोपाल ॥१३॥
आया था कुछ नफे कूं, खोदिया मुक्ता माल।
किया न सौदा सत्य का, सुमर गोपाल गोपाल ॥१४॥
देही पर गुलझट पड़ी, धौले आ गए बाल।
तब भी नर चेत्या नहीं, सुमर गोपाल गोपाल ॥१५॥
दूर देश कूं चालना, गहे अचानक काल।
कंचन तन माटी मिलै, सुमर गोपाल गोपाल ॥१६॥
लूटें लोग कुटुम्ब के, मोह मोहनी डाल।
संगी कोई न होयगा, सुमर गोपाल गोपाल ॥१७॥
हीरा जन्म लुटाय कर, उठ चल्या घर घाल।
गफलत में मति बह गई, सुमर गोपाल गोपाल ॥१८॥
रूप छलावा देख कर, उठी काम की झाल।
बहू बहू कर बह मुआ, सुमर गोपाल गोपाल ॥१९॥

दगड़ा आवा गवन का, जग कीड़ी का नाल।
मौत मैज आवे चल्या, सुमर गोपाल गोपाल ।।२०।।
घड़ी घड़ी काया घटे, टेर कहे घड़ाल।
बीते बरियां तन्त की, सुमर गोपाल गोपाल।२१।।
बिष्टा मुत्र छुटाय कर, दीन्हीं रोटी दाल।
सो साहेब जाना नहीं, सुमर गोपाल गोपाल ।।२२।।
सुपन बांझ बेटा जणै, भर भर बांटे थाल।
ऐसा सुख संसार का, सुमर गोपाल गोपाल ।।२३।।
माया मध मांते फिरें, अन्ध धुन्ध असराल।
डूब गये अभिमान में, सुमर गोपाल गोपाल ।।२४।।
सांस नगारा कूंच का, लख्या न हाल हवाल।
समझ सकै तो समझिये, सुमर गोपाल गोपाल ।।२५।।
क्या समझाऊं मुगध कूं, पड़ गई ढाल कुढाल।
मरकट मुंठी ना तजै, सुमर गोपाल गोपाल ।।२६।।
ओसर था सो चल गया, सुखी आरबल आल।
सरवर तज पंछी उड़े, सुमर गोपाल गोपाल ।।२७।।
नदी किनारे आया कर, लीजे हाथ पखाल।
गाफिल होय न सोइये, सुमर गोपाल गोपाल ।।२८।।
जग में थोड़ा जीवना, दूर करो बद ख्याल।
मिलना है महबूब से, सुमर गोपाल गोपाल ।।२९।।

गुरु गुमानी दास जी, पल में करे निहाल।
नितानन्द पग लग रहो, सुमर गोपाल गोपाल॥३०॥

(इति सुमर चेतावनी का अंग संपूर्णम्)

## 卐 सुमरन का अंग ३ 卐

(लिखते श्री परम गुरु सहाय)

नितानन्द सतगुरु कहें, और कहें सब सन्त।
भला जिन्हूं को होयगा, जो सुमरें भगवन्त॥१॥
अंतर दृष्टि उघाड़ कर, धरो अंक का ध्यान।
एक महूरत में मिले, नितानन्द भगवान॥२॥
नितानन्द निज नामकूं, लिख राखो मन माहिं।
जिन नैना हर देखियां, वे नैना खुल जाहिं॥३॥
नितानन्द निज नाम की, चिन्ता करो सुजान।
रतन जतन कर राखिये, कठिन पंथ भगवान॥४॥
काया के अस्थान में, भजन करे सब कोय।
नितानन्द आतम भजन, कोटे मध्यें होय॥५॥
होंठ जीभ हाले नहीं, जपे अजप्पा जाप।
नितानन्द गुरु ज्ञान से, लगे न तीनो ताप॥६॥
सुरत लाय सुमरण करे, मिले ब्रह्म दरियाव।
नितानन्द आनन्द में, प्रेम मगन गुन गाव॥ ७॥

बाप दादा की रीति में, पचे मरे संसार।
नितानन्द हर भजन बिन, सब के सिर बेगार॥ ८॥
नितानन्द जो भक्त हैं, सो भग में नहिं जाहिं।
करे भक्ति भगवन्त की, मिलें परम पद मांहि॥ ९॥
अब के जीते जीत हैं, अब के हारे हार।
नितानन्द इस देह में, सके तो राम संभार॥१०॥
बार-बार यह देह नहिं, औरे देह घनी।
नितानन्द इस देह में, सुमिरो राम धनी॥११॥
सकल जीव निशि दिन जरत, काम क्रोध के संग।
नितानन्द सीतल रहो, राम नाम के रंग॥१२॥
राम नाम हृदय धरो, गहो ज्ञान बैराग।
सब जग सीतल हो गया, बुझी आपनी आग॥१३॥
निश्चल होय हर कूं भजैं, जिन की बुद्धि विशाल।
जीवन मुक्ता कर लिया, साहब दीनदयाल॥१४॥
पांव पसारे क्या पड़या, प्रभु का नाम संभाल।
जिन के सोयें क्यों बनें, तिन के सिर पर काल॥१५॥
नितानन्द हर सुमर ले, अब मत रहो अचेत।
यह तन भक्षण काल का, ज्यों किसान का खेत॥१६॥
नितानन्द हर सुमर ले, क्या सौवे दिन रैन।
जिन कूं मिलना खाक में, तिन कूं कैसा चैन॥१७॥

नितानन्द हर सुमर ले, नाम बिसर मत सोय।
नातर ऐसा सोवणा, फिर नहिं जागण होय।।१८।।
नितानन्द हर सुमरतें, कभी न कीजै ढील।
पल में यम ले जायेंगे, यथा सरप कूं चील।।१९।।
नितानन्द साहेब सुमर, सोवन जन्म गंवाय।
यह जिव आया दूर से, बहुर दूर कूं जाय।।२०।।
नितानन्द साहेब सुमर, तजो मोह संसार।
लगे चपेटा काल का, कहां गुडी कहां तार।२१।।
नितानन्द साहेब सुमर, सकल बासना त्याग।
रजनी बीती जात है, जाग सके तो जाग।।२२।।
नितानन्द गोबिन्द ने, दीन्हीं दुर्लभ देह।
राम भजे तो रत्न है, नहीं खेह की खेह।।२३।।
चौरासी से काढ कर, कीन्हा आप समान।
नितानन्द सो सुमरिये, पूरण पद निर्बाण।।२४।।
नितानन्द सुमरत रहो, गहो ज्ञान गम्भीर।
बिना भक्ति भगवन्त की, वृथा मनुष्य शरीर।।२५।।
नितानन्द सुमरन करो, धरो ध्यान चित लाय।
बातां चौदह भवन की, घट में उघड़ें आय।।२६।।
चित लगाय सुमरण करो, भीतर होय प्रकाश।
मोह नींद सूं जाग कर, देखो अगम उजास।।२७।।

चित लगाय सुमरण करो, आठों पहर सुचेत।
नितानन्द तिन पर धरे, चिदानन्द हर हेत॥२८॥
नितानन्द गोबिन्द भज, जब लग घट में श्वास।
फिर हंसा तज चालसी, तन समुदर का बास॥२९॥
नाम सुमर निर्मल हुए, प्राणी कोट अनन्त।
चरण कमल की मौज में, राख लिये भगवन्त॥३०॥
नाम निरंजन अटल सुख, आदि मध्य और अन्त।
नितानन्द हर भक्ति में, छिके प्रेम महमंत॥३१॥
नितानन्द धन साह का, सके तो ठौर लगाय।
श्वास श्वास हर नाम भज, यही तुम्हारा दाय॥३२॥
श्वास श्वास संभारिये, नितानन्द हर नाम।
करले सामा राह का, बहुत दूर वह गांम॥३३॥
बार बार नहिं पाइये, नितानन्द नर देह।
जगत पैंठ में आय कर, नाम नफा कर लेह॥३४॥
सौदा तज हर नाम का, लादा विषय विकार।
वे प्राणी पछतायेंगे पैंठ उठैती बार॥३५॥
रोम रोम पिव पिव रटें, रटें पांच पच्चीस।
नितानन्द की बन गई, मिले पुरुष जगदीस॥३६॥
हे मन सुमिरौ राम को, विरह प्रेम में आय।
पांचो संगी संग ले, मिलो सवेरा जाय॥३७॥

राम नाम निज मंत्र हैं, सुमरें शेष महेश।
नितानन्द उस पंथ में, नहीं हद्द लवलेश ।।३८।।
करो बन्दगी पाक की, पाक महौब्बत लाय।
नितानन्द उस महल में, पाक होय सो जाय ।।३९।।
जिन हम कूं पैदा किया, इष्ट हमारा सोय।
नितानन्द निर्भय भजो, राम करैं सो होय ।।४०।।
सुमरण में सुख बहुत है, जो सुमरे मन लाय।
जिस नगरी साहब बसे, उसी नगर को जाय ।।४१।।
सुमरण में सुख बहुत है, करो भक्ति नेह काम।
कबहूं पट खुल जायंगे, नितानन्द जहां राम ।।४२।।
सुमरण में सुख बहुत हैं, भजे सो अवचल प्रान।
अमरपुरी के महल में, जिन के अटल निशान ।।४३।।
सुमरण में सुख बहुत है, सुमर पियारे मीत्त।
भवसागर से तिरण की, नितानन्द कर चिन्त ।।४४।।
सुमरण की सत्या लिये, रचना रची विरंच।
बीज रूप हो विस्तरया, एकै भया अनन्त ।।४५।।
नारद मुनि जीवन मुक्त, सुमरण कय प्रसाद।
नितानन्द पदवी बड़ी, जिन के हिये अगाध ।।४६।।
शेष रसातल लोक में, रटे सहस मुख नाम।
सकल जगत कीरत्त करै, जहां तहां सब ठाम ।।४७।।

सुमरण ते ध्रुव अटल है, रही पैज प्रहलाद।
नितानन्द संकर अमर, बाल रूप सनकाद।।४८।।
हद्द छाड़ बेहद हुए, केशव सुमर कबीर।
नितानन्द उस जोत में, मिले समेत शरीर।।४९।।
नितानन्द सुमरे धणी, दादू दीनदयाल।
दर्द मोहब्बत इश्क से, पाए पाक जमाल।।५०।।
जिस का मैं सुमरण करूं, सो मुझ से नहिं दूर।
मो में तो में सर्व में, नितानन्द भरपूर।।५१।।
सुमरे मन सुमरे सुरत, सुमरे देह तमाम।
सुमरत २ हो गया, नितानन्द जहां राम।।५२।।
हीरा से पत्थर हुआ, जिन राम बिसारया।
नितानन्द हीरा हुआ, हर नाम संभारया।।५३।।
रोम २ हर २ कहे, सहजे सुमरण होय।
सब तन की कर सुमरणी, सुमरे विरला कोय।।५४।।
रोम २ हर हर कहे, ऐसा भजन अपार।
नितानन्द भज सुरत से, बिन मुख शब्द उचार।।५५।।
जिभ्या हले न मुख हले, रोम २ धर ध्यान।
नितानन्द सुमरण करो, अंतर गति अस्थान।।५६।।
नितानन्द सुमरण करे, रोम २ धुनि लाय।
चित चात्रक चेतन हुआ, दीन्हीं टेर लगाय।।५७।।

अंतरगत सुमरण करे, सो सब उत्तम प्रान।
नितानन्द चारों वरण, बिन हर भक्ति मसान ।।५८।।
हित चित सों हर कूं भजैं, सोई चतुर सुजान।
नितानन्द हर भक्ति बिन, पढ़े गुने अज्ञान ।।५९।।
मुख इक्कीस छः सौ सहस, कंठ क्रोड़ उंचास।
अरब नाम उर से उठें, नितानन्द एक श्वास ।।६०।।
बिना नाम नाभी भजन, परा पौर के पास।
नितानन्द गिणती नहीं, जहां कुछ अगम उजास ।।६१।।
सुमरण सोई जाणिये, सुमरण मांहि समाय।
नितानन्द जाको रटे, वही रूप हो जाय ।।६२।।
सुरत रही रटना रही, और रह गया राम।
नितानन्द वह कित गया, जिस को कहते नाम ।।६३।।
सांई नाम निर्मला, भजे सो निर्मल होय।
नितानन्द घर निर्मले, बिरला पहुंचे कोय ।।६४।।
जब लग सुमरण सहज का, सेवक स्वामी दोय।
एकम एक हो मिल गया, साचा सुमरण सोय ।।६५।।
दासा तन में भजन कर, मुख से बहक न बोल।
नितानन्द घट राख ले, शब्द ब्रह्म की झोल ।।६६।।
साचा सुमरण सुरत का, मन अस्थिर रट राम।
नितानन्द जब पाइये, अमरपुरी मुक्काम ।।६७।।

सुमरण सा सौदा नहीं, चौदह भवन मंझार।
रिद्ध सिद्ध चारों मुकत, सदा भगत की लार ॥६८॥
सुमरण सा सौदा नहीं, भाव भक्ति सा माल।
नितानन्द तिन को मिले, जिन पर राम दयाल ॥६९॥
सुमरण सा सौदा नहीं, सुर्त निर्त से लेह।
नितानन्द हर चरण में, चेतन हो चित देह ॥७०॥
सुमरण सा सौदा नहीं, गुरु से साहूकार।
नर नारायण नगर में, मिले न बारम्बार ॥७१॥
भक्ति सलिल निज नाम जल, मल मल दिलको धोय।
नितानन्द तन कमल में, झिलमिल २ होय ॥७२॥
भक्ति सलिल निज नाम जल, मन को उलट नहाय।
यह तन तीरथ तन्त है, हर सुमरण लौ लाय ॥७३॥
भक्ति सलिल निज नाम जल, कर निर्भय अस्नान।
हो उज्वल अंतःकरण, माहि मिले भगवान ॥७४॥
भक्ति सलिल निज नाम जल, उर के मैल उतार।
नितानन्द दिल में मिले, साहेब का दीदार ॥७५॥
नाम लिया तो सब किया, आपै सब कुछ होय।
पान फूल फल पाइये, भक्ति बीज घट बोय ॥७६॥
राम नाम के संग सब, रिध सिध भोग बिलास।
लारे लागे यों फिरे, ज्यों रवि किरण प्रकास ॥७७॥

नाम लिया तो सब किया, करणी रहणी ज्ञान।
घर में धरा न पाइये, जब लग उगे न भान।।७८।।
नाम लिया तो सब किया, संजम साधन जोग।
नितानन्द प्रीतम मिले, जांहा सभै सुख भोग।।७९।।
नितानन्द हर नाम को, दृढ़ कर हृदय धार।
ज्यों कूंची ताले लगे, खुले मुक्ति भण्डार।।८०।।
राम नाम हृदय धरो, बाजे अनहद नाद।
पाया पूरब पुण्य से, भक्ति प्रेम प्रसाद।।८१।।
अंतर उरझा नाम से, सुरझा नौ मण सूत।
जीवन मुक्त पद पीव को, मिले गगन अभधूत।।८२।।
सुमरण सेरी महल की, चलिये सुरत लगाय।
नितानन्द घर प्रेम के, निर्भय पहुंचो जाय।।८३।।
अंतर हर हर सुमर नर, मुख से कहे न सुनाय।
नितानन्द नहिं भूलिये, जग में डिम्भ दिखाय।।८४।।
जब लग जगत दिखाइये, तब लग मिले न पीव।
नितानन्द यूं सुमरिये, पिव जाणे कै जीव।।८५।।
साध कहें सतगुरु कहें, सुमर निर्मला नाम।
नाम गहे पहुंचे बहुत, नितानन्द उस गांम।।८६।।
भक्तन को तारण तिरण, निर्मल नाम सुख धाम।
भक्तन को भवसिंघ से, पार उतारें राम।।८७।।

नाम महातम श्रवण सुन, राम नाम मुख गाय।
नितानन्द फिर हृदय धर, रोम-रोम लौलाय ।।८८।।
नितानन्द हृदय धरो, राम नाम की प्रीत।
पार उतारें पलक में, भवसागर भय भीत ।।८९।।
एक महूरत नाम से, लगे सुरत का तार।
नितानन्द तब ही खुलें, जीवन मुक्तद्वार ।।९०।।
शब्द कलम स्याही सुरत, दिल कागज कर लेह।
लिखो नाम तहां अलख का, नितानन्द चित देह ।।९१।।
दिल कागज में चढ़ गया, राम नाम निज अंक।
नितानन्द उतरे सभै, मन के मैल कलंक ।।९२।।
दिल कागज सतगुर लिखा, अक्षर अलख अनन्त।
नितानन्द सोई पढ़ै, चढ़े अमर पुर पंथ ।।९३।।
नितानन्द लिख लीजिये, हरि अक्षर उर माहिं।
साचा सुमरण सुरत का, सभी भरम मिट जाहिं ।।९४।।
नितानन्द सुमरत रहो, हितकर राम रतन।
स्वास २ में सुमरिये, रतन होय तन मन ।।९५।।
नाम शब्द दरयाव में, प्रेम प्रीत से नहाय।
कुमत भरम काई करम, पलक माहिं छुट जाय ।।९६।।
नितानन्द निज नाम जल, करो सदा असनान।
होय उज्वल अंतःकरण, मिटे तिमर अज्ञान ।।९७।।

राम नाम निज नीर से, दिल के दाग उतार।
चित चेतन की चमक में, देखो सदा बहार ॥९८॥
नाम नीर गंभीर में, नित प्रति गोता मार।
मगन होय असनान कर, चढ़ो दरस दरबार ॥९९॥
नितानन्द हरि नाम बिन, कबहू मुक्त नहीं होय।
तपी तीर्थी बेद पढ़, चले नाम बिन रोय ॥१००॥
तुही २ कर मैं मिटी, तुही २ गया होय।
जो कुछ था सोई भया, नितानन्द ना दोय ॥१०१॥
तुही २ रटना लगी, पगी प्रेम के माहिं।
नितानन्द तू हो रह्या, मुझ माहिं मैं नाहिं ॥१०२॥
तुही २ सब तन कहे, सब तन मन तुझ माहिं।
जित देखूं तित है तुही, नितानन्द मैं नाहिं ॥१०३॥
तुही २ सब तन कहे, तहां मन गया समाय।
मिला नीर दरयाव में, नितानन्द लौ लाय ॥१०४॥
भवन चर्तुदश में नहीं, भजन बराबर चैन।
शेष महेश सुरेश सब, रटें नाम दिनरैन ॥१०५॥
एक पलक के भजन पर, तुले सर्व संसार।
नितानन्द निज नाम की, महिमा अगम अपार ॥१०६॥
नोतम नौ जोगे सुरा, भए नाम से लाग।
विचरे सुतः स्वरूप होय, विषय वासना त्याग ॥१०७॥

नितानन्द भगवान भज, करो नाम से नेह।
भरम कर्म काई कटे, दम का दर्पण देह ॥१०८॥
नाम निरंतर लीजिये, अंतर गति लौ लीन।
देखत ही दिल हो गया, दर्पण से दुर्बीन ॥१०९॥
कर ले दीपक नाम का, देह अंधेरी घोर।
ज्ञान प्रकाश उजास हो, लगें न पांचो चोर ॥११०॥
बिना नाम नहीं चांदना, देह अंधेरी माहिं।
नितानन्द हर अमर धन, फेर मिलन का नाहिं ॥१११॥
नितानन्द हर अमर धन, लेना हो तो लेह।
आठ पहर साठों घड़ी, भजन माहिं चित देह ॥११२॥
नितानन्द हर भजन कर, मन के भरम निवार।
मिले न मार्ग मुक्ति का, बिना नाम आधार ॥११३॥
भजन बिना भाजे नहीं, मन के विषय विकार।
जब लग तन निर्मल नहीं, दुर्लभ हर दीदार ॥११४॥

(अथ फारसी साखी)

जो चाहे दीदार को, दिलवर से दिल लाय।
होय नफा तन मन सफा, जिस घट नाम खुदाय ॥११५॥
करो नाम की बन्दगी, नाम निवाज गुजार।
नाम मिलावे इश्क से, मिले यार से यार ॥११६॥
इस तन की तसबी करो, दाना नाम बनाय।
नितानन्द दिल कुंज में, बैठा सदा फिराय ॥११७॥

दिल अन्दर दरगाह है, दिल में नूर जमाल।
नितानन्द दिल देख ले, हर दम नाम संभाल ॥११८॥
नितानन्द रब्बान को, हर दम करले याद।
अजब जवाहर जिन्दगी, मत खोवै बरबाद ॥११९॥
अब्वल इस्म अल्लाह का, अन्दर धर लीजै।
और जहां से मोड़ कर, दिल शामिल कीजे ॥१२०॥
रहना सदा यकीन से, हाज़रां हजूरी।
साबित दीन इमान में, सो बन्दे नूरी ॥१२१॥
इज़ज इबादत बन्दगी, दम जाय न खाली।
गर्क रहे महबूब में, सो रूह जमाली ॥१२२॥
अन्दर नाम अल्लाह का, बाहर नहीं कहना।
गफलत दुई गुजार कर, हाजिर हो रहना ॥१२३॥
नितानन्द अन्दर करो, हर दम इस्म सफात।
सिफत सिरर वाकिफ करो, मिले जात में जात ॥१२४॥

(इति फारसी साखी)

नर नारायण नगर में, करो भक्ति ब्योपार।
नितानन्द दिन २ बढ़े, विभव अनंत अपार ॥१२५॥
हुण्डी हर का नाम है, हृदय राख लौ लाय।
सत्य लोक की हाट पर, चाहे जब हि पटाय ॥१२६॥
काया कंचन कोठरी, नाम रतन भर लेह।
नितानन्द चित चेत कर, सुमरण में मन देह ॥१२७॥

सुमरण शोभा देह की, चलिये सुरत लगाय।
नितानन्द हर चरण में, निर्भय पहुंचो जाय ॥१२८॥
सुमरण शोभा देह की, नितानन्द कर लेह।
नातर मैल बिटम्ब है, मिले खेह में खेह ॥१२९॥
भक्ति नदी अस्नान कर, नाम नीर नित पीव।
त्रिविध ताप मिट जाहिंगे, नितानन्द सुख जीव ॥१३०॥
नितानन्द सुख नाम है, ओर सुख दुख की खान।
जहां जाये तहां काल है, बिना शरण भगवान ॥१३१॥
बिना शरण भगवान की, रे जिव कहीं न चैन।
सुमर स्नेही आपना, नितानन्द दिन रैन ॥१३२॥
नाम निरंतर सुमरते, ज्ञान प्राकशै आय।
सब घट रमता रम रहा, देखो सुरत लगाय ॥१३३॥
नाम निरंतर सुमर ले, अंतरगत लौ लाय।
नितानन्द भव फंद से, सहज मुक्त हो जाय ॥१३४॥
नितानन्द निज नाम सी, और वस्तु कछु नाहिं।
नाम मिलावे राम को, जो ठहरे घट माहिं ॥१३५॥
दुख भंजन मंजन करण, तिमर हरण हरि नाम।
ज्ञान प्राकशन सुख करण, नितानन्द भज राम ॥१३६॥
नितानन्द निज नाम सी, नहीं रसायन और।
सभै अंग कंचन करै, भजै उनमनी ठौर ॥१३७॥

नाम रसायन पीवतां, काया कंचन होय।
कुमति भरम काई करम, बहुर न लागे कोय॥१३८॥
अभिलाषा अंतर घणी, लगी राम रस प्यास।
नितानन्द सब घट रटे, पकड़ प्रेम विश्वास॥१३९॥
सभै घट हर २ कहे, बिन रसना मुख सोय।
नितानन्द आठो पहर, सहज आप ही होय॥१४०॥
मन मणका को फेर ले, सुरत सूत में पोय।
परम जाप जगदीश जप, सहज उजाला होय॥१४१॥
सभै मनुष्य रसना रटें, हृदय कोई हरिदास।
परा भक्ति तासों परे, करे नूर प्रकाश॥१४२॥
मुख से जपे सो जाप है, अन्तर अजपा ध्यान।
जीव जपे सो जोत है, नितानन्द निर्बान॥१४३॥
सुख सागर को सुमर ले, सुरत निर्त में धार।
कीट भ्रंग हो उड़ चले, नितानन्द दरबार॥१४४॥
सुख सागर को सुमर ले, नितानन्द धर ध्यान।
पहुंचे महल मुरार के, एक पलक में प्राण॥१४५॥
साहेब साहेब सुमरतें, साहेब ही हो जाये।
हर जन हर ही हो रहे, ऐसे सुरत लगाये॥१४६॥

(इति सुमरन का अंग संपूर्णम्)

# 卐 विरह का अंग ४ 卐

हर प्रीतम के नगर से, आया विरह नरेश।
नितानन्द बौरी सखी, चलो पिया के देस।।१।।
बेहदपुर-से आइयां, महलें बिरह ख्वास।
बाहें पकड़ के ले गये, सजन सेज के पास।।२।।
चलो सखी उस देश कूं, जहां बसे वह लाल।
नितानन्द सुख में रहो, नजरां नजर निहाल।।३।।
नितानन्दअब के मिलो, मिल कै करो निहाल।
मेटो वेदन अंग की, तो तुम दीनदयाल।।४।।
बिरहन पूछे बिरह से, प्रीतम के समाचार।
नितानन्द कब लग मिलें, वे सुन्दर भरतार।।५।।
नितानन्द कब लग मिलें, साहब सुन्दर नूर।
दर्शन कारण बिरहनी, मरै बिसूर बिसूर।।६।।
माया मोह मिलाप में, लाग रह्या यह जीव।
जब लग ऐसे जान ले, बहुत दूर वह पीव।। ७।।
विरह प्रेम आवे जहां, माया की नै बसाय।
हस्ती के असवार कूं, कहां कूकरी खाय।। ८।।
सजनी दूभर दिवसड़ा, रजनी घोरमधार।
आप अगमपुर बस रहे, हम पठै संसार।। ९।।

हम कूं त्याग विदेश में, कहां विलम्बे कंथ।
नितानन्द जोहै खड़ी, राम मिलन का पंथ॥१०॥
आशिक जले जहांन में, हिजर बीच बेदार।
नितानन्द उस सजन का, महल हद से पार॥११॥
बुलबुल बिछरी फूल से, फिरे खुदाई खार।
ना जानूं कब लग मिले, नितानन्द गुलज़ार॥१२॥
राम सुनो या मत सुनो, मौ बिरहिन के बैन।
दरस आस में लग रहे, नितानन्द के नैन॥१३॥
दरस आस लागी हिये, बाहर कही न जाय।
नितानन्द मेटे वही, जो कोई गया लगाय॥१४॥
कौन सुने इस पीड़ कूं, कासे कहूं सुनाय।
कहूं तो कोई समझे नहीं, ताते रही छिपाय॥१५॥
नितानन्द कासे कहूं, अपने दुःख की बात।
पीव मिले तो जीव जीये, बिना मिले मरजात॥१६॥
जिन के चित साहब चढ़े, तिन कूं और न चाह।
अष्ट सिद्ध नौ निध की, करें नहीं परवाह॥१७॥
बिरह रोग तन में बसे, रक्त मांस नित खाय।
नितानन्द वह कब मिले, बैद हमारा आय॥१८॥
नितानन्द कब लग मिले, बिरह रोग का बैद।
बैद मिले बिन बिरहनी, पड़ी प्रेम की कैद॥१९॥

हम आई उस देश से, दूर रहा वह देश।
आय पड़ी परदेस में, नितानन्द दरवेस ।।२०।।
नितानन्द लौ लग गई, फिर चलना उस देस।
अब के मिल बिछड़ूं नहीं, पग-लग रहूं हमेस।२१।।
पीव मिलन के कारने, बिरहन हुई अतीत।
नितानन्द ढूढंत फिरै, मिलो पियारे मीत ।।२२।।
भेख धरे पिव न मिले, जब लग प्रेम न होय।
प्रेम मिलावै पलक में, लहे सेज सुख सोय ।।२३।।
ब्रत नेम जप तप करे, जोग सिद्ध प्रवेस।
नितानन्द एक प्रेम बिन, दुरलभ हर का देस ।।२४।।
कठिन मिलावा पीव का, नितानन्द घर दूर।
अगम पंथ कूं चालना, गिरूं तो चकना चूर ।।२५।।
गाम गाम बूझत फिरूं, बिन नाम का गांम।
नितानन्द हम ही गई, जब पाया वह ठांम ।।२६।।
देह तमूरा हो रही, सभै रोम भये तार।
नितानन्द अचरज लख्या, प्रेम बजावन हार ।।२७।।
भौंरा वे दिन दुख के, रहे करील पर छाय।
नितानन्द वे दिन गये, कमल मिलोगे जाय ।।२८।।
जिस नगरी बालम बसें, हम उस नगर चलां।
अखियां पंख लगाय कर, सन्मुख जाय मिलां ।।२९।।
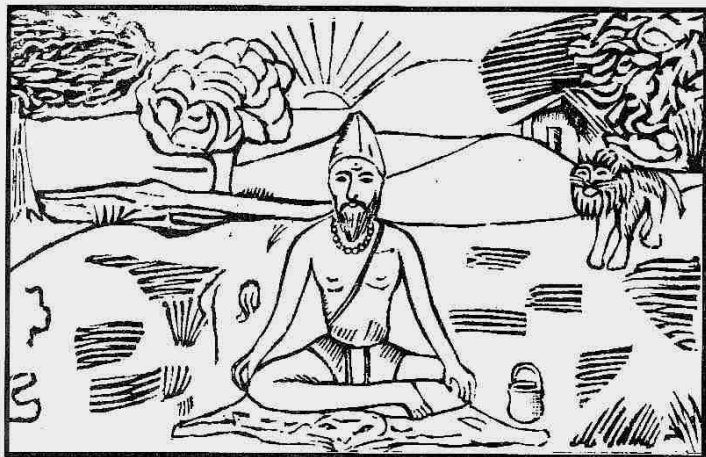
श्री स्वामी नितानन्द जी का भजन - आश्रम

एरी सखी हम क्या करें, पीव न पूंछी बात।
नितानन्द को लग रही, यही विथा दिन रात।।३०।।
मन मोहन के बिड़छने, पीली पड़ गई देह।
नितानन्द को कल नहीं, लगा नवेला नेह।।३१।।
अब के बिछड़े हे सखी, फिर कब मिल हैं जाय।
नितानन्द आतुर खड़ी, रही प्रेम लौ लाय।।३२।।
लोग सुहागन कहत हैं, पीव न पूछे सार।
नितानन्द गहली फिरे, औगन गारी नार।।३३।।
विरहन ससके अधमुई, गए पीव सुध भूल।
नहिं जीवे नहीं मर चुकी, रही अधम में झूल।।३४।।
विथा बढ़ी विरहा चढ़ी, लगी दर्श की प्यास।
नितानन्द बोरी हुई, हर बिन फिरे उदास।।३५।।
नितानन्द बिरहा बढ़ी, रही दसों दिसि घेर।
कौन छुड़ावे आय कर, बिना राम इस बेर।।३६।।
विरह घटा गहरी चढ़ी, असरु पात्र झड़ लाय।
नितानन्द चात्रक रटे, राम मिलो कद आय।।३७।।
नितानन्द चात्रक करे, स्वात बून्द की आस।
नवे न नीचे नीर कूं, बिना धरणी आकास।।३८।।
चात्रक ज्यो निशदिन रटे, बिरहीन पीव का नाम।
नितानन्द को दरश दे, तपत बुझावो राम।।३९।।

स्वात बिना सीतल नहीं, चात्रक यही स्वभाव।
नितानन्द के चित में, राम मिलन का चाव।।४०।।
रहे उदासी चित्त में, दरस पियासी राम।
नितानन्द आरत करे, ज्यों ऋतुवन्ती बाम।।४१।।
नितानन्द महबूब बिन, नहीं दिलों को चैन।
सजन हमारे कद मिलें, भर भर आवें नैन।।४२।।
बिन देखे महबूब को, चली उमर बरबाद।
नितानन्द दीदार की, दिल में लगी मुराद।।४३।।
नितानन्द आठों पहर, रहै यार की याद।
कैद फिरंगी इश्क से, कबहूं करे आज़ाद।।४४।।
बिरहन प्यासी विरह की, पीवे प्रित अघाय।
नितानन्द बैकुंठ में, कौन हमारे जाय।।४५।।
बस बैकुंठ न चाहिए, न रिद्ध सिद्ध की आस।
रहूं विरह की बंध में, कै हर चरण निवास।।४६।।
विरहन को बालम मिले, ओह ही उजार बजार।
नितानन्द जहां पीव नहीं, कहा करें गुलज़ार।।४७।।
जिस बन में प्रीतम मिले, धन्य धन्य बन सोय।
जाल करील सुहावने, रहे कल्प तरु होय।।४८।।
हम घर सावन आइयां, नैन रहे झड़ लाय।
विरह घटा को देख कर, जिवड़ा तड़फे माय।।४९।।

सावन लगे सुहावना, मन भावन जिन के पास।
जिन के बालम घर नहीं, तिन के बदन उदास ।।५०।।
हिया समन्दर उमंग कर, बहे नदी ज्यों नैन।
करम मैल सब बह गए, एक विरह में चैन ।।५१।।
तन पीरा सीरा बचन, और उनमने नैन।
जिव को जब तक लग रही, नितानन्द दिन रैन ।।५२।।
जिस घट बासा विरह का, रहै न छानी सोय।
झुरझुर पिंजर हो गई, नैन गंवाए रोय ।।५३।।
नितानन्द कैसी हुई, साहब करी न याद।
ना जानूं कब देहेंगे, चरण कमल प्रसाद ।।५४।।
नितानन्द कैसी हुई, साहब दई बिसार।
घर में परदेसी भए, औगन देख हमार ।।५५।।
नितानन्द कैसी हुई, साहब निपट कठोर।
मेरे आसा मिलन की, पिव के मन कछु और ।।५६।।
नितानन्द कैसी हुई, साहब दई न दाद।
हम को मैली देख कर, सुनी नहीं फरयाद ।।५७।।
पीव पुकारूं प्रीत से, भीतर दे दे टेर।
कौन छुटावे आय कर, बिना राम इस बेर ।।५८।।
हम मैली हर ऊजले, ताते मिले न आय।
नितानन्द बालम बिना, रोवत नैन बिहाय ।।५९।।

बालम बिछड़े हे सखी, अब लग आए नाहि।
झूर २ कर मर गई, नितानन्द मन माहिं ।।६०।।
झूर २ के विरहन मरे, बालिम किया बिछोय।
नितानन्द दुख से बनी, अब सुख होय न होय ।।६१।।
पीव विछोह सा दुख नहीं, मिले तो सब सुख होय।
नितानन्द दुख सुख यही, और न दूजा कोय ।।६२।।
जिस के मन बालम बसे, रहे न तन का नेह।
नितानन्द तज प्रेमकूं, कौन समेटे खेह ।।६३।।
मोह अजान को जान कर, आन छुटाओ पीव।
विरह विथा से तो बचे, नितानन्द का जीव ।।६४।।
लगी चटपटी चित्त में, भीतर तपे अंगार।
राम मिलन के कारने, जरूं संभार संभार ।।६५।।
चित चकमक मन पाथरी, सूरत सोखता लाय।
बिरह अग्नि उठ जल गई, रहे पीव हिय छाय ।।६६।।
पीव बिना पीरी हुई, मुई बिकल बेहाल।
नितानन्द प्रीतम मिले, तो हम लालन लाल ।।६७।।
प्रीत करी सुख जान कर, पड़ी दुःख में देह।
बिरह समुन्दर बूड़ते, सजन बांह गह लेह ।।६८।।
मनमोहन मन ले गए, प्रेम ठगोरी लाय।
नितानन्द फंधै पड़ी, प्रभुके रूप लुभाय ।।६९।।

नितानन्द की बन्दगी, कौन सुनावे जाय।
जाय सो फिर आवे नहीं, रोवत रैन बिहाय।।७०।।
जिस घट बासा बिरह का, बसै न विषय विकार।
ता बन पशु न ठाहरे, करे सिंह गुंजार।।७१।।
नितानन्द लौलीन मन, हुआ पीव के माहिं।
अब तन लोटे धूर में, भावें मन्दिर माहिं।।७२।।
राम वियोगी विकल तन, लोक लाज दी डार।
विरह बाहिं गह ले गई, जहां दरस दरबार।।७३।।
साहब हम से बिछड़ कर, तुम ही होहु निहाल।
नितानन्द जाना नहीं, मेरा हाल हवाल।।७४।।
साहब बूझो मेहर कर, मेरा हाल हवाल।
नितानन्द को दरस दे, अब कै करो निहाल।।७५।।
दूर कहूं तो निकट है, निकट कहूं तो दूर।
नितानन्द कैसे कहूं, तुम सब में भरपूर।।७६।।
मिल कर अन मिल हो रहे, मेरी कछु न बसाय।
कठिन कसौटी विरह की, साहब सही न जाय।।७७।।
अजब कसौटी विरह की, कसी आप करतार।
नितानन्द सनमुख रहो, कंचन होत न बार।।७८।।
हर हम से ऐसी करी, जैसी करे न कोय।
नितानन्द दिल देस में, रहे विदेसी होय।।७९।।

बालम बिछड़े हे सखी, रस में रोस जो पाय।
नीर न राखै मीन को, कहो मीन कित जाय॥८०॥
प्रदेसी से प्रित कर, किन्हू न पाया चैन।
नितानन्द कुछ बस नहीं, बनी बिपत दिन रैन॥८१॥
मीन न जीवे नीर बिन, जीवे नीर अधार।
नितानन्द जल में जले, धन्य २ करतार॥८२॥
बिना मिले जीऊं नहीं, मैं मीनी तुम नीर।
नितानन्द पर दया कर, तुम बिन तपै शरीर॥८३॥
विरह दिवानी बिरहनी, गई बुद्धि बौराय।
प्रित हमारे पीव की, रही कलेजे छाय॥८४॥
रही न सुध शरीर की, बिरह दई बौराय।
प्रित पुरानी समझ कर, मिलो सबेरा आय॥८५॥
दरस दिवानी बिरहनी, व्याकुल रहै हमेश।
नितानन्द को बन गया, घर ही मांहि विदेश॥८६॥
सूक २ लकड़ी भई, मिले न सींचन हार।
नितानन्द कब पाइये, जीवन प्रान अधार॥८७॥
घर ही में बन ज्यों रहै, समझ २ पछताय।
नितानन्द बिरहन वही, जिस घट बिरह समाय॥८८॥
भीतर चोट न ऊभरी, मुख से कहे बनाय।
नितानन्द बौरी सखी, पीव न परस्या जाय॥८९॥

कछुक अवगुन देख कर, साहब गही न बांहि।
नितानन्द बौरी सखी, तू हर लायक नाहिं ।।९०।।
जो बिरहन अवगुन भरी, तऊ तुम्हारी दास।
सब गुण पूरन परम गुरु, पुरबों मेरी आस ।।९१।।
अवगुण देख न छांड़िये, सब गुणबन्ते नाथ।
नितानन्द निरगुण पड़ी, पीव तुम्हारे हाथ ।।९२।।
बिरह बन्ध में पड़ गई, मैं बन्दी बेहाल।
नितानन्द के हाल पर, कीजे दया दयाल ।।९३।।
सोवत सजन न बीसरूं, जागत टेरूं पीव।
नितानन्द दर्शन बिना, बिकल हमारा जीव ।।९४।।
नितानन्द आशिक हुआ, लगे पियारा लाल।
चौदह तवक बहिश्त लौ, सभै यार का ख्याल ।।९५।।
नितानन्द आशिक हुआ, रहा रब्ब से लाग।
सब दुनिया की साहबी, दिल में दीखे दाग ।।९६।।
इश्क पियारा आश्कां, खुशी देख दीदार।
अजमत एश जहान की, पिव पर डारूं वार ।।९७।।
नितानन्द कैसे मिले, वे दिलवर दिलदार।
जिस की सूरत अजब है, मुये जिवावन हार ।।९८।।
विरह प्रेम का अमल पी, मन पिंगल हो जाय।
मतवाला हो छिक गया, रहा राम लौलाय ।।९९।।

नितानन्द मन गल गया, विरह हिमाला देख।
अचल हुआ जीवत मुआ, मिल गया पीव अलेख ॥१००॥
विरह अग्न की तपत से, मन के जले विकार।
नितानन्द पिंगल हुआ, पड़्या पीव के द्वार ॥१०१॥
नितानन्द जागै धनी, सोवै सब संसार।
विरही जागे दरद से, घायल करे पुकार ॥१०२॥
विरही जन जीवै नहीं, जीवै तो हो मस्तान।
नितानन्द मन मर गया, मिले पीव में प्रान ॥१०३॥
विरह भवंगं जो डस्या, सो जीवत मर जाय।
ज्यों कह २ के पार से, सकै न उलटा आय ॥१०४॥
नितानन्द जीवै नहीं, बिन देखे दीदार।
भीतर से घायल हुआ, लगी चश्म तलवार ॥१०५॥
नितानन्द कैसे गहूं, हर प्रितम के पांव।
बहुत दिनों से लग रहा, सजन मिलन का चाव ॥१०६॥
नितानन्द साहेब मिले, तो ही बड़े सुख होय।
पिव बिन दिल में दरद है, रही गरद-सी होय ॥१०७॥
नितानन्द महबूब बिन, दिल का दरद न जाय।
ना जानू कद लग मिलें, मेहर लहर से आय ॥१०८॥
नितानन्द वह कद मिलै, जिस की मेरे प्यास।
बिन देखे महबूब के, आठों पहर उदास ॥१०९॥

दिलबर के दीदार बिन, नितानन्द दलगीर।
खुशदिल हो हिल मिल रहौ, करो माफ तकसीर ॥११०॥
नितानन्द दिल में दुखी, मुआ पुकार पुकार।
बिन देखे जीऊं नहीं, पड़ा तुम्हारे द्वार ॥१११॥
नितानन्द वह कद मिले, मिल कर बिछड़े नाहिं।
क्षीर मिला ज्यों नीर में, नीर छीर के माहिं ॥११२॥
नितानन्द वह कद मिलै, मिला मिलाया लाल।
जब लग परदा बीच में, लगा बिरह जंजाल ॥११३॥
नितानन्द वह कद मिले, जिस में दिल मिल जाय।
जैसे लहर समुद्र की, उलट समुद्र समाय ॥११४॥
हर हम से कद लग मिले, यही रैन दिन चाह।
नितानन्द को त्यार लो, बिरह समन्दर अथाह ॥११५॥
नितानन्द मसकीन पर, तुझ जालिम का जोर।
बिना मेहर मर जायगा, बंधा इश्क की डोर ॥११६॥
शब्द संदेसा आइयां, बालम मिले न आय।
नितानन्द दुख बन गया, सुख को मत पछताय ॥११७॥
नितानन्द दुःख पीव का, सब सुख करने हार।
एक पलक की विरह पर, त्रिभवन डारूं वार ॥११८॥
पंथ पियारा पीव का, चली रैन दिन जांव।
तब लग बसू न बीच में, जब लग पहुंचू गांव ॥११९॥

नितानन्द उस देश में, चलना मुझे जरूर।
जहां अशिक अल्लाह के, करे नजारा नूर ॥१२०॥
जहां मिलूं महबूब से, उसी मुल्क का चांव।
सुन्दर दरशन देख कर, लगी रहूं नित पांव ॥१२१॥
हम को दुख दीदार का, दरद दरुने माहिं।
नितानन्द दरशन मिले, तो हमसा सुखिया नाहि ॥१२२॥
नितानन्द को दरस दे, मेटो विरह वियोग।
हम नालायक सदा के, साहेब जोगा जोग ॥१२३॥
राज साज नहीं चाहिये, न स्वर्ग भवन का बास।
नितानन्द तुम बिन दुखी, झूठा भोग बिलास ॥१२४॥
विरह प्यासी बिरहनी, चाहे चरन निवास।
चरन कमल बिन क्यों रहे, चरन कमल की दास ॥१२५॥
विरहन चाहै विरह को, कै चाहै दीदार।
माल मुल्क धन संपदा, कौन धरे सिर भार ॥१२६॥
सजन बिछोही नारियां, जिन की दूभर रात।
नितानन्द कैसे मिले, चकवी बिन परभात ॥१२७॥
चकवी बिछड़ी रैन की, सूर उगै मिल जाय।
जासे साहब बीछड़ै, जन्म जन्म पछताय ॥१२८॥
नितानन्द चकवी मिली, गया रैन का सोग।
राम मिले तो सब मिटे, जन्म मरण का रोग ॥१२९॥

नितानन्द चकवी कहे, विरह बिथा की बात।
निस बिछोह की कद मिटै, मिले पीव प्रभात ॥१३०॥
विरहन बौरी हो रही, पीव मिलन के काज।
नितानन्द जीवै नहीं, बिछड़ गये महाराज ॥१३१॥
नितानन्द जीवै सदा, साहेब नैन निहार।
बिन देखे मर जायगा, नातर देओ दीदार ॥१३२॥
साहेब देखूं नैन भर, ऐसा दिन कद होय।
नितानन्द दिल चाव है, पीव मिलन का मोय ॥१३३॥
पीव बिछोह न सह सकूं, मैं अबला बलहीन।
विरह बन्ध में बिकल हूं, रहूं प्रेम लौ लीन ॥१३४॥
नैन हमारे पीव बिन, आठों पहर उदास।
नितानन्द भूलूं नहीं, लगी दर्श की प्यास ॥१३५॥
भीतर रोऊं धाह दे, भीतर करूं पुकार।
नितानन्द भीतर कटे, लगी विरह तलवार ॥१३६॥
दिल अन्दर आशिक करे, आठ पहर फरयाद।
नितानन्द ये जिन्दगी, बिना मिले बरबाद ॥१३७॥
विरह समन्दर जो पड़े, सो फिर निकसै नाहिं।
राम निकासैं आय कर, नातर बूड़े माहिं ॥१३८॥
बूड़ गए सोई तरे, अजब विरह दरियाव।
नितानन्द डर दूर कर, धरो प्रेम में पांव ॥१३९॥

विरहन मारी विरह की, जिवै के जीवै नाहिं।
नितानन्द अब कै बचे, तो चलैं अमरपुर माहिं ॥१४०॥
नितानन्द विरही मनुष्य, कदे न जीवै कोय।
जो जीवै इस विरह में, सोई चिरंजी होय ॥१४१॥
नितानन्द विरही मनुष्य, कदे न जीवै एक।
जीवै तो गहला हाये रह, या में मीन न मेख ॥१४२॥
नितानन्द जीवै नहीं, विरह दिवाना जीव।
जीवै तो पहुंचै अमरपुर, होय पीव मिल पीव ॥१४३॥
मौला मालिक महल के, मिलयो दीनदयाल।
नितानन्द द्वारे खड़ा, दर्शन का कंगाल ॥१४४॥
विरहिन डोले ढूंढ़ती, कहां पीव का बास।
नितानन्द को दरश दो, जन्म २ का दास ॥१४५॥
पीव बिछोही विरहनी, सदा निहारे पंथ।
नितानन्द कद मिलोगे, खरे पियारे कंथ ॥१४६॥
आप अगमपुर बस रहे, नूरी नूर नरेश।
नितानन्द को दे गए, विरह शब्द संदेश ॥१४७॥
हर से हिल मिल खेलिये, कद आवै वह रैन।
नितानन्द बालम बिना, लगा विरह दुख दैन ॥१४८॥
प्रीतम परदेसी भए, गये विरह तन लाय।
नितानन्द दुख से बनी, सुख को मत पछताय ॥१४९॥

साहिब वै दिन कित गये, हम तुम अन्तर नाहिं।
अब तो रैन बिछोह की, कलप बराबर जाहिं ॥१५०॥
रैन गमाई दुख से, नैन गमाए रोय।
नितानन्द पाया नहीं, जिस देखे सुख होय ॥१५१॥
जिस देखे सुख होत है, मो पावे वह यार।
नितानन्द सदके करूं, अपना सीस उतार ॥१५२॥
बैरन विरहा आये कर, किया जीव बेहाल।
नितानन्द आया नहीं, वह लालन का लाल ॥१५३॥
लाल बिना निकसै नहीं, कठिन विरह का साल।
नितानन्द पर दया कर, दरशन देहों दयाल ॥१५४॥
लाल बिना जंजाल है, दुनिया दौलत माल।
विरहा को भावै नहीं, झूठा खाब खयाल ॥१५५॥
मिले सहीदी साहबी, जन्नत हूर जमाल।
नितानन्द महबूब बिन, आशिक नहीं खुशहाल ॥१५६॥
प्रीतम प्यारे लाल का, किस विधि दर्शन होय।
नितानन्द के दिल बसै, वह खूबी खसबोय ॥१५७॥
नितानन्द प्रीतम मिलै, सौ जीवन जग माहिं।
जीवन मरण समान है, जब लग दरशन नाहिं ॥१५८॥
नितानन्द महबूब बिन, मुझे न भावे ओर।
ना जाने कब लग मिले, वह बेदरद कठोर ॥१५९॥

नितानन्द के एक तुम, थारे मित्र किरोर।
एकै साजन चन्द्र को, चितवें कई चकोर ॥१६०॥
मोहन मारे मेहर से, प्रेम प्रीत के बान।
नितानन्द मृतक जीवै, विरह सुख की खान ॥१६१॥
बहै न मन संसार में, रहे न देह सुभाव।
कहे न बातां जीव की, पीव मिलन का चाव ॥१६२॥
उलट गई मन वासना, पलट चली पिव ओर।
नितानन्द दिल में उठी, ऐसी प्रेम हिलोर ॥१६३॥
इश्क रब्ब की मेहर है, इश्क रब्ब की याद।
इस दुनियां की कैद से, करे इश्क आजाद ॥१६४॥
नितानन्द छूटे नहीं, लगी लगन दिल माहिं।
तजै न दर दरबार का, तुझ बिन जीवै नाहिं ॥१६५॥
नितानन्द जग फंद से, कद छुटकारा होय।
कब वह प्रीतम पाइये, सजन सिलोना सोय ॥१६६॥
नितानन्द कुछ ना बनी, जिस पर रीझे यार।
बिन देखे मर जायगा, पीव पुकार-पुकार ॥१६७॥
विकट बाट पीव मिलन की, कोट जुगों में जाय।
विरह मिलावै पलक में, जिस घट प्रगटे आय ॥१६८॥
नितानन्द इस विरह की, बड़ी तेज तलवार।
बहती दीखे जीव पर, मन को डाले मार ॥१६९॥

नितानन्द आशिक हुआ, इश्क तौक गल माहिं।
पड़ा तुम्हारी कैद में, छुटे के छुटे नाहिं ॥१७०॥
नितानन्द उस पीव की, सुनी खूब खसबोय।
भंवर भया तब ते भरमै, राम मिलावे कोये ॥१७१॥
विरह अग्नि ज्यों २ बढ़ै, चढ़ै रंग पर रंग।
नितानन्द-कंचन तपै, त्यों २ उज्वल अंग ॥१७२॥
विरह अग्नि में जल गई, दुख की चिता बनाय।
नितानन्द उस सजन ने, बात न पूंछी आय ॥१७३॥
विरहन बौरी होय कर, तजी जगत की लाज।
जगत निलज से को डरे, मिलो गरीब निवाज ॥१७४॥
मिलूं आप से आय कर, मुझ में सो बल नाहिं।
बिना मिले विरहन दुखी, मिलो आय गलबाहिं ॥१७५॥
नितानन्द जाना मुझे, जहां सिलोना लाल।
जिस की शोभा देख कर, दिल में रहूं खुशहाल ॥१७६॥
लाज राख त्यागूं विरह, कौन काज सो लाज।
नितानन्द जल जाय सब, जो पावे महाराज ॥१७७॥
नितानन्द पीव मिलन का, लगा उमाहा मोहय।
बिना मिले सरता नहीं, जो कुछ होय सो होय ॥१७८॥
नितानन्द बालम बिना, हम से रहा न जाय।
नगर सवेरा पहुंचना, विरह प्रेम लौ लाय ॥१७९॥

आशिक को माशूक बिन, सब जग लगे उदास।
रहे इश्क की कैद में, के हर चरण निवास ॥१८०॥
इश्क जगावै दरद को, दरद जगावै प्यार।
प्यार जगावै प्रीत को, मिले यार से यार ॥१८१॥
इश्क जगावै दरद को, दरद जगावै जीव।
जीव जगावै प्रेम को, होय पीव मिल पीव ॥१८२॥
विरह उठावै प्रीत को, प्रीत प्रेम प्रकास।
प्रेम मगन लौलीन होय, गये पीव के पास ॥१८३॥
प्रगटे आगम विरह का, पीछे लगन लगाय।
प्रेम प्रित लौ में मगन, मिलो सबेरा जाय ॥१८४॥
आशिक को मासूक बिन, नहीं दूसरी प्यास।
नितानन्द दीदार का, दिल में बड़ा हुलास ॥१८५॥
नितानन्द उस पीव का, विरह प्रेम पैगाम।
पहले प्रीत बड़ाये कर, बहुर मिलावे राम ॥१८६॥
इश्क आय कर ले गया, जहां आप महबूब।
आशिक मासुक हो गया, हुआ तमासा खूब ॥१८७॥
राम रूप विरहन भई, विरह रूप भया राम।
नितानन्द घर प्रेम के, बिना विरह क्या काम ॥१८८॥
विरह सबेरा ले मिलै, सुमरण सहज समाय।
दोनों मार्ग महल के, नितानन्द दिल लाय ॥१८९॥

नितानन्द दरगाह में, देख्या इश्क खवास।
महल फरिश्ते मंजली, बसैं नूर के पास ॥१९०॥
विरहन भूली जुगों की, बिछड़न बेला नाह।
एक पलक में मिल गई, पकड़ प्रेम की राह ॥१९१॥
विरहा बुरा न जानिये, विरह बड़ाई जोग।
बिना विरह कहां पाये, अमी महा रस भोग ॥१९२॥
नूर तेज की सेज पर, विरह सहेली जाय।
बहुत सखी हम देखते, ले गई संग लगाय ॥१९३॥
नितानन्द चल प्रेम से, विरह बिहंगम चाल।
आगे मारग मेहर का, नजरां नजर निहाल ॥१९४॥
नितानन्द पीव घर चलो, तज दुनयिां का हेत।
पांच सखी पछताय कर, विरह बधाई देत ॥१९५॥
नितानन्द इस विरह का, निपट अटपटा ख्याल।
लाल विरहनी कर दिया, विरहन कर दई लाल ॥१९६॥
बर्षा बादल विरह का, कट गये काल कंलक।
नितानन्द परदा खुला, विरहन हुई निशंक ॥१९७॥
विरह जगाई सोवती, विरहन ऊठी जाग।
नितानन्द पीव निरख कर, रही चरन से लाग ॥१९८॥
प्रीतम के पग परस कर, विरहन हुई निहाल।
नितानन्द तृष्णा बुझी, मिला अमोला लाल ॥१९९॥

विरह बधाई बज रही, भाज गया कर्म काल।
मेहर मेघ होय बरसियो, हम घर दीनदयाल ॥२००॥
नितानन्द की सुरत में, सदा तुम्हारी प्यास।
कृपा करके दीजिये, चरन कमल में बास ॥२०१॥
नितानन्द की बन्दगी, सुनो परम गुरुदेव।
राख लेहो दीदार में, चरन कंवल की सेव ॥२०२॥
साहेब तेरी शरन में, तूं साचा भरतार।
अब के भव जल बूड़ते, नितानन्द कूं त्यार ॥२०३॥
साहेब वह दिन अजब थे, हम तुम अन्तर नाहिं।
अब दरशन बिन दुख बना, राख लेहो गह बाहिं ॥२०४॥
साहेब मेरा एक तूं, सुन्दर सजन सुजान।
नितानन्द की बन्दगी, कदे तो करियो कान ॥२०५॥
नितानन्द के दरद को, तुम देखो जगदीस।
चरन कमल की खेह में, रहे हमारा सीस ॥२०६॥
नितानन्द घर बरसियो, साहब दीनदयाल।
अब के मिल मत बिछड़ीयों, नजरां नजर निहाल ॥२०७॥

(इति विरह का अंग संपूर्णम्)

# 卐 परचा का अंग ५ 卐

अगम धाम अनहद पुरी, चहुं दिस चमकें तेज।
नितानन्द आनन्द से, निरख नूर की सेज।।१।।
नितानन्द प्रीतम मिले, जागे मस्तक भाग।
अनन्त भवन के राव से, लगी हमारी लाग।।२।।
नितानन्द प्रीतम मिले, गहे चरन हम जाय।
असंख जुगों के बीछड़े, पल में लीये मिलाय।।३।।
नितानन्द प्रीतम मिले, धर्‍या चरन मैं सीस।
भवन उजाला हो रह्या, जब चमके जगदीस।।४।।
नितानन्द प्रीतम मिले, सफल जन्म भया आज।
राम गुमानी जगमगे, स्वामी जी महाराज।।५।।
नैनों आगे देखियां, सोई नैनां माहिं।
सोई घट २ रम रहा, नितानन्द हम माहिं।।६।।
नितानन्द पीव के महल, अजब अनुपम खेल।
जग मग जग मग हो रही, बिन बाती बिन तेल।।७।।
मींहिं महल महबूब का, मतवालों की राह।
सिर उतार सदकै करे, निरखे नूर निगाह।।८।।
रिद्ध सिद्ध बैकुंठ की, पल भर करें न चाह।
नितानन्द दर्शन हुआ, नहीं और परवाह।।९।।

छवि निहार के छिक रही, मिले छबीले कंथ।
रूप लुभानी सुन्दरी, उर में बनी बसंत ।।१०।।
बिन ही नैनों निरखना, मन मोहन सुख देन।
बिन ही मुख बतरायबो, नितानन्द दिन रैन ।।११।।
पग बिन चल पीव परसिये, बिना अंग मिल संग।
बिना श्रवण धुन सुनत है, अनहद अगम उमंग ।।१२।।
आप २ में बोलता, जपे आपना जाप।
आप आप कूं देख कर, हो गया आपै आप ।।१३।।
मैं नाहीं अब है वही, मैं जित वह कित होय।
नितानन्द इक नगर में, कहां बसैं नृप दोय ।।१४।।
हम नाहीं तो हर नहीं, जो हम तो हर होय।
नितानन्द इस भेद कूं, समझै विरला कोय ।।१५।।
नितानन्द पीव महल की, निपट दुहेली बाट।
अनल पंख उलटे चढ़े, लंघ गये औघट घाट ।।१६।।
नितानन्द आवो करां, उसी महल की सैल।
कहन सुनन में ना लखे, अकह कहन का खेल ।।१७।।
साहेब की छवि निरख के, सुख में रहे समाय।
बूंद समुन्दर मिल गई, अब कुछ कहा न जाय ।।१८।।
मिल के बूंद समन्द्र से, उलट न आई कोय।
नितानन्द फिर क्या कहे, रही समन्दर होय ।।१९।।

नितानन्द अचरज नहीं, बूंद समन्द्र समात।
समन्द्र समाया बूंद में, यह अचरज की बात ।।२०।।
जीव ही माहिं पीव मिला, जीव हो गया पीव।
नितानन्द मैं मिट गई, वही पीव वही जीव।२१।।
नूण मिले ज्यों नीर में, आपा धरे उठाय।
नितानन्द उस पीव में, ऐसे रहे समाय।।२२।।
शब्द अनाहद श्रवण सुनि, हुई सुरत गलतान।
नितानन्द मालिक मिले, कीया सुन्य मुकाम।।२३।।
पिया प्याला प्रेम का, अधर धार-धर ध्यान।
गगन मंडल आसन किया, मिल गया पीव सुजान।।२४।।
नैन मई तन मन हुआ, साहब की छबि ऐंन।
नितानन्द आनन्द में, रहो दिवस और रैन।।२५।।
अधर आस आसन अधर, अधर धरणि बिन थाम।
अधर सेज बर तेज का, नितानन्द विश्राम।।२६।।
जहां चमका तेज का, जगमग जोति अपार।
मिले रहो उस महल में, नितानन्द सरसार।।२७।।
जिस नगरी बेगम बसे, बसे सो बेगम होय।
नितानन्द उस नगर में, चतुर न पहुंचे कोय।।२८।।
नितानन्द उस नगर में, बसें दिवाने लोग।
पल २ निरख अलख कूं, करैं नूर का भोग।।२९।।

अनभव तें सुख ऊपजे, गए पीव के देस।
चरण कमल की मौज में, रहणा हुआ हमेस॥३०॥
अनभव तें आनन्द हुआ, पाया निर्गुण बास।
नूर तेज में मिल गए, नितानन्द हरदास॥३१॥
अनभव बानी संग ले, गए हद्द से पार।
नितानन्द बेहदपुरी, मिला हमारा यार॥३२॥
अनभव बानी महल में, चढ़ी लाय कर संग।
उड़ी विहंग आकाश कुं, जाय बिलम्बया अंग॥३३॥
जहां के थे पहुंचे तहां, दुनिया हुई विदेश।
राख लिये दीदार में, नितानन्द दरवेश॥३४॥
फिर नहीं पीहर आवना, बसी पीव के गाम।
नितानन्द छूटे नहीं, अजब अनोखा ठाम॥३५॥
भवन भान परगट भया, मिटा तिमर अज्ञान।
नितानन्द घट पट खुला, प्रीतम लिया पिछान॥३६॥
रूप लुभानी सुन्दरी, देखे भर २ नैन।
नितानन्द दीदार में, मगन रहै दिन रैंन॥३७॥
सुन्दरी सूती जुगों की, प्रीतम ली जगाय।
देख तमाशा गैब का, रही चरण में छाय॥३८॥
जित देखूं तित रम रहा, पलक न छोड़े साथ।
होत न न्यारा नैन से, अन्तर जामी नाथ॥३९॥

यह छबि हिवड़े बस गई, देखत मन न अघाय।
नितानन्द साजन मिले, मांगे मुक्ति बलाय।।४०।।
निरन्तर नीड़े रहे, पीव हमारा सोय।
नितानन्द दर्शन करे, रूम २ सुख होय।।४१।।
निरन्तर नीड़े रहे, निर्गुण रमता राम।
पुर पट्टन सूबस बसे, नितानन्द मुक्काम।।४२।।
निरन्तर नीड़े रहे, झीना झिलमिल कंथ।
नितानन्द उस नगर में, बारहै मास बसंत।।४३।।
निरन्तर नीड़े रहे, काल कर्म से दूर।
घट भीतर पट खुल गए, नितानन्द भरपूर।।४४।।
तेज पुंज का वर मिला, तेज पुंज की नार।
तेज पुंज के महल में, नितानन्द दीदार।।४५।।
दसों दिसा दीपक बलें, बिना अग्नि उज्जास।
निरख नैन के नैन से, नितानन्द निज दास।।४६।।
एक रूम के तेज में, सुरज कोट अनन्त।
ऐसी छवी उस पीव की, नितानन्द बे अन्त।।४७।।
बिना चन्द जहां चादना, नित प्रकाश बिनसूर।
झिलमिल २ हो रही, अजब रोशनी नूर।।४८।।
नितानन्द रवि चन्द की, कहन मात्र है बात।
नूर तेज महबूब का, मुख से कहा न जात।।४९।।

दृष्टि माहिं एक दृष्टि है, सकल सृष्टि के पार।
आगे अगम अलेख है, नितानन्द करतार।।५०।।
नैन खोल कर देख ले, साहेब सुन्दर नूर।
दिव्य दृष्टि के निकट है, चर्म दृष्टि से दूर।।५१।।
नितानन्द हर केतगी, भंवर हमारा जीव।
मग्न रहे खसबोय में, मिला पियारा पीव।।५२।।
भंवर विलंब्या फूल पर, हुआ स्याम से श्वेत।
नितानन्द भरम मिट गया, मग्न हुआ रस लेत।।५३।।
भीतर फूली केतगी, भंवर करे आनन्द।
नितानन्द उज्जवल हुआ, पीवे मेहर सुगन्ध।।५४।।
भीतर फूली केतगी, बाणी उठी सुवास।
नितानन्द खुसबोय में, भौंरा करे विलास।।५५।।
बिना नाम के गांव में, नितानन्द गरकाब।
नितानन्द कहता डरे, चढ़े सवाई आब।।५६।।
नितानन्द लागै नहीं, जहां काल का बान।
रहे रोशनी नूर की, सदा अमर अस्थान।।५७।।
रहे रोशनी नूर की, सदा अमर दरबार।
नितानन्द दिल लग गया, मिल्या रंगीला यार।।५८।।
जो पहुंचे घर प्रेम के, रंगे रंग में रंग।
नितानन्द तन पलट कर, हुआ कीट से भृंग।।५९।।

मिल मुरार दुबध्या गइ, मिटे अंदेशे और।
नितानन्द खुशदिल रहो, यही मरम की ठौर॥६०॥
बिना नींम का देहरा, तहां देव निराकार।
नितानन्द आठों पहर, तहां आरती उतार॥६१॥
घंटा झालर संख धुन, बजे अनाहद नाद।
ध्यान धूप महक्के तहां, धरे प्रेम प्रसाद॥६२॥
भाव भक्ति की आरती, काया कंचन थाल।
तामे दिवला ज्ञान का, दिया प्रेम प्रज्वाल॥६३॥
पांचो पाती चढ़ गई, पहुप प्रीत के लाय।
हार हेत के गूंथ कर, नित्य प्रति पहराय॥६४॥
चित चेतन चन्दन चढ़े, केशर सुमति स्वरूप।
परा भक्ति के कलस भर, पूजा रची अनूप॥६५॥
मन मरदंग गति सों बजे, अखंड आरती होय।
नितानन्द साधू करें, तहां न देखे कोय॥६६॥
तहां प्राण अस्तुति करे, पद माहिं समाया।
नितानन्द बिछड़े नहीं, सुख सागर पाया॥६७॥

(अथ फारसी की साखी)

दिल अन्दर दरगाह है, तहां तखत इलाही।
जहां हरदम सिजदा करें, आशिक अरवाही॥६८॥
रोशन कुर्सी अरस की, अल्लाह उलेखा।
घट २ में मौजूद है, देखा जिन देखा॥६९॥

हौज हजूरी वसल का, जहां गुसल हमारा।
वजू किया बकुफ से, दायम दरबारा ।।७०।।
पांच पचीस जमात कर, सब साथ लगाये।
मसजिद मौला महेर में, हिल मिल कर आए ।।७१।।
मुल्ला इमाम ईमान है, सारों से आगे।
इश्क निवाज गुजारनी, हर दम दिल लागे ।।७२।।
दम दम रहना दीद में, जब लग जी जीवे।
अमी महोब्बत यार की, कोई विरला पीवे ।।७३।।
दायम दिल साबित रहे, हर वक्त हजूरी।
पांच ही बेर निवाज पढ़, क्यों रहिये दूरी ।।७४।।
यह तो धंधा देह का, वह इश्क अनोखा।
बाहर की बरवाद है, जो दिल में धोखा ।।७५।।
अन्दर सीना साफ कर, दिल से दिल लाया।
सिर लगाय सिजदा किया, जब दिलवर पाया ।।७६।।

(इति फारसी की साखी)

जहां साहेब तहां मैं नहीं, मैं जहां साहेब नाहिं।
नितानन्द उस महल में, दोनों कहां समाहिं ।।७७।।
पवन गमन नहिं कर सके, बचन प्रवेश न होय।
त्रिगुण परे निर्गुण महल, नितानन्द सुख सोय ।।७८।।
पांच तत्त्व गुण तीन से, अगम प्रेम की पौर।
नितानन्द सुख सिन्धु में, मिले रहो उस ठौर ।।७९।।

जीव जन्तु की गम नहीं, नाह कोई देवी देव।
नितानन्द उस महल में, करो चरन की सेव ।।८०।।

(अथ फारसी की साखी)

आफताब खुरसैद का, जहां नहीं गुजारा।
सुबह शाम नहीं रोज शब, नहीं अरस सितारा ।।८१।।
हिरस हवा दुनिया नहीं, जहां यार ही यारा।
नितानन्द उस शहर में, मुक्काम हमारा ।।८२।।
जब लग हिजर जुदायगी, रोजे दरवेशां।
कशिश हवास और-हिरस की, दिल कब्वज हमेशां ।।८३।।
ईद अजायब अरस की, दिल पढ़े दुगाना।
नितानन्द रहो सिरर में, सर मस्त दिवाना ।।८४।।
आमद ईद मुबारकी, महबूब नजारा।
नितानन्द तन शहर में हर तरफ बहारा ।।८५।।
बाग बोस्तां, बे वहा गुल गुल गुलजारी।
नितानन्द कुछ अजब है, बकरीद हमारी ।।८६।।
नितानन्द खुद फनाकर, पुलाब पकाई।
पहुंचे आलम बका में, बकरीद मनाई ।।८७।।
देह दरुने दर्द से, दिल बीच सफाई।
नूर तेग ले दस्त में, है दोष मचाई ।।८८।।
जिगर जिनाजा कर चले, तन गोर बनाया।
दरिया दर दीदार में, ले जाय बहाया ।।८९।।

जारी से फारिग हुवे, गुजरी दलगीरी।
पढ़े फातियां खैर की, बेफिकर फकीरी ॥९०॥
जीवत मुए जहान से, आशिक रब्बानी।
शुकर शहीदी साहेबी, माशूक मुकानी ॥९१॥
नितानन्द खुश दीदनी, सो दहे हमारे।
है मौजूद बजूद में, वह साहब सारे ॥९२॥
शबो रोज शादी रहे, शुबरात हजूरी।
अजब तमाशा गैब का, देखे दिल नूरी ॥९३॥
आतिश बाजी अरस में, देखी गुलजारी।
हिरस हवाई उड़ गई, चमकी चिंगारी ॥९४॥
छुटे तेज की तुंमड़ी, हथ फूल हजारा।
गफलत सब आखिर हुई, आशिक बे दारा ॥९५॥
शाम चिराग शफ़कती, गुल छुटे गुलाबी।
मेहर महब्बत यार की, रोशन महताबी ॥९६॥
हलवा हुसन जमाल का, दे सालिक खूबां।
अमी नियामत खुरदनी, करते माजूबां ॥९७॥
नितानन्द शबरात है, जहां आप इलाही।
करें नजारा गैब का, फक्कर लिल्लाही ॥९८॥
बेमहरम मुरदार है, हिरस हवा दरपेस।
नितानन्द साहेब मिले, जिन्द पीर दरवेस ॥९९॥

(इति फारसी)

एक देश हम देखियां, जहां चन्द नहिं सूर।
नितानन्द उस देश में, रिम झिम बरसे नूर ॥१००॥
एक देश हम देखियां, जहां न धरनि आकाश।
नितानन्द बरसै अमीं, छः ऋतु बारह मास ॥१०१॥
वार पार सूझे नहीं, कहन सुनन में नाहिं।
देख दिवाने हो रहे, नितानन्द दिल माहिं ॥१०२॥
जहां देखूं तहां आप है, आपा परलै यार।
जहां तहां आगे खड़ा, नितानन्द दिलदार ॥१०३॥
शोभावन्त सुहावना, सुन्दर सब ही अंग।
पहुंपवास सेपातला, सदा हमारे संग ॥१०४॥
नितानन्द भव सिन्ध से, भेरा उतरिया पार।
देख्या देश दयाल का, मिले दरस दरबार ॥१०५॥
देश हमारे पीव का, भवसागर से पार।
नितानन्द उसदेस के, यहां आये दिन चार ॥१०६॥
नितानन्द घर अमरपुर, प्रीतम मिले मुरार।
दुनियां पीहर दुल्हनी, देख चली दिन चार ॥१०७॥
अली भली फूली कली, रली रसीली प्यार।
दुल्हन दूल्हे से मिली, सदा मंगलाचार ॥१०८॥
नितानन्द महबूब का, दिल अन्दर दीदार।
उलट अपूठा देख ले, उर के नैन उघार ॥१०९॥

भीतर दर्शन देख ले, बाहर कूं मत जाह।
नितानन्द प्रीतम मिले, अमरपुरी की राह ॥११०॥
हंसा न्हाया हेत से, त्रिवेणी के तीर।
नितानन्द निर्मल हुआ, पीवै सुधा समीर ॥१११॥
नितानन्द मोती चुगै, कागा हंसा होय।
मानसरोवर मिल गया, कुमत कालमां धोय ॥११२॥
जीव हंस दरियाव दिल, जहां मोती महबूब।
नितानन्द खुसियां हुई, मिली खुर्दनी खूब ॥११३॥
हर दरियाव निहार कर, हुआ हुंस कूं चैन।
मुक्ता हल चुग छिक गया, मगन रहे दिन रैन ॥११४॥
नितानन्द दरियाव में, मोती का बासा।
जीवत मरजीवा हुआ, जब रतन निकासा ॥११५॥
नितानन्द महबूब का, अजब अनोखा गांम।
फिरैं पियाले नूर के, आसक महल मुकाम ॥११६॥
नितानन्द महबूब का, अजब सलौना नूर।
प्रेम पिलावे प्रीति से, आशिक अरस हजूर ॥११७॥
नितानन्द महबूब पर, देखी अजब बहार।
सुन्दर सदा सुहावना, दिलवर का दीदार ॥११८॥
नितानन्द महबूब कूं, भर २ नैन निहार।
दरस भया संसा गया, प्रीतम किया प्यार ॥११९॥

नितानन्द सुख में रहो, प्रीतम के पग लाग।
दिल का धोखा मिट गया, प्रगटे पूरण भाग ॥१२०॥
दीनदयाल दया करी, दिया दरद मिटाय।
नितानन्द अपना किया, चरण कमल से लाय ॥१२१॥
दरस देख दिल लग गया, अब होय न न्यारा।
नितानन्द आनन्द हुआ, घर मांह मंगल चारा ॥१२२॥
सजन सुरंग सुघड सरस, निरखै निसतारा।
प्रीतम मिला सुहावना, यह कंथ हमारा ॥१२३॥
निरंकार निःचल अटल, सो अधर अधारा।
पहुप वास से पातला, पल टरै न टारा ॥१२४॥
सर्वसंगी सुभाग, जगमग उजियारा।।।
घट २ रमता लख लिया, खुल गये किवारा ॥१२५॥
निरंकार निःचल अटल, सो अधर आधरा।
नितानन्द आपै किया, सब सकल पसारा ॥१२६॥
गगन गरज बरषै सुधा, दामनी दमकारा।
नित प्रति पीवै प्रीत से, चात्रक मतवारा ॥१२७॥
गगन गरज बरषै सुधा, निपजें हीरालाल।
नितानन्द पाई प्रगट, पूरबली टकसाल ॥१२८॥
नितानन्द गरजै गगन, दामनी दमक दयाल।
मेहर मेघ वरषै सदा, हर जन होय निहाल ॥१२९॥

नितानन्द गरजे गगन, बरसे झिलमिल नूर।
प्रेम लहर पल २ उठें, शब्द सिन्ध भरपूर ॥१३०॥

चतुर स्थान वर्णन

प्रथम ज्ञान हृदय धरो, तजो कुमत अज्ञान।
पशु प्राण कूं नर करे, सत्य असत्य पिछान ॥१३१॥
यह जग देखे सुपन वत, शुभ अशुभ जिय जान।
लख अनीत सब परहरे, करे नित्य प्रमाण ॥१३२॥
सकल त्याग चेतन रहे, मैं मेरी से दूर।
सदा सुरत हरि ध्यान में, भाव भक्ति भरपूर ॥१३३॥
तन सुबुध मन थिर करे, निसदिन ब्रह्म विचार।
गिने बटाउ बाटके, कुल कुटुम्ब परिवार ॥१३४॥
अगन गगन पानी पवन, चंद सूर घर मांहि।
देखे सूरत पीव की, दूजा कोई नांहिं ॥१३५॥
आठ पहर अस्तुति करे, अन्तर मांहिं पुकार।
विरह बिथा व्याकुल रहे, ज्यों ऋतुवन्ती नार ॥१३६॥
तेज पुंज ब्रह्मांड का, प्रगट देखया नयन।
पद पंकज के आसरे, नितानन्द सुख चैन ॥१३७॥
चहुं दिस चेतन चांदणा, हैं चतुरथ अस्थान।
मार्ग महल मुरार के, बिरला पावै जान ॥१३८॥
इन चारों अस्थान का, देख दिखावै भेव।
नितानन्द जब जानियें, ये साचे गुरुदेव ॥१३९॥

अथ फारसी की साखी

अब्वल शरीयत मंजले, कायम नसीहत गोश कर्द।
वे बद हरामहलाल दानिशमन्द, वर दिल होश कर्द ॥१४०॥
हैवां हुवा गुमराह् गफलत, दर निगह अफसोस कर्द।
नेकी निशान ईमान कायम, कदममुर्शद बोस कर्द ॥१४१॥
दोयम तरीकत मंजले, दर इश्क रब्बानी रसद।
तरके जहाने जाह में, हो फारगआज्ज़ी दायम कसद ॥१४२॥
हरदम हररोज अज याद साबित, साफ तन सीना कुनद।
दर दरुने फरयाद जारी, ना रहे आहे जनद ॥१४३॥
सोयम मकामे मार्फत, इसरार गैव निशान दीद।
फलको, जमीनो, आब आतस, सूर्ते सुभान दीद ॥१४४॥
लैलो निहारे सिफ्त यारे, नीज दरबारे रसीद।
अवाजवो खुश जाय २, दर हमा आलम शुंनीद ॥१४५॥
हासिल वूंशाल जमोल साहिब, वरमुराद करार याफ्त।
मंजिल चिहारम दर हकीकत, हक खुश दीदार याफ्त ॥१४६॥
बागे बका बुल २ रसीदा, तख्तहा गुलजार याफ्त।
महबूब नूर निजारे करदम, नितानन्द बहार याफ्त ॥१४७॥
मंजिल चहार ब्यान पीरां, बर मुरीदां खबरदाद।
महबूब महली राहे रफ्तम, हरकी आयद याद बाद ॥१४८॥

इति फारसी की साखी

हम घर आये कृपा कर, जान राय जगदीश।
नितानन्द प्रभु चरण पर, करूं वारना शीश ॥१४९॥
हम घर साहब आइयां, रली हुई सब देश।
नितानन्द रज होय कर, पग लग रहूं हमेश ॥१५०॥
अब पीहर कैसे रहूं, प्रीतम लई बुलाय।
नितानन्द सुख सेज पर, दुल्हन सूती जाय ॥१५१॥
नितानन्द बानी उठै, कहै बोलता बैन।
सो घर ब्रह्म बिलास का, विरला समझै सैन ॥१५२॥
उपजे लहर विचार की, करै शब्द आवाज।
नितानन्द वहां ढूंढ ले, घट ही में महाराज ॥१५३॥
उर्ध कमल में आरसी, तामें दर्श अलेख।
नितानन्द चशमा उलट, अरस परस चल देख ॥१५४॥
अन्दर शब्द विचार कर, सुरत निरत में धार।
नितानन्द वहां देंख ले, जहां बिन रसना उचार ॥१५५॥
नितानन्द उस पीव का, कैसा रूप जमाल।
ना कोई कहै ना कह सकै, दर्शन किये निहाल ॥१५६॥
पीव की शोभा सो कहे, रहे आप जो कोय।
नितानन्द फिर क्या कहे, गया पीव ही होय ॥१५७॥
गरक हुए दीदार में, चेतन चमक निहार।
नितानन्द नहीं आवना, उलट फेर संसार ॥१५८॥

नितानन्द उस घर गए, जो घर असल कदीम।
विषम ब्याध से ऊबरे, महरम मिले हकीम ॥१५९॥
खाकी कूं नूरी करे, ऐसा हक्क हकीम।
नितानन्द लागे रहो, कायम कदम करीम ॥१६०॥
त्रिविध शून्य है गुण मइ, रहे भावना साथ।
चौथा निर्गुण शुन्य में, सागर लहर समात ॥१६१॥
देह शुन्य में विषय विकार, आत्म शुन्य ज्ञान गुलजार।
परम शुन्य में दर्श अलेख, ब्रह्म शुन्य हुए एकम एक ॥१६२॥
देह नगर की शुन्य में, चित बुद्ध मन अहंकार।
शब्द स्पर्श रूप रस, पांच पचीस परवार ॥१६३॥
सत रज तम इन्द्री दसूं, माया जग जंजाल।
नितानन्द घट शुन्य में, भवन चतुर्दश ख्याल ॥१६४॥
आत्म शुन्य अनूप में, ज्ञान विचार विलास।
शील क्षमा संतोष सत, प्रेम भक्ति प्रकाश ॥१६५॥
रिद्ध सिद्ध नव निद्ध सब, कला कोट ता माहिं।
जग तरंग ता सिन्ध की, उठ २ मिट २ जाहिं ॥१६६॥
परम शुन्य जहां पाइये, तेज पुंज का पीव।
निरंकार वर निर्मला, सब जीवन का जीव ॥१६७॥
दर्श अरस दरबार का, अन्तर खुले किवार।
नितानन्द जीवन मुक्त, मिले पदार्थ चार ॥१६८॥

ब्रह्म शुन्य बेगम पुरी, तिर्गुण निर्गुण पार।
तहां न अक्षर शब्द स्वर, नहीं बोल अहंकार ॥१६९॥
अकथ कथा उस शुन्य की, कहत कही न जाय।
नितानन्द घट २ प्रगट, गूंगा होय गुड़ खाय ॥१७०॥

अथ फारसी की साखी

ओजूद बयां अरवाहं बयां, मकसूदे बयां दीदेम।
माबूद बयां मुकाम नूरी बे बयां शुदेम ॥१७१॥
बयान हवा हिरस, दर गौर गफलत मनी खुदीमुदाम।
हैवान खूं बगुस्सा शहबत, नेस्त नेकी नाम ॥१७२॥
शबो रोज यादे जहां, आयद बेखबर बेराह।
खाकी मुकाम अज मजह, महरमदीद दुनियांखाह ॥१७३॥
अरबाह ब्यान खैर खूबी, मेहर मायल सफाई इमान।
इनसानियत इकलास नेकी, नाम हक ब्यान ॥१७४॥
दर मेहर खाहिश खबर, रायश यातकाद यकीन।
साबित सबूरी नशे नूरी, दीदये सुजान बीन ॥१७५॥
मकसुद ब्यान मकसूद महरम, इश्क मौला शिरर गैब।
शनाखतसतफहमीददीदशनीदयाबदइसमइल्मकरामस्त ॥१७६॥
अल्लाह रा नजदीक दानद, दरहमा जा यारमस्त।
बरआब आतश अरसकुर्सी, कुल गुलगुलजार मस्त ॥१७७॥
माबूद ब्यान माबूद नूर निजार, करदम पाक रब जमाल।
महबूब खूब अजब रोशन, शब्द शामिल हाल ॥१७८॥

मस्तान जामे शुबह श्यामे खुर्दनी दीदार।
हासिल विसाले खुश खयाले नितानन्द बहार ॥१७९॥
नितानन्द दरबार का, हर दम शमिल हाल।
खुशी खूरमी खूबियां, हासिल हक जमाल ॥१८०॥
जहां देखना यार का, तहां बहिस्त बहार।
दिल बहिस्त से बिहज है, जिस दिल में दीदार ॥१८१॥

इति फारसी की साखी।

परमातम पूरण करी, नितानन्द की आस।
मन मिलाय सुख में मिले, चेतन चरण निवास ॥१८२॥
नितानन्द सुख सेज का, जान सकै न कोय।
यह सुख जानै सो सखी, रही पीव संग सोय ॥१८३॥
नितानन्द जब लग डरी, लालन गही न बांह।
अब लालन बहियां गही, मिली लाल के मांह ॥१८४॥
प्रीतम मिल सुख में मिली, तन की सुरत बिसार।
मैं तूं तूं मैं मिट गई, जब देखा दरबार ॥१८५॥
स्थूल दृष्टि देखें सभी, आतम दृष्टि कोय।
ब्रह्म दृष्टि जहां खुल गई, रहा ब्रह्म ही होय ॥१८६॥
ब्रह्म बिना खाली नहीं, सुई अग्र सम ठौर।
घट घट कौतुक हो रह्या, जो देखे दिल मोर ॥१८७॥
जब लग देखे देह को, तब लग नहीं प्रकाश।
आपा देखे उलट कर, सो साहेब सो दास ॥१८८॥

वही आदि वही मध्य है, वही अंत है एक।
नितानन्द सब ठौर है, ज्ञान दृष्टि से देख ॥१८९॥
नितानन्द आनन्द घन, ता समान नहीं कोय।
करै हरै पोखै भरै, रह्या अकर्त्ता होय ॥१९०॥
नितानन्द आनन्द घन, ता समान नहिं और।
करै हरै पोखै भरै, घट घट में चित चोर ॥१९१॥
करता काया कुंज में, करै अखंड बिलास।
तिल के ओल्हे हो रह्या, बाजी चहर प्रकाश ॥१९२॥
जहां राम तहां आत्मा, जहां आतम तहां राम।
नितानन्द घर एक में, दोनों का मुक्काम ॥१९३॥
नितानन्द सभ एक है, नहीं दूसरा कोय।
घड़ा माट करवा करी, रही मृत्तिका होय ॥१९४॥
नितानन्द सभ हो रहा, एक पियारा कंथ।
नाना बिध विस्तार कर, एकै भया अनन्त ॥१९५॥
अन्तरगत में देखिये, तो वह आपै आप।
बाहर पड़दा पड़ रहा, झूठा देह मिलाप ॥१९६॥
नितानन्द परमात्मा, आतम में पावें।
बाहर ढूंढ़े कोट जुग, तो हाथ न आवै ॥१९७॥
उलट अपूठा आप में, चेतन घर आवै।
जो कुछ था सो हो गया, जल जल ही समावे ॥१९८॥

पानी पाला होय कर, फिर हो गया पानी।
नितानन्द उस पीव की, कुछ अकथ कहानी ॥१९९॥
जैसे तन में जीव है, यूं जीव में प्यारा।
नितानन्द सो देख ले, साजन मतवारा ॥२००॥
मतवारा न्यारा नहीं, घट घट का बासी।
गुप्त प्रगट सूभर भर्‌या, अवगत अविनाशी ॥२०१॥
जड़ चेतन नहीं कह सकूं, बेहद्द पियारा।
सुन्दर शोभा सर्व में, केशो करतार ॥२०२॥
निर्मल नगरी नूर की, धर अम्बर न्यारी।
सूबस अन्तर बनी है, प्यारों की प्यारी ॥२०३॥
सभै ओर चेतन मई, शोभा अति भारी।
रोम २ सुख हो गया, जब दृष्टि उघारी ॥२०४॥
मिल गई दृष्टि अदृष्टि में, दृष्टा घर आया।
दरिया लहर समाय कर, दरियाव कहाया ॥२०५॥
जिस को ढूंढन जांय था, सो घर में पाया।
घर ही में घर हो गया, जीव ब्रह्म समाया ॥२०६॥
चरण कमल के आसरे, सोवै सुख माहीं।
नेह कामी निर्भय सदा, कोई भय नाहीं ॥२०७॥
रूप लुभानी सुन्दरी, पिया अंग लगाई।
पाये पूर्व पुन्य से, प्रीतम सुखदाई ॥२०८॥

जुग २ रहना जोत में, अमरापुर मेला।
नित प्रति सदा निहारना, साहेब अलबेला ॥२०९॥
जिस का दर्शन देख कर, प्रसन्न होवै जीव।
सो घट २ में रम रह्या, नितानन्द का पीव ॥२१०॥
सुख सागर को परस कर, सभी दुख दिया मिटाय।
नितानन्द पीव में मिले, रोम २ लौ लाय ॥२११॥
जन्म जन्म के सोवते, उठे नींद से जाग।
छुटे स्वप्न संसार से, नितानन्द बड़ भाग ॥२१२॥
पारब्रह्म वर पाइयां, सुखी सुन्दरी नार।
दुख दरिया से हो गई, एक पलक में पार ॥२१३॥
दिन २ आनन्द की रली, दिन २ मंगल होय।
नितानन्द उस नूर कूं, सदा ध्यान में जोय ॥२१४॥
नितानन्द उस नूर को, जब देखूं जब माहिं।
रोम रोम में रम रहा, मुझ से बाहर नाहिं ॥२१५॥
घट २ माहिं बोलता, घट २ रहा समाय।
घट २ में देखा वही, एकै अवगत राय ॥२१६॥
देखा नैन उघार कर, साहेब सुन्दर नूर।
सभ में झिल मिल होय रही, जहां तहां भरपूर ॥२१७॥
नितानन्द हर नूर की, सदा रोशनी देख।
जहां तहां मौजूद है, पूरण ब्रह्म अलेख ॥२१८॥

नितानन्द महबूब का, रोशन पाक जमाल।
दिल कै ओल्हे हो रह्या, अजब अनोखा ख्याल ॥२१९॥
साहेब पूरण ब्रह्म है, पुर रहा सभ माहिं।
जित देखू तित है वही, उस बिन दूजा नाहिं ॥२२०॥
नितानन्द महबूब की, सूरत है मकबूल।
कृपा होय तब पाइये, रहे न दिल में भूल ॥२२१॥
नितानन्द दिल देख ले, यही अलख का गाम।
दिल ही में मिल जायगी, हर प्रीतम की ठाम ॥२२२॥
साहेब सब घट माह है, नितानन्द वह एक।
जहां तहां मौजूद है, यामे मीन न मेख ॥२२३॥
दिल मालिक दिल माहिं है, जिस का रोशन नूर।
नितानन्द उस रब्ब से, नित हाजरां हजूर ॥२२४॥
नितानन्द हम देखियां, साहेब सदा सुरंग।
मिल कर फेर न बीछड़े, ऐसा पुरुष अभंग ॥२२५॥
नितानन्द महबूब को, कदे न दिल से भूल।
मेहर करे तो पाइये, वही रंगीला फूल ॥२२६॥

(इति परचा का अंग संपूर्णम्)

# 卐 रस का अंग ६ 卐

गगन मण्डल भाठी चुवे, केशो जहां कलाल।
सिर के बदले देत हैं, सो रस पीवें रसाल।।१।।
नितानन्द हर रस पिया, रही न और पियास।
मिला स्वात जल सीपकुं, पूजी मनकी आस।।२।।
हर रस निर्भय पीजिये, निर्भय दीजे सीस।
कदे न लालच कीजिय, जो मांगे जगदीस।।३।।
नितानन्द आवैं घणें, देख कलाल दुकान।
सिर दे सो भर भर पिवे, रीते रहे अज्ञान।।४।।
मतवाला प्याला पिया, गगन मगन महिमन्त।
नितानन्द हर अमर रस, पूरब भाग मिलन्त।।५।।
परम सुन्न चेतन महल, तहां पिलावै यार।
हर जन पीवैं अमी रस, तन मन धन सब वार।।६।।
रसिया रस पीवै सदा, जब लग रहै शरीर।
देह गये रस में मिले, जथा नीर में नीर।।७।।
ज्यूं २ पीवै प्रीत से, त्यूं २ प्यासा होय।
हटै न हर रस पीवता, ऐसा बिरला कोय।।८।।
चातक पीवै प्रीत से, सीप रहै लौ लाय।
हर जन पीवै अमी रस, अजर अमर हो जाय।।९।।

हर रस देखत दुख मिटे, चाखत चढ़ै अकास।
पीवत पावै परम पद, नितानन्द निज दास ॥१०॥
प्रेम पियाला राम रस, पीवै प्रीत बढ़ाय।
नितानन्द रस हो रह्या, ऐसा पिया अघाय ॥११॥
नितानन्द रस पीवतां, हुआ राम में लीन।
रसिया से रस हो गया, सो रसिया परवीन ॥१२॥
नितानन्द आनन्द रस, पीवत छिक गया प्रान।
पाकी मेवा मुख पड़ी, बहुर न ऊगै आन ॥१३॥
पिया प्याला प्रेम का, पूरन प्रीत लगाय।
माया रस में तू सकल, बह गया सहज सुभाय ॥१४॥
नितानन्द यह राम रस, ताका महंगा भाव।
सीस दिये बिन ना लहे, क्या राणा क्या राव ॥१५॥
नितानन्द यह राम रस, पीवो महंगे मोल।
सर्वस सोंप कलाल कूं, पीछे सदा किलोल ॥१६॥
नितानन्द निशि दिन रहैं, राम अमल महमन्त।
ब्रह्मलोक सुरपति पुरी, रंचक गिणें न सन्त ॥१७॥
नितानन्द रंचक करै, राम अमल का भोग।
सभ सुख चौदह भवन का, ताकूं दीखै रोग ॥१८॥
सतगुरु मिल स्मरण लगा, फिर बिरहै आया।
परचा पाया परम गुरु, रस माहिं समाया ॥१९॥

पूरन प्याला प्रेम का, पीवै जन पूरा।
तृष्णा तज तारीक तन, हाजरा हजूरां ॥२०॥
आतम तरवर राम रस, अन्तर गत पीवै।
नितानन्द फूलै फलै, सो जुग जुग जीवै।२१॥
पीया प्याला प्रेम का, अमली रंग भीना।
और अमल पर दिल नहीं, रस में लौलीना ॥२२॥
नितानन्द पीवै सदा, रस का महमन्ता।
जन्म मरन दुख सुख की, कोई ना चिन्ता ॥२३॥
नितानन्द पीवै सदा, अमृत की धारा।
रोम रोम में रम रह्या, आनन्द अपारा ॥२४॥
नितानन्द पीवै सदा, रसिया रस रंगा।
पलट गया तन देख ते, ज्यूं कीट भिरंगा ॥२५॥
नितानन्द पीवै सदा, औरन कूं प्यावै।
अपना घट सूभर किया, बरते बरतावै ॥२६॥
सुरपुर में अमृत कहें, सो अमृत झूठा।
राम रसायन नितानन्द, सत्त सुधा अनूठा ॥२७॥
हरि अमृत पीवत रहे, तन मन सुख मांहिं।
काल कर्म भ्रम वासना, घट घट उपजत नाहीं ॥२८॥
हर रस तबही पाइये, जब सर्वस देवै।
नितानन्द रस छोड़कर, कुछ और न लेवे ॥२९॥

नितानन्द निसदिन रहें, राम अमल महिमन्त।
ब्रह्मलोक सुरपत पुरी, रिंचक गिने न सन्त।।३०।।
हर रस पिया पिछानिये, छूटे नहीं मतवाल।
नितानन्द छाक्या रहे, तन की नाहिं संभाल।।३१।।
हर रस पिया पिछानिये, नहीं देह की प्रीत।
नितानन्द ज्यूं नीर से, मिलकर कवल अतीत।।३२।।
हर रस पिया पिछानिये, नहीं देह से प्यार।
रैन बसेरा बस रह्या, पक्षी वृक्ष मंझार।।३३।।
राम रसायन सारषी, और वस्तु कुछ नाहिं।
सब काया कंचन करै, रतीक ठहरै मांहिं।।३४।।
राम रसायन अधिक है, बूटी अमर अनन्त।
पीवै सो युग २ जिवे, मिलै रंगीला कंत।।३५।।
राम रसायन अधिक है, बूटी अमर अनूप।
नितानन्द रंचक पियै, समरथ सुतह सरूप।।३६।।
सभै रसायन दूर कर, राम रसायन पीव।
त्रिविध ताप मिट जाहिंगे, रहै जुगै जुग जीव।।३७।।
राम रसायन जो पीवै, आप रसायन होय।
नितानन्द बहु जीवहुं कूं, करै सो वरण सोय।।३८।।
किन्ह यह भांडा धो पीया, कोई छाडे छाक।
फूल पीवे सो फूल है, नितानन्द दिल पाक।।३९।।

साधू जन पीवें सदा, नितानन्द रस फूल।
गगन गरक तन से तरक, गये आप कूं भूल।।४०।।
मतवाला दीदार का, पीवे नाहिं शराब।
हर बिन मदमाते फिरें, सो जग माहिं खराब।।४१।।
नितानन्द छाके रहें, पियें नूर का जाम।
दीवाने दीदार के, यही बहिस्त मुकाम।।४२।।
रोम रोम रस में छिके, नितानन्द मतवाल।
तिनकी सेवा हर करें, आठूं पहर संभाल।।४३।।
नितानन्द माते रहें, हर मतवालों माहिं।
मधुवा भंगी पोस्ती, ये मतवाले नाहिं।।४४।।
भग रस जग रस अमल रस, सब रस विषय विकार।
नितानन्द पीवे नहीं, हर रस पीवन हार।।४५।।
विष का प्याला जगत सभ, पी पी परलै होय।
नितानन्द हर रस पीवे, अमर होय जन सोय।।४६।।
मीठा महंगा राम रस, सभै रसों में खूब।
नितानन्द जब पाइये, मेहर करें महबूब।।४७।।
नितानन्द महबूब रस, सब रस सेती पाक।
इस दुनियां के द्वन्द से, करे तुरत बेवाक।।४८।।
जा रस कूं खोजत फिरें, ऋषी मुनी सुरदेव।
सो रस सहजै पाइये, चरन कमल की सेव।।४९।।

मतवाले दीदार के, आठ पहर लौलीन।
जीवन मुक्ता मगन मन, राम अमल परवीन ।।५०।।
जीवन मुक्त दयाल घट, लिये पंच ठग जीत।
गोता मारा गैब में, पकड़ प्रेम परतीत ।।५१।।
पीवे सो जुग २ जिवै, बिना पिये मर जाय।
बिना पिये जनमै मरे, अमर होय रस खाय ।।५२।।
पीवै सो जुग २ जिवै, पीवै सो प्रलय न होय।
नितानन्द सद गत सुखी, राम अमल रस कोय ।।५३।।
राम रसिक चाहैं नहीं, बिना राम रस और।
शिवपुर विधिपुर इन्द्रपुर, लगै तुच्छ सी ठौर ।।५४।।
चार पदारथ मुक्त सब, रसिया कदे न लेय।
राता रंग महबूब कै, सिर मांगे तो देय ।।५५।।
पिया प्याला प्रेम का, हुआ मगन मतवाल।
छिके वकै जब जानिये, मिला रंक कूं लाल ।।५६।।
नितानन्द हर रस पीवें, धन्य जिन्हों के भाग।
अमर हुऐ सब देखते, रहे निरंजन लाग ।।५७।।
नितानन्द सूभर भरा, सकल रसीला राम।
प्रेम बिना पावे नहीं, बहु रसियों का गाम ।।५८।।
नितानन्द एक नगर में, रहें रसीले लोग।
आठ पहर छिक २ करे, अमीं महारस भोग ।।५९।।

विष की बाड़ी त्याग कर, भौंरा पीवे सुगन्ध।
चन्दनरूपी हो गया, छुटे करम के फंद ।।६०।।
नितानन्द जन भंवर है, कंवल आप करतार।
पीवै निर्मल वासना, काया कंचन सार ।।६१।।
जैसे अमली अमल को, पीवे प्रीत लगाय।
ऐसे पीवे राम रस, सो रस माहिं समाय ।।६२।।

(इति रस का अंग संपूर्णम्)

## 卐 लाभी का अंग ७ 卐

नौतम निरमल राम जल, भर लिया काया कुम्भ।
नितानन्द प्यासा खरा, पूरन ब्रह्म असम्भ।।१।।
उलट अपूठा आप में, करन लग्या अस्नान।
मिलै न थाह अथाह की, पूरा परम निधान।।२।।
हर दरिया भरिया रहै, निरमल हुआ मन न्हाय।
नितानन्द गम्भीर गत, कहूं तो कही न जाय।।३।।
दरिया में देही मिली, देही में दरियाव।
पूरण मिल पूरा हुआ, नितानन्द गुनगाव।।४।।
नितानन्द क्या गाइये, उस पूरे का गीत।
चितानन्द से लग रहो, पकड़ प्रेम परतीत।।५।।

हर समुद्र आनन्द भर्या, नहीं अन्त उनमान।
नितानन्द जित तित वही, सर्वमई भगवान।।६।।
न्हान लग्या मन उलट कर, मिला ब्रह्म दरियाव।
भूख न भाजी जीमते, पीवन का चित चाव।।७।।
बे उनमान अकथ है, ताकी बात अगाध।
नितानन्द सुख सिन्ध में, पहुंचे कोई-२ साध।।८।।
बे उनमान अगाध है, वाकी बात अकथ।
नितानन्द सुख सिन्ध में, हीरा आया हत्थ।।९।।
पारब्रह्म पूरा पुरुष, करता केवल सार।
नितानन्द की वन्दना, तुमको बारम्बार।।१०।।
नहीं मोल नहीं तोल है, अजब अनोखा लाल।
मन मान्या जान्या जिन्हां, अवगत तत्त विसाल।।११।।
अति झीना सभसे बड़ा, वरतमान वरतन्त।
सब तामें सभ में वही, बेहद ब्रह्म अनन्त।।१२।।
नितानन्द पावें सही, पै नहिं पावें पार।
वही वही सभ है वही, यही विचार विचार।।१३।।

(इति लाभी का अंग सम्पूर्णम्)

# 卐 हैरान का अंग ८ 卐

अकथ कथा कैसे कहूं, अजब दिवाना देश।
जित का गया न बाहुड़ै, जीवत हौवै नेस।।१।।
हर दरिया निहार कर, बौरे हुए सुजान।
थाह न पाई थक गये, नितानन्द हैरान।।२।।
नांव गांव ताके नहीं, अधर न धरयिा सोय।
वर्ण विवर्जित अतन तन, त्रिया पुरुष नहिं होय।।३।।
सुतः प्राकसी सकल में, रूप अरूप न रेख।
नितानन्द हैरान है, कादर कुदरत देख।।४।।
ज्यूं है त्यूं ना कह सकूं, है सो कहा न जाय।
जो कुछ है सो वह नहीं, गूंगा हो गुड़ खाय।।५।।
नितानन्द हैरान है, कादर कुदरत देख।
अकथ कथा का विध कहूं, अपरम्पार अलेख।।६।।
नितानन्द हैरान है, जो कुछ कहे सो नाह।
नांय कहूं तो है वही, वही वही सभ मांह।।७।।
गूगां हुआ बहिरा हुआ, जानत हुआ अजान।
आदि अन्त नहीं पाइये, नितानन्द हैरान।।८।।
पंडित ज्ञानी और गुनी, मुनी कहैं आराध।
नितानन्द कथ कथ थके, पीछे कहे अगाध।।९।।

ताकूं किस बिध गाइये, जहां न शब्द समाय।
अचरज रूपी अगम गत, कहूं तो को पतियाय ।।१०।।
सुरत स्वास सेती अगम, दृष्ट मुष्ट से दूर।
बेकीमत बारीक है, सो हाजरां हजूर ।।११।।
किन्हीं न देख्या नैन से, सुन्या न मुख बतराय।
गया सो जित का तित रहा, कुशल कहै को आय ।।१२।।
नितानन्द पावै सही, शोभा कही न जाय।
मैं जानूं कुछ बोलिये, मैं ही गया बिलाय ।।१३।।
ज्यूं कह कह दीवाल कै, विरला झांकै पार।
रहै तो गहला हो रहे, कै पावै दीदार ।।१४।।
नितानन्द केते मिले, केते लिये मिलाय।
कीमत उस दरबार की, कही न उलटा आय ।।१५।।
बिना नैन का देखना, बिना अंग का मेल।
नितानन्द चक्रित रहे, देख अनूठा खेल ।।१६।।
बिना चरण का चालना, बिना मुख गावै गीत।
नितानन्द अचरज अकह, अवगत अधर अतीत ।।१७।।

(इति हैरान का अंग संपूर्णम्)

# 卐 हैरत का अंग ९ 卐

नितानन्द हर हेरते, हैरत आवै मोय।
मिल गइ बून्द समुद्र में, है कोई लावै जोय।।१।।
नितानन्द हर हेरते, हेरनहार हेराय।
कहन सुनन से रह गया, गुंग मिठाई खाय।।२।।
नितानन्द हर हेर ले, हैरत कूं कर दूर।
उसी नीर की बूंद है, वही सिन्ध भरपूर।।३।।
सागर पाया बून्द में, कहूं तो को पतियाय।
जथा गुंग के सुपन की, चतुर सैन लख जाय।।४।।
नितानन्द सुख पीव का, कुछ कह्या न जावै।
गूंगे वाली सैन कूं, पावै सो पावै।।५।।
रहे बिदेही देह में, गत मत लखी न जाये।
सिध साधक जोगी जती, बैठे मौन लगाय।।६।।
पीर पैगम्बर औलिया, पंडित मुंडित भेष।
नितानन्द हैरान हैं, अकह अगाध अलेख।।७।।
अक्षर की तहां गम नहीं, निःअक्षर कर जान।
अक्षर बिन दिखै नहीं, याको भेद बखान।।८।।
नितानन्द करतार की, कुदरत पर बलिहार।
काया माया गुण अगुण, नहीं पुरुष नहीं नार।।९।।

वही अगाध कैसे कथूं, कुछ कहा न जावै।
गूंगे वाली सेन कूं, पावै सो पावै ॥१०॥
नितानन्द गरगाप रह, दरिया दिल माहीं।
कौन कहै को कह सकै, वह अकथ गुसाईं ॥११॥
पांच तत्त्व गुण तीन से, वह नगर निराला।
रक्त न पीत न सेत है, कुछ हरा न काला ॥१२॥
नितानन्द महबूब है, मेहरबान सुभान।
पार न पाया पीव का, हार हुए हैरान ॥१३॥
साहब की छवि हेरते, हैरत माहिं हीराय।
जो कुछ था सोई भया, और कुछ कहा न जाय ॥१४॥
मैं चाल्या था मिलन कूं, मैं मेरी के पार।
मैं ही उठ गई बीच से, फिर क्या कथूं विचार ॥१५॥
उस साहेब की साहेबी, देखी अपरम्पार।
नितानन्द क्या बरनिये, अवरण का विस्तार ॥१६॥
ना थोड़ा नाही घणां, नहीं एक नहीं दोय।
नितानन्द यह वह नहीं, वही होय तो हाय ॥१७॥
रूप न रेख न रंग है, सकल रंग ता माहिं।
नांह कहूं तो है वही, है है कहूं तो नाहिं ॥१८॥
जो कुछ दीखै दृष्ट सों, मन चित जित लौ जाय।
वह पद या सों अगम है, नितानन्द लौ लाय ॥१९॥

नितानन्द को कह सकै, वेशुमार बेअन्त।
ताका पार न पाइये, जो जुग जाहिं अनन्त ।।२०।।
कोई न पावे पारखा, ऐसा अकह अमोल।
नितानन्द बहु पच रहे, कीमत कही न खोल।२१।।
किन्ही न पाई पारखा, किन्ही न पाया पार।
नितानन्द हैरान है, थके विचार विचार ।।२२।।
नितानन्द हैरान है, देख अजब अदेख।
सुरत थकी दरिया अथग, अपरम्पार अलेख ।।२३।।
पंडित ज्ञानी बहु पचे, जोगी धर २ ध्यान।
नितानन्द कुछ अगमगति, कोइ न सकै बखान ।।२४।।
बहुत पारखू पच रहे, सिद्ध समाध लगाय।
नितानन्द हर रतन की, कीमत कही न जाय ।।२५।।
ऐसा कोई न मिल्या, लहै लाल का मोल।
गूंगा बहरा हो गया, जब देख्या दिल खोल ।।२६।।
दोहा–अगम अगोचर अलख इलाही, कोई पार न पावै।
आपै जाने आपनी, गत मत बौरावै ।।२७।।
बहुत सयाने भये दिवाने, हार अपार बताया।
नितानन्द अपना घट भर ले, समुन्द्र उठै न उठाया ।।२८।।
ब्रह्म बराबर होत है, जीव ब्रह्म पहचान।
नितानन्द पावे नहीं, वार पार उनमान ।।२९।।

ब्रह्म सरीखा होत है, जीव ब्रह्म को देख।
नीर छीर जैसे मिले, हो गया एकम एक।।३०।।
ताका पार न पाइये, अति अपार भगवान।
नितानन्द गत देख के, होय रहे हैरान।।३१।।
नितानन्द पाया घणां, और न दिया दिखाय।
जो चाहे कीमत कहूं, हैरत माहिं हिराय।।३२।।
मिसरी के पाषान से, चींटी चिपटी जाय।
मगन हुई खुध्या गई, पर सकी न मेरू उठाय।।३३।।
नितानन्द दरयाव में, भरे लाख पनिहार।
वह उतने का ऊतना, भर २ धापी नार।।३४।।
गुप्त गुझ गम्भीर है, भारी भेद अभंग।
नितानन्द कोई क्या कहे, अलख अरूप अरंग।।३५।।
नितानन्द उस तत्व का, भेद न पावे कोय।
जो कोई भेदी मिले, रहे दिवाना होय।।३६।।
वेद कतेब न कह सके, उस अगाध का भेव।
नितानन्द वै अकथ है, कहें निरंजन देव।।३७।।
नितानन्द कै एक मुख, बृध बहुत बे अन्त।
देख देख हैरान है, तू अपार भगवन्त।।३८।।
नितानन्द बहु कथ गए, बहुत कथेंगे आय।
और बहुतेरे कथत हैं, पर गति लखी न जाय।।३९।।

कहा करे कैसे रहे, कहैं सुनैं किस भांत।
नितानन्द के पीव की, घोल घाल सी बात ।।४०।।
नितानन्द महबूब का, किन्हू न पाया पार।
देख दिवाने हो गए, नूर नगर दीदार ।।४१।।
नितानन्द को कह सके, नूर नगर की बात।
जित का गया न बाहुड़े, सागर लहर समात ।।४२।।
जित देखणा अदेख है, बोले बोल अबोल।
नितानन्द कीमत नहीं, ऐसा रतन अमोल ।।४३।।
कारीगर कुदरत रची, गुप्त प्रगट विस्तार।
नितानन्द सब थकत हो, कहें अपार अपार ।।४४।।

(इति हैरत का अंग संपूर्णम्)

## 卐 जरना का अंग १० 卐

सतगुरु दाता भक्ति के, अवगत सन्त सहाय।
नितानन्द को लीजियो, सब मिल पार लंघाय ।।१।।
अजर जरै सूभर भरे, झरे सो रीता होय।
नितानन्द गम्भीर रह, उलटी लहर समोय ।।२।।
शब्द लहर उर से उठे, ज्यों समुद्र की झाल।
छिलक उठे हानत पड़े, जरे सो होय निहाल ।।३।।

जरे सो नजर निहाल है, जरे सो आप अलेख।
जरे सो कोई एक है, और बहुतेरे भेख।।४।।
जरे तो पीवे अमर रस, जरे तो बंचे काल।
जरे सो जगपति जगत गुरु, जरे सो सन्त विसाल।।५।।
नितानन्द कुछ मत कहो, समझ २ गहो मौन।
जरना जोगी थिर रहे, मिट जा आवागौन।।६।।
जरना जोगी जुगत से, जागे मतवारा।
गगन चढ़ा पीवे अमी, तिरगुण से न्यारा।।७।।
जरना जुग जुग थिर रहे, झरना घट मारा।
नितानन्द गम्भीर रह, गह अधर अधारा।।८।।
उलट लहर दरियाव की, पद माहिं समाया।
परचा परगट ना किया, सुख सागर पाया।।९।।
निरख उजाला अगम का, मुख पर नहीं लाया।
नितानन्द अनहदपुरी, निर्भय पद पाया।।१०।।
भर भर प्याले नूर के, पिवें अघाय अघाय।
नितानन्द पूरे पुरुष, लेंगे अमल पचाय।।११।।
मुख से बहक न बोलिये, सजन सेज की बात।
नितानन्द घट राख ले, ज्यों गूंगा गुड़ खात।।१२।।
थम्भे कटोरे कनक के, सबल सिंहनी दूध।
नितानन्द दिल की लहर, पूरे राखे मूंद।।१३।।

अजर जरे तो मन मरे, भरे वस्तु घट माहिं।
नितानन्द दर्शन करे, मिले पीव गल बाहिं ॥१४॥
नितानन्द हर अमर धन, झरे सो देवे खोय।
परचा परगट ना करे, लहे सेज सुख सोय ॥१५॥
सिरर पाय परगट करी, जरी न काचे कुम्भ।
तो नाहक बिपता भरी, वृथा किया आरम्भ ॥१६॥
नितानन्द सिर दीजिये, सिरर न दीजे जान।
देख दिवाने हो रहे, तजी झिरन की बान ॥१७॥
पाया तत्व न खोइये, तत्व जीव का थम्ब।
नितानन्द सत से जरे, शब्द समन्द्र असम्ब ॥१८॥
नितानन्द जरना करे, सो फिर मरना नांहि।
काल अकाल उलंघ कर, बसे नूर के मांहि ॥१९॥
जरना जर जीवे सदा, पीवै अमृत धार।
गगन मगन अनहद रता, दीवाना दीदार ॥२०॥
शब्द सलिल अति अकथ जल, उलटा ठहराया।
नितानन्द सब जर गया, जेता कुछ खाया।२१॥
जेता पीवे राम रस, तेता लेहि जराय।
माया चौदह भवन की, एक ग्रास कर जाय ॥२२॥
जरना जग मग जोत में, जुग २ रहे अखंड।
नितानन्द उझलै नहीं, तिनके बस ब्रह्मण्ड ॥२३॥

जरना पहुंचे पलक में, असंख जुगन की बाट।
अष्ट सिद्धि उलंघ कर, खोले बजर कपाट ॥२४॥
नितानन्द जरना करो, भरो अखः भण्डार।
घट में अघट कहे नहीं, हर धन विभव अपार ॥२५॥
जरना जागे भय भरा, जिसकी गांठी लाल।
नितानन्द भीतर मगन, बाहर दुरबल चाल ॥२६॥
नितानन्द कहता डरे, आपा रहे ल्हकोय।
गोता मारा गैब में, जर मर जीवा होय ॥२७॥
अगम अगोचर अमर धन, अद्भुत अधिक अमोल।
नितानन्द पिव पायकर, प्रगट न कहिए खोल ॥२८॥
परम पदारथ पायकर, दीजे नहीं गमाय।
अमरकन्द जुग २ रहे, जा घट वस्तु समाय ॥२९॥
हर धन कदे न खोइये, नितानन्द कर चेत।
रतन जतन करि राखिये, जरना जुगत समेत ॥३०॥
झरना कुम्भ ना ठाहरै, नितानन्द हर नीर।
जरना घट सूभर सदा, गगन मगन गम्भीर ॥३१॥
अजर जरावे जोगिया, उदर अफारा नांहि।
नितानन्द जरना किये, अटल परम पद मांहि ॥३२॥
देखे सो दिल में धरे, बाहर ओझल होय।
बरते विभव विचार से, ऐसा विरला कोय ॥३३॥

नितानन्द नहीं खोइये, वस्तु अनूठी पाय।
राम रतन तब ही रहे, कहे न बात सुनाय।।३४।।
रतन रंक घर तो रहे, जब लग उझले नांहि।
नितानन्द परगट करे, तो और ही ले जांहि।।३५।।
राम रतन को पाय कर, गुप्त गुझ गुण गाय।
नितानन्द दिल की लहर, दिल ही मांहि समाय।।३६।।
नितानन्द घट में उलट, परगट दिखाइये नांहि।
यथा दुरावे गर्भ कूं, जार नार जग मांहि।।३७।।

(इति जरना का अंग संपूर्णम)

## 卐 लौ का अंग ११ 卐

नमो निरंजन चरन को, सतगुरु सीस निवाय।
संतो के पग लाग कर, नितानन्द गुण गाय।।१।।
सतगुरु दाता भक्ति के, अवगत संत सहाय।
नितानन्द को लीजियो, सब मिल पार लंघाय।।२।।
लौ लगी चैतन से, तीन सुन्य से पार।
लीन हुआ तन मन सभै, छूट गया संसार।।३।।
नितानन्द लौ लग गई, हुआ राम में लीन।
अमर लोक की साहेबी, पाई पद प्रवीन।।४।।

लौ नेजू चरसा सुरत, सींचै चेतन चित्त।
अमरत अन्तर कमल के, नितानन्द पीवन्त।।५।।
अर्ध उर्ध के मध्य में, परम सुन्य परधाम।
लौ लागी घर ब्रह्म में, जहां न जगत का काम।।६।।
बेहद बन गह-बर खरा, पशु पक्षी गम नाहिं।
नितानन्द कृपा हुई, लौ लागी ता माहिं।।७।।
लौ लागी जब जानिए, रहे देह से दूर।
जन्म मरन का डर नहीं, मिले नूर में नूर।।८।।
लौ लागी जब जानिए, छूटे न तीनों काल।
आद अन्त मध्य एक रस, मिले लाल से लाल।।९।।
लौ लगाम मन का तुरी, प्रेम पावड़े पाय।
नितानन्द चेतन चढ़े, मिले निरंजन राय।।१०।।
प्रीतम के पद में सदा, नितानन्द लौ लीन।
अधर धार पर धुन धरी, कर दर्पण दुरबीन।।११।।
जीवत लौ लागी रहे, मुए मिलेगा सोय।
नितानन्द गरकाब रह, दिल दरियाव समोय।।१२।।
नितानन्द तन कुम्भ में, भरा कर्म का नीर।
लौ लागी परब्रहम में, हो गया सुधा समीर।।१३।।
लौ लागी जब जानिये, कदे न टूटै तार।
नितानन्द सुख सिन्धु में, रहे अधर आधार।।१४।।

लौ लागी जब जानिये, रहे बिदेही होय।
नितानन्द गुण देह का, कदे न व्यापै कोय।।१५।।
मिला घाट घट सिंधु में, त्रिबैनी पर आय।
नितानन्द जहां राम है, लौ के मार्ग जाय।।१६।।
नितानन्द लौ लग गई, हुआ सुन्न में धाम।
तीन लोक सेती अधर, हरदम रहे मुकाम।।१७।।
नितानन्द उस पीव में, जिनका मन लौ लीन।
सरवर जिनके भाग की, कहा करें कर्महीन।।१८।।
वरत बांध नटनी चढ़ै, करे खेल तन साध।
अष्ट जाम लौ लावनी, हरदम हरि आराध।।१९।।
लौ के मार्ग चालना, सकल पंथ को त्याग।
नितानन्द आनन्द से, रहो निरंजन लाग।।२०।।
चलत २ बहु जुग गया, जग में डामा डूल।
लौ लागी जब जानिए, मिटे पलक में भूल।२१।।
लौ लागी जब जानिये, पावै अवगत पीव।
कोट जुगों का बीछड़ा, मिला पलक में जीव।।२२।।
लौ लागी जब जानिए, पलट जाय सब चाल।
लोहा कंचन हो गया, पारस परस दयाल।।२३।।
लौ लगी जब जानिये, त्यागे मन संसार।
गगन मगन उनमन रहे, नितानन्द इक तार।।२४।।

लौ लागी जब जानिये, रहे त्रिगुण से पार।
नितानन्द आतम अकल, आपै लिया विचार॥२५॥
अहम् बुध तज सुंध हो, अस्थिर कर मन धार।
लौ के मारग लीन हो, चेतन लिया विचार॥२६॥
तन मन सुरत समेट कर, लौ के मार्ग लाग।
आतम परमात्म मिले, नितानन्द बड़ भाग॥२७॥
निरत समानी सुरत में, सुरत निरत में लाग।
नितानन्द लौ लीन हो, गया भरम सब भाग॥२८॥
सुरत निरत शामिल हुई, दुहूं किया घर मांहि।
नितानन्द लौ लग गई, अनत कही न जांहि॥२९॥
सभ अनरथ की खान है, अर्थ आप करतार।
नितानन्द दिल में समझ, लौ का पंथ बिचार॥३०॥
नितानन्द अमरापुरी, पहुंच गये लौ लाय।
मतवाले दीदार के, रहें नूर में छाय॥३१॥
जोग सिध की सकल बिध, आपे ही सधि जाय।
नितानन्द दिल में सदा, रहो राम लौ लाय॥३२॥
आदहुता सोई भया, अवगत से लौ लाय।
नितानन्द आगे वही, नीर २ मिल जाय॥३३॥
सहज शून्य तन मन मग्न, दो दिल के दरम्यान।
लौ समाधि लागी रहे, नहीं काल कुफरान॥३४॥

साखी सवाल की।

कौन दिशा से आइयां, कौन दिशा को जाय।
नितानन्द आसन कहां, कहां रहों लौ लाय ।।३५।।

साखी जवाब की

शून्य शहर से आइयां, लो के मार्ग जाय।
चेतन घर आसन किया, रहे गगन में छाय ।।३६।।
और बात सभ छोड़ कर, हर अमरत रस पीव।
नितानन्द लौ ला रहे, अमर जुगों जुग जीव ।।३७।।
राम अमीरस पीवतां, आप अमीरस होय।
नितानन्द लौ ला रहे, जीव ब्रह्म नहिं दोय ।।३८।।
सुरत लाय सन्मुख रहै, जीव सो जुग जुग जागै।
नितानन्द निरद्वन्द रह, साहब लौ लागै ।।३९।।
नितानन्द मन उलट कर, अन्तर लौ लावै।
अमरपुरी की रोशनी, घट ही में पावै ।।४०।।
सभै दिशा से उलट कर, सुलट आप में आय।
परमेश्वर पासे बसे, नितानन्द लौ लाय ।।४१।।
नितानन्द अपनी सुरत, सुलट आप में देख।
लौ के मार्ग लाग कर, निर्भय परस अलेख ।।४२।।
अन्तर्गत में रम रहो, सुरत सदा लौ लीन।
नितानन्द सुखसिंध में, पहुंचै जन प्रवीन ।।४३।।

नितानन्द निरद्वंद रह, दुनियां सेती भाग।
परम प्रीत प्रतीत से, लौ के मार्ग लाग।।४४।।
साई सेती प्रीत कर, सहज सुरत लौ लाय।
नितानन्द जग फन्द से, छूट अमरपुर जाय।।४५।।
सुरत रहे तो सब रहे, सुरत गये सब जाय।
लौ समाध लागी रहै, सुरत सत्य घर लाय।।४६।।
पारब्रह्म के अंक पर, लौ लागे इकतार।
नितानन्द घट पट खुलें, सभी माहिं करतार।।४७।।
सुरत माहिं साबत सदा, प्रेम मगन लौ लीन।
नितानन्द पीवत रहें, हर रस सन्त प्रवीन।।४८।।
डिगे पांव आकास सूं, कहां धरा फिर ताहि।
साध सती और सूर का, अनी धार पर राहि।।४९।।
गंगा जमुना सुरसती, मिले सिंधु में जाय।
ऐसे जन हर में मिले, नितानन्द लौ लाय।।५०।।
नूण नीर में मिल गया, अपना अंग मिटाय।
परमात्म में आत्मा, यों जल जलहिं समाय।।५१।।

(इति लौ का अंग संपूर्णम्)

# 卐 पतिव्रता का अंग १२ 卐

पारब्रह्म व्रत ले रहे, आन व्रत सब त्याग।
नितानन्द पतिव्रतनी, पावे अटल सुहाग।।१।।
सोई नार सुलक्खनी, करे राम से नेह।
आन पुरुष से रुचि करे, ताके मुख में खेह।।२।।
नितानन्द के नैन में, आओ दया कर राम।
तुम न दिखाऊँ और को, मैं नहीं देखन जाम।।३।।
दासी उस दरबार की, जहां कलंक न कोय।
पतिव्रता की पत रहे, तो पति को पत होय।।४।।
पतितन की पत राखियो, पार ब्रह्म भरतार।
नितानन्द के काज की, तुम को लाज मुरार।।५।।
जो कुछ पति आज्ञा करे, धरे आपने सीस।
सोई नार सुलक्खनी, मिले ताहि जगदीश।।६।।
आज्ञा में आगे रहे, दुख सुख धरे नहीं चित।
पर घर तकै न नैन भर, चरन कमल से हित।।७।।
एक पति से लग रही, नितानन्द की प्रीत।
दूजा देखूं नैन भर, तो वृथा सब गीत।।८।।
ऐसे प्यारे राम कूं, अन्तर गत में राख।
नितानन्द सब आन तज, पुरुष प्रेम रस चाख।।९।।

जाके चित में पति बसै, सोई सुलखनी नार।
जब लग चित जित तित फिरे, करे कोटि व्यभिचार ।।१०।।
साहब सब का एक है, कई भांति की नार।
ना जानूं किसको मिले, नितानन्द भरतार ।।११।।
सांई मेरा एक है, दूजा नहीं सुहाय।
दूजा साहब तो करूं, फिर २ जन्मे माय ।।१२।।
परम पुरुष से लग रहो, तन मन धन सब वार।
नितानन्द सिर पर धरो, हुक्म करें भरतार ।।१३।।
काजल मांग सन्दूर का, सुरमा नहीं सुहाय।
नितानन्द के नैन में, रहा रमय्या छाय ।।१४।।
सीप समुन्द्र में बसे, स्वात बून्द से प्रीत।
यों तन कर जन जगत में, जीव ब्रह्म लौ लीत ।।१५।।
दोज़ख कीऔर बहिश्त की, मुझे नहीं दरकार।
नितानन्द के दिल बसे, पारब्रह्म भरतार ।।१६।।
तन तोरन मन मंढ़ा है, सन्त जनेती साथ।
नितानन्द बर आइयां, अलख निरंजन नाथ ।।१७।।
पति की सेवा न करे, नितानन्द जो आन।
लोग रिझावे कपट से, सो विभचारन जान ।।१८।।
जाकूं पति अपनी करें, ताके उपजे सील।
सोई सुहागन गुण भरी, जाके शील अकील ।।१९।।

क्षमा शील लज्जा भरी, सुन्दर सुघर स्वभाव।
नितानन्द लागी रहे, सुरत पीव के पाव ॥२०॥
हंस दशा हिये हेत कर, कोमलता आधीन।
गर्भ गुमान न मान मध, रहे पीव मन लीन ॥२१॥
चहूं दीसी चितवे नहीं, राखें नैन निवाय।
शुद्ध भाव बानी विमल, पर घर धरे न पाय ॥२२॥
तन सुबुद्ध मन निर्मलता, अन्तर्गत में ध्यान।
नितानन्द सुन्दर सुघड़, पतिव्रत अंग पिछान ॥२३॥
तजे देह एक नेह पर, गहे पीव की टेक।
जले सकल जग देखते, नितानन्द कोई एक ॥२४॥
नितानन्द निर्भय भई, पतिव्रता पति पाय।
मिटे बिछोहे बीच के, आनन्द मंगल गाय ॥२५॥
नितानन्द पिव पाइयां, जिन सब ही पाया।
परमेश्वर पति त्यागियां, जिन जन्म गंवाया ॥२६॥
नितानन्द दिल खोज ले, पति पूरबला माहिं।
जब लग दिल से दूर है, दुहूं लोक पति नाहिं ॥२७॥
नितानन्द पति पाइयां, तो लिया सभी कुछ पाय।
जो पति से न्यारी रहे, चाली सभी गमाय ॥२८॥
नितानन्द पति पाइयां, तो पत पाई लाख।
पतिव्रत बिन पत इत न उत, सब सन्तन की साख ॥२९॥

नितानन्द पति प्रभु की, सब तज कीजे सेव।
जो मन लावे और से, कहां निरंजन देव।।३०।।
जो मन लावे एक से, तजे कामना काम।
नितानन्द सब परहरे, मिले निरंजन राम।।३१।।
पतिवरता शोभा भरी, उज्ज्वल अंग अनूप।
मान गुमान करें नहीं, शीतल सुतह सरूप।।३२।।
पतिव्रता मैले वसन, नहीं आभूषण अंग।
सब जग में जगमग करे, हर हीरा के संग।।३३।।
नितानन्द जब जानिए, पतिवरता की रीत।
मुख मीठी हिये ऊजली, आन न आवे चीत।।३४।।
पतिव्रता तब जानिए, धरे धनी का ध्यान।
पारब्रह्म की प्रीत में, आठ पहर गलतान।।३५।।
पतिव्रता जब जानिए, सुमरे साहब एक।
अपना पीव पिछान कर, कदे न त्यागे टेक।।३६।।
पतिव्रता प्रभु में पगी, विभचारण जग मांहिं।
पतिव्रता बिभचारणी, कदे मिलावा नाहिं।।३७।।
नितानन्द भूले धनी, भूले पड़ी कुपन्थ।
सतगुरु संत बताइयां, वह पूरबला कन्थ।।३८।।
अधर धार उरधर ले, धरा धूर कर डार।
नितानन्द भेरे चढ़ो, पति परब्रह्म निहार।।३९।।

सेवक सेवा चोर मैं, समरथ मेरे नाथ।
नितानन्द का पति तुही, व्रत तुम्हारे हाथ ।।४०।।
मैं दासी दरबार की, कदे न बिगरे काम।
पतिव्रता की पत डिगे, लाजे रमता राम ।।४१।।
सुन्दर सूती जुगों की, जागी पूरब भाग।
हुये दरस दरबार के, पाया अटल सुहाग ।।४२।।
प्रेम पीव का पार व्रत, राखा प्रीत लगाय।
सर्वस दे पति पाइयां, रही चरन में छाय ।।४३।।
पतिव्रता प्रीतम सखा, नितानन्द कोई नाहिं।
साहब सों हिलमिल रहे, जुग २ चरनों माहिं ।।४४।।
नितानन्द सुमरे सदा, रमातीत भरतार।
प्रभू तज सुमरे आन को, ता मूख भरूं अंगार ।।४५।।
राम तुम्हारा बीठला, पड़ा तुम्हारे द्वार।
नितानन्द को राख लो, पूरबले भरतार ।।४६।।
पावे टूक प्रशाद का, आवें पूछ हिलाय।
गल में डोरी प्रेम की, खसम निरंजन राय ।।४७।।
मेहर करो मेरे धनी, खेंचो अपनी ओर।
नितानन्द उस पीव बिन, किते ठीक नहीं ठौर ।।४८।।
पद जोड़े कविता घणे, गुणी गवय्या डोम।
पतिव्रता और वैशनूं, कलि में उत्तम कोम ।।४९।।

नितानन्द चात्रक पिवें, अधर स्वात का तोय।
नीची दशा चितवे नहीं, जो कुछ होय सो होय।।५०।।
अगम पन्थ को पग धरे, पतिव्रता और साध।
डिगे तो पीव न पाइये, रहे सो मिले अगाध।।५१।।
अगम पन्थ को पग धरे, पतिव्रता और साध।
नितानन्द सब जगत में, उनका पन्थ अगाध।।५२।।
पतिव्रता और संत जन, धरे धार पर पांव।
तन का लालच त्याग कर, मिलें निरंजन राव।।५३।।
पतिव्रता और साध की, बीखम बाट बारीक।
नेह निवाहे देह तज, रहें फरक फारीक।।५४।।
पुरुष हमारा एक है, आन पुरुष सब बीर।
नितानन्द मानें नहीं, बिना चरन गुरु पीर।।५५।।
नितानन्द लागे नहीं, आन पुरुष के पांव।
जिन के चित में बस रहे, अलख निरंजन राव।।५६।।
बहु पुरुषी नारी घनी, नितानन्द किस काम।
एक पुरुषी कोई एक है, जा पर रिझै राम।।५७।।
नितानन्द संसार में, बहु पुरुषी बहु नार।
एक पुरुषी कोइ एक है, जाके पुरुष मुरार।।५८।।
नितानन्द संसार में, एक पुरुषी कोई एक।
बहु पुरुषी विभचारिनी, जाके पुरुष अनेक।।५९।।

नितानन्द संसार में, बहु पुरुषी बेकार।
शीलवन्त सब गुण भरी, अरबों माहिं निहार ॥६०॥
नितानन्द पति आपना, कदे न दिल से भूल।
पीहर से चल सासुरे, सुख सागर में झूल ॥६१॥
नितानन्द पति आपना, सदा सीस पर धार।
इस पीहर की बन्ध से, वही छुटावन हार ॥६२॥
नितानन्द पति आपना, कदे न दिल से टाल।
मेहर करें सुभर भरें, लगे न काल अकाल ॥६३॥
नितानन्द पति आपना, नैनों माहिं बसाय।
एक पलक की मेहर से, क्षीर नीर मिल जाय ॥६४॥
नितानन्द नहिं भूलिये, पुरुष पुरातन राम।
दूजा को देखें नहीं, सो पतिव्रता बाम ॥६५॥
मैं अबला अवगुण भरी, सब गुण पूरण नाथ।
नितानन्द को राख लो, लगी तुम्हारे साथ ॥६६॥
पी २ टेरूं प्रीत से, पतिव्रता लौ लाय।
नितानन्द हर कन्त बिन, रहा कौन विधि जाय ॥६७॥
पी २ टेरूं प्रीत से, आठों पहर पुकार।
नितानन्द के मन बसों, गुनातीत भरतार ॥६८॥
निर्गुण निर्मल नाथ का, धरूं ध्यान चित लाय।
मो अबला के अंग में, दुजा नहीं सुहाय ॥६९॥

नितानन्द त्रिगुन परै, निर्गुन रमता राम।
वही हमारा पीव है, सन्तन में सरनाम।।७०।।
नितानन्द छानी नहीं, सभ कोई जानै नाम।
पतिव्रत बिना न पाइये, पिव का अगम मुकाम।।७१।।
नितानन्द किस बिध मिलै, नूर तेज का पीव।
पतिव्रत ले सेवा करै, मिलै पलक में जीव।।७२।।
पतिव्रता पिव को भजै, पकड़ प्रेम की टेक।
नितानन्द गोबिन्द से, मिल गई एकम एक।।७३।।
पतिव्रता पिव को भजे, गहे जीव विश्वास।
आन दिशा देखे नहीं, जुग २ चरण निवास।।७४।।
नितानन्द पिव को लगे, पतिव्रता प्यारी।
कोइ इक कलि में पाइये, सेवा की सारी।।७५।।
गधी सूवरी कूकरी, विभचारण नारी।
चौरासी के फेर में, वै फिरैं उघारी।।७६।।
अगम महल महबूब के, पतिव्रता खेले।
बिभचारण सिर दण्ड है, जब का दुख झेले।।७७।।
नितानन्द सुख सेज का, पतिव्रता पावै।
पकड़ बांह लालन लई, भर प्रेम पिलावै।।७८।।
हुई सुहागन सदा कूं, प्रीतम मन भाया।
नितानन्द दुःख द्वन्द्व की, जहां पड़ै न छाया।।७९।।

सुध बुध से सेवा करै, चित चरणन लाया।
पारब्रह्म पूरा पुरुष, ले सीस चढ़ाया ॥८०॥
नितानन्द सभ त्याग कर, एकै मन भाया।
राख लई दीदार में, सभ दरद मिटाया ॥८१॥
पतिव्रता पड़दे रहें, उघड़ दखिावें रांड।
गुप्त रहें सो साध हैं, प्रगट होय सो भांड ॥८२॥
पतिव्रता की पति सों, सदा निरंतर प्रीति।
कहि न जनावे और को, यह सन्तन की रीति ॥८३॥
बिभचारण बक २ हंसे, लाख लोग से जाय।
पतिव्रता उनमन रहै, एकै सजन सुहाय ॥८४॥
पतिव्रता पिव से डरै, लाज करै सुकचाय।
नितानन्द पतिव्रत ले, चढ़ी महल में जाय ॥८५॥
पतिव्रता साचे मते, गई जगत से रूठ।
सती चढ़ी सतलोक को, दुनियां आई ऊठ ॥८६॥
जगत भोग भावै नहीं, सो पतिव्रता नार।
पिव के मन मानै नहीं, जगत रिझावनहार ॥८७॥
पार ब्रह्म पति से मगन, पल२ अधिक पियार।
आन पुरुष सेवै नहीं, सो पहुंचै दरबार ॥८८॥
सीलवन्त लज्जा भरी, बिन तम्बोल मुख लाल।
नितानन्द हर उर बसै, यह पतिव्रता चाल ॥८९॥

पतिव्रता पीहर बसै, सुरत पीव कें माहि।
नितानन्द कह ना सकै, कई बरस हो जाहिं ॥९०॥
पतिव्रता पीहर बसै, सुरत पीव के पास।
नितानन्द तन से मगन, मन से रहै उदास ॥९१॥
राजा राणा छत्रपत, नज़र न आवे कोय।
नितानन्द पिव से मगन, सो पतिव्रता होय ॥९२॥
रूपवन्त सुन्दर सुघर, दूजा नहीं सुहाय।
अपना पीव पिछान कर, नितानन्द लौ लाय ॥९३॥
पतिव्रता को देख कर, पतिव्रत जोरै नैन।
पतिव्रता हो सो लखै, पतिव्रता की सैन ॥९४॥
हो कुचाल बिभचारणी, पतिव्रता की दास।
नितानन्द चेरी हुई, करै चरण की आस ॥९५॥
ज्यों चेरी नेरी रहै, पतिव्रता के पास।
नितानन्द शरणागती, राम गुमानी दास ॥९६॥
दासी के विभचार कूं, जैसे गिने न भूप।
नितानन्द को बख्स लो, पूरन पुरुष अनूप ॥९७॥
पतिव्रता के चरन की, धरूँ सीस पर धूर।
सभ दासन की दास मैं, नितानन्द अति कूर ॥९८॥
सभ पतिव्रता पीव की, गहो हमारी बांह।
नितानन्द को राख लो, चरन कमल रज मांह ॥९९॥

पतिव्रता निशी दिन धरे, अपने पीव का ध्यान।
नितानन्द ज्यों ब्रह्म में, रहें सन्त गलतान ॥१००॥

(इति पतिव्रता का अंग संपूर्णम्)

## 卐 चेतावणी का अंग १३ 卐

कदम गुमानी राम के, नितानन्द दिल लाय।
यह सब स्वप्ना समझ ले, दुनिया द्वन्द्ध सराय।।१।।
जीव मुसाफिर आइयां, तन सराय के माहिं।
नितानन्द एक रैन बस, फजर राह लग जाहिं।।२।।
बासा एकै रैन का, चैन रात की रात।
नितानन्द कर बन्दगी, हुआ जात परभात।।३।।
आगे मार्ग कठिन है, विषम बाट बियाबान।
चौरासी लख कोस लौं, नितानन्द उद्यान।।४।।
लम्बे मारग चालना, इत स्वप्ने का बास।
काल बली सिर पर खड़ा, गिने स्वास पर स्वास।।५।।
जाग-जाग नर जाग रे, कहाँ पसारे पांव।
चढ़ना हो तो चढ़ चलो, हंकी जात है नांव।।६।।
नितानन्द घर दूर है, अपने जीव विचार।
साथी संगी को नहीं, बिन हर सिरजन हार।।७।।

नितानन्द घर दूर है, चलना निपट जरुर।
बीच बसे दुख होयगा, सकै तो पहुंच हजूर।।८।।
नितानन्द घर दूर है, चेत सकै तो चेत।
क्या सोवै सुख नीदड़ी, लुटे अमोला खेत।।९।।
नितानन्द घर दूर है, ऊठ सबेरा चाल।
माया मोह न कीजिये, दुनियां ख्वाब खयाल।।१०।।
चन्दन चौकी चढ़ कर, नित सुगन्ध जल न्हाहिं।
नितानन्द इस देह का, बासा धरती माहिं।।११।।
तेल फुलेलों धोइये, तो भी गन्दी देह।
नितानन्द हरि भक्ति बिन, अंत खेह की खेह।।१२।।
पान फूल के भोगिया, खीर खांड खांहि।
नितानन्द अदली घने, मिलै खाक के मांहि।।१३।।
पाट पटम्बर पहरते, श्री साफ चौतार।
नितानन्द वह उठ गये, खाली हाथ पसार।।१४।।
धन्धे में अन्धे हुए, नितानन्द सब जीव।
आंख खोल देखें नहीं, तिल के ओल्हे पीव।।१५।।
सुन्दर काया से कहे, जीव चलंती बेर।
नितानन्द तन नगर में, हम नहीं आंवा फेर।।१६।।
सुनरी काया बावरी, तूं क्या झिखै एक।
नितानन्द तज तज चले, तुम से मित्र अनेक।।१७।।

बहुत मित्र तुम से तजे, बहुत पिता बहू मात।
नितानन्द जित तित बसे, रहे रात की रात ।।१८।।
नितानन्द इस जगत को, देखा झाड़ पिछोड़।
हरि बिन अपना को नहीं, बिखरी सुरत बहोड़ ।।१९।।
जिस २ मन्दिर हम बसे, बसे जबै लग प्यार।
नितानन्द हम बिछड़ कर, मिले न दुजी बार ।।२०।।
नितानन्द इस जगत को, कौड़ी को मत लेय।
सिर के बदले हर मिले, तो निर्भय होय सिर देय।२१।।
नितानन्द इस जगत की, कही न जा कुछ बात।
जिसको अपना थरपिये, सो फिर घाले घात ।।२२।।
नितानन्द इस जगत में, दो दिन का मिजमान।
आज काल उठ चालना, यही जीव में जान ।।२३।।
नितानन्द इस जगत में, नहीं किसी का कोय।
आप आप को चालना, यह मिलाप दिन दोय ।।२४।।
झखत २ दिन खो दिया, सोवत सोवत रैन।
नितानन्द तन नगर में, बिरला ही को चैन ।।२५।।
रतन जन्म बहु मोल का, कौड़ी में खोया।
नितानन्द यह अन्ध नर, चलती बेर रोया ।।२६।।
बाप गया दादा गया, हम भी चालन हार।
नितानन्द इस जगत में, भूलै सोई गंवार ।।२७।।

नितानन्द बूढ़े हुए, आए धौले बाल।
हुई तयारी चलन की, सकै तो राम संभाल।।२८।।
नितानन्द बूढ़े हुए, हुए केश सिर श्वेत।
चलने का सामा पकड़, यही संदेशा देत।।२९।।
नितानन्द बूढ़े हुए, जोबन किया पयान।
खोखस २ रह गया, चून २ लिया छान।।३०।।
नितानन्द बूढ़े हुए, गई जवानी दूर।
जन्म जवाहर खोय कर, क्या सुख सोवे कूर।।३१।।
गर्भ माहिं पालन किया, दिन २ दिया अहार।
जठर अग्नि में राखियां, समझे नहीं गंवार।।३२।।
ऊंचा मन्दर देख कर, कहां लगाया मोह।
स्वप्ना सा मिट जायगा, नितानन्द जग धोह।।३३।।
नितानन्द मेहमान है, काया नगरी मांही।
चलना सिर पर चढ़ रह्या, मूरख समझे नाहिं।।३४।।
चलना २ क्या कहै, कर चलने को याद।
जन्म जवाहर जात है, नितानन्द बरबाद।।३५।।
क्या अलझा जंजाल में, चलत न लागे बार।
उगल पड़े तन म्यान से, नितानन्द तलवार।।३६।।
चलना २ क्या कहै, कर चलने का सूल।
एक रैन के बास में, हर सा हितू न भूल।।३७।।

नितानन्द कुछ चेत कर, दुनियां द्वन्द्व सराय।
सुपने में धन मिल गया, जागे जब पछताय ।।३८।।
नितानन्द कुछ चेत कर, तज गफलत की बान।
जम जालिम सिर पर खड़ा, कर में लिए कमान ।।३९।।
नितानन्द कुछ चेत कर, गाढ़ी नींद न सोय।
तुझे अचानक चालना, सकै तो चेतन होय ।।४०।।
मनषा देही पाय कर, भजे नहीं गोपाल।
ज्यूं स्वप्ने राजा भया, जागे जब कंगाल ।।४१।।
नितानन्द वह दुख भला, साहब आवै याद।
सो सुख कहो किस काम का, जन्म जात बरबाद ।।४२।।
नितानन्द हर भक्ति बिन, सभै स्वान नर नार।
गलियारे भूंसत फिरे, कोई न पूछे सार ।।४३।।
नितानन्द संसार की, सांसे करे बुलाय।
बाजीगर बाजी रची, पलक मांहि उठि जाय ।।४४।।
नितानन्द संसार की, संशय सकल विसार।
सब स्पप्ने की संपदा, हीरा जन्म निहार ।।४५।।
नितानन्द हर बिसर कर, क्या हो रह्या नचीत।
यह काया ढह जायगी, बारु जैसी भीत ।।४६।।
नितानन्द इस देह का, मुझे नहीं इतबार।
देखत ही पल मारतै, मिले छार में छार ।।४७।।

नितानन्द इस देह का, रत्ती भरोसा नाहिं।
देखत ही चल जायगी, बादल जैसी छाहिं।।४८।।
नितानन्द इस देह में, कोइ दिन लेह बजाय।
जब लग बासा बन रहा, तब लग हर गुण गाय।।४९।।
नितानन्द इस देह में, कोई दिन देख बहार।
बहुरि न देखे आयकर, यह आंगण यह द्वार।।५०।।
नितानन्द तन नगर में, सदा न रहना होय।
अपने मन में समझ कर, सुख नींदड़ी न सोय।।५१।।
नितानन्द इस नगर में, चला चली का ख्याल।
गुदड़ी बिखरी जात है, सौदा करो संभाल।।५२।।
नितानन्द तन नगर में, कहां रहा दिल लाय।
एक दिन चलना होयगा, सकै तो हरि गुणगाय।।५३।।
नितानन्द तन नगर की, कदर न जाने कोय।
कोट जुगों का बीछड़ा, पल में दर्शन होय।।५४।।
कोट जुगों का बीछड़ा, फिरे जीव हैरान।
अब है बरिया भजन की, जान सकै तो जान।।५५।।
जिन के नौबत बाजती, लश्कर चढ़ें अघोर।
नितानन्द वह चल गये, चारि दिना का शोर।।५६।।
माल खजाना अति घना, बजै दमामा द्वार।
सेज सिंहासन सोवते, सो भी मिल गये छार।।५७।।

जा घर बाजे बाजते, राज करन्ते सोय।
वे मन्दिर सूने पड़े, उनमें बसै न कोय ॥५८॥
द्वारपाल द्वारे रहें, राग रंग बहु भाय।
नितानन्द उन घरों में, दुनियां रोवत जाय ॥५९॥
सभ कोई सौदे आइयां, लिये धनी का माल।
मूरख रीते रह गये, साधू हुए निहाल ॥६०॥
सब कोई सौदे आइयां, हटवाड़े के मांहिं।
चतुर चतुर सौदा करे, मूरख रीते जाहिं ॥६१॥
जो तू आया बणज कूं, सुन बनजारे वीर।
बणज सवेरा कीजिये, चलने की तदबीर ॥६२॥
पूंजी लाया उमर की, सो तो दिन दिन जाय।
नितानन्द केते गये, लाहा मूल गवाय ॥६३॥
नितानन्द नहीं भूलिये, साहब सिरजन हार।
यहां किसी का कोई नहीं, यह स्वप्ना संसार ॥६४॥
नितानन्द नहीं भूलिये, सिरजन हार मुरार।
इस दुनियां की प्रीत में, बहुत गये झख मार ॥६५॥
नितानन्द नहीं भूलिये, साहब अपरम्पार।
फंसे जगत के फन्द में, वै सब अन्ध गंवार ॥६६॥
नितानन्द नहीं भूलिये, निरंकार भरतार।
मूरख रीते रह गये, दिल से दिया बिसार ॥६७॥

झूठी बाजी देखकर, अटक गया सब कोय।
अंतकाल रीता चला, जन्म पदार्थ खोय।।६८।।
नितानन्द धन कृपण का, किसी न आवै काम।
रतन जन्म बहु मोल का, यूं विरथा बिन राम।।६९।।
जन्म पदार्थ पायकर, साहब किया न याद।
यथा कृपण की संपदा, सभै गई बरबाद।।७०।।
नितानन्द संसार में, केते गये बजाय।
कोई बजाये जात हैं, कोइ चलें बजाय।।७१।।
नितानन्द संसार में, रही चला चल होय।
अपने नैनों देख ले, सदा न जीवे कोय।।७२।।
देह नगर में रम रहा, जीव बटाऊ आय।
देख तमासा फंस गया, अब कैसे घर जाय।।७३।।
नितानन्द घर को चलो, माया मोह मिटाय।
अब के गये न बाहुड़ो, दूर पड़ोगे जाय।।७४।।
चौरासी लख कोस लौं, पड़े पराये हाथ।
वहां अकेला चालना, ना कोई संग न साथ।।७५।।
हमरे देखत चल गये, बैरी मित्र अनेक।
इकदिन हम भी चलेंगे, या में मीन न मेख।।७६।।
हमरे देखत चल गये, बैरी मित्र किरोर।
नितानन्द संसार में, मचा काल का शोर।।७७।।

इक दिन ऐसा होयगा, डेरा होये मैदान।
भाई बंधु कुटुम्ब के, सब मिल धरें मसान ।।७८।।
इक दिन ऐसा होयगा, जंगल होय मुकाम।
नितानन्द कित कूं गया, कोई न लेवै नाम ।।७९।।
फूटी फना सराय में, पांच चोर का मेल।
नितानन्द चित चेत कर, खबरदार हो खेल ।।८०।।
रैन अंधेरी दूर घर, संग साथ ना कोय।
नितानन्द कैसे बचै, रह्या सांझ ही सोय ।।८१।।
रैन अंधेरी दूर घर, विषम भोम परदेश।
नितानन्द बन जगत में, भूला फिरे हमेश ।।८२।।
नितानन्द सब द्वन्द्व है, देखा यह संसार।
आवन जाना लग रहा, जैसे सुत्तर कतार ।।८३।।
फना फनी के फेर में, फिरै जीवन हैरान।
साहब कूं सुमरै नहीं, ऐसा मूढ़ अज्ञान ।।८४।।
करता कंचन त्याग कर, किया कांच से हेत।
वै नर रीते रह गये, ज्यों कालर का खेत ।।८५।।
नितानन्द तन पींजरा, खुले रहैं नौ द्वार।
ना जानूं कद उड़ चलै, पक्षी प्रान हमार ।।८६।।
जग में थोड़ा जीवना, घना करै व्यवहार।
नितानन्द सब छोड़ कर, चाल्या हाथ पसार ।।८७।।

जग में थोड़ा जीवना, करै हवेली बाग।
नितानन्द वै चल गये, चिने चिनाए त्याग ॥८८॥
जग में थोड़ा जीवना, बहुत उठावै भार।
नितानन्द जम ले चले, धरा रहा घर बार ॥८९॥
जग में थोड़ा जीवना, मंडप लिये छवाय।
मैड़ी मंडप छोड़ कर, जीव अकेला जाय ॥९०॥
ऊजड़ खेड़े रह गये, गये बसावनहार।
नितानन्द को थिर नहीं, बिना एक करतार ॥९१॥
नितानन्द साहब रहे, सदा सर्वदा एक।
और सकल चल जायंगे, जहां लग जीव अनेक ॥९२॥
धरन गगन चल जायंगे, पवन अग्नि और नीर।
नितानन्द थिर ना रहा, जिन २ धरा शरीर ॥९३॥
नितानन्द इस देह का, गर्व करो मत कोय।
हंस बटाऊ उड़ चले, पल में परलै होय ॥९४॥
इक दिन हंसा जायगा, काया नगरी त्याग।
सकै तो रली मनाय ले, रमातीत से लाग ॥९५॥
नितानन्द दिल में समझ, हर सा हितू न कोय।
यह सब संग सराय का, इन में रहन न होय ॥९६॥
दुनियां दह गहरा बड़ा, बूड़ रहे सब जीव।
नितानन्द निकसैं नहीं, जब लग भजैं न पीव ॥९७॥

दुनियां दह गहरा बड़ा, बूड़ रहे सब लोग।
नितानन्द निकसैं नहीं, कभी हर्ष कभी सोग ॥९८॥
दुनियां दह दरियाव में, बूड़ रहे बहु अन्ध।
नितानन्द किस बिध बचैं, पड़्या करम का फन्द ॥९९॥
हर सा हितू बिसार कर, वृथा लगाया मोह।
अंतकाल रीता चला, सकल कुटुम्ब बिछोह ॥१००॥
जैसे उल्लू उजाड़ का, निशि देखे दिन नाहिं।
सो गत सब की हो रही, समझ देख मन माहिं ॥१०१॥
जैसे उल्लू अंधला, ऐसा सब जग जान।
परमेश्वर देखे नहीं, देखे आन ही आन ॥१०२॥
मनषा देही पायकर, साहब किया न याद।
यथा कृपण धन पायकर, वृथा गंवाया बाद ॥१०३॥
मनषा देही पायकर, साहब रह्या भुलाय।
ज्यूं ऊजड़ घर का पाहुना, खीर कहां से खाय ॥१०४॥
नितानन्द हर याद कर, तजो बासना और।
लखी करोड़ी चल गये, जिनका ठीक न ठौर ॥१०५॥
नितानन्द हर याद कर, और बात बरबाद।
सब कोई सौदे आइयां, फेर चलेगा लाद ॥१०६॥
नितानन्द हर याद कर, आठ पहर गुण गाव।
सकै तो अंग पखार ले, बह्या जात दरियाव ॥१०७॥

नितानन्द हर याद कर, भूले भला न होय।
यह काया छिन्न भंग है, गहरी नींद न सोय ॥१०८॥
नितानन्द नहीं गर्भिये, यह काया दिन चार।
स्वप्ने कैसी संपदा, जात न लागे बार ॥१०९॥
नितानन्द नहीं गर्भिये, यह काया छिन भङ्ग।
देखत ही मिट जायगी, जैसे रंग पतङ्ग ॥११०॥
गर्भ न करिये बावरे, ना चलिये इतराय।
यह तन मोती ओस का, पलक माहिं ढ़ह जाय ॥१११॥
देही देख न गर्भिये, इसका यही सुभाव।
विछड़ूयां पीछे ना मिलै, इसमें दिल मत लाव ॥११२॥
काया कंचन पहरते, कामिन संग किलोल।
नितानन्द वै देखते, होगये गारत गोल ॥११३॥
टेढ़ी पगड़ी बांधते, देखत चलते छांह।
मन में बड़े कहावते, मिल गये परलै मांह ॥११४॥
देखत परलै हो गये, हाथी के असवार।
हाथी घोड़ा पालकी, कुछ न चाली लार ॥११५॥
जा घट प्रीत न राम की, नहीं प्रेम मन मांहि।
नितानन्द वह अन्ध नर, टापा दे दे जांहि ॥११६॥
यह जग ऐसा जान ले, जैसा संभल रूख।
सूवै सेवा लायकर, उलटा पाया दुख ॥११७॥

पांचो तत्त्व मिलाय के, रची मानषा देह।
नितानन्द उस धनी का, सदा ध्यान धर लेह ॥११८॥
जामन मरण विचार कर, खोटी चाल न चाल।
नितानन्द चल जायगा, कोई आज कोई काल ॥११९॥
जन्म मरण की जेवड़ी, काट सकै तो काट।
नितानन्द अब ना कटी, तो तन बारह बाट ॥१२०॥
जन्म मरन खूटा गड़ा, बिछा काल का जाल।
चुगा कनक और कामनी, दिये घने घर घाल ॥१२१॥
जन्म मरन को जान कर, दिल से बदी बिसार।
नितानन्द सुख चाहिये तो, अपनी राह बुहार ॥१२२॥
पहले राह बुहार कर, फिर पीछे धर पांव।
नितानन्द घर पहुंच ले, यह अवसर यह दांव ॥१२३॥
मिले बटाऊ बाट में, बैठ वृक्ष की छांह।
नितानन्द फिर बिछुर कर, आप आप कूं जांह ॥१२४॥
नितानन्द जीव जगत के, सभै बटाऊ जान।
जन्म मरण के पन्थ में, पड़े फिरें हैरान ॥१२५॥
खाते पीते सोवते, और त्रिया सुत नेह।
खोदी भाड़े भांग के, अजब अमोली देह ॥१२६॥
काया कंचन कोठड़ी, लाल अमोला मांहि।
नितानन्द नर अंधले, यों ही खो खो जांहि ॥१२७॥

बाजीगर बाजी रची, सभ जग जानै साच।
नितानन्द उठ जायगा, पलक मांहि सभ नांच ॥१२८॥
यह ऐसा संसार है, मृग तृष्णा का नीर।
नितानन्द प्यासे रहें, अन्धे नर बेपीर ॥१२९॥
नितानन्द नर अंधला, पड़ा कर्म के फन्द।
साहब से बेमुख रहे, जन्म गवांवै अन्ध ॥१३०॥
जन्म गवाया आपना, झूठे के संग लाग।
साचा साहब त्याग कर, जलै जगत की आग ॥१३१॥
दो दिन लगें सुहावने, जैसे ऋतु पर फूल।
ऐसा सभ संसार है, नितानन्द मत भूल ॥१३२॥
प्यारा कर सबही गह्या, कुल कुटुम्ब परिवार।
आप २ कूं जायंगे, अपनी अपनी बार ॥१३३॥
जोगी आया नगर में, जोग न साध्या योग।
देख तमासा फंस गया, क्यों कर छूटे रोग ॥१३४॥
यह जोगी करता फिरे, नगर २ की सैल।
पड़ा कामरु देश में, हुआ मनुष्य से बैल ॥१३५॥
नितानन्द यह अन्ध नर, धरै न हर का ध्यान।
चोरों से चित लाय कर, बह्या फिरे अज्ञान ॥१३६॥
नितानन्द यह अन्ध नर, पड़ा मोह के जाल।
भार धरे सिर आपने, फिरे खुशाल खुशाल ॥१३७॥

मोह निसा संसार बन, रहा बटाऊ सोय।
नितानन्द प्रभात लौं, ना जानूं क्या होय ॥१३८॥
रैन अंधेरी सघन बन, तहां सिंह अरु स्याल।
नितानन्द इस द्वन्द्व में, चलो संभाल २ ॥१३९॥
नितानन्द उद्यान में, पड़ा अकेला आय।
प्रीत लगाई ठगन से, तब को करै सहाय ॥१४०॥
मां ठगनी ठगनी त्रिया, ठगनी भगनी जान।
पिता बन्धु सुत सजन ठग, जो मन आवै ज्ञान ॥१४१॥
नितानन्द यह मुग्ध नर, करै कुटुम्ब से प्यार।
अपने हाथों मर गया, मोह फांस गल डार ॥१४२॥
सो नर जीवत ही मरे, साहब दिया बिसार।
नितानन्द दम लेत है, जैसे खाल लुहार ॥१४३॥
वै नर जीवत ही मरे, जिन के हृदय न राम।
नितानन्द संसार में, जन्म लिया बेकाम ॥१४४॥
जिन का जीवन सफल है, तिनके हिये दयाल।
राम बिमुख जीवत फिरे, वै सभ मरे अकाल ॥१४५॥
भोन्दू भूले भरम में, भटक २ मर जाहिं।
नितानन्द हर शरण बिन, कहीं पलक सुख नाहिं ॥१४६॥
भौसागर की लहर में, बही जात बहु नाव।
नितानन्द गुरु ज्ञान बिन, बूड़ी चावै चाव ॥१४७॥

भौसागर की लहर में, बही जहाज अपार।
नितानन्द बूड़ी घनी, कोई एक पहुंची पार ॥१४८॥
नितानन्द घर छोड़ कर, बसे पराये बास।
जब चाहे जब पकड़ कर, देगा तुरत निकास ॥१४९॥
नगर पराया त्याग कर, बसो आपने गांव।
सदा न कोई थिर रहे, नितानन्द इस ठांव ॥१५०॥
नितानन्द क्यों पड़ रहे, नगर पराये माहिं।
सब प्राणी परबस पड़े, कोई किसी का नाहिं ॥१५१॥
बहुत चोर ठग लग रहे, लुटै रैन दिन माल।
नितानन्द सब लूट कर, दीजे पकड़ निकाल ॥१५२॥
चोर चुरावै चांदने, दिन में ठग २ जाहिं।
नितानन्द यह चाल है, काया नगरी माहिं ॥१५३॥
दगाबाज दुनियां सभै, लूटै लारै लाय।
नितानन्द ज्यों ठग ठगै, विष के लड्डू खुवाय ॥१५४॥
नितानन्द सब फन्द है, कुल कुटुम्ब परिवार।
सब प्राणी फंस २ मरे, संत उतर गये पार ॥१५५॥
नितानन्द सब फन्द है, कुल कुटुम्ब का मोह।
प्रीत लगा कर पच मरे, अंत धोह का धोह ॥१५६॥
वृथा गंवाया बावरे, जन्म अमोलक पाय।
मूरख को हीरा मिला, कौड़ी बदले जाय ॥१५७॥

मूरख नर कूं ना मिलै, ज्यों हीरा का दाम।
नितानन्द यों मुगध की, मानुष देह बेकाम ॥१५८॥
नितानन्द बहु धन मिला, पड़ी स्वप्न में लूट।
जाग पड़ा तो कुछ नहीं, गई किवाड़ी खूट ॥१५९॥
जैसे स्वप्ने बांझ ने, किया पुत्र जण चाव।
ऐसा यह संसार है, कहां रंक कहा राव ॥१६०॥
प्रीत न लागी राम से, और बातन में सूर।
नितानन्द यूं ही गई, बूरा बिखरी धूर ॥१६१॥
राम भजन कूं आलसी, और सभ बात सुजान।
नितानन्द उन से भले, कूकर सूकर श्वान ॥१६२॥
राम भजन कूं आलसी, दुनिया मांहि दलेल।
वह सभ ही निष्फल गये, जैसे नागर बेल ॥१६३॥
नितानन्द भूलै धनी, मनषा देही पाय।
ज्यों निर्धन का पाहुना, भूखा ही उठ जाय ॥१६४॥
नितानन्द नहिं भूलिये, देख सुरंगा रंग।
खोटी बाट न कीजिये, चला जायेगा संग ॥१६५॥
नितानन्द भूले धनी, देख सुरंग शरीर।
बिछड्यां पीछे ना मिले, जथा नदी का नीर ॥१६६॥
उमर बिहाई जात हे, ज्यों अंजली का नीर।
बहुर न हंसा आयसी, तन सरवर के तीर ॥१६७॥

जब लग सरवर जल भर्या, बह्या जात परवाह।
तब लग हंसा रम रह्या, फिर पकड़ैगा राह ॥१६८॥
नितानन्द नेकी भली, बुरी बदी की बान।
समझ जिन्दगी सहल है, चन्द रोज गुजरान ॥१६९॥
जिन कूं सब तज चालना, सो क्यों करै गुमान।
सभ से हिल मिल खेलिये, नेकी रहे निदान ॥१७०॥
खुदी बदी कीजे नहीं, नेकी नाम बिसार।
खढ़ा खुदावै और को, जिनको कूआ त्यार ॥१७१॥
खोटा बांधे गांठ में, सो नर खोटा खाय।
नितानन्द चल समझकर, दिल के दाग छुटाय ॥१७२॥
नितानन्द क्यों धर रह्या, सिर पर भारी भार।
अपना धनी अराध कर, पटक पोट चल पार ॥१७३॥
नितानन्द तन त्याग कर, चाल्या बोलनहार।
पीछे कछु ना पाइये, नाम रूप आकार ॥१७४॥
कोई गाड़े कोई जारिए, घीस गेरिए कोय।
नितानन्द यूं देख कर, गया उनमना होय ॥१७५॥
नितानन्द कुछ चेत कर, खेत उजाड़ें ढोर।
गफलत दिल से दूर कर, थोड़ा घणा बहोर ॥१७६॥
निशि दिन खेती ऊजड़ै, पड़ा किसान अचेत।
नितानन्द सब खोय कर, कहा लुणैगा रेत ॥१७७॥

काया खेत किसान जीव, पंछी विषय विकार।
नितानन्द सबही लुटैं, बिना ज्ञान की बार ॥१७८॥
हम तो पुत्र कहावते, उनको कहते बाप।
नितानन्द वै कित गये, स्वप्ने जगत मिलाप ॥१७९॥
पिता पुत्र सब भ्रम है, भ्रम रहे अज्ञान।
नितानन्द तुम समझ कर,धरो धनी का ध्यान ॥१८०॥
मात पिता बन्धु सजन, सभै बटाऊ लोग।
नितानन्द मन में समझ, नदी नाव संजोग ॥१८१॥
पाँच तत्व का देहरा, चेतन के आधार।
नितानन्द जब लग रहै, तब लग सुमर मुरार ॥१८२॥
परमेश्वर ध्याया नहीं, औसर गया बिहाय।
वै नर कूकर से बूरे, कै सोवैं कै खाय ॥१८३॥
परमेश्वर को छोड़कर, भजे आन का नाम।
पुत्र कहाबै कौन का, ज्यों वैश्या का जाम ॥१८४॥
गुनहगार दरबार के, हर गुण सके न गाय।
सो नर सै बाघल किये, मुखे हगे मुख खाय ॥१८५॥
गुनहगार दरबार के, जिनको हर न सुहाय।
सो नर दोजख़ जायगा, पड़ा २ पछताय ॥१८६॥
नितानन्द घर ऊजड़े, लुटैं जवाहर लाल।
मरम न पावे मुग्ध नर, मन में फिरै खुशहाल ॥१८७॥

बरियां सिर चेता नहीं, सका न हर गुण गाय।
चौरासी के फेर में, फिर २ आवै जाय ॥१८८॥
बरिया सिर हर ना भज्या, रहा भरम में भूल।
नितानन्द बरियां गये, डौलै डामां डूल ॥१८९॥
समय साहबी ना लखी, गफलत करी गवार।
बिना बन्दगी अंध सभ, बूड़े काली धार ॥१९०॥
नितानन्द हर याद कर, अपने पहर संभाल।
ना जानूं किस पलक में, आ पहुंचैगा काल ॥१९१॥
नितानन्द कर बन्दगी, खबरदार हो खेल।
जब तक काया नगर से, काढ़ै काल धकेल ॥१९२॥
सभ जग सूता नींद भर, लम्बे पांव पसार।
बजै दमामा शीस पर, जागै नहीं गंवार ॥१९३॥
खबरदार होशियार हो, रहो राम से लाग।
नातर जुग २ जलैगा, इस दोजख की आग ॥१९४॥
अपने मन में समझ ले, पाड़ोसी को देख।
सब कोइ मरने मांहि है, राई घटै न रेख ॥१९५॥
नितानन्द हर ध्याय ले, तजो जीव की चाल।
पाड़ोसी पर हो गई, सोई अपना हाल ॥१९६॥
नितानन्द साहब तज्या, कुल कुटम्ब मन लाय।
सीस भार धर मर रह्या, दो दिन भला कहाय ॥१९७॥

साचा साहब भूल कर, करी लोक की लाज।
अन्त समय रीता चला, कर कै काज अकाज ॥१९८॥
दुनियां से दिल लाय कर, हर से किया हिजाब।
नितानन्द वै अंध नर, दर २ फिरैं खराब ॥१९९॥
काया पाली पशु ज्यों, हृदय किया न चेत।
नितानन्द हर भक्ति बिन, अंत पड़ै मुख रेत ॥२००॥
नितानन्द वै अन्ध हैं, बहुत जीव जग माहिं।
भक्तिहीन मृतक दिशा, यूं ही टापा खाहिं ॥२०१॥
बदी माह गाफिल हुआ, किया न हर से हेत।
नितानन्द बिन बन्दगी,कंचन हो गया रेत ॥२०२॥
नितानन्द गाफिल हुआ, किया न हर से नेह।
पाई अण पाई करी, नर नारायणी देह ॥२०३॥
नितानन्द उस धनी से, बचन दिये थे वीर।
भूल गये इत आय कर, बहुत करी तकसीर ॥२०४॥
रंजे जीव जंजाल में, तजै निरंजन नाथ।
नितानन्द कूवै पड़ें, दीपक ले २ हाथ ॥२०५॥
नितानन्द घर लूटये, रहा सांझ ही सोय।
भोर भये रोवन लगा, अब रोये क्या होय ॥२०६॥
नितानन्द गफलत करी, तज्या न गरभ गुमान।
आया अन आया करया, बिना भजन भगवान ॥२०७॥

नितानन्द कर बन्दगी, सहल जिन्दगी जान।
प्रेम बिना नहीं पाइये, वह साहब शुभहान ॥२०८॥
गरभ मांहि गाफिल हुआ, दिया राम धन खोय।
चोर चौंतरे चढ़ रहे, कुशल कहां से होय ॥२०९॥
जो कुछ गया सो जान दे, रहता लेह बचाय।
नितानन्द हर अमर धन, फिर फिर मिलै न आय ॥२१०॥
जो कुछ रहा सो राख ले, गफलत दिल से त्याग।
आधा परधा ऊबरै, जाग सकै तो जाग ॥२११॥
नितानन्द धन संपदा, चाहे सकल जिहान।
जो पावै तो तज चलै, मूरख गहे न ज्ञान ॥२१२॥
नितानन्द धन राम है, और दलद्दर खान।
तीन लोक की संपदा, सब ही सुपन समान ॥२१३॥
कहा किया तन पाय कर, चल्या भक्ति बिन खोय।
हर का हुआ न जगत का, कारज सर्या न कोय ॥२१४॥
नितानन्द बिन बन्दगी, जन्म महा धिक्कार।
पानी कैसा बुद बुदा, बिनसत लगे न बार ॥२१५॥
राता रंग जहान कै, कोई बैरी कोई मीत।
आपा ऊपर मेल कर, मुआ मुगद कर चिन्त ॥२१६॥
नितानन्द संसार में, कोई आवै कोई जात।
एक निकसै एक झड़ पड़ै, ज्यों तरवर के पात ॥२१७॥

फल टूटा धरती पड़ा, बहुर न लागे डार।
नितानन्द नर देह यूं, मिलै न बारम्बार ॥२१८॥
सुपने कूं साचा कहै, जब लग जागै नांहि।
यूं नर हर को भूल कर, फसे रहें जग मांहि ॥२१९॥
जैसे पानी ताल का, सहज २ सुख जाय।
नितानन्द सारा जगत, देखत ही बिनसाय ॥२२०॥
नितानन्द हम देखते, केते गये विलाय।
उनमें से कोई एक भी, मिला न उलटा आय ॥२२१॥
नितानन्द अचरज किया, गया मौत कूं भूल।
यह काया छिन भंग है, मिले धूल में धूल ॥२२२॥
नितानन्द वरियां भली, कोई दिन रली मनाय।
गली २ नहीं भरमिये, रात दिवस गुण गाय ॥२२३॥
नितानन्द यह जात है, देही देहा देह।
मूरख नर समझै नहीं, जब तब होवे खेह ॥२२४॥
जन्म अकारथ जात है, अर्थ लगा जब जान।
कै सेवै सतसंग कूं, कै साहब का ध्यान ॥२२५॥
जन्म अकारथ जात है, सकै तो अर्थ लगाय।
राम विमुख नर जायंगे, सभै उभाने पाय ॥२२६॥
साहब भूला खलक में, खलक न चाली संग।
इतका हुआ न उत का, नितानन्द चित्त भंग ॥२२७॥

आपै मारै आप कूं, हर से रहे हराम।
नितानन्द गफलत करी, पिया जहर का जाम ॥२२८॥
नितानन्द बन खण्ड तन, कर्म कुहाड़ा हाथ।
सब जग निशिदिन कटत है, काम क्रोध के साथ ॥२२९॥
आपा खोये अमर है, आप रहे मर जाय।
आप २ में समझकर, रहो राम लौ लाय ॥२३०॥
लोक लाज का टोकरा, तामे कुल अभिमान।
सीस भार धर पच मरे, नितानन्द अज्ञान ॥२३१॥
नितानन्द नहीं छोड़िये, राम चरन की ओट।
नातर जुग २ सहैगा, जम जालिम की चोट ॥२३२॥
गहो गरीबी बन्दगी, राम चरण का ध्यान।
नातर बूडे धार में, भारी पड़े निदान ॥२३३॥
चादर महंगे मोल की, दिन २ मैली होय।
नितानन्द फट जायगी, धोय सकै तो धोय ॥२३४॥
चादर महंगे मोल की, बनी हजारी सूत।
हर जन राखैं ऊजली, मैली करैं कपूत ॥२३५॥
ऊजल कपड़े पहन कर, देही देख दिखायं।
नितानन्द हरि भक्ति बिन, सर्वस चले गवाय ॥२३६॥
हस्ती पर चढ़ चालते, सिर पर छत्र फिराहिं।
उनके मुए मसान में, गधा लोट ले जांहि ॥२३७॥

नितानन्द जिन तन धरा, सो सभ चलने मांहि।
जगत मांहि अस्थिर सदा, बिना निरंजन नाहिं ॥२३८॥
स्वर्ग मृत पाताल की, दुनियां पड़ी बहीर।
नितानन्द कोई न रहे, बिना निरंजन थीर ॥२३९॥
सुकृत किया ना हर भज्या, लिया बहुत धन जोर।
मैं मेरी कह उठ गये, मूरख मनुष कठोर ॥२४०॥
किये रुपये एकठे, तज्या अमर धन राम।
रीते हाथों वै गये, संग न चली छदाम ॥२४१॥
सिंहासन पर बैठते, चलत छत्र की छांह।
नितानन्द वै कित गये, स्पप्ने दीखें नांह ॥२४२॥
कनक कामनी भोगते, करते रंग रली।
चौरासी कूं चल गये, डोले गली गली ॥२४३॥
नितानन्द तन फूल पर, भौरा रहा लुभाय।
फंसा वासना रोग में, यूं जग मर २ जाय ॥२४४॥
गज पतंग मृग मीन अलि, मरैं स्वाद वश पंच।
नितानन्द वश पंच कै, सकै कौन विध बंच ॥२४५॥
नितानन्द हर बिसर कर, कहा रह्या सुख सोय।
आगे गारत गोल हे, ना जानूं क्या होय ॥२४६॥
गाफिल हुआ न छुटिये, साहब धनी संभाल।
जीव कूं जम ले जायगा, पड़ी रहेगी खाल ॥२४७॥

नितानन्द सुख प्रेम का, चाख्या नहीं गंवार।
मनषा देही पाय कर, यों ही दई बिगार ॥२४८॥
नितानन्द संगी नहीं, कोई इस संसार।
सिर पर लादे जात हैं, अपना २ भार ॥२४९॥
नितानन्द दिल आपने, हंस बिचारो ज्ञान।
फिर हम कूं नहिं आवना, दुनियां के दरम्यान ॥२५०॥
आगे मुल्क असूझ है, कछु न समझा जाय।
नितानन्द वहां चालना, प्रीत पिया से लाय ॥२५१॥
नितानन्द रहना नहीं, आगे चलना दूर।
हंस पयाना करेगा, देह मिलैगी धूर ॥२५२॥
अमी महारस प्रेम धन, निशि दिन चाल्या जाय।
नितानन्द नर अंधला, विषै हलाहल खाय ॥२५३॥
वस्तु अमोली आपनी, खोवै घड़ी घड़ी।
नितानन्द सब जगत में, कूंवै भांग पड़ी ॥२५४॥
चले दिसावर द्वीप से, करन वणज ब्यापार।
साध संगत आढ़त करो, भरो भक्ति भण्डार ॥२५५॥
पाया पूरब पुण्य से, नितानन्द दिन आज।
वह दिन आवै शीस पर, करले पहल इलाज ॥२५६॥
नाव पुरानी अथाह जल, मन मल्लाह मतवार।
विषय बोझ धर भर लई, किस विध उतरे पार ॥२५७॥

बोझ पराया पटक दे, खेवट से कर प्यार।
चढ़ो नाव हर भक्ति की, नितानन्द चल पार ॥२५८॥
राम बिना बह जायंगे, राजा रंक फकीर।
नितानन्द सब के पड़ी, गल में जम जंजीर ॥२५९॥
नितानन्द तन गोर है, राम विमुख मुरदार।
इस मुरदों के गांम में, कर कुछ समझ विचार ॥२६०॥
नितानन्द सोवे जिसे, कहिये बात जगाय।
राम विमुख नर मर गये, जिन से कुछ न बसाय ॥२६१॥
नितानन्द सुख तो मिले, सुख सांगर कूं चाल।
नातर इस दरियाव से, कदै न निकसै लाल ॥२६२॥
पट मोती माणक भर्‌या, बिन किवार नो द्वार।
नितानन्द लुट जायगा, नातर सुमर मुरार ॥२६३॥
चोट निशानै ना लगी, कई बार गया ऊक।
अब कै लगै तो सब रहै, अब कै चूकै चूक ॥२६४॥
चोट निसाने ना लगी, वृथा लई कमान।
तरकस रीता कर दिया, निकस गये सब बाण ॥२६५॥
पीपल रोवै फूल बिन, फल बिन झिखै फरांस।
मानस रोवे भक्ति बिन, जो उठ चलै निरास ॥२६६॥
सभी अकेले राम बिन, फिर फिर आवैं जांहि।
नितानन्द संगी बिना, बन बन टापा खांहि ॥२६७॥

नितानन्द तन देख कर, कहां रह्या गरभाय।
ऊपर कर हल बहेंगे, और जमै बनराय ॥२६८॥
सूर धूर में मिल गये, मरद गरद हो जांहि।
बहु जोधा जल बल गये, सो फिर दीखैं नांहि ॥२६९॥
सभ धरती की एक डंग, पर्वत करते चूर।
सागर पीवै चिलू भर, सो भी मिल गये धूर ॥२७०॥
गरब करन्ते बहु चले, कहते मैं मेरी।
देखत मिल गये खाख में, तन हो गया ढेरी ॥२७१॥
जोर करंते जियों पर, जग हुकुम चलाया।
गफलत खुदी गुमान में, कुछ नजर न आया ॥२७२॥
हिर्ष हवा हृदय धरी, साहब बिसराया।
नितानन्द उन नरों का, खुर खोज न पाया ॥२७३॥
दिल से दीन गंवाय कर, दुनिया में खेला।
महल कचेहड़ी ड्योढियां, दरबार तंबेला ॥२७४॥
हाथी घोड़ा पालकी, चेली और चेला।
नितानन्द सभ त्याग कर, उठ चले अकेला ॥२७५॥
गद्दी तकिया मसनदां, सतरंज दुलीचा।
कुआ तलाब और बावड़ी, कर बाग बगीचा ॥२७६॥
मजलिस मँह बैठे कहैं, हमसे सब नीचा।
नितानन्द वै उठ चले, दोजख़ मँह खींचा ॥२७७॥

मीर वजीर हुकूमती, और खान खवानी।
सूबेदार सलामती, सूरत मरदानी ॥२७८॥
सहजादा नाजर हुरम, बेगम्म मुकामी।
नितानन्द उन सभों की, ना रही निसानी ॥२७९॥
पी शराब सरसाब हो, कंचनी नचावें।
वीणा मृदङ्ग उमंग के, बाजे बजवावें ॥२८०॥
कुंभकरण त्रिया ताड़िका, रावण अभिमानी।
जरासिंधु शिशुपाल से, पक्के अज्ञानी ॥२८१॥
चोवा चन्दन अरगजा, घिस अंग लगाये।
नितानन्द केते गये, ढूंढे ना पाए ॥२८२॥
दुर्योधन नृप कंस से, जग में नहीं छानी।
नितानन्द हो हो गये, ना रही निशानी ॥२८३॥
गये चक्कवे मंडली, सिक बन्द नरेशा।
नितानन्द कोई ना रहे, जग मांहि हमेशा ॥२८४॥
नितानन्द भवसिंधु है, दरियाव दुहेला।
पड़ गई नाव कुदाव में, बहु भार भरेला ॥२८५॥
पार पहुँचे कौन विधि, जीव अन्ध अकेला।
खेवनहारा याद कर, सुनियो हर हेला ॥२८६॥
उस साहब को याद कर, जो पार उतारे।
संगी आद अनाद का, सो निकट तुम्हारे ॥२८७॥

इस दुनियां में देख ले, बासा दिन चारे।
नितानन्द हर भूल कर, मत जन्म बिगारे ॥२८८॥
काया कंचन की पुरी, कुछ अजब तमासा।
पंथी आया दूर से, कर दीन्हा बासा ॥२८९॥
अबहीं चलना दूर है, झूठा घर वासा।
पलक मांहि मिट जायगा, जल मांहि पतासा ॥२९०॥
रङ्ग सुरङ्गा देख कर, हो रह्या दिवाना।
दुनियां रंग कुसंग है,ना रहै निदाना ॥२९१॥
दीपक देख पतंग ज्यों, पड़ मर अज्ञाना।
नितानन्द दिल समझ कर, कर ठौड़ ठिकाना ॥२९२॥
जब से आया जगत में, भूल्या वह डेरा।
उलझ गया अज्ञान से, कहता मैं मेरा ॥२९३॥
उस नगरी की सुरत कर, जहां प्रीतम तेरा।
नितानन्द चित चेतकर, चल पहुंच सवेरा ॥२९४॥
जो चालै परदेश को, सो साथ बनावै।
आप अकेला उठ चलै, तो जगह न पावे ॥२९५॥
दिन बीते उद्यान में, घर को पहुंचावे।
नितानन्द हर बिसर कर, पीछे पछितावे ॥२९६॥
चिदानन्द के चरण में, चेतन चित दीजै।
चित की चिन्ता दूर कर, सुख भर २ लीजै ॥२९७॥

काया बाड़ी कंमल की, दिन २ जल छीजै।
नितानन्द इस समय पर, साहब भज लीजै ॥२९८॥
नितानन्द निज महल तज, इत आकर भूल्या।
पासा पड़ गया कर्म का, सूक्ष्म अस्थूला ॥२९९॥
ममता माया मोह में, ज्यूं फिरै भभूंला।
सकै तो हर गुण गाय ले, नहीं डाल न मूला ॥३००॥
परम गुरु परमात्मा, नित हिरदै धरिये।
जिनके चरण प्रताप से, भवसागर तरिये ॥३०१॥
भऊ नगर सुख सिंधुवर, प्रभू कृपा कीन्हीं।
नितानन्द गम्भीर गत, किन्हूं नहीं चीन्हीं ॥३०२॥
हेमल हर दरियाव की, गत अपरम्पारा।
नितानन्द के उर बसो, नित प्राण अधारा ॥३०३॥
गुरु गुमानी राम जी, सुख दर्शन पाए।
आप परम पद में मिले, हम पंथ लगाए ॥३०४॥
गुरु गुमानी दास जी, भवतारन भेरा।
शरण गहै निर्भय रहे, चरणों से नेरा ॥३०५॥
धरो प्रीत प्रतीत से, सभ तजो बखेरा।
नितानन्द सुख सिन्धू में, अब चल घर तेरा ॥३०६॥
पारब्रह्म गुरु देव जी, सब संत सहाई।
नितानन्द चित चेत कर, रहिये लौ लाई ॥३०७॥

(इति चेतावणी का अंग संपूर्णम्)
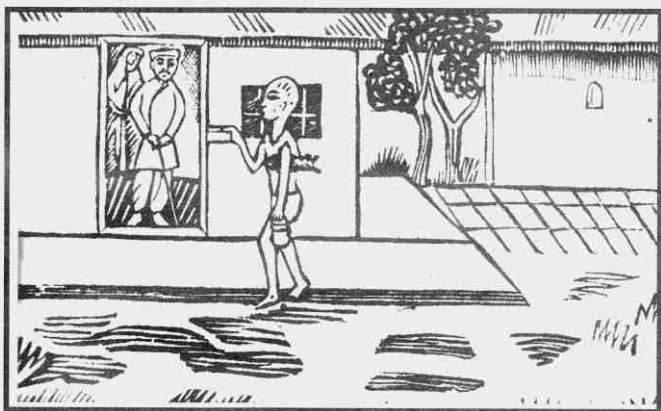
श्री स्वामी नितानन्द जी का हिम्मत राम के मकान समीप आना, तथा चौबीस घंटे पर्यंत खड़े रहना

## 卐 मन का अंग १४ 卐

नितानन्द मन फंस गया, दुनियां दलदल देख।
आठ पहर भरमत फिरे, सुमरे नहीं अलेख।।१।।
पैड़ भराऊं भक्ति में, तो भाजै सौ कोस।
नितानन्द क्या कीजिये, बैरी बस्या पड़ोस।।२।।
माया माहीं मग्न रह, प्रभु से पलक न प्यार।
नितानन्द बूड़े घणें, मन मूरख की लार।।३।।
मन मतंग माता खरा, जीव अन्ध असवार।
नितानन्द अज्ञान सब, चढ़े जांह जम द्वार।।४।।
मन के मारे मर गये, तपी मुनी सुर देव।
पार ब्रह्म को छोड़ कर, लगे आन की सेव।।५।।
मन के मार्ग बह गये, ता तें भक्ति न होय।
नितानन्द बस मन करे, भक्ति करैगा सोय।।६।।
मन ही देवी देवता, मन ही भूत परेत।
यह मन हर हो जात है, जो हर भजे सुचेत।।७।।
गुण इन्द्री तन वासना, जिन का मन सरदार।
मन के जीते जीत हे, मन के हारे हार।।८।।
मैं चाहूं महबूब को, मन चाहे तन चैन।
नितानन्द दुविधा लगी, यही दुःख दिन रैन।।९।।

मन चाहे माया घणी, दिल चाहै दीदार।
नितानन्द अब क्या करूं, मिल्या कुबुद्धी यार ॥१०॥
नितानन्द मन ना मरे, काया मर मर जाय।
हार गये बलवन्त बहु, मन से कुछ न बसाय ॥११॥
मन माया से लग रह्या, तन से लगे विकार।
नितानन्द माने नहीं, धरै भार पर भार ॥१२॥
पसर गया सब जगत में, यह मन बे मालूम।
नितानन्द समझे नहीं, मन की ओछी कूम ॥१३॥
राम भक्ति भावैं नहीं, भावें विषय विकार।
विष पीवे अमृत तजै, ऐसा अंध गंवार ॥१४॥
नितानन्द मन मश्करा, करै न हर से प्रीत।
काम क्रोध मद लोभ में, सदा रहै लौलीत ॥१५॥
मन मतवाला हो रह्या, पिये प्याला मान।
जग का भग का द्रव्य का, करै रैन दिन ध्यान ॥१६॥
जिस के मन माया बसे, विषया रस पीवै।
नितानन्द हर मन बसै, सो जुग २ जीवै ॥१७॥
जो मन उनमन हो रहै, पद माहिं समावै।
लगै निरंजन देव से, संसार न भावै ॥१८॥
पकड़ै मारग मीन का, भव जल तिर जावै।
नितानन्द आनन्द से, निर्भय पद पावै ॥१९॥

नितानन्द थिर ना रहे, ज्यों वृक्ष के पात।
ऐसे यह मन भरम में, बह्या फिरे दिन रात ॥३०॥
नाद नृत्य सुन सुख लहे, रूप देख ललचाय।
नितानन्द ज्यों दीप पर, पड़े पतंग लुभाय ॥३१॥
जिह्वा रस के बस पड़ा, गहे नासिका गंध।
चरमौ से स्परश चहै, नितानन्द मन अंध ॥३२॥
भक्ति न भावै राम की, इन्द्रिन के आधीन।
पांच कुसंगी संग ले, भया बुद्धि बलहीन ॥३३॥
नितानन्द मन मुगध की, पड़ी पंच से प्रीत।
साहब से डरपै नहीं, निशि दिन करै अनीत ॥३४॥
अन्तर्यामी उर बसै, अन्तर्गत के मांहिं।
जब लग मन बाहर फिरै, तब लग दर्शन नाहिं ॥३५॥
अन्तर्गत में बसत है, अन्तर्जामी राय।
नितानन्द दर्शन मिले, मन की दुई मिटाय ॥३६॥
जब लग मन में वासना, रह्या भरम में भूल।
तब लग आवा गमन से, मुक्त नाह्यरे मूल ॥३७॥
नितानन्द मन मारिये, खण्ड खण्ड कर खोय।
लुनते बर पछतायगा, विष की बाड़ी बोय ॥३८॥
नितानन्द जो मन मरै, जीव अमर हो जाय।
जब लग मन जीवत फिरै, जहां तहां मृत्यु खाय ॥३९॥

जान बूझ चेते नहीं, अवगुण ही से काम।
दीपक ले कूवै पड़ै, यो मन बड़ा हराम ।।४०।।
जिवह करूं मन आपना, आँखों पट्टी बंधाय।
परघर जले तो जलन दे, अपना लेह बचाय ।।४१।।
नितानन्द मन ना करै, राम मिलन का काम।
सहे नरक की सासना, मूरख मुगध गुलाम ।।४२।।
जो मन जीते आपना, त्रिभुवन जीते सोय।
जन्म जीत जग जीतकर, राम सरीखा होय ।।४३।।
विषम बाट उस महल की, मन चंचल थिर नांहि।
चलन चहै फिर पड़ रहै, कछु बासना मांहि ।।४४।।
मन चंचल मारग मिहीं, किस विध उतरे पार।
चढ़ जहाज़ फिर गिर पड़े, बन्छैं विषय विकार ।।४५।।
मन चंचल मारग मिहीं, किस विध पहुँचा जाय।
आडा डूंगर बीच बन, सतगुरु करैं सहाय ।।४६।।
मन तुरंग चढ़ चेतसूं, सुरत बाग कर हाथ।
नितानन्द बहुत जना, मिले सवेरी नाथ ।।४७।।
नितानन्द चेतन रहो, मन के मते न चाल।
उलट अपूठा आप में, अपना धनी संभाल ।।४८।।
नितानन्द मन के मते, मन से सकल विसार।
गहो गरीबी बन्दगी, समझ समझ पग धार ।।४९।।

ये मन मारै जीव को, भ्रम मांहि भ्रमाय।
अंध कूप में ले पड़े, फेर न निकसा जाय।।५०।।
मन के मते न चालिये, कुमति देह की त्याग।
उलटा कर संसार से, सुलट निरंजन लाग।।५१।।
मन की भ्रमना दूर कर, मत काहू से बूझ।
पांच पलट्ट पाइये, परम धम की सूझ।।५२।।
मन का मारग अति मिहीं, बड़ा वेग जुलहाल।
नितानन्द तिहुं लोक के, दीन्हें पांव उखाल।।५३।।
जिधर दिशा दरबार की, मोड़ा मुड़ै न मूल।
मृग तृष्णा के नीर ज्यों, रहा भ्रम में भूल।।५४।।
तीन गुणों की लहर में, मन के मते न चाल।
नितानन्द भवसिंधु में, दिये जीव सभ डाल।।५५।।
नान्हा नाका नगर का, मन की चंचल चाल।
हर गुण गावै हेत से, पल में औरै ख्याल।।५६।।
मन भौरा संसार बन, विषय बासना लेत।
कुमति कालमा लायकर, भूला फिरे अचेत।।५७।।
भौंरा ये बन छांड़ि दे, ब्रह्म बाग को चाल।
दौं लागे दुख होयगा, देसी सर्वस जाल।।५८।।
भौंरा कहां भ्रमियां, कहां तुम्हारा बाग।
नितानन्द चेत्या नहीं, मूआ जगत से लाग।।५९।।

भौंरा भ्रम में क्या फिरे, सुमर कमल करतार।
सुखसागर को परस ले, यही विचार विचार ॥६०॥
नितानन्द छोड़ै नहीं, मन माया का साथ।
हर बिन रीता रह गया, कछू न आया हाथ ॥६१॥
नितानन्द यह मुग्ध मन, करै नहीं आनन्द।
परमेश्वर को छाड़ि कर, गल में पहिरे फन्द ॥६२॥
ये मन मृग उजाड़ का, मग्न रहै बन मांहि।
नितानन्द जम पारधी, सिर पर सूझे नांहि ॥६३॥
यह मन मृग उजाड़ का, चरै हमारा खेत।
कबहूं बस में पड़ैगा, तो भूनूं देह समेत ॥६४॥
शनैः शनैः मन हटक कर, राम भक्ति में लाय।
जब लागै उन मन्त्र सों, बाहर दे ना पाय ॥६५॥
मना मनोरथ दूर कर, सहज २ धर ध्यान।
नितानन्द उनमन रहे, सो मन चतुर सुजान ॥६६॥
मन सेती मन मिल गया, सभै मिले मन मांहि।
नितानन्द सभ साहबी, मन से बाहर नांहि ॥६७॥
जो मन से मन ना मिले, जनम अकारथ जाय।
मन से मन तन में मिले, तो तन अतन समाय ॥६८॥
जाका मन जग से लगा, सो जुग २ जग मांहि।
जगत तजै हर को भजै, हर हरजन दो नांहि ॥६९॥

नितानन्द मन आपना, धीरज मांहि धिजाय।
राखो हटक कुराह से, प्रभु के पंथ चलाय ।।७०।।
पंथ प्रेम का त्याग कर, यह मन चलै कुराह।
नितानन्द सुखसिंधु तज, भुगते विपत बिसाह ।।७१।।
अपना मन परचाय कर, देहु रैन दिन ज्ञान।
मन इन्द्री बस में करे, तो बस सकल जहान ।।७२।।
अन्तरगत में मन धरै, मन में धरै अलेख।
नितानन्द सब रोशनी, इस तन अन्दर देख ।।७३।।
तन में मन को थिर करै, सहज सहज सुलझाय।
राम भक्ति गुरु ज्ञान से, तुरत मुक्त हो जाय ।।७४।।
मन के सुलझै मुक्त है, मन के बन्धै बन्ध।
मन के मारे अमर है, नातर गल में फन्द ।।७५।।
मन औघड मन भरथरी, मन ही गोरखनाथ।
नितानन्द मन ब्रह्म है, करो जुगत से हाथ ।।७६।।
मन लाए मन पाइये, बिन लाये बहु त्रास।
जो लागै उनमन्न से, सो साहब सो दास ।।७७।।
मन भोरा संसार बन, भ्रमत फिरै दिन रात।
राम तजै विषया भजै, जन्म अकारथ जात ।।७८।।
मन भौरा संसार बन, फिरे वासना लेत।
नितानन्द फन्दे पड़ा, विसरा अलख अचेत ।।७९।।

जिस घर से मन उठ चलै, उलट उसी में लाय।
पार ब्रह्म की प्रीत में, सहज २ विलमाय॥८०॥
नितानन्द संसार से, सकै तो मन को मोड़।
राम भक्ति गुरु चरण से, आठों पहरै जोड़॥८१॥
नितानन्द दरियाव से, मन की लहर अपार।
कोइक हर जन रह गया, बह गया सभ संसार॥८२॥
मन झीना होय बस रह्या, अधर धार बिन ठांव।
जब सुख पावै पीव का, डंघ न भरै तज गांव॥८३॥
सभ रिंदां से रिंद है, बलयों से बलवन्त।
सुक्षम से सुक्षम खरा, नितानन्द मनमन्त॥८४॥
बड़ा अमाना आदि का, हुआ हमारा यार।
नितानन्द माने नहीं, पचो सकल संसार॥८५॥
समझाया समझे नहीं, भक्ति न भावे मूल।
नितानन्द मन मसखरा, रह्या जगत में भूल॥८६॥
मन हस्ती संसार बन, निशि दिन फिरे अचेत।
आपै अपने शीश पर, फिर २ डारे रेत॥८७॥
गुरु अंकुश मानै नहीं, माया मद महमंत।
नितानन्द इक पलक में, कुकरम करे अनंत॥८८॥
छुटा फिरै सभ जगत में, पकड़ सकै नहिं कोय।
बहुत महावत पच रहे, तऊ न मन बस होय॥८९॥

मन छोटा मन बहु बड़ा, मन राई मन मेर।
जैसी मन की लग्न है, होय रहै इक बेर ॥९०॥
मन गहरा मन छीछरा, मन पोखर दरियाव।
नितानन्द सो हो रह्या, जैसा मन का भाव ॥९१॥
मन मृतक मन अमर है, मन ही आवै जाय।
मनही हर बेमुख करै, मन ही हर हो जाय ॥९२॥
मन दाता मन सूम है, मन लोभी ऊद्दार।
मनै अमर कर लेत है, मन ही डालै मार ॥९३॥
मन कंकर मन लोह है, मन हीरा मन लाल।
नितानन्द त्रिकाल मन, जो त्यागै जंजाल ॥९४॥
ब्रह्मा विष्णु महेश मन, जो मन करै सो होय।
नितानन्द प्रगट गुप्त, मन बिन ओर न कोय ॥९५॥
मन सुखदायक जगत में, मन ही दुख दातार।
नितानन्द मन ही तिरे, मन ही डूबनहार ॥९६॥
मन ही सुर मन ही असुर, मन ही साध असाध।
नितानन्द तन मन लगै, तो मन मिलै अगाध ॥९७॥
जोग जुगत मन में सकल, रिद्ध सिद्ध मन मांहि।
नितानन्द हर परम पद, मन से बाहर नाहिं ॥९८॥
मन गंगा मन गोमती, मन पुष्कर मन प्राग।
नितानन्द मन रत्न है, विषय वासना त्याग ॥९९॥

मन सुरही मन गरूड़ है, मन हंसा मन काग।
नितानन्द साहब मिलै, जब मन होय अदाग ॥१००॥
चिन्ता मन चिंता हरण, कामधेन मन जान।
नितानन्द स्थिर हुआ, गुरगम गैल पिछान ॥१०१॥
जो मन फैले जगत में, पंथ पाप के जाय।
नितानन्द गुरु ज्ञान बिन, दोजख गोता खाय ॥१०२॥
नितानन्द मन बह गया, विषय वासना संग।
हो गया काली कामली, किस विध लागै रंग ॥१०३॥
मना मनोरथ दूर कर, साहब धनी संभाल।
नातर जुग जुग रहैगा, पड़ा जमहुं के जाल ॥१०४॥
मना मनोरथ दूर कर, कर्ता करै सो देख।
बिना बनाई बन रही, जो कुछ ठठी अलेख ॥१०५॥
मना मनोरथ दूर कर, कर साहब से प्यार।
नर नारायण नगर की, तब ही बनै बहार ॥१०६॥
मना मनोरथ क्या करे, साहब तेरे माहिं।
नितानन्द बाहर फिरे, घर की शोधी नाहिं ॥१०७॥
रे मन तन में मगन रह, पकड़ प्रेम वि श्वास।
जो कुछ तुझ को चाहिये, सो सब तेरे पास ॥१०८॥
रे मन बन बन जनि फिरै, तन में पकड़ करार।
सब जग बादल धुंध का, भीतर विभव अपार ॥१०९॥

रे मन भीतर मग्न रह, तज बाहर की बान।
जब लग तजै न वासना, तब लग तू हैरान ॥११०॥
नितानन्द का वचन सुन, मेरे मन मुरदार।
पल पल बीती जात है, राम मिलन की बार ॥१११॥
नितानन्द मन मुगध को, पड़ गई बान कुबान।
जो पल बीते भूल में, यही जन्म की हान ॥११२॥
नितानन्द मन हटक ले, मन का बुरा स्वभाव।
जन्म जहाज बहाय कर, ले डोबै दरियाव ॥११३॥
मन के कहे न चालिये, मनकी दोड़ कुदौड़।
ले पैठे दरियाव में, फेर न पावै ठौड़ ॥११४॥
नितानन्द नहीं बाहुड़ै, मन माया रस खाय।
लोभ लगा ज्यों बाणियां, लौभै लागी गाय ॥११५॥
गुरु शब्द मानै नहीं, जन्म गंवावै अन्ध।
नितानन्द घर २ फिरे, पहर गले में फन्द ॥११६॥
मर्कट मूठी बांधकर, जथा न खोले अन्ध।
यों मन हो गया स्वाद बस, पड़ा कर्म के फन्द ॥११७॥
बाजीगर के बस रहै, नाचै घर घर द्वार।
नितानन्द ऐसे फिरे, यो मन मुगध गवार ॥११८॥
मन को बांधे पकड़ कर, तो जिव होय अरोग।
अमर होय महबूब मिल, जब क्या साधै जोग ॥११९॥

नितानन्द मन बस करो, पटक २ ले धोय।
अजर अमर पी २ करै, रहै पिंगला होय ॥१२०॥
पिंगल हो पी २ करै, अन्तरगत लौ लाय।
नितानन्द उनमन रहै, ताको काल न खाय ॥१२१॥
यह मन बस में राखिये, करन न दीजै दौड़।
जब बाहर को पग धरै, तब ही उलट बहौड़ ॥१२२॥
नितानन्द मन आपना, कहीं न दीजै जान।
जब उठ चालै सैल में, उलट आप में आन ॥१२३॥
नितानन्द मन आपना, पकड़ राखि घर घेर।
जब अन्तर्गत सुख लहै, नहीं चलैगा फेर ॥१२४॥
नितानन्द मन आपना, मन ही में समझाय।
चाखैगा रस प्रेम का, जब मन कहीं न जाय ॥१२५॥
चढ़नहार बोझल घना, मन कागज़ की नाव।
नितानन्द कैसे तिरे, भवसागर दरियाव ॥१२६॥
नितानन्द मन मर गया, तऊ भरोसा नांहि।
बुझी आग फिर जल उठे, पड़े बलीता मांहि ॥१२७॥
नितानन्द मन पहल था, सो पीछे को नांह।
वर्षा हुई पहाड़ पर, सूख गया पल मांह ॥१२८॥
जैसे भादौं की नदी, उमंग चढ़ी गहराय।
यों मन उनमन दोय दिन, पीछे वही स्वभाय ॥१२९॥

जैसे भादौं की नदी, उमंग चढ़ी असराल।
यूँ मन लागैं राम से, पल में औरै ख्याल ॥१३०॥
जथा नदी वर्षा समय, यों उनमन दिन दोय।
जेठ मास बहबो करै, पूरी सरिता सोय ॥१३१॥
नितानन्द मन मरे की, मत आनै परतीत।
जब लग पिंजर श्वास है, साधु जन भयभीत ॥१३२॥
मृतक हुआ मन मर गया, तज्या देह अभिमान।
नितानन्द अचरज बड़ा, जाग्या बहुर मसान ॥१३३॥
मार डार निर्भय हुआ, कूट पीट सब अंग।
लगी पवन जब जी उठा, यह मन नाग भुअंग ॥१३४॥
मन के मारे मर गये, बड़े-बड़े बलवन्त।
सुर नर मुनि असुर नर, मार करे भसमन्त ॥१३५॥
नितानन्द जो मन मरै, तो भी मत पतियाय।
लागै पवन विकार की, फेर खड़ा हो जाय ॥१३६॥
नितानन्द जो मन मरै, मर कर होय परेत।
मृतक भी बहु जिवों को, मार मिलावे रेत ॥१३७॥
मन जालिम जोधा बड़ा, जिसका कछू न होय।
नितानन्द ब्रह्माण्ड में, मन सा बली न कोय ॥१३८॥
बली दली छैला छली, देह नगर का राव।
कहीं मारै त्यारै कहीं, पड़े सकल जग पांव ॥१३९॥

अदल करे संसार पर, पहलवान सहज़ोर।
नितानन्द हाज़िर रहैं, हुकुम मांह सब चोर ॥१४०॥
इन्द्र मुनीन्द्र देवता, जीत न सकै विरंच।
लिये फिरे चारों दिशा, साथ सिपाही पंच ॥१४१॥
हर बेमुख जो जगत में, तिनसे लेवै डंड।
नितानन्द मन बस करे, सात दीप नो खंड ॥१४२॥
राखे सब को रोक कर, अज्ञा में अज्ञान।
परमेश्वर के पंथ को, कोई न पावै जान ॥१४३॥
फिरें मवासी मुल्क में, हर से नमक हराम।
नितानन्द मन ना डरै, निडर रहै निशि जाम ॥१४४॥
तीन लोक पग तल दिये, गिणे न काहू रिंच।
सिध साधक जोगी जती, मन से सकैं न बंच ॥१४५॥
मन को मारन गये थे, मन ही लीन्हें मार।
आसा नदी बहाय कर, डोबे काली धार ॥१४६॥
काम क्रोध जोधा बड़े, लोभ मोह उमराव।
कटक कोट मन ओट है, घर २ घालैं घाव ॥१४७॥
मन मारे मुनियर घने, जपी तपी नर नार।
सेख मुसायख औलिया, मन सभ पर अस्वार ॥१४८॥
मन के मारे मर गये, पंडित ज्ञानी सूर।
प्रेम पंथ से अटक कर, पटक मिलाये धूर ॥१४९॥

मन मारे भारे गुणी, ब्रह्मा विष्णु महेश।
नितानन्द मन बस करै, ता जन को आदेश ॥१५०॥
नितानन्द मन गगन को,चढ़ गया होय विहंग।
पल में पड़ा अकास से, मन माया के संग ॥१५१॥
नाद रूप रस गंध मिल, चाहै सपरस बाम।
जब लग मन पाकै नहीं, तब लग काचा काम ॥१५२॥
नितानन्द बट बीज से, मिंही भक्ति का द्वार।
मन मंगल दीर्घ घना, किस विधि निकसै पार ॥१५३॥
मन लोभी मन लालची, मन कपटी मन चोर।
जब लग मन दृढ़ ना रहै, तब लग झूठी दौर ॥१५४॥
तन तरवर मन पात है, विषै पौन की झोल।
नितानन्द कुछ ना घटै, जब लग वृक्ष अडोल ॥१५५॥
जब मन पीवै प्रेम रस, उन्मन से लागे।
तज निद्रा अज्ञान की, चेतन हो जागै ॥१५६॥
पिंगल हो पी पी करे, माया मद त्यागै।
नितानन्द अस्थिर हुआ, जम काल न लागै ॥१५७॥
पांच मृगनी मन मृग, काया बन में बास।
सभ को मारूं एक सर, यही हमारी आस ॥१५८॥
नितानन्द काचा रहै, तौ मन कांच समान।
हर रस पी पी छिक गया, जब मन हीरा जान। ॥१५९॥

हर भजता आलस करै, खान पान से प्रीत।
नितानन्द मन लालची, गहे नहीं प्रतीत ॥१६०॥
अति ओंडा गहरा घना, मन का प्रबल प्रवाह।
देखत ही जी थरहरै, राम करै निर्वाह ॥१६१॥
तिल २ में सभ जग बहै, नितानन्द मन संग।
अरबों में कोई पाइये, मन राखै इक अंग ॥१६२॥
मन निरमल हर ध्यान में, कै साधन के संग।
दिन २ दूनी कालमा, जब लग लगै न रंग ॥१६३॥
कहता सुनता दिन गया, मन न हुआ निवरित।
नितानन्द चित ना चढ़ा, तो पहला दिन नित ॥१६४॥
जैसी लहर संमद्र की, ऐसी मन की झाल।
बेमुख लहर डबौयसी, सन्मुख करै निहाल ॥१६५॥
नितानन्द मन की लहर, कोई उठै कोई जाय।
हौ बल २ उन जनों की, जो मन उलट समाय ॥१६६॥
नितानन्द जो मन चलै, उलट ध्यान में लाय।
एक महूरत थिर रहे, अमर पुरी को जाय ॥१६७॥
बसैं पंच घर एक के, बैरी अति बलवान।
अपने २ स्वाद को, बहुत करैं हैरान ॥१६८॥
मन मुक्ता मन की बंध्या, मन का वार न पार।
जो यह मन साहब भजै, साहब होत न बार ॥१६९॥

कदेक मन जंजाल में, कदे विचारै ज्ञान।
पल में पड़ैं पताल में, कदे चढ़ै असमान ॥१७०॥
मन मस्तक पर मणि धरी, गुरु गुमानी राम।
साध संगत हरि भक्ति मिल, मिटी कामना काम ॥१७१॥
गुरु गुमानी राम प्रसंग, साधसंगति हरभक्ति अभंग।
मन स्थिर कर भजे मुरार, नितानन्द सो उतरे पार। ॥१७२॥

( इति मन का अंग संपूर्णम् )

## 卐 सूक्ष्म मार्ग का अंग १५ 卐

नितानन्द कित से चले, आ निकसे किस गांव।
पंथ न पाया पीव का, भूल पड़े इस ठांव।।१।।
नितानन्द निशि दिन चलूं, कदे न देखी राह।
बिना चले सरता नहीं, राम करे निर्वाह।।२।।
कदे न देख्या ना सुन्या, संग साथ नहीं कोय।
नितानन्द उस पंथ में, बासा बीच न होय।।३।।
न्यारा धरनि अकाश से, ऐसा सूक्ष्म गैल।
नितानन्द उस महल की, करैं सन्त जन सैल।।४।।
हल्के हल्के तिर गये, बड़े बड़े गये डूब।
चढ़े चरन रज होय कर, नितानन्द महबूब।।५।।

नितानन्द बूझत फिरूं, उस मारग की बात।
कोई न दीखै आवता, इत से सब कोई जात।।६।।
सब ही आये उत्त से, इत बोरे हो जांय।
भूल गये इत उत्त की, ज्यों नर निन्द्रा मांहि।।७।।
नितानन्द ज्यों नींद में, नहीं देह की याद।
यों भूला अज्ञान से, उत का सब सुख स्वाद।।८।।
नितानन्द बहु अन्ध मिल, मारग आवैं जांहि।
बिना नैन दीखै नहीं, यों नर को सुध नांहि।।९।।
नितानन्द सब जात हैं, सिर पर धर धर भार।
खबर नहीं कुछ पंथ की, घट घट घोर अन्धार।।१०।।
नितानन्द के चित्त में, यह चिन्ता दिन रैन।
किधर गया वह बोलता, बध बध कहता बैन।।११।।
यही अंदेशा लग रह्या, कोई न कहै निवार।
नितानन्द तन त्याग कर, कित गया बोलनहार।।१२।।
धुर से आये सन्त जन, अनल पंथ की बाट।
नितानन्द चल पूछ ले, जिनके खुले कपाट।।१३।।
नितानन्द कोई सन्त जन, कहैं सैन समझाय।
जाके लगी सो लख गया, मूरख सकै न पाय।।१४।।
नितानन्द क्यों बूझिये, यहां कोई रहे न थीर।
सब ही चाले जात हैं, नदियों कैसा नीर।।१५।।

नितानन्द बूझै सबै, कोई न रहने मांहि।
परमेश्वर की प्रीत बिन, यूंही टापा खांहि ॥१६॥
चलूं २ सब ही कहें, मुझे नहीं इतबार।
साहब की पहचान बिन, बहुत दूर दरबार ॥१७॥
चलूं २ सभ कोई कहै, आगे नहीं पिछान।
नितानन्द ये अन्ध नर, जांघे किस अस्थान ॥१८॥
नितानन्द कैसे चलूं, बहुत दूर दरबार।
अगम पन्थ आकाश से, गिरूं तो वार न पार ॥१९॥
विषम बाट उस महल की, कोट जुगहु में जात।
जो कोई गया सो रम रह्या, फिर आ कही न बात ॥२०॥
नितानन्द इस बात का, अन्देशा है उर माहिं।
हम आये किस ठौर से, चले कहां को जाहिं।२१॥
जिस मारग आये यहां, कयों भूले वह गैल।
पड़ गये गैल कुगैल में, चढ़ा मैल पर मैल ॥२२॥
नितानन्द मारग सही, वही २ घट माहिं।
उस मारग को छोड़ कर, सभै कुमारग जाहीं ॥२३॥
नितानन्द सांसा लग्या, दिल से छूटै नाहिं।
हम में हम भूले फिरें, पन्थ हमारे माहिं ॥२४॥
नितानन्द घट २ चलें, सुक्षम मारग दोय।
एक पहूंचे अमरपुर, दूजे परलय होय ॥२५॥

भरम पन्थ भव बन्ध में, जन्म मरन संसार।
नितानन्द अवगत मिले, अगम पन्थ पग धार ॥२६॥
अगम गमन हर पन्थ में, फटें पन्थ नौ लाख।
नितानन्द चेतन चलो, सुरत ठिकाने राख ॥२७॥
नितानन्द चेतन चलो, मीहीं मुल्क मुकाम।
सदा सुरत से खेलना, गिरे तो कहीं न ठांम ॥२८॥
नितानन्द चेतन चलो, मारग मिहीं मकान।
मकर तार पर महल है, पहुंचे सन्त सुजान ॥२९॥
गगन सिखर घर आदि का, बिना चरण चल जाय।
नितानन्द उस पन्थ में, उनमन सुरत लगाय ॥३०॥
नितानन्द मारग मिहीं, देस दूर घर दूर।
जित पन्थी किस विध चलें, रहें विहंग विसूर ॥३१॥
गगन सिखर पर भवन हैं, जहां बाट बारीक।
अधर धार पर धुन धरी, नितानन्द पारीक ॥३२॥
गगन सिखर घर दूर है, सुरत निरत से जाय।
बहु पन्थी पच २ मरे, पलक न लागे पाय ॥३३॥
नितानन्द निशि दिन चलूं, पै नहिं जानूं गांम।
कहन सुनन में सो नहीं, किस से बूझूं नाम ॥३४॥
नाम न जानूं गांव का, उसी गांव को जांउ।
नितानन्द आगे चलूं, वही गांव सब ठांउ ॥३५॥

नितानन्द अचरज यही, कोई न समझे बात।
सभी जीव चक्रित हुए, चले जाहिं दिन रात ।।३६।।
अधर धार धर पै नहीं, जिस के रूप न नाम।
नितानन्द उस नगर में, हम जा किया मुकाम ।।३७।।
गुप्त पन्थ परदेश का, मगन हुआ जग जाय।
नितानन्द उस देस से, भूल पड़या इत आय ।।३८।।
नितानन्द संसार में, गये अधर सभ होय।
कद आया कद जायगा, समझ सकै न कोय ।।३९।।
नितानन्द जानै नहीं, निशि दिन आवैं जांय।
पल-पल जनमें मरे, रह्या तिमर सा छांय ।।४०।।
सुरत माहिं जन्में मरे, छिन २ धारै देह।
चौरासी में फंस गया, कोई न सूझै येह ।।४१।।
नितानन्द भ्रमत फिरे, लख चौरासी माहिं।
एक तन छोड़े एक धरे, कोई समझै नाहिं ।।४२।।
सभही जियाजून का, पड़गया मन्द स्वभाय।
आठ पहर भ्रमत फिरै, फिर फिर आवै जाय ।।४३।।
जेती उपजै वासना, तेते ही अवतार।
नितानन्द आवा गमन, सुक्षम जन्म विचार ।।४४।।
नितानन्द इस जीव का, जहां आस तहां बास।
पहुंच रहेगा एक दिन, मन मनसा के पास ।।४५।।

घट मांहि जन्में मरै, धरै देह बहुरंग।
पड़ गये सूक्ष्म जाल में, बिसरी बाट विहंग।।४६।।
नितानन्द समझै नहीं, सुक्षम जन्म की चाल।
आतम दृष्ट न ऊपजे, तब लग जम का जाल।।४७।।
नितानन्द नर पड़ गये, सुक्षम जन्म के फन्ध।
जहां जन्म तहां मरन है, चले जात है अन्ध।।४८।।
सुक्ष्म मारग हर मिलै, सुक्ष्म जन्म जग मांहि।
नितानन्द इस ठौर से, दोनों मारग जांहि।।४९।।
जैसी अन्तः करण में, करै कामना ध्याय।
सोई आवागमन है, सुक्षम जन्म सुभाय।।५०।।
अन्तरगत में कामना, जब लग सूक्षम बन्ध।
घड़ी २ जन्मै मरै, समझ सकैं नहीं अन्ध।।५१।।
सुक्ष्म मारग सुख घना, जै चल जानै कोय।
नितानन्द चलना यही, रहिये निश्चल होय।।५२।।
नितानन्द उस पंथ की, निश्चय रहै सो चाल।
चंचल नर चल २ मरें, जन्म मरन के जाल।।५३।।
नितानन्द मारग मिही, हम देख्या निरधार।
चंचल चले सो ना चले, अचल पहुंचे पार।।५४।।
नितानन्द निह चल चलो, सकल भरमना त्याग।
सुक्षम सुरत के जाल में, मुआ सकल जग लाग।।५५।।

चित की चिन्ता दूर कर, जन्मे मरे न कोय।
जाग पड़ा जब जानिये, स्वप्ना सत्य न होय ।।५६।।
अवचल उर धर अचल रह, खोटी दिसा न जाह।
जाय पहुंचे पलक में, कोट जुगों की राह ।।५७।।
नितानन्द पल में कटे, कोट जुगों की राह।
प्रेम पंथ मिल पीव से, जो तेरे मन चाह ।।५८।।
जिस मारग साधू गये, सो मारग नहिं दूर।
मैं तुं तजै न हर भजै, पड़े कुमारग कूर ।।५९।।
कठिन पंथ पिव मिलन का, अणी धार पर गैल।
नितानन्द थरहर करै, भरे जुगों के मैल ।।६०।।
सुक्षम सुरत बलवन्त से, मन नहीं बांधे धीर।
नितानन्द किस विध रहै, फूटे बासन नीर ।।६१।।
सुक्षम सुरत जालम बड़ी, लगी उखाड़न मूल।
कोई २ साधू अटल है, चढ़े चरण होय धूल ।।६२।।
सुक्षम सुरत जग जाल में, पकड़ लिया सब कोय।
नितानन्द जन ऊबरे, चढ़ै चरन रज होय ।।६३।।
असुर न सुर जोगी जती, ब्रह्मा वेद न काय।
उस मारग को हम चले, करता करै सौ होय ।।६४।।
चन्द सूर नहीं चढ़ सकैं, नहीं दृष्ट की दौर।
वचन मन से अगम, विलम रहै उस ठौर ।।६५।।

विकट बाट औघट खरा, थकित भये मुनिराज।
नितानन्द उस घर गये, सतगुरु लिये निवाज।।६६।।
ब्रह्म सुन्न बेगम पुरी, अगम पंथ धुर धाम।
नितानन्द को मिल गये, गुरु गुमानी राम।।६७।।
अंन्धहु को लोचन दिये, गुरु गुमानी राम।
शब्द सैन से ले चढ़े, मारग महल मुकाम।।६८।।

(इति सूक्ष्म मार्ग का अंग संपूर्णम्)

## 卐 माया का अंग १६ 卐

नटनी आई भेष धर, लिया सकल जग लूट।
धनवन्त से निर्धन किये, सक्या न कोई छूट।।१।।
ज्यों दीपक की जोत पर, आपै पड़ै पतंग।
नितानन्द जग जलत है, यूं माया के संग।।२।।
गन्दी का बन्दा हुवा, निर्मल से नहीं नेह।
नितानन्द नर जीवों को, खोय दई नर देह।।३।।
कहीं कनक कहीं कामिनी, कहीं पुरुष कहीं नार।
सुर नर मोहे मोहिनी, धरे जात बेगार।।४।।
साहेब कर सिर पर धरी, मता न जानै कोय।
दो दिन सुख दिखलाय कर, गई छलावा होय।।५।।

ज्यूं सुपने के सुख को, जागै जब पछताय।
यूं सभ माया मृग जल, सब जग प्यासा जाय।।६।।
मानष ते नर खर हुवा, धर माया का भार।
काया कुरड़ी में मगन, साहेब दिया बिसार।।७।।
गंदा कर चलती रहै, मनषा जन्म बिगार।
पीछे राखे बन्ध में, लख चोरासी डार।।८।।
जैसे सुपनै रैन कै, मिलै नवेली नार।
गन्दा कर चलती रहै, जागे नहीं गंवार।।९।।
भक्ति भुलावै राम की, साधु पुजावै नाहिं।
माया ठाकुर होय कर, पटक दिये दह माहिं।।१०।।
फांसी राखै बगल में, लाडू राखै हाथ।
सब प्राणी फन्धे पड़े, इस माया के साथ।।११।।
जननी होकर जन्म दे, पुत्री होय धन खाय।
नारी होकर भख गई, ऐसी बुरी बलाय।।१२।।
देखन माहि सुहावनी, खाती बेर मिठाय।
नितानन्द भीतर बड़े, मारे जहर चढ़ाय।।१३।।
मान पोट सिर पर धरी, गह ले चली नरक्क।
दलदल माया मोह की, सब ही जीव गरक्क।।१४।।
नितानन्द इस जीव को, माया दिया डबोय।
पहले मीठी बोलकर, पीछे बैरन होय।।१५।।

दासी होय दिल में धसे, नय २ पकड़ै पाय।
मोह फन्द में बांध कर, सब जग लिया फंसाय ।।१६।।
जन्म जवाहर ठग लिया, इन माया मद प्याय।
अन्तकाल रीता रह्या, चल्या जीव पछताय ।।१७।।
माया का सुख स्वप्न है, तू मत जानै साच।
कंचन कर कर पाकड़ी, अन्त कांच की कांच ।।१८।।
माया से काया भई, काया से सब भोग।
भोगों से सब को लग्या, जन्म मरण का रोग ।।१९।।
नितानन्द यह मोहिनी, जान न दे दरबार।
भक्ति माहिं भांजी करै, धरै सरूप अपार ।।२०।।
माया आड़ी पड़ रही, गही रूप तलवार।
ऋषी मुनीश्वर देव सब, लिये बीच ही मार ।२१।।
अटक दिये अध बीच में, साधक सिद्ध हजार।
अर्ब खर्ब में एक दो, उतर पहुंचे पार ।।२२।।
ठाढ़ी होय गाढ़ी अड़ी, खड़ी द्वार दरबार।
नितानन्द अटकै नहीं, जिन सिर हार मुरार ।।२३।।
माया लारे लाय कर, मार लिये सब लोग।
नितानन्द कैसे छूटे, बड़ा अपरबल रोग ।।२४।।
माया को साहेब कहें, साहेब की नहीं सूझ।
घट २ में पट लग रहे, भटक मरें बे बूझ ।।२५।।

मन हरनी मन मोहनी, मता न जाने कोय।
नितानन्द जग ठग लिया, कनक कामिनी होय ॥२६॥
मन माहिं मीठी लगै, मुख कड़ी बतावै।
नितानन्द घर प्रेम का, कैसे कर पावै ॥२७॥
माया सेती प्रीत कर, सके न राम रिझाय।
हर अमृत रस छोड़ कर, खाया जहर अघाय ॥२८॥
माया मन्दर मौत का, जहां जगत का बास।
नितानन्द निरद्वन्द हो, निकस गये हरदास ॥२९॥
माया में मन मेल कर, दिया राम को पेल।
नितानन्द वे फँस गये, यथा बांड़ पर बेल ॥३०॥
माया सेती रत रहा, निशि दिन तजै न संग।
मिल गया विषय विकार सूं, किया भक्ति का भंग ॥३१॥
जग माया के जाल में, पड़ गया पंछी होय।
नितानन्द लालच लग्या, चला जन्म को खोय ॥३२॥
ठकुरानी प्रानी कहे, लगी रहे ता आस।
नितानन्द चेरी लखी, हर जन हुए उदास ॥३३॥
माया जग की राम है, सभ जी हुए गुलाम।
संग न चाली एक के, नितानन्द किस काम ॥३४॥
नितानन्द इन मोहनी, मोह लिया संसार।
पकड़ बांध बस में करे, पशु पक्षी नर नार ॥३५॥

सुर नर देवी देवता, पगे रहैं गलतान।
नितानन्द तिहुं लोक में, इस माया का ध्यान।।३६।।
ऋषि मोहे मोहे मुनी, पंडित मुंडित कोट।
नितानन्द सब पर धरी, बांध पाप की पोट।।३७।।
नितानन्द माया प्रबल, अति दुस्तर दरियाव।
जिस में पड़ा न बाहुड़े, बूड गई बहु नाव।।३८।।
नितानन्द इस जीव की, माया से मत भंग।
लाग्या सुख दुख देह का, भुगतै कर्म कुसंग।।३९।।
माया सभ नर बस करे, भरम माहिं उलझाय।
छलै छलावा होय कर, नाना रूप दिखाय।।४०।।
माया मानस मारनी, मारै घात लगाय।
बाहर राखै जीवता, भीतर से भख जाय।।४१।।
माया मानस मारनी, आदम खोरी रांड।
नितानन्द सभ जग भख्या, यथा मनुष घी खांड।।४२।।
कायापुर में पंच ठग, माया दिये लगाय।
राम चरण चित में धरै, सकै तो जन्म बचाय।।४३।।
ठगनी बैठी बाट में, लिये मिठाई हाथ।
जिन चाखी सो मर रह्या, निकस गया संग साथ।।४४।।
ठांव ठांव ठगती फिरै, लिये पंच ठग लार।
लाडू लोभ दिखाय कर, लिये मुगद नर मार।।४५।।

माया बैठी फन्द ले, वेस्वाँ करे विश्वास।
मिष्ट बोल सर्वस हरै, करै जीव का नाश॥४६॥
मारै लारै लाय कर, छल बल करै करोड़।
सदा न काहू के रही, गई अधम में छोड़॥४७॥
सदा न काहू के रहै, सदा न भोगै कोय।
मृग तृष्णा के नीर ज्यों, झूठा झिलमिल होय॥४८॥
माया बैठी फन्द ले, वेस्वा करे सिंगार।
जन्म अमोलक ठग लिया, जीवत डारा मार॥४९॥
नितानन्द यह पापनी, मारै लारै लाय।
सूआ सम्भल सेय कर, क्या खरचे क्या खाय॥५०॥
साहेब से बेमुख करै, माया बड़ी हराम।
कुमत उपावै देह में, भजन न देवैं राम॥५१॥
नितानन्द बैरन बड़ी, करै घने घर चौड़।
स्वर्ग मृत्यु पाताल में, करै रैन दिन दौड़॥५२॥
माया बैरन आदि की, राम बिमुख कर देत।
मनसा जन्म बिगाड़ कर, पकड़ नरक में लेत॥५३॥
माया बैरन आदि की, करै घणै घर खाख।
नितानन्द दिल आपना, राम चरन में राख॥५४॥
माया मति मैली करै, भक्ति मुक्ति में भंग।
छुटन न देवै जगत से, माया बड़ा कुसंग॥५५॥

नितानन्द आवै नहीं, जित माया की चाह।
उन का संग पल ना तजै, जहां नहीं परवाह ।।५६।।
नितानन्द मैली करै, मैले नर से प्रीत।
जैसे को तैसा मिलै, यही आद की रीत ।।५७।।
माया तब लग ना मिले, जब लग मांगे कोय।
सदा लगी पीछे फिरे, जो चित चाह न होय ।।५८।।
नितानन्द हर मिलन का, दिल में पक्का भाव।
बैठी माया बीच में, करै हजारां दाव ।।५९।।
बटमारी प्यारी लगै, लुटे प्रीत से प्रान।
नितानन्द आपै करै, आप आपनी हान ।।६०।।
नितानन्द इन मोहिनी, मोहे चतुर सुजान।
बिन मारे आपै मरे, भटक भटक अज्ञान ।।६१।।
नितानन्द इन मोहनी, छले छैल बुधवान।
काम कटारी कर गही, हते हजारां प्रान ।।६२।।
माया मन की मोहनी, मोहै मोह लगाय।
जैसे मरकट स्वाद बस, पड़े बंध में आय ।।६३।।
पकड़ बांध बस में किए, पंडित ज्ञाता ज्ञान।
मार डिगाए पलक में, बड़े २ निसान ।।६४।।
माया घानी घाल कर, लिये पेल नर नार।
नितानन्द कोई बच रहै, जिन के राम आधार ।।६५।।

माया पेले रात दिन, सभ घट घानी घाल।
घट २ कोल्हू काम का, अमृत लिया निकाल ।।६६।।
माया मीठी बोलनी, लगै चरन से धाय।
नितानन्द मन में बड़े, पीछे सर्वस खाय ।।६७।।
माया मीठी खांड सी, सभ कोई देख लुभाय।
जब गुण बर्तै आपना, तब प्राणी पछताय ।।६८।।
माया मिश्री सी लगै, अधिक मिष्ट दिन चार।
नितानन्द पीछे करै, जन्म जन्म सिंघार ।।६९।।
माया मीठी देख कर, उठै लहर दिल मांहिं।
कनक कामनी रूप धर, पकड़ लिए भग मांहि ।।७०।।
माया मीठी देख कर, उठै लहर दिल बीच।
नितानन्द तिहुं लोक में, लिए प्रान सभ खींच ।।७१।।
नितानन्द तृप्ते नहीं, माया सुख से कोय।
ज्यूं २ भोगै प्रीत से, प्यास चौगुनी होय ।।७२।।
माया रस ज्यों २ पीवे, त्यों त्यों पावे दुःख।
नितानन्द विष खायकर, कहो किन पाया सुख ।।७३।।
माया रस ज्यों २ पीवे, त्यौं २ बढ़ै पियास।
जन्म २ भटकै पड़ा, पहर गले में फांस ।।७४।।
माया सुख संसार में, नितानन्द दिन चार।
देखत ही चल जायगी, फिर दुख बारम्बार ।।७५।।

माया का सुख देखकर, नितानन्द मत भूल।
इक छिन सुख दिखलाय कर, मार मिलावै धूल ।।७६।।
यह सब माया मृग जल, कबहूं सत्य न जान।
झूठा झलका देखकर, हुये जीव हैरान ।।७७।।
माया का सुख दुख भरा, भोगे सो पछताय।
हर बिन रीता रह गया, दुनियां से दिललाय ।।७८।।
माया मोहे मुगध नर, जहां नहीं गुरु ज्ञान।
जैसे पंछी स्वाद वस, पड़ा पींजरे आन ।।७९।।
माया मोह मिलाप की, पड़ी अंधेरी रात।
सोय गया सो मुसलिया, जन्म खोय उठ जात ।।८०।।
माया मोह मिलाप में, राम न आया याद।
रतन जन्म यू ही गया, नितानन्द बरबाद ।।८१।।
माया मोह सुधोह है, धरा पारधी जाल।
राम बेमुख सभ फंस मरे, नितानन्द बेकाल ।।८२।।
जग में माया मोह की, पड़ी अंधेरी रैन।
जीव सूत्यां घर लूटिये, अन्ध न खोले नैन ।।८३।।
माया मोहे मुगद नर, साहेब दिया विसार।
बाजीगर बाजी रची, ऐसा जगत विचार ।।८४।।
माया डाकन जगत में, लघु दीर्घ सब खाय।
सन्त देख थर थर करै, जिन के राम सहाय ।।८५।।

यह डाकन सभ को भखे, जिस की पैनी जाड़।
हर जन देखे नैन भर, तो लीजै जाड़ उखाड़ ।।८६।।
नितानन्द इस जगत में, माया लगी चुड़ेल।
नर नारी सभ मार कर, फिरे लगाए गैल ।।८७।।
माया चंचल चोरटी, लूटै चित्त चुराय।
जन्म कर्म सभ खोय कर, नर रीता उठ जाय ।।८८।।
माया मीठी बोल कर, पहल बढ़ावै प्यार।
पकड़ बांध बस में करै, पीछे डारै मार ।।८९।।
माया मीठी बोलनी, प्रथम लगावै मोह।
पीछे मारै जहर दे, नितानन्द कर धोह ।।९०।।
माया मन की मोहनी, पैठ जाय मन माहिं।
नितानन्द हर पंथ में, चरण धरण दे नाहिं ।।९१।।
माया मन की मोहनी, चंचल चपल सुजान।
नितानन्द बस कर रही, जित लग जगत जहान ।।९२।।
सुन्दर सुघड़ सुहावनी, सोभावंत सुरंग।
जगत मांह जगमग करे, फिरै तिहूं पुर संग ।।९३।।
माया मरै तो मन मरै, जीव अमर हो जाय।
नितानन्द अवगत मिलै, काल कौन को खाय ।।९४।।
नितानन्द जो मन मरै, तो माया मर जाय।
काया कंचन कर लई, अमर हुए गुन गाय ।।९५।।

आसा तृष्णा अमर है, नितानन्द जग माहिं।
सब माया के फंद में, फिर २ आवैं जाहिं ॥९६॥
माया सब को गह रही, आसा तृष्णा लाय।
राम भगत से अटक कर, भवजल दिये बहाय ॥९७॥
नितानन्द छोड़ै नहीं, मन माया का साथ।
जगत मांहिं जन्मे मरे, पड़ा पराये हाथ ॥९८॥
माया की आसा लगै, फिरै जीव हैरान।
नितानन्द पड़ बंध में, हो गये बन्दी वान ॥९९॥
नितानन्द पग में पड़ी, माया बेड़ी होय।
साहेब के दरबार को, जान न पावै कोय ॥१००॥
करे रुपैये एकठे, कोड़ी २ जोड़।
नंगे पांओं उठ चले, सब माया को छोड़ ॥१०१॥
नितानन्द धन लीजिये, इत उत निबहै ओड़।
कोई न सिर धर ले गया, जिनकै लाख किरोड़ ॥१०२॥
आसा तृष्णा पापनी, माया बड़ा कलंक।
इस पैंडे दोजख़ गये, क्या राजा क्या रंक ॥१०३॥
माया सब कै मन बसी, निस दिन रहै उपाव।
कुल कुटंम धन सम्पदा, भोग करन का चाव ॥१०४॥
माया ही की बासना, माया ही में बास।
माया माहीं जन्म ले, माया माहिं बिनास ॥१०५॥

माया ही की धारणा, माया ही का ध्यान।
नितानन्द तीनू भवन, माया में गलतान ॥१०६॥
माया के सभ स्वाद हैं, माया ही का पिंड।
नितानन्द माया करै, माया ऊपर डंड ॥१०७॥
माया की रचना रची, माया ही का ख्याल।
माया गरद मिलाय दे, माया करै निहाल ॥१०८॥
माया से सुक्षम भया, माया से अस्थूल।
नितानन्द माया रही, माया अन्दर भूल ॥१०९॥
माया ही का देंहरा, माया ही का देव।
नितानन्द माया करै, माया ही की सेव ॥११०॥
माया ही के नर भये, माया ही की नार।
नितानन्द हाजिर सभै, माया के दरबार ॥१११॥
माया भीतर बस रही, कनक कामिनी होय।
सभ के तन मन छेद कर, लिये सूत में पोय ॥११२॥
भवन चतुर्दश जीत कर, चढ़ी सीस सिरताज।
नितानन्द सभ सृष्टि में, करै चकुवै राज ॥११३॥
फिरे दुहाई जगत में, धरन गगन थर्राय।
सुर नर असुर मुनी गुनी, सभ मिल लागे पाय ॥११४॥
पांच तत्त्व गुण तीन की, बनी जहां लो मंड।
नितानन्द मूरख भरै, माया को सब डंड ॥११५॥

माया के हित तप करे, बसै जाय बन माहिं।
माया के हित दुख सहै, साहब से हित नाहिं ॥११६॥
माया के हित साधना, माया के हित जाप।
माया के हित लग गया, विसर आप में आप ॥११७॥
माया के हित धर्म है, माया के हित दान।
नितानन्द फल भोगिये, फिर माया में आन ॥११८॥
माया के हित व्रत करे, माया संयम ध्यान।
माया के मार्ग लगे, जग में आवन जान ॥११९॥
माया के तीरथ बने, माया के हित न्हाय।
नितानन्द फल फूल में, मुरख दिये बहाय ॥१२०॥
मोटी माया प्रगट है, झीनी घट के माहिं।
जित तित माया बिस्तरी, नितानन्द कित जाहिं ॥१२१॥
मोटी माया से छूटै, आगे झीनी खाय।
सिध साधक जोगी जती, झीनी दिये बहाय ॥१२२॥
मोटी माया तज गये, जोग धारना धार।
नितानन्द सिद्धान्त में, लिये दूसरी मार ॥१२३॥
जोग समाध लगाय कर, चढ़ गये दशमें द्वार।
रिद्ध सिद्ध के रूप में, माया लिये उतार ॥१२४॥
नितानन्द उनमन लगे, चढ़े गगन में सोय।
मार उतारै जगत में, महा मोहनी होय ॥१२५॥

जब लग तृष्णा देह में, के माया के मान।
तब लग मुक्त न पाइये, रहें बंध में प्रान ॥१२६॥
माया गुण की बादली, बरषै मन्दर मांहि।
भीतर सब भीजे पड़े, बाहर निकसैं नांहि ॥१२७॥
माया अवगुण की घटा, भीजै तप्त अपार।
सूका सो शीतल रहे, सतगुरु शब्द विचार ॥१२८॥
कदे न कीजै कामना, सर्गुण निर्गुण चाह।
मिलै मुक्त पद ईसता,सभ जग मानै ताह ॥१२९॥
जन्म मरन व्यापै नहीं, बिना विषय आनन्द।
चार पदारथ पाइये, सो भी माया फंद ॥१३०॥
माया तरवर तिमर का, साखा भरम विकार।
जन्म मरन फल विष भरा, अंधे भोगनहार ॥१३१॥
भवजल बूड़े संत जन, कहां बचै जग जीव।
मान बड़ाई चित चढ़ी, तज परमेश्वर पीव ॥१३२॥
नितानन्द माया तजै, तजा न जावै मान।
मान बिना मन ना रंजे, जब लग मिलै न ज्ञान ॥१३३॥
माया ममता परहरी, कनक कामनी त्याग।
नितानन्द सब रस तजै, मुए मान से लाग ॥१३४॥
माया तजी न जानिये, जब लग मान न जाय।
मान डुबोवे पलक में, फिर माया में ल्याय ॥१३५॥

मोटी तज झीनी तजै, तजै बड़ाई मान।
नितानन्द रज हो रहै, ताहि मिलै भगवान ॥१३६॥
नितानन्द माया तजै, मान न त्यागै जीव।
मूरख पीवै छाछ को, तज परमेश्वर घीव ॥१३७॥
नितानन्द इस मान को, काढो गधे चड़ाय।
पटक बड़ाई कूप में, निर्भय हरि गुण गाय ॥१३८॥
ये गोली दरबार की, मान बड़ाई दोय।
अटक रहै अधबीच में, इनमें अटकै सोय ॥१३९॥
माया की तृष्ण रहे, तब लग सब कंगाल।
जीवहु का आधीन होय, राम न सका संभाल ॥१४०॥
बेड़ी से गाढ़ा खरा, इस माया का फन्द।
बिना कृपा छूटै नहीं, क्या ब्रह्मा क्या इन्द ॥१४१॥
आसा तरकस में भरे, विषय वासना बान।
मार लिए पंछी घने, माया कठिन कमान ॥१४२॥
आसा आसन लग गया, माया के दरबार।
विषय भोग विखिया भरी, भूले भक्त मुरार ॥१४३॥
आसा अंटी लग गई, माया बड़ा कुसंग।
नितानन्द कैसे छुटै, अटक गया सभ अंग ॥१४४॥
आसा में आसन किया, नहीं निबेड़ा होय।
बहे फिरैं परपंच में, नितानन्द सभ कोय ॥१४५॥

माया कहै पुकार कर, सुनो संत निःकाम।
सभ जीव मारूँ बाँध कर, तुम्हें मिलाऊँ राम ॥१४६॥
भक्ति न कीन्हीं राम की, दुनियां में दिल लाय।
दुनियां मिली न हर मिला, दोनों दिए गंवाय ॥१४७॥
प्रीत करी संसार से, राम संभाला नांहि।
माया मिली न हर मिला, पड़ गये दुविधा मांहि ॥१४८॥
माया आगे जीव सब, शीश नवावें आय।
पानी से पैदा करे, सो प्रभु गये भुलाय ॥१४९॥
नितानन्द हर छोड़ कर, माया में गलतान।
सभै चचोड़ें चित दें, ज्यों करंक को स्वान ॥१५०॥
माया आदि करंक है, जग स्वान चिचोड़ै।
इस करंक के कारणे, साहेब से तोड़ै ॥१५१॥
खींच खींच बहु मर गये, तृपत्या ना कोई।
नितानन्द हर संपदा, अज्ञान डबोई ॥१५२॥
आप गुप्त हो दूर रहै, सुधि बुधि बिसराई।
नितानन्द मन मोहनी, सब साथ लगाई ॥१५३॥
आत्म सुत सांई पिता, संग लाग्या धाई।
माया मोह लगाय कर, सब दिये भुलाई ॥१५४॥
माया सुख दुख सम लख्या, मन से छिटकाई।
मोह निशा अंधेर की, विष लोभ मिठाई ॥१५५॥

विरह विथा से रोवना, अन्तर लौ लाई।
पिता पुत्र से मिल गया, नित बजै बधाई ॥१५६॥
मेर तेर की डोर में, बंध्या संसारा।
पचै मरै कांयस करै, दुख बारम्बारा ॥१५७॥
माया पौन विकार की, जीव झोले मारा।
नितानन्द इस जगत में, साहेब रखवारा ॥१५८॥
बगली नीर बिटाल कर, दध दोष लगाया।
सभ पंछी मिल पी गये, पर हंस तिसाया ॥१५९॥
माया बड़ा अथाह जल, निकस्या हर जन कोय।
ज्वाला किस विध राखिये, दारु मांहि घसोय ॥१६०॥
माया कारण लड़ मुआ, सूर वीर बिन ज्ञान।
एक हाड़ पर स्वान दो, यों लड़ मुआ जहान ॥१६१॥
नितानन्द इस जीव की, माया दुखदाई।
पारब्रह्म के पंथ से, सब दिये भुलाई ॥१६२॥
राखै अपनी आंट मे, आसा अटकाई।
रूप अनन्त दिखाय कर, चित लेत चुराई ॥१६३॥
कामी नर बस करन को, कामिन बन आई।
क्रोधवन्त क्रोधी किये, तन तपत बधाई ॥१६४॥
लोभी लंपट लालची, तृष्णा मन छाई।
निस वासर धन वृद्धि का, उर करे उपाई ॥१६५॥

मोह जाल में दे दिये, सब लोग लुगाई।
अभिमानी मारे घणे, दे मान बड़ाई ॥१६६॥
माया नागन चौमुखी, जन्मे और खाई।
नितानन्द जन ऊबरे, गुरु करे सहाई ॥१६७॥
विष का अमृत नाम धर, सभ किनहूं भोगी।
ब्रह्मा विष्णु महेश लू, तपस्वी और जोगी ॥१६८॥
माया दीन्हीं आसकां, हर जन की दासी।
बिलसी पै नहीं आदरी, भज भज अवनाशी ॥१६९॥
सांकट के सिर पर रहे, साधन के पाई।
सांकट सेती भांडणी, संतन सुखदाई ॥१७०॥
गुरु गुमानी दास जी, कर मस्तक दिया।
माया विषय समुद्र से, पारांगत किया ॥१७१॥

(इति माया का अंग संपूर्णम्)

## 卐 चाणिक का अंग १७ 卐

पेट बहाया बह गया, स्वामी नाम धराय।
राम भरोसा छोड़ कर, घर २ जांचण जाय।।१।।
नितानन्द होना सहल, स्वामी और महन्त।
निराधार नेह कामना, दुर्लभ होना सन्त।।२।।

संसारी स्वामी बहुत, इक दमड़ी के दोय।
कोड़ी सांटे बिक गया, कारज सरा न कोय।।३।।
तिष्टा अर्धा आरती, जगत दिखावै दिम्भ।
राम भक्ति तज धर लिया, सिर पर भार असम्भ।।४।।
चेला चेली चित चढ़े, मरकट वाली मूठ।
नितानन्द वह जात हैं, ज्यों धरे सलीता ऊंट।।५।।
लोभी स्वामी कलयुगी, लेने के सभ दाव।
घर २ द्वारे यों फिरैं, ज्यों ताते दूध बिलाव।।६।।
स्वामी होना सहल है, दुर्लभ हर का हेत।
कामधेन का नाम धर, चरें जात खर खेत।।७।।
सिख साख की आस में, जपै नहीं जगदीस।
ऐसे गुरु न कीजये, पैसे के पच्चीस।।८।।
पेट काज जित तित धरै, ताम्बा पीतल खोल।
राम भजन बिन खो दिया, मनखा जन्म अमोल।।९।।
राम भरोसा छोड़ कर, धन संपत का ध्यान।
द्वारे २ यूं फिरे, यथा टूक को स्वान।।१०।।
माया की तृष्णा घनी, जिभ्या रस और मान।
पाखंडी करते फिरैं, राजद्वार पहचान।।११।।
नितानन्द जन कित मिलै, कलू काल की देह।
भोंदू भड़वे भांड से, सब मिल करैं सनेह।।१२।।

नितानन्द कलिकाल में, रही न संत पिछान।
लोभी लंपट मसखरा, तिनका आदर मान ।।१३।।
कलयुग पहरा पाप का, गुप्त हुए हर संत।
मिथ्या मल छल छिद्र के, मार्ग चले अनन्त ।।१४।।
कलयुग आया नितानन्द, मुनि जन रहे ल्हुकाय।
डिम्भ कपट पाखण्ड को, सब जग पूजन जाय ।।१५।।
कथा कीर्तन हर भगति, सुने न समझे कोय।
भूत देवता पूजिये, मान डिम्भ का होय ।।१६।।
औरां के परमोद में, आपा खोया मूल।
दो दिन भला कहाय कर, अंत पड़ी मुख धूल ।।१७।।
अंधों माहीं बैठ कर, काना बना महन्त।
नितानन्द दृष्टा मिल्या, तब काना काने पंथ ।।१८।।
बड़ा कहाया जगत में, ज्यों शशि तारों माहिं।
रैन गई सूरज उग्या, छिप गये सभ पल माहिं ।।१९।।
अंधों को परमोध कर, चूंधा हुआ खुशाल।
नितानन्द पशु पकड़ कर, दुह दुह पीवैं ग्वाल ।।२०।।
सुध बुध से प्रानी पकड़, स्वामी लिये धिजाय।
इत के हुए न उत्त के, अध बिच दिये बहाय ।२१।।
देखन के सब सोहनें, ज्यों स्वप्ने में राज।
जाग्यां पीछे ना रहै, केता करो इलाज ।।२२।।

देखन के सब सोहनें, ज्यों स्वप्ने धन होय।
जाग पड़ै जब कुछ नहीं, पछतावे सब कोय ॥२३॥
सब ही मोती ओस के, देखन मांह सुहाहिं।
नितानन्द सूरज उदय, ना जानूं कित जाहिं ॥२४॥
नितानन्द इन जीवों को, किस बिध प्रगटै ज्ञान।
भेड़ पूछ गह सिंधु में, कहै पार को जान ॥२५॥
नितानन्द नर अंध को, क्या कहिये समझाय।
तिरया चाहे दरियाव में, पाहन नाव बनाय ॥२६॥
नितानन्द समझैं नहीं, बिषयी पामर प्रान।
पकड़ अंगुरिया अंध की, पड़े कूप में जान ॥२७॥
स्वामी समझ न ऊपजी, धरा शिष्यों का भार।
नितानन्द हर भक्ति बिन, ले डोब्या मझधार ॥२८॥
पद गावै पोथी पढ़ै, दुनिया में परवीन।
बात बनावै अगम की, गल में फांसी तीन ॥२९॥
पद गावै सुरताल से, लोक सुनाय सुनाय।
पेट काज पच पच मुआ, सक्या न फंद छुटाय ॥३०॥
पाठ पढ़ै अपरस रहै, संध्या करै त्रिकाल।
मन में माया बस रही, भ्रमै अकाश पताल ॥३१॥
रहणी बिन कथनी कथै, मिटै न मन का खोट।
देखत ही ढह जायगा, काल बूत का कोट ॥३२॥

कथनी कथना सहज है, रहनी दुर्लभ चाल।
साधु सती और सूर का, अनी धार पर ख्याल ।।४३।।
दीखै हर जस गांवता, राग अलाप अलाप।
नितानन्द हर क्यों मिलै, जब लग मन में पाप ।।४४।।
नितानन्द एक मास में,करै कीर्तन चार।
भीतर भेद न प्रगटै, बक बक मुआ गंवार ।।४५।।
नाचै गावै पद कहैं, भीतर लगी न चोट।
नितानन्द कैसे तिरे, सिर पर भारी पोट ।।४६।।
बिना प्रेम नाचै घणा, बिना प्रेम पद गाय।
नितानन्द हर ना मिलै, दुनिया लेय रिझाय ।।४७।।
गावै नाचै ताल पर, भक्ति नहीं उर मांहि।
मूरख रीते रह गये, बिना बीज फल नांहि ।।४८।।
चतुर अष्ट दश पाठ पढ़े, हिय न हर की प्रीत।
तंत संत जन मथ लिया, पण्डित गावै गीत ।।४९।।
नितानन्द गुण में निपुण, रामभक्ति नहीं मांहि।
जेहि सेरी साधू गये, पंडित पावैं नांहि ।।५०।।
ज्ञान ग्रन्थ श्रुत बहु सुनै, नितानन्द बिन भेद।
बीज संत जन ले रहे, पंडित ढूंढे वेद ।।५१।।
पुस्तक पढ़ २ बहु मुए, अन्तर नहीं प्रकास।
पंडित ढूंढे खेत को, बीज गुरु के पास ।।५२।।

ऐसा गुरु न कीजिये, पाप पतिग्रह खाय।
बूड़त हूं को पाकड़ै, सो भी बूड़े आय।।५३।।
ब्राह्मण गुरु संसार का, संशय सकै न खोय।
आप डूबते पांडिया, बहुतक दिये डबोय।।५४।।
ब्राह्मण बूड़े बाद कर, कुल अभिमान बढ़ाय।
नितानन्द हर छोड़ कर, चपर नरक में जाय।।५५।।
ब्राह्मण भूले भरम में, धरा जनेऊ कान।
पारब्रह्म को छोड़ कर, सुमरै आन ही आन।।५६।।
विप्र कुपातर कलयुगी, ताहि न दक्षिणा देत।
नरक मांहि ले जायसी, कुल जजमान समेत।।५७।।
जब था पांडे गर्भ में, विष्टा मुत्र आहर।
अब भूरख फैक्ट करै, भूला ब्रह्म विचार।।५८।।
हाड चाम की देह में, अकड़ा फिरै गवांर।
नितानन्द हरि क्यो मिलै, धरा भार पर भार।।५९।।
कलि के ब्राह्मण कुटिल हैं, ताहि न न्योत जिमाय।
दूध पिलावै सर्प को, सो भी विष हो जाय।।६०।।
साकत पूजै सकति को, हर जन से अभिमान।
पकड़ बांध जम ले गया, बिना गुरु के ज्ञान।।६१।।
साकत सकति मनाय कर, गया मुक्त से दूर।
दो अक्षर गुरु ज्ञान बिन, पड़ी जन्म में धूर।।६२।।

बैठा आसन ब्यास के, कथा सुनावै और।
भीतर भेद न परगटा, रही अंधेरी घोर॥६३॥
अगम निगम दृष्टान्त दे, कथा सुनावै ब्यास।
मांह अंधेरा पड़ रहा, तकै पराई आस॥६४॥
वैरागी को मांगणा, गिरही चिन्त अपार।
दोनों को दुविधा लगी, साधू कहैं पुकार॥६५॥
गिरही को ग्रह लग गया, वैरागी परमोध।
नितानन्द दोनों फंसे, आपा सकै न सोध॥६६॥
गिरही को ऊद्दारता, वैरागी को ज्ञान।
नितानन्द इन गुणहुं बिन, दोनों रीते जान॥६७॥
सेवक सो सेवा करै, वैरागी निरद्वन्द।
नितानन्द नातर पड़े, दोनों के गल फन्द॥६८॥
साहेब स्वामी सर्व का, और स्वामी न कोय।
नितानन्द स्वामी भये, घणी सासना होय॥६९॥
नितानन्द नहीं गर्भिये, स्वामी नाम धराय।
हाथी के पल्लान को, सकै न गदहा उठाय॥७०॥
सिख शाखा कीन्हे घणें, गये राम गुण भूल।
हर बेमुख रीते रहें, ताके डाल न मूल॥७१॥
सिख साखा संसार में, भक्ति बिना गल फन्द।
बेड़ी कंचन की पहर, हुए बंध मति अन्ध॥७२॥

नितानन्द चित चेत कर, तजो संग संसार।
एक पलक का सुख है, जन्म २ की मार।।७३।।
नितानन्द कीजै नहीं, संसारी का संग।
जब तक काया विनस है, दीपक पास पतंग।।७४।।
मुसलमान काबे गया, सबर नहीं दिल मांहि।
साहेब किस विध पाइये, जो दिल साबत नांहि।।७५।।
बिना सबर क्या पाइये, सौ बर काबे जाह।
भीतर साफ हुए बिना, मिलै नहीं अल्लाह।।७६।।
काबे की हज क्या करै, दूई रही दरम्यान।
उनको अल्लाह सब जगह, जिनका साफ इमान।।७७।।
जो आशिक अल्लाह के, जीतें हिरस हवास।
हरदम हाजिर याद में, काबा उनके पास।।७८।।
चेला चेली चित चढ़े, नितानन्द हर त्याग।
ज्यों पंथी बेबान में, दग्ध भया दौं लाग।।७९।।
अन्तर्यामी उर नहीं, सिख साखा की आस।
वे नर जग में यूं जलें, ज्यूं द्वाड़ में घास।।८०।।
स्वांग बनाया सिद्ध का, भीतर ज्ञान न ध्यान।
बुद्धि पशु की देख कर, खाय गये मिल स्वान।।८१।।
बाना पहरा सिद्ध का, मांह गधे का ज्ञान।
जग में सिद्ध कहाय कर, ले डूब्या अभिमान।।८२।।

नितानन्द ठगता फिरा, झूठी बात बनाय।
स्वार्थ के संग लाग कर, चल्या नरक को जाय।।८३।।
मायाधारी मनुष से, प्रीत करै सभ कोय।
जन्म अमोलक खो दिया, इन्द्री के बस होय।।८४।।
पंडित मुंडित दर्शनी, संन्यासी वैराग।
पाथर ही के पारखूं, सकैं न हर से लाग।।८५।।
पढ़ना गुनवा चातुरी, तप साधन फल भोग।
नितानन्द सिद्धान्त लौं, बिना भजन सभ रोग।।८६।।
लोभी स्वामी कलयुगी, बहुत बढ़ाया वित्त।
लेखा करता उठ चल्या, रह्या ब्याज में चित्त।।८७।।
जो बरियां अब बन रही, सो बरियां फिर नांहि।
मखन २ साधू लिया, छाछ रही जग मांहि।।८८।।
कै खाना कै सोवना, कै माया की प्रीत।
साहेब धनी बिसारिया, आदि अंत का मीत।।८९।।
आदि अंत और मध्य में, गुप्त प्रगट विश्राम।
नितानन्द की बन्दना, गुरु गुमानी राम।।९०।।

(इति चाणिक का अंग संपूर्णम्)

# 卐 कामी का अंग १८ 卐

कामी लोभी नरहुं के, कनक कामिनी सीश।
नितानन्द सिर संत हैं, संतन सिर जगदीश।।१।।
काम क्रोध मद लोभ में, सभ जीवों की ठाम।
गुरु साधन के चरण में, नितानन्द विश्राम।।२।।
काहू के सुन्दर त्रिया, काहू के धन धाम।
नितानन्द के संत जन, गुरु गुमानी राम।।३।।
नितानन्द के सीस पर, गुरु गुमानी राम।
हाथ जोड़ हाजिर रहै, कामिनि कनक गुलाम।।४।।
नारी नागन विष भरी, डसै तिहूं पुर मांहि।
बिना शरण हरि चरण की, कहीं उबारा नांहि।।५।।
नितानन्द यह नागनी, भीतर से डस जाय।
जिसका खाया ना बचे, कोटि औषधी लाय।।६।।
कामिनि काली नागनी, कई मुखों से खाय।
नैन बैन कुच से डसै, ऐसी बुरी बलाय।।७।।
नख सिख सभ काला करै, जिसके मारै डंक।
नितानन्द बैराग में, नारी बड़ा कलंक।।८।।
नितानन्द नारी डस्या, जीवत ही मर जाय।
आप डसावै आप को, जब क्या पार बसाय।।९।।

जाको नैन निहार कर, सर्प अन्धला होय।
नितानन्द नित अंग लगे, क्यों कर जीवै कोय ॥१०॥
नारी नैन निहार कर, सभी मनुष्य भये अन्ध।
परमेश्वर की ओर से, हो गए लोचन बन्ध ॥११॥
दीपक के ढिग बैठ कर, कब लग बचै पतंग।
नितानन्द इस जगत में, कामन बड़ा कुसंग ॥१२॥
ज्ञान ध्यान बल बुध हरे, करे भक्ति में भंग।
नरक पड़ै जन्मै मरै, कामी कामन संग ॥१३॥
नितानन्द इन नागनी, सभै भखे भग द्वार।
भवन २ में गमन कर, बान्ध लिया संसार ॥१४॥
पकड़ बांध बस में किया, लिया सकल जग जीत।
तीन लोक भग जाल में, पड़े आप कर प्रीत ॥१५॥
तीन लोक भग से भखे, दुनियां देई खपाय।
जहां शरण हर चरण की, तहां न पार बसाय ॥१६॥
कामी नर दीपक दशा, सुखै आरवल तेल।
नितानन्द चरणों चढ़े, हर जन हुए फुलेल ॥१७॥
नितानन्द यह नारी, भखे भारजा होय।
भाग गया सो ऊबरा, लाग मुआ सब कोय ॥१८॥
नारी ना ये नाहरी, करै नैन की चोट।
कठिन चपेटा काम का, दुनियां लोटम लोट ॥१९॥

नितानन्द प्यारी लागी, जब लग नहीं संभाल।
जब समझा तब तज दई, नार नरक की झाल ॥२०॥
क्या अपनी क्या और की, पावक देत जराय।
नितानन्द उबरा चाहे, तो हरगिज हाथ न लाय।२१॥
पुत्री होय प्रलय किए, बहिनी दिए बहाय।
माता होय मारे घणे, पुरुष कहां बच जाय ॥२२॥
जब लग समझ न ऊपजी, किया नारि से प्यार।
नितानन्द ठगनी लखी, दिल से दई उतार ॥२३॥
माया होकर मारती, जब से सदा अतीत।
पंडित ज्ञानी सूरमा, लिए काम सब जीत ॥२४॥
नारि नरक का कुण्ड है, बहे मैल नव द्वार।
नितानन्द उत्तम तजें, चिपटें ढेढ़ चमार ॥२५॥
नारी प्यारी जगत में, लगे अंग से आय।
ज्ञान ध्यान और प्राण को, नितानन्द भख जाय ॥२६॥
नारी नागन से बुरी,देखत विष चढ जाय।
सब प्राणी परलै करे, पुरुष बनाय बनाय ॥२७॥
छैल छबीली सोहनी, मिली मोहनी होय।
नितानन्द भग कुण्ड में, दुनियां दई डबोय ॥२८॥
खाते मीठी खाण्ड सी, देखन माहिं सुहाय।
गुण प्रकाशे आपना, जब प्राणी पछताय ॥२९॥

नारि छुरी बहुत ही बुरी, राखी खाण्ड लगाय।
खाते बर मीठी लागै, बहुरि पेट फट जाय।।३०।।
पर नारी पैनी छुरी, देखन की रस खान।
भीतर पाड़ै पेट को, मारे मुगद अजान।।३१।।
पर नारी पैनी छुरी, मंढी मिठाई माहिं।
नितानन्द किस विधि बचै, सभै प्रीत कर खांहि।।३२।।
नितानन्द कुल कुण्डली, जनें नागिनी नार।
भग मुख पड़े सो खा लिए, हरजन बचे बिचार।।३३।।
नारी नैन न देखिए, देखतां जीव डुलाय।
नितानन्द तन विष भरै, मन मैला हो जाय।।३४।।
नारी नैनहुं देख के, लगे देह में दाग।
दग्ध किया सब जगत को, इन्हें सुहावनी आग।।३५।।
दीर्घ जननी लघु सुता, बहिन बराबर जान।
चौथी चोट बचाय कर, नितानन्द धर ध्यान।।३६।।
नितानन्द नर नारि सब, बहन बीर कर देख।
जेते प्राणी जगत में, सब का पिता अलेख।।३७।।
बहन बीर का भाव धर, तन मन लेह बचाय।
नितानन्द निरद्वन्द्व रह, राम चरण लौ लाय।।३८।।
जिस द्वारे हो नीकस्या, पुत्र कहाया आय।
फेर न पैठे पुरुष बन, ताको काल न खाय।।३९।।

भग से लग जग बह गया, समझ सके ना कोय।
नितानन्द संसार में, अजब तमाशा होय ॥४०॥
नितानन्द भग कुण्ड में, पड़े प्रीत से प्रान।
प्रगट नरक दीखे नहीं, हुए अन्ध अज्ञान ॥४१॥
नितानन्द सब गुण गये, रचे नारि के संग।
अमृत दे कर विष लिया, दिया डबोय कुसंग ॥४२॥
नितानन्द जो नर पड़े, नारी के संग जाय।
जन्म अमोलक आपना, सो नर चले गंवाय ॥४३॥
जब लग तन में वासना, नरक जात नर नार।
नितानन्द जन राम के, सुमरें सदा मुरार ॥४४॥
नितानन्द जो नर पड़ें, नारी के परसंग।
भक्ति ज्ञान विज्ञान का, रती न लागे रंग ॥४५॥
नितानन्द सब नरक हैं, राम विमुख नर नार।
साध प्रगट बैकुण्ठ हैं, जिन के राम अधार ॥४६॥
सुमत शील समता हरे, करे बुद्धि का नाश।
नितानन्द जिस पुरुष के, रहे सुन्दरी पास ॥४७॥
ज्ञान ध्यान और भक्ति का, उगन न दे अंकूर।
नितानन्द हर पन्थ से, पटक मिलावे धूर ॥४८॥
गुण मिटाय अवगुण करे, अमृत विष कर लेत।
मुक्त द्वार से मोड़ कर, नारि नरक में देत ॥४९॥

नितानन्द इस जगत में, नरक कुण्ड है नार।
राम विमुख पड़ २ मरें, बचे चरण आधार ।।५०।।
नाना व्यंजन जीभ रस, छिके छबीली नार।
समझ त्याग पछतायगा, जन्म पदारथ हार ।।५१।।
पर नारी प्यारी लगे, जीभ स्वाद बस होय।
नितानन्द केते गए, हीरा जन्म डबोय ।।५२।।
जो सुन्दर सो सिंहनी, दुहू एक सम जान।
देह भखे सो सिंहनी, सुन्दर भखै प्रान ।।५३।।
सुन्दरि कहूं कि सिंहनी, भखै अंग सरवंग।
विष ते अहि ते सिंह ते, नारी बड़ा कुसंग ।।५४।।
जल का बूडया ऊबरै, भग बूड़ा मर जाय।
जल में त्यारू ले तिरै, भग से कछु न बसाय ।।५५।।
सुन्दर कहूं कि सिंहनी, जिस का जगत शिकार।
सुर नर पंडत बहुगुणी, भखे सुन्दरी नार ।।५६।।
सबल सुन्दरी सिंह ते, दो मुख रही पसार।
नितानन्द सभ ब्रह्माण्ड को, निगल गई कर प्यार ।।५७।।
भग मुख बिन्द बहाय कर, दिया अमर पद खोय।
अमृत सींचै अरण्ड में, नितानन्द सब कोय ।।५८।।
जनम जवाहर खोइयां, भग मुख बिन्द बहाय।
अमरलोक से ऊक कर, पड़ा मौत मुख जाय ।।५९।।

बहुत लोग गारत गये, भग से प्रीत लगाय।
नितानन्द बहु जात हैं, खुशी मनाय मनाय।।६०।।
फटे कान की बाघनी, निगल गई नौ खण्ड।
जीवत लूटै जन्म को, मुए लगावै दण्ड।।६१।।
झूठी पत्तल जगत में, नितानन्द है नार।
उत्तम छुवैं न हाथ से, चाटैं ढेड चमार।।६२।।
नारी कूंड नरक का, विरले लई लगाम।
बचैं कुंवर करतार के, पड़ २ मुए गुलाम।।६३।।
नारी नदी नरक्क की, सभ जग दिया बहाय।
जल का बूड़ा नीकसै, भग बूड़ा मर जाय।।६४।।
क्या रंभा क्या अपसरा, और उरबसी नार।
नितानन्द विष की भरी, सभ में वही विकार।।६५।।
मीठी बोलै नय चलै, पड़ै चरन लपटाय।
नितानन्द भीतर बड़ै, पीछे सर्वस खाय।।६६।।
सुर वनिता मन मोहनी, देवांगना अपार।
घर के बन के स्वर्ग के, लिये बन्ध में डार।।६७।।
नारी नदी नरक की, मूरख दिये बहाय।
अविनासी के चरण से, दूर पटके जाय।।६८।।
नारी नदियां होयकर, सभ जग दिया डबोय।
अविनासी के चरण से, लगन न पावे कोय।।६९।।

सात समन्दर से बड़ी, कहर समन्दर नार।
नितानन्द वै कद मिलैं, जिन सग उतरूं पार ॥७०॥
नारी छुरी फौलाद की, राखी खाण्ड लपेट।
नितानन्द जो खायेगा, उस का पाड़ै पेट ॥७१॥
क्या अपना क्या और का, ज़हर न लीजै खाय।
नार पराई आपनी, नरक माहिं ले जाय ॥७२॥
पर घर की क्या आपनी, अग्नि जलावै अंग।
नितानन्द यों समझ कर, तजो नारि का संग ॥७३॥
कमल फूल सी कामिनी, भंवर भया संसार।
भरम २ कर मर गया, समझ न किया विचार ॥७४॥
ब्याह २ के चाव में, बहक गया सभ लोक।
खांड भात पर पकड़ कर, दिया काठ में ठोंक ॥७५॥
ब्याह २ कर बह गये, नितानन्द बहु अन्ध।
चौरासी को जात है, पहर गले में फन्द ॥७६॥
कामिन का और कनक का, सभ के गल फांसा।
नितानन्द जो बच रहै, जिन का मैं दासा ॥७७॥
एक कनक एक कामनी, जग में दो धारा।
नितानन्द इन को तिरे, सो गुरु हमारा ॥७८॥
एक कनक एक कामनी, इन की झल भारी।
नितानन्द दाझै नहीं, तो मिले मुरारी ॥७९॥

एक कनक और कामनी, दोनों दुखदाई।
पारब्रह्म के पंथ से, सभ खलक डिगाई ।।८०।।
ऋषी मुनी सुर देवता, मिल सीस चढ़ाई।
तीन लोक पग लग रहे, सभ के मन भाई ।।८१।।
विष को खावै अंध नर, अमृत ठहराई।
नितानन्द वे मर गये, जिन हित कर खाई ।।८२।।
ऊपर रंग पतंग का, संसार सुहाई।
नितानन्द जग ठग लिया, भग तजा न जाई ।।८३।।
छबि दिखाय छलती फिरे, बहु बरन बनाई।
पंडित मुंडित दर्शनी, सभ दिए खपाई ।।८४।।
काम लोभ में बांध कर, पृथ्वी भरमाई।
नितानन्द नर अंध के, कुछ सुझ न आई ।।८५।।
नितानन्द चालैं घणे, विरला पहुंचै पार।
कनक कामिनी बीच में, दोनों दुर्लभ धार ।।८६।।
एक कनक एक कामिनी, बंके ओघट घाट।
नितानन्द इनके परे, खुल रहे मुक्त कपाट ।।८७।।
हाड चाम की पूतली, राखी रंग बनाय।
नितानन्द सभ लग मरे, हर की भक्ति भुलाय ।।८८।।
माटी की मूरत घड़ी, दिया चतेरा चीत।
राम विमुख नर फस मुए, चाम दाम के मीत ।।८९।।

जहां कामिनी फूंकिये, ना चलिये उस गैल।
नितानन्द बड़ जाएगी, भीतर होय चुड़ैल ।।९०।।
मृतक सुन्दरी देखिये, तहां न दीजै पांव।
उनहारा चित्त चढ़ा कर, करै कलेजे घाव ।।९१।।
जिनको प्यारी भामिनी, नहीं राम से काम।
जिनको नारी नरक है, तिनके हृदय राम ।।९२।।
राम विमुख रीते रहै, विषय बिलंबे प्रान।
नितानन्द हर जन वही, तजै विषय विष जान ।।९३।।
भग भोगी रोगी भये, सिर धर भारी भार।
लदता २ मर रह्या, जैसे गधा कुम्हार ।।९४।।
नितानन्द जग जीतना, शूरवीर का खेल।
मूत धार पर मर रह्या, सो क्या झेलै सेल ।।९५।।
मूत धार से उड़ गये, कायर कई हजार।
नितानन्द सभ जगत में, बड़ी शूरमा नार ।।९६।।
कामी नर की देह को, बन्छैं विषय विकार।
नितानन्द हर बिसर कर, चला जमों के द्वार ।।९७।।
कामी नर नहीं हर भजैं, रचे नार के संग।
नितानन्द वै क्यों तिरैं, दिये डबोय कुसंग ।।९८।।
कामी नर नहीं हर भजैं, चाम दाम से हेत।
नितानन्द वे नर नहीं, वे सभ भूत प्रेत ।।९९।।

कामी किस विध हर भजै, नितानन्द नहीं प्रीत।
कथा कीर्तन छोड़ कर, सुनै नारि का गीत ॥१००॥
कामी किस विध हर भजै, बंछैं भोग विलास।
राम विमुख दुख भैंरगे, जब लग धरणि अकाश ॥१०१॥
कामी कीड़ा नरक का, पड़ा गंदगी मांहिं।
राम अमी रस छोड़ कर, भग में गोता खाहिं ॥१०२॥
कामी कीड़ा रम रह्या, नरक कुंड के मांहि।
नितानन्द अति प्रीत से, बहे मूत में जांहि ॥१०३॥
कामी भजै न राम को, अनगिन चिन्ता मांहिं।
नितानन्द सभ ऊबरैं कामी उबरै नाहिं ॥१०४॥
कामी भजै न राम को, तजै नहीं संसार।
नीम कीट का ना छुटै, जथा नीम से प्यार ॥१०५॥
कामी भजे न राम को, कदे न संसा जाय।
जन्म पदार्थ खोयकर, चाल्या कलंक लगाय ॥१०६॥
कामी भजै न राम को, सभ पतितन का पीर।
नितानन्द पापहु सिरै, काम बड़ी तकसीर ॥१०७॥
कामी कूकर जगत में, ताते भक्ति न होय।
इन्द्री के बस पड़ रहा, चल्या जन्म को खोय ॥१०८॥
इन्द्री के बस होय कर, दीन्हीं भक्ति बिसार।
नितानन्द सभ जगत में, कामी वार न पार ॥१०९॥

साध सन्त से शत्रुता, संसारी सेती दास।
कामी छुटै न नरक से, जब लग धरणि अकाश ॥११०॥
कामी कूकर स्वाद बस, सुमरै नहीं अलेख।
राम नाम कहता डरै, खोटा मस्तक लेख ॥१११॥
कामी कुकर जगत में, नारी नरक करंक।
नितानन्द हर भक्ति बिन, मंड गये अंक कू अंक ॥११२॥
कामी को लज्जा नहीं, ज्यों गदहा और स्वान।
भोगन को त्रिया चहे, क्या अपनी क्या आन ॥११३॥
कामी के लज्जा नहीं, लखै न लीन अलीन।
नितानन्द सभ बह गये, इन्द्री के आधीन ॥११४॥
कामी से कुत्ता भला, करै समय पर भोग।
नितानन्द नर अंध के, लगा रैन दिन रोग ॥११५॥
नितानन्द हर जन कहे, परमार्थ की प्रीत।
कामी कदे न हर मिलै, गिरही कहां अतीत ॥११६॥
नितानन्द सभ से कहै, शब्द सुनाय सुनाय।
वैरागी गिरही कहां, कामी नर बह जाय ॥११७॥
चीचड़ को पय ना मिलै, लग्या रहै थन मांहि।
यों कामी विष में मगन, हरि रस पीवे नांहि ॥११८॥
कामी हरि रस ना पीवै, पीवै विषय विकार।
सुख सागर को छोड़ कर, बूड़ै काली धार ॥११९॥

ज्यों करौंत लकड़ी लगै, अग्नि लगै ज्यों घास।
नितानन्द यों सृष्टि का, काम किया घट नास ॥१२०॥
जर लागै तलवार को, ज्यों दारू में आग।
नितानन्द परलै करै, त्रिया देह से लाग ॥१२१॥
टांकी लगै पखान को, बन में लगै दवाड़।
नितानन्द जड़ मूल से, देवै काम उखाड़ ॥१२२॥
भक्ति करावै पुत्र पै, नितानन्द सो माय।
और नार सभ नागनी, वही जने वही खाय ॥१२३॥
जिन ते हरि जन ऊपजैं, तिन को नार न जान।
नर नारी सभ भक्त हैं, जिन के अन्तर ध्यान ॥१२४॥
नितानन्द घट को लग्या, विषय करम का दाग।
हरि हृदय आवै नहीं, कोई आगला भाग ॥१२५॥
छाय गई दुहुं नैन पर, विषय कर्म की धुन्ध।
हरि हृदय सूझै नहीं, हुआ सकल जग अन्ध ॥१२६॥
काल कनक और कामिनी, सकै तो इन से भाज।
साहेब का सुख परहरै, करता काज अकाज ॥१२७॥
कामी नर को ले गई, पकड़ नरक में नार।
नितानन्द वै ना छुटें, हर यश कहो हजार ॥१२८॥
हर सा हितु बिसार कर, करै नारी से नेह।
नितानन्द वे अन्ध हैं, वृथा धरी नर देह ॥१२९॥

रुधिर मांस और हाड तिय, नख सिख माहिं मलीन।
नितानन्द प्यारी लगै, भया जगत मतहीन ॥१३०॥
नवों द्वार में गन्दगी, खाल बाल सरवंग।
मैल मूत्र विष की भरी, अगन जान तज संग ॥१३१॥
पांच तत्व की पूतली, मोह लिया संसार।
बाहर दीखै फूल सी, भीतर भरी भंगार ॥१३२॥
स्वान फंसे तिये संग कर, हंसता है सभ कोय।
नितानन्द नर जन्म सभ, फंस्या २ दे खोय ॥१३३॥
नार पुरुष कूं नरक है, पुरुष नार का काल।
नितानन्द दोनों पड़ैं, राम विमुख जम जाल ॥१३४॥
नार पुरुष की मौत है, पुरुष नार गल फन्द।
चौरासी को बह गये, राम विमुख सभ अन्ध ॥१३५॥
नारी पीवै पुरुष को, पुरुष नार भख जाय।
नितानन्द हर भक्ति बिन, दोऊ चले पछताय ॥१३६॥
नार पुरुष को ले गई, दीन्हा राम भुलाय।
पुरुष नार के प्यार से, दोऊ मरे विष खाय ॥१३७॥
मन कर्म वचन त्रिया तजे, करे न गर्भ निवास।
नितानन्द देखै नहीं, नरक कुण्ड की त्रास ॥१३८॥
औधे मुख झूलै नहीं, संकट सहे न आय।
नितानन्द नारी तजै, मिलै निरंजन राय ॥१३९॥

नितानन्द नारी तजैं, छुटै गरभ की बन्ध।
फेर न पहरे आय कर, जन्म मरन का फन्द ॥१४०॥
नितानन्द यह भगवती, चौरासी का द्वार।
चौरासी से तो बचे, नारी संग निवार ॥१४१॥
नितानन्द साहेब मिलै, जो घट ठहरै नाम।
साखी गोरख भरथरी, और कबीरा राम ॥१४२॥
नाद बिन्द स्थिर करै, गहै ज्ञान वैराग।
नितानन्द घट पट खुलै, कनक कामिनी त्याग ॥१४३॥
नितानन्द चाहे नहीं, कनक कामनी दोय।
अमर कन्द जुग २ रहे, राम सरीखा होय ॥१४४॥
नितानन्द साहेब भजै, तजै कामना काम।
भव जल से पल में तिरै, मिलै मुक्त का धाम ॥१४५॥
नारी से यारी किये, ख्वारी होत निदान।
अन्तकाल भारी पड़ै, शब्द सत्य कर जान ॥१४६॥
जिस मारग जग लग रहा, बड़ा कुमारग जान।
माता नारी पुत्र की, पुरुष भया सुत आन ॥१४७॥
जननी से नारी भई, पुत्र भया भरतार।
नितानन्द यों तज गये, साधू ज्ञान विचार ॥१४८॥
जब लग अन्तर कामना, तब लग निष्फल खेत।
नितानन्द हर ना मिलै, बिन भीतर के हेत ॥१४९॥

सेवा सुकृत फल नहीं, जब लग रहै सकाम।
करम कामना मिट गई, वही आत्मा राम ॥१५०॥
जेती मन की कामना, सभै काम कर जान।
नितानन्द समझै नहीं, बिना प्रगट गुरु ज्ञान ॥१५१॥
नितानन्द ये सुन्दरी, गधे चढ़ी दे धाड़।
तीर तबक तलवार बिन, मारा जगत पछाड़ ॥१५२॥
कनक कामनी जगत में, बहुत बड़ी शमसेर।
कतल किया अधबीच में, राम मिलन की बेर ॥१५३॥
नितानन्द धन सुन्दरी, दोनों बुरी बलाय।
पारब्रह्म के महल में, इन्हें जीत कर जाय ॥१५४॥
जेतिक बर विषया करै, भरे बिन्दु भग द्वार।
नितानन्द मानस मरै, बूंद बूंद की लार ॥१५५॥
मनुष्य बने जा रत्न का, वृथा गंवावे सोय।
हत्या एक मनुष्य की, नितानन्द नित होय ॥१५६॥
जग में भग भारी नदी, सब जग दिया बहाये।
नितानन्द गुरु ज्ञान से, आपा ल्यो बचाये ॥१५७॥
नर पसवा कामिनी छुरी, कटें आप कर हेत।
टूक २ हो बिक गया, चेत्या नहीं अचेत ॥१५८॥
पहले हंसे पीछे डसे, जहर लहर के संग।
अमृत से विष कर दिया, कामी नर सरवंग ॥१५९॥

जल का बूडा ऊबरै, जो त्यारू मिल जाय।
भग का डूब्या ना बचे, चल्या नरक को जाय ॥१६०॥
भग का खाया प्राणियां, कालर खाया खेत।
नितानन्द निपजै नहीं, जब लग लगे न हेत ॥१६१॥
नर भैंसा बन्ध्या खड़ा, काम कसाई बार।
नितानन्द सिर पर करद, समझे नहीं गंवार ॥१६२॥
सभ जग खाया भांडणी, सूरत है विकराल।
काले मुख की कुण्डली, सबही पर जुलहाल ॥१६३॥
प्रगट काल स्वरूपिणी, कीन्हा जग काला।
नितानन्द भज राम को, सतगुरु रखवाला ॥१६४॥
कामन काली नागिनी, बिना डंक डस जाय।
आप जणै आपै भखै, दो मुख रही उबाय ॥१६५॥

(इति कामी का अंग संपूर्णम्)

## 卐 सहज का अंग १९ 卐

नितानन्द सुख सहज का, समझै संत सुजान।
विषय वासना मिट गई, ताही सहज पहिचान ।।१।।
सहज २ सबही कहै, सहज नाम है सोय।
पांचन के प्रपंच से, बंच चलै जो कोय ।।२।।

नितानन्द चल सहज में, सहज २ धर पांव।
आतुर कोई न तिर सकै, बड़ा दुस्तर दरियाव।।३।।
नितानन्द चल सहज में, सहज २ धर ध्यान।
सहज २ मन जीत ले, पावै पद निर्वान।।४।।
बुझै न दीपक ज्ञान का, तन में तिमिर न होय।
नितानन्द सुख सर्वदा, सहज कहावे सोय।।५।।
नहीं हिरस संसार में, सहज किया मन थीर।
सहज सुरत संजम रहै, मिलै नीर में नीर।।६।।
नहीं जगत की वासना, नहीं देह अहंकार।
सुरत निरत संजम रहै, ताको सहज विचार।।७।।
सहज स्वरूपी मन भया, राम चरण लौ लीन।
नितानन्द सहजै सहज, हुई देह दुर्बीन।।८।।
सहज रूप परमात्मा, लिया आत्मा जान।
नितानन्द चल सहज में, धरो धनी का ध्यान।।९।।
सहजरूप आनन्द से, नहीं द्वन्द से काम।
नितानन्द भज सहज में, यही मुक्त का धाम।।१०।।
सहज शील समता लिये, क्षमा सुमत सन्तोष।
नितानन्द सहजै सहज, हो गये जीवन मोक्ष।।११।।
पंचन के प्रपंच से, रहै बंच जो कोय।
नितानन्द मन थिर सदा, सहज कहावे सोय।।१२।।

नितानन्द जिसके हिये, सहज निरंजन नाथ।
मिटै पसारा पंच का, छुटै तीन का साथ ।।१३।।
नितानन्द संसार में, आए सहज स्वभाव।
सहज तमासा बन रहा, सहज मांहि उठ जाव ।।१४।।
सहजै सहजै जांयगे, गुण इन्द्री विल्लाय।
प्रीत लगी परब्रह्म से, रहे नूर में छाय ।।१५।।
सहज सहज सबही कहें, चीन्हेंगे कोई संत।
विषयों से न्यारा रहै, सर्व सृष्टि उपरन्त ।।१६।।
सहज सहज सब को कहैं, ज्ञानी और अज्ञान।
नितानन्द वे धन्य हैं, सहजै सहज समान ।।१७।।
सहज सहज सब को कहै, सहज न समझा जाय।
जिन सहजै प्रभु पाइयां, उन सहजै लौ लाय ।।१८।।
सहज सहज सब को कहें, सहज न समझा जाय।
नितानन्द वे धन्य हैं, जिन का सहज सुभाय ।।१९।।
सहज सहज सब को कहे, सहज न समझा जाय।
नितानन्द वे धन्य हैं, जिनका सहज सुभाय ।।२०।।
सहजे सहजे सब गये, कर्म कामना काम।
मिली लहर दरियाव मे, सब घट रमात राम।२१।।
सहजै निर्मल कर लिया, सहज मिले गुरुदेव।
सहज २ सुमरण किया, पाया अलख अभेव ।।२२।।

सहज स्वरूपी पाइया, सहज मिल्या गुरु ज्ञान।
नितानन्द कौतुक लखा, सहज सुखमना ध्यान ।।२३।।
नितानन्द नहीं कल्पिये, ज्ञान दृष्टि कर देख।
सहज २ बण जायगी, जो कुछ ठठी अलेख ।।२४।।
नितानन्द चल सहज में, सत्य शब्द उर धार।
सत्य लोक की सैल में, जुग २ दर्श निहार ।।२५।।
सहज २ सुख पाइये, सहज २ गुण गाय।
सहजे सहजे मिल गये, अन्तरयामी राय ।।२६।।
सहज जोग आपै सधै, सहज ज्ञान परकाश।
सहज शील सयंम रहै, जहां नाम की प्यास ।।२७।।
सहज स्वरूपी पाइये, वही प्रकाश सभ माहिं।
जित देखूं तित है वही, उस बिन दूजा नाहिं ।।२८।।
सहज स्वरूपी देश है, सहज सूर शशि कोट।
सहज रोशनी हो रही, एक पलक की ओट ।।२९।।
सहज स्वरूपी गुरु मिले, सहज किया उपदेश।
सहज ध्यान रटना लगी, चढे दर्श के देश ।।३०।।
नितानन्द एक देस में, सहज स्वरूपी जाहिं।
दर्शन से परसन रहें, चरण कमल की छाहिं ।।३१।।
नितानन्द सहजे मिलें, गुरु गुमानी राम।
चढ़े चरण रज होय कर, पाया महल मुकाम ।।३२।।

(इति सहज का अंग संपूर्णम्)

# 卐 साच का अंग २० 卐

साच सरीखा सुख नहीं, झूठ सरीखा रोग।
नितानन्द हर साच में, मिथ्या झूठ विवोग।।१।।
साची वाणी बोलिये, कदे न कहिये झूठ।
जम जालिम की त्रास से, छूट सकै तो छूट।।२।।
साचे के हरि साथ हैं, झूठे से सौ कोस।
झूठे दोजख़ जायेंगे, नितानन्द अफसोस।।३।।
साचा साहेब सुमिर ले, तजो झूठ का नेह।
साचा साहेब से मिले, झूठे के मुख खेह।।४।।
मिथ्या सा पातक नहीं, पुण्य न साच समान।
नितानन्द साचे मनुष, झूठे सूकर स्वान।।५।।
सतवादी सुख देह में, सुरत सदा लौलीन।
नितानन्द वे धन्य हैं, जिनका दिल दुर्बीन।।६।।
झूठे का घर फूस है, जले अगन के संग।
सतवादी डरपें नहीं, जिनका कंचन अंग।।७।।
नितानन्द साचा तजै, करै झूठ से नेह।
वे प्रानी अज्ञान हैं, वृथा धरी नर देह।।८।।
नितानन्द साचा तजै, झूठे के संग जाय।
वे सब रीते रह गये, मनुष देह में आय।।९।।

सुधा साच मिथ्या जहर, नितानन्द घट माहिं।
सुधा पीवते अमर हैं, विष पी मर २ जाहिं ॥१०॥
साचा पीवे राम रस, सत्य पुरुष का ध्यान।
नितानन्द मिथ्या जगत, तजो सकल विष जान ॥११॥
सत्य कहै मिथ्या दहै, रहे राम लौ लाय।
नितानन्द सभ की सहे, ताको काल न खाय ॥१२॥
साच शब्द मुख ले रहै, गहे ज्ञान विज्ञान।
नितानन्द घर अमरपुर, मिट गया आवन जान ॥१३॥
नितानन्द कासे कहूं, कलयुग उलटी चाल।
साच कहंते मारिये, झूठे फिरैं खुशाल ॥१४॥
झूठे घर जल जायंगे, यथा फूस की छान।
सत्यवादी को डर नहीं, धरैं धनी का ध्यान ॥१५॥
कलयुग पहरा पाप का, नहीं साच जग माहिं।
नितानन्द मन में तकी,राम चरण की छांही ॥१६॥
नितानन्द मन में गहो, साहेब सेती साच।
सब दुनिया दुख द्वन्द है, झूठे रंग न राच ॥१७॥
साचे से सन्मुख रहै, तजै झूठ का साथ।
नितानन्द घट में मिलै, अलख निरंजन नाथ ॥१८॥
साचे से सन्मुख रहे, तजै झूठ का पास।
भावै रहो गृहस्थ में, भावें वनखंड बास ॥१९॥

शुद्ध भावना सकल से, सत कर लखै अलेख।
नितानन्द धर पागड़ा, भावें पहरो भेख ॥२०॥
नितानन्द ये जिन्दगी, साच बिना बेकाम।
बहुत खराबी होयगी, लेखा लेगा राम ।२१॥
साचा पीवै राम रस, साचे मारग आय।
साचे से साचा मिला, सत्य लोक में जाय ॥२२॥
जिन के अन्दर सिदक है, किया दरूना साफ।
नितानन्द दरगाह में, उनका लेखा माफ ॥२३॥
फज़ल करो तो छुटिये, अदल करै तो लूट।
जम जालिम की त्रास से, छूट सकै तो छूट ॥२४॥
अदल किया सौ लूटिये, फजल मांह गये छूट।
नितानन्द हर याद कर, गहो साच तज झूठ ॥२५॥
नितानन्द घर दूर है, चढ़ो सत्य की नाव।
झूठा कोई ना तिरै, भवसागर दरियाव ॥२६॥
कागज़ देखा आपना, लेखा का नहीं अन्त।
जब लग जीव शरीर में, तब लग भज भगवन्त ॥२७॥
काज अकाज जाण्या नहीं, काजी नाम धराय।
साचा भूल्या झूठ में, दुनियां से दिल लाय ॥२८॥
साहब से साचा रहो, साहेब सत्य सहाय।
साचे जन प्रिय राम के, साचे काल न खाय ॥२९॥

साहेब से साचा रहे, सतवादी जन सोय।
नितानन्द उन को कहीं, अटक सकै ना कोय ।।३०।।
साहेब से चोरी करै, चोरां सेती प्यार।
नितानन्द सुध होयगी, पड़ै जमों की मार ।।३१।।
साहेब से चोरी करै, चोरां सेती मोह।
नितानन्द जब जाण सीं, आण बनैगी तोह ।।३२।।
साहेब से झूठा रहै, झूठा सेती साच।
नितानन्द जानै नहीं, कहा कंचन कहा काच ।।३३।।
साचे सेती शत्रुता, झूठे से इकलास।
नितानन्द वै सब गये, कपटी कंध विनास ।।३४।।
झूठे को झूठा मिलै, बहुत बढ़ै रस रंग।
नितानन्द साचा मिलै, पड़े प्रीत में भंग ।।३५।।
साचे को सुमरै नहीं, लोक लाज से लाग।
हर हीरा हिये ना धरै, कंकर करैं न त्याग ।।३६।।
झूठे कुल के कारणे, साचा दिया बिसार।
केसो कंचन त्यागियां, किया कांच से प्यार ।।३७।।
साचे से झूठा मिलै, कपट हिये से खोय।
पारस से लोहा लगै, पल में कंचन होय ।।३८।।
करता केवल सत्य है,झूठा जग व्यवहार।
नितानन्द सुख सिंधु के, सदा चरण चित धार ।।३९।।

नितानन्द जिन जनिया, सत्य राम सरवंग।
वे नर झूठे जगत के, कदै न राचैं रंग ॥४०॥
नितानन्द जग झूठ है, तो भी दुख अपार।
जब तक लखै न सत्य को, सहै जमो की मार ॥४१॥
नितानन्द भारी बड़ा, यह झूठा संसार।
तब लग दुख छूटै नहीं, जब लग जपै न मुरार ॥४२॥
जब लग साच न परगटै, तब लग साहेब दूर।
जिन के हृदय साच है, सो हाजरां हजूर ॥४३॥
पड़े दर्सनी भरम में, मुई न मन की प्यास।
जब लग दलक न साच का, तब लग बोदी आस ॥४४॥
नितानन्द दुनियां गहै, झूठे से दिल लाय।
जब लग साचा दिल नहीं, जब लग कहां खुदाय ॥४५॥
नितानन्द तृष्णा घनी, दुनियां ठग २ खाहिं।
जब लग मन मुरदा नहीं, तब लग जोगी नाहिं ॥४६॥
जेती दीखै नैन से, तेती कहै न आय।
बिना देखी अजगैब की, कहै बनाय बनाय ॥४७॥
सत्य भाव से बोलिये, लख अपना उनमान।
बातां स्वर्ग पताल की, नितानन्द तौफान ॥४८॥
कदे न कहिये भूल कर, मुख से मिथ्या बैन।
साचा साहेब सुमरिये, नितानन्द दिन रैन ॥४९॥

शान्ति-आश्रम वृन्दाबन में नन्दलाल की
धर्म पत्नी का प्रवेश

झूठा तन धन झूठ है, झूठा सब घरबार।
झूठे ने झूठा लिया, नितानन्द सिर भार॥५०॥
नितानन्द क्या कीजिये, हम से सधे न साच।
साचा साहेब भूल कर, रहे झूठ में राच॥५१॥
नितानन्द वे धन्य हैं, जिन को साच सुहाय।
साचे से साचा मिले, रहे नूर में छाय॥५२॥
नितानन्द जब लग बनै, मुख से झूठ न बोल।
कोई पुर्बले पुण्य से, पाया जन्म अमोल॥५३॥

(इति साच का अंग संपूर्णम्)

## 卐 भरम विधूषण का अंग २१ 卐

पाहन की प्रतीमा करी, नाम धरा करतार।
नितानन्द इस भरम में, बूड़े बहुत गंवार॥१॥
काया करम की कोठड़ी, लगे अज्ञान किवाड़।
पाहन पूजत ना खुलैं, पंडित कहो हजार॥२॥
मूरत पूजे हर मिलै, तो सभ को मिल जाय।
नितानन्द भवसिंध में, कौन सहे दुख आय॥३॥
ठाकुर घड़ा पाखान का, सो ठाकुर किस काम।
एक शब्द में सब रच्या, ऐसा समरथ राम॥४॥

जिन साहेब रचना रची, धरणि गगन जल वाय।
नितानन्द ऐसा धनी, संपुट कहां समाय।।५।।
जिन सिरजा एक पलक में, सभ ही जगत जहान।
ताको कहें पखान है, ऐसा नर अज्ञान।।६।।
नितानन्द नर का किया, सो साहेब क्यों होय।
पीतल पाहन पूज कर, पार न पहुंचा कोय।।७।।
मूरत जड़ पाषान की, नहीं पीवै नहीं खाय।
नितानन्द इस भरम में, बह्या सकल जग जाय।।८।।
मूरत घड़ी पाषान की, जानै सभ संसार।
नितानन्द अचरज बड़ा, यह किस बिधि करतार।।९।।
पाथर ही का देहरा, पाथर ही का देव।
नितानन्द अंधे करें, उस पाथर की सेव।।१०।।
जिस घट हर की भक्ति है, सो घट सालिगराम।
नितानन्द हर में भक्त, भगतन के घट राम।।११।।
नितानन्द घट साध का, हरि मन्दिर कर देख।
मन कर्म वचन सेवा करे, प्रगट मिलै अलेख।।१२।।
चेतन साहेब छोड़कर, जड़ को पूजन जाय।
अन्धों को दीखै नहीं, दर्पण लाख दिखाय।।१३।।
चेतन साहेब छोड़कर, जड़ को पूजन जाय।
नितानन्द नहीं दूध दे, कदे काठ की गाय।।१४।।

कागज का हाथी किया, दल में किस विधि जाय।
मूरख भूले भरम में, झूठी आस लगाय ॥१५॥
पाथर से ठाकुर बनै, तो हर से बड़ा पहाड़।
नितानन्द साची कहै, करै पुजारी राड़ ॥१६॥
नितानन्द पाषान का, साहेब कदे न होय।
साहेब की निन्दा करे, समझ सकै नहीं कोय ॥१७॥
नितानन्द धन्धा रच्या, पाथर का करतार।
जान बूझ कर फंस गया, बूड़ा काली धार ॥१८॥
ऐसे समरथ नाथ को, जो कोई कहै पाषान।
नितानन्द इस जगत में, वै सभ ही अज्ञान ॥१९॥
नितानन्द पाषान को, पूजैं प्रीत लगाय।
मूरख रीते रह गये, ब्रह्म द्वार पर आय ॥२०॥
धंधे में अंधे हुए, पाथर पीतल पूज।
नितानन्द अंधे करें, साहेब सेती दूज।२१॥
पूज २ पच पच मरे, पत्थर पानी मांहि।
भक्ति भेद न्यारा रहा, ता घर विरले जांहि ॥२२॥
नितानन्द इस जगत में, पत्थर पानी देव।
राम निराला रह गया, विरला जानै भेव ॥२३॥
नितानन्द पाषान जल, पूजै सकल जहान।
वह पद न्यारा रह गया, जहां मिलै भगवान ॥२४॥

पत्थर पानी पूजते, राम भक्ति गये भूल।
इत के हुए न उत्त के, रहे अधम में झूल ।।२५।।
सेवा सुकृत सब गया, पाथर से हित लाय।
सतगुरु बिन यमपुर चल्या, दो दिन महंत कहाय ।।२६।।
जल पाथर के आसरे, मूरख रहे भुलाय।
नितानन्द धापै नहीं, सुपन शेरनी खाय ।।२७।।
मनसा के पकवान से, पूरण पेट न होय।
ऐसे पाथर पूज कर, मुक्त न पावे कोये ।।२८।।
सेवा सालिगराम की, रहा भरम में लाग।
अन्तरगत शीतल नहीं, बिना ज्ञान वैराग ।।२९।।
साधां को सेवे नहीं, सेवै सालिगराम।
आसा तृष्णा कामना, भखे जात निस जाम ।।३०।।
सेवै सालिगराम को, मन माया की प्यास।
नितानन्द भीतर कुटिल, नाम धराया दास ।।३१।।
सेवै सालिगराम को, माया सेती प्यार।
बाहर ढूंढे हींग लू, भीतर भरी भंगार ।।३२।।
मण्ढ़ी देहरा घोर को, सीस निवावन जांहि।
नितानन्द जानै नहीं, साहेब सभ ही मांहि ।।३३।।
जिसको सीस निवाइये, सो तो तूझ ही अन्तर मांहि।
नितानन्द नर अंधले, बहे भरम में जांहि ।।३४।।

पानी से तीर्थ कहें, मूरत से भगवान।
नितानन्द इस भरम में, बहे जात अज्ञान ॥३५॥
झूठे से दिल लायकर, सक्या न साचा जान।
औंढ़े पानी पैठकर, बूड़े बहुत सयान ॥३६॥
गहरे पानी पैठकर, लिया देह को धोय।
नितानन्द जहां पाप है, सो तो सकै न धोय ॥३७॥
खाल पखाली नीर में, भीतर रह गया मैल।
जब लग हृदय मलीनता, बही नरक की गैल ॥३८॥
नितानन्द यह अंध नर, तीर्थ नहाने जाय।
पाप उतारन गया था, आया और लगाय ॥३९॥
मन मैला चित्त में कपट, तीर्थ चाल्या नहान।
एको पाप न ऊतरा, और लिया बहु सान ॥४०॥
तीर्थ व्रत सभ भरम है, लिया सकल जग छाय।
नितानन्द साचा लख्या, झूठा दिया उठाय ॥४१॥
नितानन्द साचा मिला, कौन झूठ में जाय।
करता कंचन जो लखै, कंकर नहीं सुहाय ॥४२॥
जप तप तीरथ भरम है, व्रत नेम बहु भाय।
सम्भल सेया सूवटै, यों जग रीता जाय ॥४३॥
पूजा सेवा आरती, मण्ढ़ी देहरा घोर।
घंटा झाम बजावनी, सभै पेट का सोर ॥४४॥

मन्दिर मूरत आरती, यह गुड़ियौं का खेल।
नितानन्द खेले नहीं, करै पीव से केल।।४५।।
नितानन्द कवारी करै, गुडा गुडी का ब्याह।
जब प्रीतम के गल लगै, फिर न चलै उस राह।।४६।।
अठसट तीर्थ में फिरैं, तन धोवत अज्ञान।
नितानन्द मैले रहैं, बिना निरंजन ध्यान।।४७।।
तीर्थ फिर तन धोइंया, मन में मैल अपार।
जब लग मन निर्मल नहीं, किस बिधि उतरे पार।।४८।।
मन मैला तन उजला, फिरै बगों की डार।
नितानन्द निर्मल नहीं, तीर्थ करो हजार।।४९।।
सतगुरु तीर्थ ज्ञान जल, प्रेम प्रभी नित न्हाय।
नितानन्द तन मन विमल, सहज मुक्त हो जाय।।५०।।
चतुर धाम को परस कर, बसे बनारस मांहि।
नितानन्द हर नाम बिन, मुक्त पदार्थ नांहि।।५१।।
नितानन्द जो अघ कटें, तीरथ माहीं न्हायें।
कच्छ मच्छ भद मींडका, सभी मुक्त हो जांय।।५२।।
पढ़वा गुणवा चातुरी, बिना भक्ति किस काम।
उन का जीवन सफल है, जिन के हृदय राम।।५३।।
पढ़वा गुणवा दूर कर, धरो धणी का ध्यान।
ध्यान बिना भूले फिरैं, वै मूरख अज्ञान।।५४।।

नितानन्द इस देह को, सो बर तीरथ धोय।
बिना कृपा भगवान की, शुद्ध कदे ना होय।।५५।।
तीरथ कर २ जग मुआ, मिटै न मन के मैल।
नितानन्द उज्ज्वल नहीं, बिना गुरु की गैल।।५६।।
तीरथ धोवे देह को, मन में मैल अपार।
नितानन्द उन जिवों को, कहां अलख दीदार।।५७।।
सौ बर काया धोइये, सभ ही तीरथ माहिं।
नितानन्द हर भक्ति बिन, नहीं अमरपुर जाहिं।।५८।।

(इति भरम विधूषण का अंग संपूर्णम्)

# 卐 भेष का अंग २२ 卐

लिए सुमरनी हाथ में, हिये कतरनी राख।
दिल दलदल में फंस गया, जगत सुनावै साख।।१।।
मन डोले संसार में, तन से तर्पण जाप।
हृदय फेरें हर मिलै, जिस में राखै पाप।।२।।
नितानन्द माला पहर, कछू न सुधरै काम।
मन माला भज प्रेम से, मिला जो चाहे राम।।३।।
मन माला फिरबो करै, जिनके अन्तर माहिं।
कुआं बावड़ी पोखरा, सब तीरथ हो जाहिं।।४।।
तीर्थ न्हाता क्या फिरै, ऊपर भेष बनाय।
नितानन्द हर भक्ति बिन, मन का मैल न जाय।।५।।
सभै दिखावें देह कूं, नाना भेष बनाय।
अन्तरगत सोधैं नहीं, जग में टापा खाय।।६।।
भेष धरे हर ना मिलै, जब लग भक्ति न होय।
स्वांगी बहु संसार है, साधू विरला कोय।।७।।
भेष दिखावत क्या फिरै, माला तिलक बणाये।
नितानन्द हर क्यों मिलै, झूठी आस लगाये।।८।।
झूठी बात बनावते, करें न हर से प्रीत।
नितानन्द साहेब मिले, भितरली प्रतीत।।९।।

माला तिलक बनाय कर, बहुत करें पाखण्ड।
जब लग भीतर झूठ है, मिटै न जम का दण्ड ॥१०॥
नितानन्द संसार में, पाखण्डी बहु जीव।
कौड़ी कारण पच मुआ, कहां उन्हीं को पीव ॥११॥
नितानन्द पाखण्ड है, पूजा देवी देव।
अंधों को प्रमोध कर, अंध करावें सेव ॥१२॥
छापा तिलक बनाय कर, माला कंठी धार।
नितानन्द घट देखिये, भरे अनंत विकार ॥१३॥
पाखंडी पूजा करें, ज्यों बग मीनी ध्यान।
बाहर दीखै साध सा, भीतर से अज्ञान ॥१४॥
नितानन्द हर ना मिलें, बहु विधि भेष दिखाय।
जिनके अन्दर भक्ति है, रहे चरण में छाय ॥१५॥
जिनके हृदय ध्यान है, उनका साचा भेख।
बिन भक्ति भगवान की, किस विध मिलै अलेख ॥१६॥
मन मुख माला पहर कर, जगत दिखावैं डिंभ।
राम भक्ति से हित नहीं, माया का आरम्भ ॥१७॥
स्वांग बनाय अतीत का, दुनियां ठग २ खाय।
राम भक्ति से हित नहीं, बंध्या नरक को जाय ॥१८॥
भेष बनावै भक्त का, डूब मुए भग माहिं।
मन माया से लग रहा, गुरु बिन छूटै नाहिं ॥१९॥

नितानन्द हर याद कर, क्या दिखलावे भेख।
दसों दिशा से उलट कर, अन्तरगत में देख ।।२०।।
जग में भग में द्रव्य में, सभै देख ललचाहिं।
नितानन्द हर जन वही, रहैं चरण की छांही।२१।।
मन फकीर फारिग हुआ, रहा रब्ब से लाग।
दलक दिया गुरु पीर ने, जिनके पूरण भाग ।।२२।।
स्वांगी जग में बहु भए, हर जन विरला कोय।
पाथर जग में बहुत हैं, पारस कहीं २ होय ।।२३।।
चन्दन तरु बन २ नहीं, दध २ मुक्ता नांहि।
सब नदियां हंसा नहीं, यों हर जन जग मांहि ।।२४।।
शूरवीर सभ दल नहीं, हाट २ नहीं माल।
ऐसे भेष अनन्त हैं, विरले हर के लाल ।।२५।।
नितानन्द इस जगत में, स्वांगी फिरैं अपार।
जिनके दिल साहेब बसै, वे पावै करतार ।।२६।।
नितानन्द हर याद कर, भेष पहर मत भूल।
भेष दिखावा जगत का, भक्ती मुक्ती की मूल ।।२७।।
मन वैरागी कर लिया, तन की गई उपाध।
नितानन्द प्रीतम मिलै, ऐसे कोई २ साध ।।२८।।

(इति भेष का अंग संपूर्णम्)

# 卐 कुसंग का अंग २३ 卐

जो कोई पड़े कुसंग में, ताका सर्वस जाय।
नितानन्द सतसंग बिन, सभ कोई पछताय।।१।।
कांजी की इक बून्द से, सौ मन पय फट जाय।
यूं नर पड़ै कुसंग में, ताका जन्म विहाय।।२।।
नितानन्द केते गये, चढ़ कुसंग की नाव।
साध संग बिन क्यों तिरै, भवसागर दरियाव।।३।।
नितानन्द जिस मनुष्य से, छूटै नहीं कुसंग।
तिन के घट अन्धेर है, लगै न हर का रंग।।४।।
नितानन्द बूड़ै घने, तज सत संग जहाज।
राम भक्ति गुरु ज्ञान बिन, हो गया काज अकाज।।५।।
करे कुसंगत प्रीत से, तजै न विषय विकार।
काम क्रोध में फंस मरा, झूठै कुल की लार।।६।।
सकल कुसंगत दूर कर, राम नाम से लाग।
काम क्रोध मद लोभ से, भाग सकै तो भाग।।७।।
नितानन्द यह सकल जग, रहे कुसंगत माहिं।
साधों की निन्दा करैं, यूं दोजख में जाहिं।।८।।
नितानन्द इस जगत में, पांच पचीस कुसंग।
बट मारे लूटैं सदा, करैं भजन में भंग।।९।।

बाहर जगत कुसंग है, भीतर विषय विकार।
नितानन्द कैसे तिरे, यह दुस्तर संसार ॥१०॥
नितानन्द बूड़े घने, बैठ कुसंगत माहिं।
चौरासी के फेर में, मूरख टापा खाहिं ॥११॥
बस कुसंग बुड़े घने, माया से मन लाय।
पलक माहिं सभ तज चल्या, अंत समय पछताय ॥१२॥
नितानन्द नहीं बैठिये, खोटी संगत माहिं।
जिनके अन्दर खोट है, सोई खोटा खाहिं ॥१३॥
कामी क्रोधी जिवहुं की, संगत करिये नाहिं।
मानुष देह वृथा गई, हर बिन रीते जाहिं ॥१४॥
ओछी संग न कीजिये, जब लग पार बसाय।
साधु संग गुरु ज्ञान बिन, जन्म अकारथ जाय ॥१५॥
कामी की संगत बुरी, बुरा नार का संग।
हर बेमुख सभ ही बुरे, करैं भजन में भंग ॥१६॥
राम विमुख जेते मनुष, तजो दूर ता संग।
मद्य पान तस्कर कुटिल, सभ जग रंग पतंग ॥१७॥
नितानन्द भव सिंधु से, किस विध उतरैं पार।
दसो दिशा सूभर भरे, बरत न विषय विकार ॥१८॥
बस कुसंग कैसी कुशल, जहां न हर की प्रीत।
चौरासी को चल गये, सुन २ जग के गीत ॥१९॥

जो जीव पड़ै कुसंग में, सदा रहै मती भंग।
रीता रह्या समुन्द्र में, जहां मुक्ता बहु रंग।।२०।।
सुत दारा बन्धु सजन, कुल कुसंग कर जान।
इन के माया मोह में, भजै नहीं भगवान।२१।।
माता पिता कुसंग है, पकड़ बंध में देत।
हर सा हितु भुलाय कर, अंध २ कर लेत।।२२।।
नितानन्द कहां जाईये, सब संसार कुसंग।
सतगुरु शब्द संभाल कर, राम नाम से रंग।।२३।।
केते गये कुसंग में, जिन का ठीक न ठौर।
भग द्वारे जग बह गया, अलख लखंते और।।२४।।
नितानन्द संसार में, कामन कनक कुसंग।
राम बिमुख सभ ही बुरे, भीतर रंग कुरंग।।२५।।
नितानन्द नहिं कीजिये, बुरा नीच का पास।
साहेब से बेमुख करे, प्रानी चलैं निरास।।२६।।
बस कुसंग बूड़े घने, भवसागर दरियाव।
साध संग बिन ना तिरैं, क्या राना क्या राव।।२७।।
नितानन्द नहीं चालिये, राम विमुख के साथ।
ले पैठै उजाड़ में, तब कहां निरंजन नाथ।।२८।।

(इति कुसंग का अंग संपूर्णम्)

# 卐 सतसंग का अंग २४ 卐

नितानन्द सतसंग में, हुआ काग से हंस।
पलट रंग औरे भया, गया काग का अंस।।१।।
जैसे भृंगी कीट को, करे आपनो रूप।
नितानन्द सतसंग सी, और न वस्तु अनूप।।२।।
नितानन्द सतसंग सी, नहीं वस्तु कुछ और।
जिन के चरण प्रताप से, मिलै अमरपुर ठौर।।३।।
साध संग हर भक्ति सी, और न कोई बात।
चरण कमल की खेह में, लगे रहो दिन रात।।४।।
साधन के सतसंग में, साहेब आवै चित्त।
नितानन्द पीवत रहो, चरण कमल रस नित्त।।५।।
साधन के सतसंग को, नितानन्द कर लेह।
ओछी संग विकार की, सो दिल से तज देह।।६।।
नितानन्द सतसंग का, सदा हमारे चाव।
राम मया सतगुरु दया, मिलै भक्ति का भाव।।७।।
साधू संगत तो मिलै, कृपा करै गुरु देव।
लोहा कंचन हो गया, पारस अलख अभेव।।८।।
नितानन्द सतसंग को, एक पलक मत त्याग।
राम मया सतगुरु दया, रहो निरंजन लाग।।९।।

साध संग साहेब मिलै, मिटै तिमर अज्ञान।
जन्म मरण बन्धन छुटे, घट में प्रगटै भान ।।१०।।
सतसंगत की एक क्षण, चतुर मुक्त सम जान।
चतुर धाम चौदह भवन, नहीं सत्संग समान ।।११।।
साध संग सुख अधिक है, बड़भागी पावन्त।
नितानन्द आनन्द में, जुग २ हर गावन्त ।।१२।।
राम कृपा से पाइये, साधन का सतसंग।
नितानन्द सुख ऊपजै, करै सकल भय भंग ।।१३।।
मुक्त करण विषया हरण, सतसंगति की धूर।
अष्टसिद्धि नवनिद्धि सभ, रही चरण भरपूर ।।१४।।
सतसंगति बैकुंठ से, बहुत अधिक कर मान।
शिवपुरि विधिपुर इन्द्रपुर, सभै तुच्छ कर जान ।।१५।।
भवन चतुर्दश में नहीं, साध संग सी मौज।
नितानन्द जहां पाइये, राम मिलन का खोज ।।१६।।
नितानन्द सतसंग बिन, मिलै न हर दरबार।
मथुरा काशी द्वारका, सौ बर फिरो किदार ।।१७।।
सतगुरु कहै पुकार कर, करो सदा सतसंग।
नितानन्द आनन्द से, रमातीत से रंग ।।१८।।
साध संग महिमा कही, श्री मुख श्री भगवन्त।
सतसंगत बिन ना मिलूं, जो जुग जांहि अनन्त ।।१९।।

नितानन्द आनन्द से, कर संतन का सङ्ग।
एक पलक में पट खुलैं, निर्मल होवे अंग ॥२०॥
सतसंगत जुग २ तिरे, पापी अधम अनंत।
बड़े २ बूड़े घणे, मिले न हर के संत।२१॥
तिरे बधिक गणिका तिरी, तिरी भीलनी नार।
नितानन्द सतसंग की, महिमा अगमअपार ॥२२॥
अजामेल और कूबरी, तिरा लोधिया सैन।
धना जाट रहदास से, साध संग सुख चैन ॥२३॥
नामदेव छीपी तिरा, घाटम मीणा बंस।
साध संग से तिर गये, नितानन्द पशु अंस ॥२४॥
शेष महेस रटना रटैं, तिर गई बहुला गाय।
नितानन्द सतसंग मिल, रहो राम लौ लाय ॥२५॥
साध संग हर रंग में, लग गये काग भुषण्ड।
राम भक्ति निशि दिन करें, काया भई अखण्ड ॥२६॥
सत संगत तरु कल्प से, निपट अधिक कर जान।
जगत कामना तरक कर, मिलैं संत भगवान ॥२७॥
साध संग बान्दर करी, राम भक्त गये होय।
जामवन्त हनुमान से, संत कहावैं सोय ॥२८॥
असुर बंस प्रहलाद ने, सफल करी निज देह।
सत संगत परताप से, लग्या राम से नेह ॥२९॥

साध संग मिल कर तिरे, बहुत जीव बेकार।
नाम सुमर निर्मल हुए, पापी नीच चमार ।।३०।।
विभीषण मन्दोदरी, अंगद बाल लंगूर।
नितानन्द सतसंग मिल, करी भक्ति भरपूर ।।३१।।
चिन्तामणि चौदह रतन, नहिं सतसंग समान।
नितानन्द हर जन मिलैं, राम मिलावै आन ।।३२।।
नितानन्द सतसंग है, भवसागर की नाव।
और न मारग मुक्ति का, कोटिक करो उपाव ।।३३।।
जब गोविन्द कृपा करैं, तब पावै सत्संग।
नितानन्द सतसंग बिन, हो गये मनुष्य पतंग ।।३४।।
सब ही मनुष पतंग हैं, कनक कामनी दीप।
जले जीव बहु जी उठैं, जिन के संत समीप ।।३५।।
नितानन्द मृतक मनुष, अमर करे सतसंग।
चौरासी से फेर कर, करें राम के रंग ।।३६।।
सत संगत सम कुछ नहीं, जग में वस्तु विशेष।
जिन पाई तो तिर गया, क्या गृही क्या भेष ।।३७।।
नृप अधिकारी नरक के, सत संगत लिये त्यार।
नितानन्द साधू बिना, बूड़ गये मझधार ।।३८।।
कई कोट राजा तिरे, सत संगत में आय।
नितानन्द सतसंग बिन, सब जग परलै जाय ।।३९।।

साधू संगत कीजिये, तज कुसंग डर मान।
सत संगत बिन ना मिलै, ढूंढो सकल जहान।।४०।।
सत संगत सुखदेत है, भक्ति ज्ञान परकास।
नितानन्द वे क्यों तिरैं, जहां न हर के दास।।४१।।
सत संगत सुख सिंधु है, हर मुक्ताहल माहिं।
नितानन्द हंसा चुगैं, कागा पावैं नाहिं।।४२।।
नितानन्द सतसंग कर, सकल कुसंगत त्याग।
गुरु गुमानी राम जी, मिल गये पूरब भाग।।४३।।

(इति सतसंग का अंग संपूर्णम्)

## 卐 असाध का अंग २५ 卐

मीठा बोलै मुख्ख से, भीतर राखै घात।
छिद्र निकासै और में, ये असाध की बात।।१।।
मिष्ट बोल मोहें जगत, यह नहीं साध स्वभाव।
पहले प्रीत लगाकर, पीछे घालैं घाव।।२।।
नितानन्द नहीं दीजिये, ऊपर उज्ज्वल देख।
बगुला ध्यान लगाय कर, मारै मीन अनेक।।३।।
बात बनावे ब्रह्म की, प्रमोधै कर प्यार।
ज्यूं बघेर गल लायकर, खाय पशु को मार।।४।।

काया दीखै फूल सी, ज्ञान सुनावै गाय।
नितानन्द पशु जीवों को, गहरे डोबै जाय।।५।।
काम दृढ़ावै कामियां, क्रोधी को दे क्रोध।
अंध २ को ले मुआ, नितानन्द प्रमोध।।६।।
ज्ञानी सब कुछ खोइयां, ब्रह्म कहावै आप।
भूले नर तासों भले, डरैं करन्ते पाप।।७।।
बाचक ज्ञानी बहुत हैं, थोथा जिनका ज्ञान।
इन्द्री थकी न मन थक्या, किया अन्ध अभिमान।।८।।
बिना कूप डूब्या जगत, पाखंडी के साथ।
नितानन्द हर पाइये, तज असाध की बात।।९।।
काया मारै कष्ट कर, मरै नहीं अहंकार।
मूढ़ जेबड़ी डस लिया, सर्प डस्या संसार।।१०।।
एक बूंद पड़ दूध में, किया घीव का भङ्ग।
टूक २ हो फट गया, भीतर रङ्ग कुरङ्ग।।११।।
नितानन्द अवसर घटै, पड़ती आवै सांझ।
मूरख उलझे जगत में, पड़े कामना मांझ।।१२।।
बांट न काटै आपनी, गहे फूल और पात।
बहुत चलें बेबस हुए, पड़त दिवस में रात।।१३।।
नितानन्द उज्ज्वल रहें, कहें ज्ञान प्रसङ्ग।
अन्तर टाटी कपट की, यह असाध को अंग।।१४।।

नितानन्द मत आइयो, आगे होय असाध।
मन मलीन बुद्धि छीन हो, लगै अन्त अपराध॥१५॥
नितानन्द नहीं कीजिये, नर असाध की प्रीत।
विषय विकार न तज सकैं, झूठे गावैं गीत॥१६॥
नितानन्द नहीं कीजिये, नर असाध का सङ्ग।
बुद्धि हरैं बेमुख करै, लगै न हर का रङ्ग॥१७॥
नितानन्द दिल लाइये, साध संग के बीच।
परमगुरु की मेहर से, कदे न मिलियो नीच॥१८॥
नितानन्द नहीं कीजिये, खोटी संगत जाय।
जन्म करम का नाश कर, देवै बुद्धि बहाय॥१९॥
नितानन्द को मत मिलो, निशिदिन पुरुष असाध।
भजन मांहि अन्तर पड़ै, करै अन्त अपराध॥२०॥
विषयी की संगत बुरी, नितानन्द तज चाल।
गुरु द्रोही रीते चले, गुरुमुख हुए निहाल।२१॥
नितानन्द मत भेंटियो, कबहूं आय असाध।
साधू की संगत बिना, जन्म जाय बरबाद॥२२॥
साध मिलै आनन्द रहै, उर आवै हरि ध्यान।
कामी क्रोधी लालची, सब असाध कर जान॥२३॥
साखी सबदी और की, धारै आपणां नाम।
नितानन्द वै साध नहीं, वै हराम के जाम॥२४॥

(इति असाधाका अंग संपूर्णम्)

# 卐 साध का अंग २६ 卐

सुख देना दुख भंजना, गंजन कर्म करूर।
नितानन्द पर बरसियो, साध चरण की धूर।।१।।
बंध निवारण जगत की, भक्ति मुक्ती दातार।
नितानन्द साधू शरण, चरण सीस पर धार।।२।।
साधू जन माता पिता, कुल कुटुम्ब संग साथ।
नितानन्द ज्यूं अंध के, रहे लकुटिया हाथ।।३।।
साधू जन आनन्द घन, हैं अनाथ के नाथ।
नितानन्द केते पतित, पग लग हुए सनाथ।।४।।
नितानन्द तीर्थ सभै, गंगा पुष्कर प्राग।
साधू जन को देखकर, नमन करैं पग लाग।।५।।
रामनाथ रणछोर जी, बद्रीनाथ जगन्नाथ।
चतुरधाम अस्तुति करैं, रहैं साधु के साथ।।६।।
हिंगलाज जवालामुखी, बैजनाथ केदार।
सीस नवावैं साध को, देख अधर आधार।।७।।
ब्रह्मा विष्णु महेश लौं, करें साध की सेव।
सुर नर मुनि जै २ करैं, ये देवन के देव।।८।।
चन्द्र सूर पानी पवन, अगन गगन धुर धाम।
सीस नवावैं साध को, कहैं प्रणाम प्रणाम।।९।।

संध्या तर्पण षट करम, होम यज्ञ और दान।
नितानन्द कछु है नहीं, दर्शन साध समान ॥१०॥
सत त्रेता द्वापर कलि, साध दर्श की आस।
नितानन्द बन्दन करै, धन्य २ हरदास ॥११॥
तपी मुनी सुर ऋषि सभै, साधक सिद्ध हज़ार।
हाथ जोड़ अस्तुति करैं, साधू मेहर अपार ॥१२॥
व्रत नेम संजम धरम, सब ही वेद पुराण।
नितानन्द मरजाद से, साध पंथ निर्वाण ॥१३॥
चोखा जिन का चित्त है, मीठी जिन की बात।
सुखदाई शीतल सदा, धन्य जिन्हों का गात ॥१४॥
उज्जवल जिन की आरसी, निर्मल जिन का मन्त्र।
नितानन्द छानी नहीं, पावै राम रतन्न ॥१५॥
शील जिन्हों के नैन में, तन मन लगै न दाग।
असत्य त्याग सत ले रहै, नितानन्द बड़ भाग ॥१६॥
चिन्ह जिन्हों के नूर का, साहेब की उणिहार।
नितानन्द उन संत का, दुर्लभ है दीदार ॥१७॥
वेद पढ़ै साखी कहैं, वह गत अगम अगाध।
नितानन्द वह गत लखे, कोई २ विरला साध ॥१८॥
साध सिंधु बानी लहर, मोती लहर अनंत।
नितानन्द चुग २ मगन, हंस सरूपी संत ॥१९॥

हलके २ तिर गये, बड़े २ गये डूब।
चढें चरण रज होय कर, नितानन्द महबूब ।।२०।।
कंकर बहुत कुसंगिया, घणे मिलैंगे आय।
नितानन्द जन जोहरी, लेंगे लाल उठाय।२१।।
जिस घर सेवा साध की, सो घर सफल फलंत।
नितानन्द आनन्द में, वे जन सदा रहन्त ।।२२।।
साध लक्ष दीखै जहां, नितानन्द तहा दास।
चरण कवल छोड़ू नहीं, साखीधरणि अकाश ।।२३।।
साध हमारी संप्रदा, द्वारा हर दरबार।
बास हमारा चरण में, आस जगत से पार ।।२४।।
वाद विवाद उपाध से, सदा रहैं हम दूर।
नितानन्द साधू शरण, भाव भक्ति भरपूर ।।२५।।
गोबिंद से गुरु अधिक हैं, गुरु से अधिके साध।
नितानन्द यह गत लखै, जिनकी बुद्धि अगाध ।।२६।।
गंगा जमुना सरस्वती, साध चरण के मांहि।
नितानन्द निश्चय यही, बात दूसरी नांहि ।।२७।।
कामी क्रोधी लालची, जग में बहुतेरा।
नितानन्द भव जल परै,साधू का डेरा ।।२८।।
नितानन्द इस जगत में, निर्मल हर के संत।
आप तिरै त्यारैं सकल, सुमर २ भगवन्त ।।२९।।

साधू जन संसार में, आये पर उपकार।
आप निरंजन मिल रहे, औरों को लें त्यार ॥३०॥
नितानन्द संसार में, साध रतन की खान।
पाथर से हीरा करैं, पार उतारैं प्रान ॥३१॥
नितानन्द सब जगत में, साध रत्न की खान।
मेहर करैं जब पाइये, भक्ति ज्ञान विज्ञान ॥३२॥
जत्त सत्त समता लिये, क्षमा ज्ञान वैराग।
नितानन्द आनन्द से, रहैं निरंजन लाग ॥३३॥
नितानन्द सब जगत में, साध बड़े दातार।
राम अमर धन देत हैं, किये पतित नर पार ॥३४॥
सकल पाप पल में कटैं, साधू दर्शन देख।
नितानन्द कर प्रीत से, पावे पुरुष अलेख ॥३५॥
जहां राम तहां सन्त जन, जहां संत तहां राम।
नितानन्द दिल कुंज में, दोनों का मुक्काम ॥३६॥
साध मिलैं जहां हर मिले, राम मिलैं जहां सन्त।
नितानन्द दोनों बड़े, अमर करैं जीव जन्त ॥३७॥
नितानन्द सब जगत में, साध अलख का अंग।
आप निर्मल हर भक्ति में, करैं जगत भय भंग ॥३८॥
साधू जगत जहाज हैं, रहैं जगत से पार।
जो बैठे सो तिर गये, पहुंचे हर दरबार ॥३९॥

साध बतावें राम को, खोल्हैं मुक्त कपाट।
नितानन्द सत संग बिन, कदै न पावै बाट।।४०।।
नितानन्द जगबंध से, कदे न छूटै कोय।
पावै संगत साध की, जब निस्तारा होय।।४१।।
नितानन्द सभ शत्रु है, त्रिया पुत्र धन धाम।
इन में मारग नरक का, साध मिलावैं राम।।४२।।
साध संग से पाइये, परमेश्वर भरतार।
नितानन्द जुग २ रहैं, अजर अमर दरबार।।४३।।
साध संग हर रंग में, अमर हुए बहु प्रान।
दरश देख कर छिक गये, नितानन्द मस्तान।।४४।।
साधू प्यारे राम के, राम साध के माहिं।
नितानन्द साधू बिना, साहेब पावै नाहिं।।४५।।
नितानन्द सभ देखियां, साहेब साध अपार।
कृपा होय जब पाइये, दोनों सुख दातार।।४६।।
सदा अमर जग में रहे, साधों की खुशबोय।
आप निरंजन मिल गए, रहे निरंजन होय।।४७।।
साधू जन की वासना, सदा रहे जग माहिं।
नितानन्द जुग २ रहो, चरण कमल की छाहिं।।४८।।
बड़भागी को पाइये, साधू जन की सेव।
नितानन्द आनन्द में, मिलैं निरंजन देव।।४९।।

साधू जन और हर भक्ति, बड़ भागी पावन्त।
भाग हीन को ना मिलैं, भरम भरम में मरन्त ।।५०।।
साध कमल जग सिंध में, हरि मुक्ताहल माही।
नितानन्द प्रेमी भंवर, मिलैं अमरपुर जाहिं ।।५१।।
नितानन्द साधू भंवर, कमल आप करतार।
ले सुगंध उज्ज्वल हुए, बहुर न लगे विकार ।।५२।।
नितानन्द मैला जगत, साधू निर्मल अंग।
औरों को उज्ज्वल करैं, जो आवैं सतसंग ।।५३।।
पारस कंचन करत है, पै पारस ना होय।
नितानन्द साधू मिलै, जीव ब्रह्म नहिं दोय ।।५४।।
कई पतित पावन हुए, साध संग में आय।
नितानन्द जीव नरक के, दीन्हे राम मिलाय ।।५५।।
कई कोटि राजा तिरे, जग की नहीं शुमार।
नितानन्द पशुवा तिरै, साधन परबलहार ।।५६।।
नदी साध अरु मेघ जल, जहां नीसरैं आय।
नितानन्द सन्मुख मिलैं, जिन के राम सहाय ।।५७।।
नदी नीर और मेघ जल, चौथे हर के संत।
नितानन्द दुख हरत हैं, सुख दातार अनन्त ।।५८।।
नितानन्द साधू जना, जहां प्रकाशैं ज्ञान।
चौरासी से काढ़ कर, पार उतारैं प्रान ।।५९।।

नितानन्द जिन घरों में, पड़ै संत पग धूर।
उन पर राम कृपा करैं, रिद्धि सिद्धि भरपूर ॥६०॥
जहां संत जन पग धरैं, तहां धरे हर हाथ।
नितानन्द गऊ बच्छ ज्यों, राम साध के साथ ॥६१॥
साध राम का रूप हैं, एक अंग उणिहार।
नितानन्द जग फन्द से, पल में त्यारन हार ॥६२॥
साधों की महिमा बड़ी, जिन के अन्तर राम।
नितानन्द कर जोड़ के, सब को करै प्रणाम ॥६३॥
साध चरण त्यारन तिरन, नितानन्द कर सेव।
साध संग कर तिर गये, जिन पाया निज भेव ॥६४॥
साधू जन संसार में, और सब कायर कूर।
हर बेमुख नामर्द है, राम भजै सो सूर ॥६५॥
नितानन्द पर कृपा कर, मिलो केतगी आय।
भंवर जीव आनन्द में, सुख सुगंध नित खाय ॥६६॥
नितानन्द हर केतगी, साध भंवर रस लेत।
भोंदू भूंड न जानसी, उसी फूल का हेत ॥६७॥
नितानन्द सुख सिंधु में, रहैं केतगी साध।
जो कोई आवै प्रीत से, पावै अलख अगाध ॥६८॥
नमो राम सतगुरु नमो, सकल संत परणाम।
वचन मध्य त्रिय एक हैं, नितानन्द एक धाम ॥६९॥

नितानन्द शोभा अधिक, साधू सुखदाई।
पार करैं त्यारैं तिरैं, नित रहैं सहाई।।७०।।
दरस देख सुख में रहें, अवगत लो लाई।
मगन हुए दरबार में, सब द्वन्द मिटाई।।७१।।
अमरापुर के महल की, देखी गुलजारी।
फूल्या फूल सुहावना, घट घट मंझारी।।७२।।
जहां साध क्रीड़ा करैं, तहां अलख अपारी।
नितानन्द उस देस में, नित मंगल चारी।।७३।।
साधू जन हर आप हैं, सुख दायक सुख धाम।
नितानन्द की वन्दना, पारंगत परणाम।।७४।।

(इति साध का अंग संपूर्णम्)

## 卐 देखा देखी का अंग २७ 卐

देखा देखी हर भजे, रंग न लागै माही।
नितानन्द जो दुख पड़ै, भोंदू भाजे जाहिं।।१।।
देखा देखी जगत सब, पड़ा बंध में आप।
राम नाम को छोड़ कर, सहे विपत सन्ताप।।२।।
देख २ सब फंस गये, देखत भूले देख।
रूप नाम आकार मे, लख नहीं सकैं अलेख।।३।।

नितानन्द कीजै वही, जो आप से होय।
धरे बोझ बल से घना, अन्त पटक्के सोय।।४।।
बनती बात बनाइये, जथा आप उनमान।
अनबनती पर पच मरें, सो मूरख अज्ञान।।५।।
कर सकिये तो कीजिये, आप सरीखा साथ।
नितानन्द जो तन छुटै, तऊ न छोड़ै हाथ।।६।।
नितानन्द मन दीजिये, सामरथाई संग।
काया कटे करौंत से, तऊ न मोड़ै अंग।।७।।
शूर वीर को देखकर, कायर ले हथियार।
नितानन्द रण मुड़ चलैं, जन्म २ धिक्कार।।८।।
नितानन्द निबहै सदा, पूरा सेती प्यार।
नान्हें नर के नेह से, देखत लगै विकार।।९।।
हाड़ों का क्या छेदिये, पाथर सिर न चढ़ाय।
माया मोहे मानवी, तिनसू प्रीत न लाय।।१०।।
होडा होडी चालिये, कदे न पहुंचे पार।
राम मिलन को जाहिं थे, अधबिच लुटें गंवार।।११।।
देखा देखी पाकड़ै, बिन परचै छुट जाय।
विरला जन कोई ठाहरै, सतगुरु शरणे आय।।१२।।
देखा देखी जो चलै, सो थाकै अधबीच।
नितानन्द पूरा मिलै, पकड़ निकासै खींच।।१३।।

देखा देखी पाकड़ै, कदे न पहुंचै पार।
नितानन्द उन नरहु को, दुर्लभ हर दीदार।।१४।।
नितानन्द आवें घणें, देखा देखी जीव।
रामभक्ति उनको मिलै, जिनको प्यारा पीव।।१५।।
देखा देखी जो करै, सो पूरी नहीं होय।
आप सरीखा बोझ ले, पार पहुंचे सोय।।१६।।
देखा देखी उठ चल्या, बिना गुरु के ज्ञान।
बाँझ स्वप्न में सुत जनै, यह जग ऐसा जान।।१७।।
दिखै सो सभ झूठ है, साचा सत्य अदेख।
देखा से दिल ना लगै, नितानन्द मिल एक।।१८।।

(इति देखा देखी का अंग संपूर्णम्)

## 卐 साध साखी भूत का अंग २८ 卐

नितानन्द मन सुरत का, रहै शब्द में सूत।
विषयों से न्यारा रहै, सो जन साखी भूत।।१।।
जग काजल की कोठड़ी, सकल नरहु की ठाम।
नितानन्द वे धन्य हैं, अलग रहे भज राम।।२।।
माया का मन्दिर बन्या, माया ही का ठाम।
नितानन्द उनको नमो, भजैं निराला राम।।३।।

नितानन्द संसार से, न्यारे हर के हंस।
कामी क्रोधी काग हैं, रहैं गन्दगी फंस।।४।।
कागों का घर वृक्ष में, मगन गन्दगी खाय।
हर सरवर हंसा रहें, नितानन्द लौ लाय।।५।।
पंच नदी निशिदिन बहें, पूर्व दिशा को जाहिं।
नितानन्द न्यारे हुए, जो उलटे पच्छिम माहिं।।६।।
सो जन दीखैं दूर से, जिन पर राजी राम।
दुर्बल देह उदास मन, जग से रहें निष्काम।।७।।
नितानन्द न्यारे रहें, जिनके हृदय राम।
बाहर दीखे मिले से, भीतर रहें निष्काम।।८।।
नितानन्द संसार में, हर जन साखी भूत।
सभै कुमारग त्याग कर, धरें ध्यान अवधूत।।९।।
पांच तत्व गुण तीन से, अलग रहें अवधूत।
लिपैं न भरम विकार से, वर्ते साखी भूत।।१०।।
जथा दीप मन्दिर धरे, चहुं दिशि रहै उजास।
पै वह सभ से अलग है, साखी भूत प्रकाश।।११।।
ज्यू अकाश सर्वत्र है, सर्व अकाशही मांहि।
नितानन्द न्यारा रहै, लिपै छिपै कुछ नांहि।।१२।।
ज्यूं अकाश ब्रह्माण्ड में, और पिण्ड ही मांहि।
नितानन्द न्यारा अलग, नहीं धूप नहीं छांहि।।१३।।

हर प्यारों के ना रहै, नींद भूख और प्यास।
नितानन्द उस देह में, बढ़ै न लोहू मास ॥१४॥
नितानन्द न्यारे रहैं, साधू जन जग मांहि।
सबको दीखैं देह में, बसें चरण की छांही ॥१५॥
नितानन्द न्यारे रहें, सब दुनियां से दूर।
बरतैं साखी भूत हो, ज्यूं अकाश में सूर ॥१६॥
नितानन्द हर भक्ति कर, हो रहे साखी भूत।
पहुचैं महल मुरार के, गगन मगन अवधूत ॥१७॥
नितानन्द संसार में, हर जन साखी भूत।
और सभी दुख में रहें, कूट २ भग मूत ॥१८॥
साधू साखी भूत हो, जगत माहिं तिर जाहिं।
और सब कीड़े नरक के, रहें जगत के माहिं ॥१९॥
नितानन्द सुखसिंधु के, सदा चरण चित धार।
वे जन साखी भूत हैं, निशिदिन जपैं मुरार ॥२०॥
न्यारे सारे जगत से, प्यारे हर के दास।
नितानन्द जुग २ अटल, किया अमरपुर बास ।२१॥
नितानन्द विषयी मनुष, विषय बीच गलतान।
साधू साखी भूत हैं, धरैं धनी का ध्यान ॥२२॥
नितानन्द हर भक्त की, जग में उलटी चाल।
काम क्रोध मद लोभ तज, प्रभु भज रहें निहाल ॥२३॥

लगी लगन चढ़ गगन में, मगन हुए गुण गाय।
नितानन्द न्यारे रहैं, अगम धाम घर छाय ।।२४।।
साधू साखी भूत हैं, नहीं लिपैं जगद्वन्द।
परमेश्वर के आसरे, पाये परमानन्द ।।२५।।
पांच पचीस निबेर कर, धरैं सीस जगदीश।
अमरलोक को चढ़ गये, तज ब्रह्माण्ड इकीश ।।२६।।
भवसागर दरियाव में, कदे न भीजैं साध।
नितानन्द सतगुरु दिया, अवगत भेद अगाध ।।२७।।
कवल रहें ज्यों नीर में, रहे सूर आकाश।
साध रहें यों जगत में, जीव राम के पास ।।२८।।
नितानन्द चित चढ़ गये, गुरु गुमानी राम।
घट २ भीतर रम रहे, नहीं और सों काम ।।२९।।
परमेश्वर सो परम गुरु, सोई साध जग पार।
नितानन्द पर कृपा कर, राखो चरण अधार ।।३०।।
नितानन्द न्यारे किये, मिले गुमानी राम।
विचरैं साखी भूत हो, रमातीत के गाम ।।३१।।

(इति साध साखी भूत का अंग संपूर्णम्)

# 卐 साध महिमा का अंग २९ 卐

नितानन्द सूबस बसें, सुखी नगर बाजार।
जहां न प्यारे राम के, सो बियाबान ऊजार।।१।।
साधु मिले तो हर मिलें, होय पलक में पार।
नितानन्द सतसंग बिन, जगत सहे जम मार।।२।।
जिस घट भक्ति न राम की, साधु न करैं अहार।
वे घर प्रगट मसान हैं, भूत बसैं नर नार।।३।।
जहां संत जन पग धरें, बसें आप करतार।
नितानन्द बैकुंठ से, वे घर सत्य विचार।।४।।
जिस घर सेवा साध की, करैं प्रीत और भाव।
उन के भाग सराहिये, चढ़े सत्य की नाव।।५।।
नितानन्द वे धन्य हैं, जिस घर आवें संत।
जिस घर संत न पूजिये, ऊजड़ ढूंढ गिणंत।।६।।
नितानन्द जहां संत जन, हित कर धरैं पांव।
उन पर राम दया करैं, हिये भक्ति का भाव।।७।।
नितानन्द जहां संत जन, तहां आप भगवन्त।
जिसके संत न आवहीं, सो बियावान गिणन्त।।८।।
जहां न सेवा साध की, राम भक्ति नहीं मांहि।
नितानन्द वे अन्ध नर, देखत परलै जांहि।।९।।

साधां की सेवा करें, धरैं हिये में हेत।
नितानन्द भव जल तिरें, सब परिवार समेत ॥१०॥
जहां न सेवा साध की, राम भक्त नहीं कोय।
वे नर सदा दरिद्र है, उनमें कुशल न होय ॥११॥
साधू जन को देखकर, मगन होहिं मन मांहि।
नितानन्द उन नरहु की, गहे निरंजन बांहिं ॥१२॥
जहां संत जन पूजिये, धन्य २ वे गेह।
नितानन्द उन गृहों पर, करें राम नित नेह ॥१३॥
दुनियां से दिल लाइयां, साधां से विपरीत।
जगत जाल में फंस मुए, चाम दाम के मीत ॥१४॥
जिस घर साधू पग धरैं, तुरत सुफल हो जाय।
नितानन्द उन घरों में,सुख से रली मनाय ॥१५॥
जिस घर आवे संत जन, खुलैं उन्हों के भाग।
जहां भाव नहीं साध का, उन घर बासैं काग ॥१६॥
हाथ जोड़ अस्तुति करैं, साधू दर्शन पाय।
सकल पाप पल में कटैं, जिनके राम सहाय ॥१७॥
साधू आवें कृपा कर, सेवक मोड़े मुख।
नितानन्द वे नर सहैं, चौरासी के दुख ॥१८॥
साधू दर्शन देखकर, कटें कोटि अपराध।
नितानन्द आनन्द से, पावें भेद अगाध ॥१९॥

दुर्लभ दर्शन साध का, बड़भागी को होय।
नितानन्द रीते चले, मर्म न पावे कोय॥२०॥
साधां सेती शत्रुता, दुष्टां सेती दास।
वे नर सुखी न होंयगे, जब लग धरणि अकाश।२१॥
दुनियां सेती दीनता, साधां से मगरूर।
नितानन्द वै अंध नर, सदा राम से दूर॥२२॥
जिस घर डर नहीं राम का, नहीं साध से प्रीत।
वे नर निष्फल जहिंगे, निर्मुख चलैं अतीत॥२३॥
जिन के प्रीत न साध की, वै साहेब के चोर।
नितानन्द वे सब गये, बेमुख वज्र कठोर॥२४॥
साधू त्यारन तिरन हैं, जिन के हिये दयाल।
नितानन्द केते पतित, पल में किये निहाल॥२५॥
नमो निरंजन चरन को, सत गुरु करूं प्रणाम।
भाव भक्ति दायक सदा, संत गुमानी राम॥२६॥
गुरु गुमानी दास जी, दयावन्त सुख धाम।
नितानन्द कर जोड़ कर, तुमको करै प्रणाम॥२७॥

(इति साध महिमा का अंग संपूर्णम्)

# 卐 मध्य का अंग ३० 卐

।

नितानन्द की बीनती, सुनो परम गुरु राय।।१।।
भव सागर की बन्ध से, प्रभु जी ल्यो छुटाय।
नितानन्द भव जल तिरौ, मध्य अंग धर ध्यान।।२।।
दुविधा से दिल लाय कर, बूड़े बहुत आज्ञान।
दुहूं अंग के लागणे, सब जग गारत होय।।३।।
पारंगत पद में रहै, मध्य अंग भज कोय।
नितानन्द दरियाव में, मध्य अंग से ख्याल।।४।।
विषय लहर ब्यापै नहीं, चलै मीन की चाल।
नितानन्द भव सिंध में, मध्य अंग हो खेल।।५।।
सुफल फलै साहेब मिलै, अमर आत्मा बेल।
मध्य अंग हर रंग में, धरो रात दिन ध्यान।।६।।
नितानन्द चित चेत कर, गगन मगन गलतान।
अर्ध अंग सभ दूर कर, ऊर्ध अंग में आव।।७।।
देख तमाशा अगम का, मध्य अंग कै भाव।
मध्य अंग जो जन रहै, गह गुरु की दुर्बीन।।८।।
नितानन्द वे धन्य हैं, जिन का मन लौलीन।
दुबध्या दिल से दूर कर, एक अंग धर ध्यान।।९।।
नितानन्द शीतल तृपत, दोहूं अंग पहचान।

परमेश्वर सभ ही भजैं, भजने माहिं बिनान ॥१०॥
मन से भजै सो थिर रहै, बाहर फंसैं अज्ञान।
नितानन्द हर चरण में, मध्य अंग हो लाग ॥११॥
परम गुरु की मेहर से, जागे मस्तक भाग।
नितानन्द हर चरण में, मध्य अंग हो आव ॥१२॥
भवसागर से वे तिरै, जिन का मध्य स्वभाव।
नितानन्द उस पीव का, मर्म न जानै कोय ॥१३॥
मध्य अंग जो लग रहै, तिन को दर्शन होय।
नितानन्द महबूब को, मध्य अंग में देख ॥१४॥
बाहर से मन मोड़ कर, सुमरो पुरुष अलेख।
नितानन्द महबूब का, मध्य अंग में नूर ॥१५॥
साधू देखैं नैन भर, नित हाज़रां हजूर।
नितानन्द महबूब का, मध्य अंग में बास ॥१६॥
उलट अपूठा देख ले, अवगत के विश्वास।
नितानन्द महबूब का, मध्य महल मुक़ाम ॥१७॥
साधू जन क्रीड़ा करैं, जहा निरंजन राम।
नितानन्द उस महल में, मध्य अंग हो चाल ॥१८॥
सभ के मध्य अलेख है, पल में करै निहाल।
मध्य अंग जो कोई रहे, जिन को मिलै अलेख ॥१९॥
नितानन्द चश्मा उलट, आपा अन्तर देख।

नितानन्द हर चरण को, मध्य अंग हो ध्याय ।।२०।।
सतगुरु के परताप से, धरो अगमपुर पाय।
कहैं गुमानी राम जी, मध्य अंग में आय।२१।।
कोट जुगों का बीछड़ा, मिलै पलक में जाय।
मध्य अंग में मिल गये, परम गुमानी दास ।।२२।।
नितानन्द पर कृपा कर, रहे चरण में वास।
नितानन्द आनन्द में, निरख गुमानी राम ।।२३।।
मध्य अंग में मिल रहो, पटक कामना काम

(इति मध्य का अंग संपूर्णम्)

## 卐 विचार का अंग ३१ 卐

।

नमो निरंजन चरण को, गुरु गुमानी दास।।१।।
सभ संतन के पग लगूं, करो भक्ति परकाश।
नितानन्द की बन्दगी, करो गन्दगी दूर।।२।।
ज्ञान प्रकाश विचार कर, करो भक्ति भरपूर।
साहेब २ सब कहें, कहबे माहिं विनान।।३।।
कोई २ कंचन हो गये, बहुत रहे पाखान।
साहेब २ सब कहैं, कहबे बहुत विचार।।४।।
नितानन्द दिल में कहैं, वे पावैं दीदार।

परमेश्वर सभ ही भजें, भजन मांहि बहु भेद।।५।।
हंस भजन उत्तम करैं, वग व्रत करें निषेद।
नितानन्द हर जनों के, हिरदय हंस विचार।।६।।
नाम निरंजन लग रहे, तज कर विषय विकार।
नितानन्द मिसरी कहे, मुख नहीं मीठा होय।।७।।
बिना प्रीत हर २ कहै, पार न पहुंचे कोय।
पावक कहे जले नहीं, जब लग लगै न अंग।।८।।
राम कहो तो क्या हुआ, भीतर लग्या न रङ्ग।
सतगुरु शब्द विचार बिन, मैला भीतर अंग।।९।।
नितानन्द निर्मल रहै, सतपुरुषों के संग।
नगर कहे पहुंचे नहीं, जब लग चल न पांय।।१०।।
नितानन्द इक प्रेम बिन, कैसे हरपुर जांय।
नगर २ की सैल कर, आया देह मंझार।।११।।
नितानन्द इस नगर में, गुरु गम भेद विचार।
नितानन्द अमृत ज़हर, मिले देह में आय।।१२।।
हर जन हंस विचार कर, विष तज अमृत खाय।
बग विचार सभ जगत में, करैं मलीन अहार।।१३।।
नितानन्द जन हंस है, पाया तत्व विचार।
नितानन्द हर सभ भजैं, भजना नहीं सहल।।१४।।
अन्तर भजैं विचार से, सो सब गये महल।

नितानन्द सभ जगत यह, पड़ा अंधेरा मांहि ॥१५॥
जीव मगन अज्ञान में, तत्व विचारै नांहि।
नितानन्द जिनके रहै, निशिदिन ब्रह्म विचार ॥१६॥
उन साधन के संग रहै, सदा राम भरतार।
नितानन्द जो जन रहैं, सदा राम लौ लीन ॥१७॥
तिनके साहेब निकट हैं, वे जन बड़े प्रवीन।
नितानन्द हर की भक्ति, करो विचार विचार ॥१८॥
बिना विचार न पाइये, साहेब का दीदार।
नितानन्द वे धन्य हैं, आप परम गुरु देव ॥१९॥
मेहर करैं तबही मिलें, चरण कमल की सेव।
नितानन्द हर भजन में, चहिये बहुत विचार ॥२०॥
बिन विचार कैसे मिले, साहेब का दीदार।
नितानन्द गोविन्द को, सदा हृदय में ध्याय।२१॥
कर विचार निर्भय तिरो, भौसागर दरियाव।
जग कांटे का बन बड़ा, चलो विचार विचार ॥२२॥
नितानन्द चित चेत कर, कूड़े काम निवार।
एक विचार अनेक में, घट घट व्यापक सोय ॥२३॥
सकल अधर सभ को धरे, वही होय तो होय।
नितानन्द हर मिलन का, हंसा जानैं भेद ॥२४॥
नीर छीर न्यारा करै, पड़ै न जम की कैद।

राम रमैं निःकाम होय, उर में गहै विचार ।।२५।।
मन न लगावै जगत से, अवनासी उरधार।
कर विचार उरधार हर, यह दुनियां दिन चार ।।२६।।
नितानन्द जग से रते, वे सभ अंध गंवार।
विषया तज अमृत पिवैं, जिन के हृदय विचार ।।२७।।
अमृत माह से विष पीवे, वे सभ अन्ध गंवार।
नितानन्द हर याद कर, सतगुरु शब्द विचार ।।२८।।
जो पल बीते नाम बिन, वही जन्म की हार।
बिना विचार गंवाइयां, गया हाथ से लाल ।।२९।।
नितानन्द चेतन रहे, वे नर हुए निहाल।
जिनको चिन्ता चलन की, उन के यही विचार ।।३०।।
नगर सवेरा पहुंचना, नितानन्द दरबार।
नितानन्द न्यारे किये, सतगुरु दिया विचार ।।३१।।
पार उतारे पलक में, टूटे जोड़न हार।
भवसागर दरियाव में, फंसी किरोड़ों नाव ।।३२।।
जो समझे सो तिर गये, गह विचार हर भाव।
नितानन्द जिनके हिये, प्रगटा ज्ञान विचार ।।३३।।
उनके साहेब निकट है, निरखैं अजब बहार।
नितानन्द हर मिलन की, नौका ज्ञान विचार ।।३४।।
राम भजै विषया तजै, तो हर हिये मझार।

विषम रोग संसार है, औषध अलख विचार ।।३५।।
तन मन निर्मल हो गया, नितानन्द उर धार।
नितानन्द विष खाय कर, सभ जग मर २ जाय ।।३६।।
जिस घट सुधा विचार की, रहे राम लौ लाय।
विषम रोग संसार है, ता में बैरी काल ।।३७।।
औषध एक विचार की, पल २ राम संभाल।
काम क्रोध सभ जहर है, लोभ मोह अभिमान ।।३८।।
नरक मांहि ले जात हैं, नितानन्द बिन ज्ञान।
जेती तन में बासना, सकल नरक की खान ।।३९।।
नितानन्द हर पाइये, जब हिये विचारै ज्ञान।
ले विचार मन थिर करै, त्यागै विषै विकार ।।४०।।
नितानन्द उन नरहुं की, काया कंचन सार।
नितानन्द पूरा मिलै, पूरा प्रगटै ज्ञान ।।४१।।
ऊरां के पीछे लग्या, डुब्या सकल जहान।
पूरा सतगुरु पाइये, नितानन्द बड़ भाग ।।४२।।
सब विचार सहजै खुलै।, रहैं राम से लाग।
शिष विषयी विषयी गुरु, प्रगटै नहीं विचार ।।४३।।
अंध २ को ले चले, नितानन्द जम द्वार।
पंडित मुंडत दर्शनी, क्षत्री बनियां जाट ।।४४।।
रीते रहे विचार बिन, मनुष्य देह के घाट।

क्षत्री बनियां शूद्र हैं, पंडित मुडंत भेष ।।४५।।
नितानन्द गुरु ज्ञान बिन, कदे न मिलै अलेख।
नितानन्द सोई तिरैं, जिन के सत्य विचार ।।४६।।
काम क्रोध मद लोभ लग, बूड़ मुआ संसार।
नितानन्द आनन्द से, संत उतर गये पार ।।४७।।
ले विचार की नाव चढ़, पहुंचे महल मुरार।
जिन के घट प्रगट किया, सतगुरु अगम विचार ।।४८।।
नितानन्द वे तिर गये, बूड़ मुआ संसार।
जिस घट ज्ञान विचार है, वे बैकुंठ समान ।।४९।।
नितानन्द बिषयी मनुष, सभ ही सूकर श्वान।
राम विचारै सकल में, चलै विचार विचार ।।५०।।
नितानन्द तज कुमति को, मिल गये माहिं मुरार

(इति विचार का अंग संपूर्णम्)

## 卐 सार ग्राही का अंग ३२ 卐

।
नमो निरंजन चरण को, गुरु गुमानी दास।।१।।
सकल संत को बन्दना, दीजै चरण निवास।
नितानन्द कर जोड़ कर, बौले सीस नवाय।।२।।
भक्ति दान मोहि दीजियो, सतगुरु करो सहाय।

नितानन्द दुनियां नहीं, सभै भक्त कर जान।।३।।
अवगुण तज गुण लीजिये, सुख स्वरूप सभ मान।
नितानन्द दुनियां नहीं, सभै भक्त कर बूझ।।४।।
जा का हर से हित नहीं, सो सब रहें असूझ।
नितानन्द गुण लीजिये, सभ घट आतम जान।।५।।
जो कोई अवगुण करै, ताही की हो हान।
नितानन्द गुण लीजिये, सभ घट रमता राम।।६।।
जो कोई अवगुण करै, ताका बिगड़ै काम।
नितानन्द गुण लीजिये, यही संत की चाल।।७।।
अवगुण ऊपर गुण करैं, जिन की बुद्धि विशाल।
नितानन्द गुण लीजिये, जथा हंस पय लेत।।८।।
दूध २ को अंच कर, पानी चोंच न देत।
नितानन्द सभ है वही, घट पड़दे दरम्यान।।९।।
घट फूटै दरियाव है, सकल ब्रह्म कर जान।
औगुण ग्राही विमुख नर, जिन के घट अज्ञान।।१०।।
गुणग्राही हर जन पुरुष, धरै निरंजन ध्यान।
नितानन्द इस जगत में, सभ गुणवन्त पिछान।।११।।
सभ अवगुण है आप में, यही सत्य कर जान।
नितानन्द गुण लीजिये, औगुण उर मत आन।।१२।।
अपना अवगुण दूर कर, नेकी रहै निदान।

नितानन्द तन महल में, बरतैं सार असार ।।१३।।
सार गहें सो संत जन, तज कर विषय विकार ।
नितानन्द इस देह में, कर ले हंस विचार ।।१४।।
हंसा मोती चुगैंगे, बगुलों के मुख छार ।
नितानन्द इस जगत में, पकड़ हंस का ज्ञान ।।१५।।
तज विकार हर भक्ति कर, घट पड़दै दरम्यान ।
नितानन्द तन नगर में, एक अमोला लाल ।।१६।।
संत सार गह पाइयां, साहेब किये निहाल ।
नितानन्द तन नगर में, मिलै अमोला लाल ।।१७।।
सार असार विचार बिन, मूरख नर कंगाल ।
नितानन्द तन नगर में, अजब अनौखा सार ।।१८।।
सभ अवगुण पल में मिटै, रतीक करैं अहार ।
नितानन्द निरमल हुए, चले हंस की चाल ।।१९।।
आठ पहर मोती चुगैं, तज असार जंजाल ।
काया के अवगुण तजै, पकड़ लिया गुण सार ।।२०।।
नितानन्द सभ देखता, चढ़े ब्रह्म दरबार ।
नितानन्द इस देह में, गहो हंस का ज्ञान ।।२१।।
तज छीलर संसार को, कर ले ब्रह्म पिछान ।
नितानन्द इस जगत में, हंसा विरला कोय ।।२२।।
जैसे चन्दन का बिड़ा, बन २ कहीं न होय ।
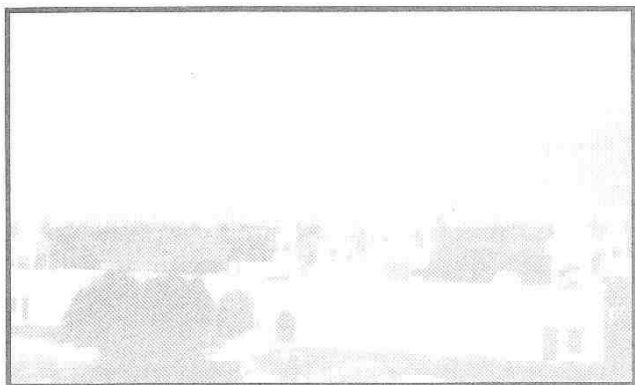
महाराज नितानन्द जी की अमरपुरी जटेला धाम
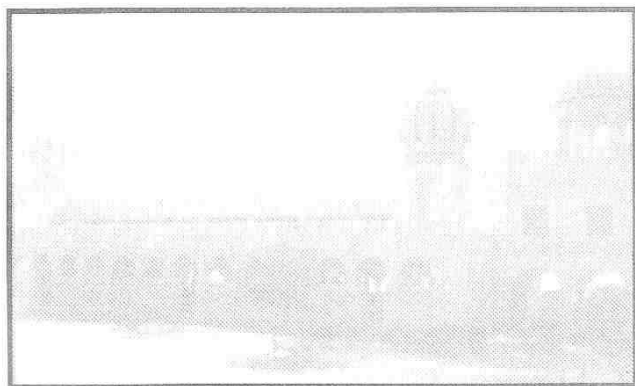
सत्संग-भवन : जटेला धाम

नितानन्द गुरु की कृपा, गहो हंस का ज्ञान ।।२३।।
हंसा हर मोती चुगैं, मींडक चुगैं अज्ञान।
नितानन्द जिनके रहै, निशिदिन ब्रह्म विचार ।।२४।।
उनका जीवन सुफल है, जिन पाया दीदार।
नितानन्द इस जगत में, हंसा हर के संत ।।२५।।
मानसरोवर मिल गये, सुमर २ भगवंत।
सतवादी सुख सिन्धु में, मुक्ताहल पावें ।।२६।।
सार असार विचार कर, गोबिन्द गुण गावें।
सभ मांह से गुण गह लिया, औगुण विसराया ।।२७।।
नितानन्द घर अमरपुर, घट भीतर पाया।
नितानन्द नवतम लिया, मन मैल बहाया ।।२८।।
तन का औगुण तज दिया, गुरु ज्ञान गहाया।
नितानन्द आनन्द से, सुख विलसै हंसा ।।२९।।
सार निकासा देह में, कुछ रहा न संसा।
विष की बाड़ी ऊजड़ी, साहेब पय पिया ।।३०।।
सारग्राही हो रह्या, सो जुग जुग जीया।
सैल करै संसार की, पर लिप्त न होवे ।।३१।।
गुणातीत निर्गुण वही, विष बीज न बोवे।
भौजल खार समुद्र से, सुख सुधा निकासा ।।३२।।
सार गह्या अब चल रह्या, तन मांहि तमासा।

गुरु गुमानी दास जी, एक शब्द बताया ।।३३।।
नितानन्द हृदय धरा, सभ तिमिर मिटाया।
सतगुरु सार बताइयां, हर भक्ति प्रकासी ।।३४।।
गुरु गुमानीदासजी, खंडन भव फांसी

( इति सार ग्राही का अंग संपूर्णम् )

## 卐 पीव पिछान का अंग ३३ 卐

।
संपट में धर घोइये, सो साहेब किस काम।।१।।
बाहर भीतर रम रह्या, नितानन्द वह राम।
सरवंगी सूभर भरा, संपट में न समाय।।२।।
अधर धार सभ को धरै, नितानन्द वह ध्याय।
साहेब मेरा एक है, सभ घट में भरपूर।।३।।
रोम रोम में रम रह्या, जिसका सुन्दर नूर।
साहेब मेरा एक है, दूजा चढ़ै न चित।।४।।
नितानन्द सर्बङ्ग है, तासू लाग्या हित।
साहेब मेरा एक है, सुन्दर पाक जमाल।।५।।
संपट भीतर राखिये, सो पाथर कंगाल।
नितानन्द कुछ अजब है, पीव हमारा एक।।६।।
पाथर पीतल पूज कर, पच पच मरे अनेक।

नितानन्द मेरा धनी, मुझसे बाहर नाहिं ।।७।।
बाहर भीतर रम रह्या, सकल सृष्टि के माहिं।
साहेब समरथ एक है, दूजी सभ माया ।।८।।
और सभ आवागमन में, जिन धारी काया।
जो कोई तन धर उतरा, सो पीव न मेरा ।।९।।
नितानन्द घट घट प्रगट, उस हर का चेरा।
बेहद्दी बारीक है, त्रिगुण से न्यारा ।।१०।।
नितानन्द अवगत पुरुष है, है पीव हमारा।
नितानन्द ब्रह्माण्ड में, जिन पिण्ड उपाए ।।११।।
करै हरै पोखै भरै, सभ जीव भुलाए।
वही एक महबूब है, ताका मैं चेरा ।।१२।।
नितानन्द घर अमरपुर, चरणों में डेरा।
गुप्त प्रगट सूभर भरा, चेतन चहुं ओरा ।।१३।।
नितानन्द उस पीव से, चित लाग्या मोरा।
साहेब सर्जनहार है, अन्तर्यामी सोय ।।१४।।
नितानन्द दिल लग गया, होनी होय सो होय।
नितानन्द मेरा धनी, जिसका पाक जमाल ।।१५।।
मेहर करे तो पाइये, वही रंगीला लाल।
नितानन्द मेरा धनी, तीन लोक भरपूर ।।१६।।
पकड़ पिटारै मूंदिये, सो कर दिल से दूर।

नितानन्द के चित्त चढ़ी, चरण कंवल की प्रीत ॥१७॥
अविनासी भरतार बिन, और न आवे चित्त।
नितानन्द देख्या सभै, जो देखै करतार ॥१८॥
राम बिसर जो देखियां, सो सब घोर अंधार।
मन इन्द्री पहुंचे जहां, सो नहीं मेरा राम ॥१९॥
नितानन्द गुण तीन से, परें पीव मुकाम।
नितानन्द इस जगत से, परे राम का देस ॥२०॥
जो कुछ जग में देखियां, सो नहीं रहे हमेस।
नितानन्द महबूब है, सुन्दर सभ ही अंग ।२१॥
जिसके दर्शन करन को, राजा भये निहंग।
नितानन्द के पीव को, चाहै सभ संसार ॥२२॥
सभ से दिल न्यारा करै, तिनको मिलै मुरार।
नितानन्द भरपूर है, कोई न जानै भेद ॥२३॥
अमर अधर सभ धर रह्या, जहां पुराण न वेद।
जन्म मरण से रहित है, हिन्दू तुर्क न होय ॥२४॥
अल्हा राम भी नाम है, अकह कह सकै कोय।
काया माया वोह नहीं, नाहीं नौ चौबीस ॥२५॥
नितानन्द सभ में वही, वही २ जगदीस।
ब्रह्मा विष्णु महेसरा, सो भी माया रूप ॥२६॥
नितानन्द अवगत पुरुष, पावन पीव अनूप।

तीरथ व्रत संजम धर्म, मन्त्र साधना नाहिं ।।२७।।
नितानन्द पीव निर्मला, सब बाहर सभ माहिं।
दृष्ट मुष्ट मन बुध नहीं, नहीं चित्त अहंकार ।।२८।।
नितानन्द पीव परम गुरु, पार ब्रह्म भरतार।
नितानन्द इस जगत में, दुर्लभ पीव पिछान ।।२९।।
सकल जीव भ्रम में पड़े, पूजैं आनहि आन।
नितानन्द भुर्की पड़ी, आपा रह्या ल्हुकाय ।।३०।।
सजन हमारा सुघर है, किन किन लीया पाय।
नितानन्द सब दुख मिटे, लिया पीव पहिचान ।।३१।।
सतगुरु की कृपा भई, ताते प्रगटा ज्ञान।
चरण परस सुख सिंधु के, मुक्ता हल नित खाय ।।३२।।
नितानन्द मंगल हुए, सतगुरु करी सहाय।
पीव हमारा परमगुरु, गुरु गुमानी दास ।।३३।।
नितानन्द निर्भय रहो, जुग २ चरण निवास।
नितानन्द मंगल हुए, जंगल हुआ बज़ार ।।३४।।
घट भीतर पट खुल गये, पाये पीव मुरार।
गुरु गुमानीदास जी, किया सहज कल्यान ।।३५।।
शब्द सैन से कर दई, पल में पीव पिछान

(इति पीव पिछान का अंग संपूर्णम्)

# 卐 विश्वास का अंग ३४ 卐

।

नमो निरंजन चरण को, नमो गुमानी दास।।१।।
नमो संत त्यारन तिरन, नितानन्द वि श्वास।
पारब्रह्म पोषण भरण, त्यारन को गुरु देव।।२।।
सकल संत रक्षा करैं, नितानन्द पद सेव।
भूखा भूखा क्या करै, मुरख मुग्द गंवार।।३।।
जिन यह पिंड उपाइयां, सोई पूरनहार।
कहा सुनावै जगत को, भीतर बोदी आस।।४।।
जिन ये सब रचना रची, धर ता का विश्वास।
अनल पंख को पंच गज, गज को मन नर सेर।।५।।
नितानन्द कन कीट को, राम न करैं अवेर।
कण कीड़ी मण कुंजरां, सकल जीव को देत।।६।।
नितानन्द भूले नहीं, साहेब सुघर सुचेत।
जिन यह सभ रचना रची, वही करै प्रतिपाल।।७।।
कण कीड़ी मण कुंजरां, देत संभाल संभाल।
नितानन्द सुख सिन्धु पर, धरे रहो वि श्वास।।८।।
एक शब्द में जिन रचा, पानी पवन अकाश।
एक शब्द में सब रचा, धनी हमारा सोय।।९।।
नितानन्द गहो आसरा, सदा सुखाला सोय।

साचा साहेब एक है, सब को पूरणहार ॥१०॥
पल में जग पोषै भरै, ऐसा पुरुष अपार।
प्रतिपालै पोषै भरै, जहां तहां भरपूर ॥११॥
नितानन्द कुछ अजब है, साहेब सुन्दर नूर।
परम गुरु परमात्मा, पूरण सब ब्रह्माण्ड ॥१२॥
सकल जीव पोषै भरै, सात द्वीप नौ खण्ड।
मात पिता की गम नहीं, तहां दिया आहार ॥१३॥
नितानन्द हर देत है, सर्व संभार संभार।
कई कोट ब्रह्माण्ड हैं, बनी सृष्टि बहु रंग ॥१४॥
नितानन्द सुध लेत है, अवगत पुरुष अभंग।
नितानन्द विश्वास गह, साहेब दीन दयाल ॥१५॥
सकल विश्व पोषै भरै, चिदानन्द जगपाल।
स्वर्ग मृत्यु पाताल में, कई कोट जीव जंत ॥१६॥
सृज सबन को देत है, नितानन्द का कंत।
नितानन्द गोबिंद की, कुदरत पर बलिहार ॥१७॥
जल थल और बियावान में, पहुंच रहै आहार।
नितानन्द चिन्ता तजो, भजो निरंजन देव ॥१८॥
पकड़ आसरा मगन रह, चरण कमल की सेव।
नितानन्द गोविन्द का, राखो दृढ़ विश्वास ॥१९॥
सकल घटो में रम रह्या, बाजी चेहर प्रकास।

नितानन्द बाजी रची, बाजीगर भगवान ।।२०।।
सो हम को नहीं बीसरै, साहेब सुघर सुजान।
जो चाहै सोई करै, बड़ा भरोसा मोह।२१।।
नितानन्द परब्रह्म को, सदा ध्यान कर जोह।
अधर धार सब धर दिया, अधर धरा आकास ।।२२।।
जल पर धर धर पै सभै, यों जग दिया प्रकास।
नितानन्द भगवान का, दृढ़ कर धर विश्वास ।।२३।।
जल से जगत उपाय कै, घट २ करै विलास।
पकड़ टेक उस एक की, जो सब का स्वामी ।।२४।।
दूजा दिल से दूर कर, सब अन्तर जामी।
दयावन्त गम्भीर है, गोबिन्द हमारा ।।२५।।
नितानन्द एक शब्द से, सब रच्या पसारा।
नितानन्द विश्वास सों, चित्त चरण लगावो ।।२६।।
अवनासी के आसरे, निर्भय पद पावो।
धरो ध्यान भगवान का, तज विषय विकारा ।।२७।।
अन्तरजामी एक है, सब का करतारा।
पांच तत्त्व गुण तीन से, सब देह बनाई ।।२८।।
सब ही नित पोषै भरै, ऐसी चतुराई।
नितानन्द कुछ अजब है, चैतन्य खिलारी ।।२९।।
भरे ढार रीते भरै, सन्तन हितकारी।

नित्य-आनन्द अपार है, अंजन से न्यारा ।।३०।।
नितानन्द उस आसरै, हर दम मतवारा।
वही राम रमता धनी, सब को प्रतिपालै ।।३१।।
पड़े रहो उस आसरै, जो सदा संभालै।
गुणातीत निर्गुण धनी, सुखदायक भरपूर ।।३२।।
संतन को निर्मल करै, सो हाजरां हजूर।
सभी माहिं व्यापक रहै, सब को पूरणहार ।।३३।।
नितानन्द परब्रह्म को, सदा हृदय में धार।
नाथ निरंजन स्वामियां, सदा करे प्रतिपाल ।।३४।।
नितानन्द ऐसा धनी, चित से पलक न टाल।
नितानन्द पोषै भरै, ले नहीं अपना नाम ।।३५।।
शोभा देवें संत को, ऐसा सर्मथ राम।
नितानन्द पूरा धनी, सब को पूरण हार ।।३६।।
मोहि भरोसा इष्ट का, यही विचार विचार।
नितानन्द उस पीव पर, तन मन धन सब वार ।।३७।।
पल २ की सुध लेत है, वही पुरुष करतार।
बाजीगर बाजी रची, छिन २ करे सहाय ।।३८।।
ऐसे पूरण ब्रह्म के, रात दिवस गुण गाय।
भूखा भूखा मत करैं, समरथ पूरणहार ।।३९।।
गर्भ माहिं पालना करी, ऐसा धनी हमार।

पशु मनुष्य जे सृष्टि में, तनधारी सब प्रान ।।४०।।
पलक माहिं पोखै भरैं, पूरा परम निधान।
सकल जीव पोखै भरै, कोई न बिसरे एक ।।४१।।
ऐसी बुद्धि अपार है, पूरण पुरुष अलेख।
नितानन्द उस पीव को, दिल से कदे न भूल ।।४२।।
पानी से पैदा किया, सूक्षम और स्थूल।
नितानन्द जहां लौं जगत, सब को पूरणहार ।।४३।।
नहीं बिसारे एक को, वह अवगत करतार।
जीव जन्तु जेते किये, सभ को पोषै आय ।।४४।।
नितानन्द उस प्रभू के, चरण कमल चित लाय।
औगुण कदे न चित धरै, ऐसा पुरुष अनंत ।।४५।।
निर्गुण को बहु गुण दिये, धन्य २ भगवन्त।
परम गुरु की मेहर से, आनन्द रहै हमेश ।।४६।।
जंगल में मंगल करैं, नितानन्द दरवेश।
पारस रूपी परमगुरु, घट घट पारस नाथ ।।४७।।
नितानन्द की बंदना, गहो हमारा हाथ।
चणां चबीणा चाब कर, नीर कुण्ड का पीव ।।४८।।
नितानन्द भगवान भज, रहै जुगै जुग जीव।
उसी खाल का हाथ है, उसी खाल का पाव ।।४९।।
नितानन्द सोई तिरै, जाके हृदय भाव

(इति वि श्वास का अंग संपूर्णम्)

# 卐 धीरज का अंग ३५ 卐

धर्मवन्त धीरज धरन, राम गुमानी दास।।१।।
सकल संत को बन्दना, मोह उर करो प्रकास।
नितानन्द आतुर बहुत, तुम अब धीरज देहु।।२।।
गुरु गुमानी दास जी, चरण कमल में लेहु।
नितानन्द डर दूर कर, तेरे सिर पर राम।।३।।
हाथी के असवार को, स्वान भौंस बेकाम।
धीरजवन्त डरै नहीं, बकै लाख संसार।।४।।
नितानन्द निर्भय रहो, गगन मगन मंझार।
नितानन्द धीरज धरो, जग की शंका त्याग।।५।।
क्या गीदड़ से डरपिये, शरण सिंह की लाग।
भोसागर भयभीत में, चढ़ो निःशंक जहाज।।६।।
नितानन्द बुड़े नहीं, भक्ति पक्ष महाराज।
नितानन्द धीरज धरो, करो न सोच विचार।।७।।
तिनका कोई क्या करे, जो पड़ै धनी के द्वार।
नितानन्द डगमग तजो, धरो धीर धुन लाय।।८।।
तिनका कोई क्या करै, जिनके राम सहाय।
नितानन्द कासे डरै, राम शरण जो कोय।।९।।
तीन लोक पच २ मरे, बाल न बांका होय।

नितानन्द परब्रह्म का, धरो ध्यान गह टेक ॥१०॥
धीरज सत्य न छोड़िये, दुख सुख लहर अनेक।
नितानन्द सिर पर धनी, घट में अनी किरोड़ ॥११॥
धीरज धर हर भक्ति कर, तन मन उलटा मोड़।
पांच मवासी नगर में, भवसागर भयभीत ॥१२॥
नितानन्द धीरज धरो, करो राम से प्रीत।
नितानन्द हर याद कर, धर धीरज से पाव ॥१३॥
मेहर करैं सूभर भरैं, प्रभु परम गुरु राव।
भौजल में भेरा पड़ा, बही अनन्त जहाज ॥१४॥
नितानन्द धीरज धरो, मेहर करैं महराज।
धीरज सत विश्वास से, करो धनी को याद ॥१५॥
नितानन्द जब पाइये, चरन कमल परसाद।
सहज २ मन मोड़िये, धीरज से धर ध्यान ॥१६॥
नितानन्द पहुंचे सही, अलख अमरपुर प्रान।
नितानन्द धीरज धरो, करो भक्ति मन लाय ॥१७॥
काल अकाल जंजाल से, धनी उबारै आय।
नितानन्द धीरज धरो, करो महल की सैल ॥१८॥
महल माहिं महबूब है, जो मिटैं बीच के मैल।
नितानन्द डर दूर कर, धरो धीर मन माहिं ॥१९॥
बांह गही जिन कृपा कर, कबहूं छोड़ै नाहिं।

नितानन्द धीरज धरो, समरथ धनी तुम्हार ।।२०।।
एल पलक की मेहर में, करें जगत से पार।
नितानन्द सामर्थ है, साहेब दीन दयाल ।।२१।।
पकड़ आसरा पड़ रहो, पल में करैं निहाल।
नितानन्द धीरज धरो, करो भक्ति मन लाय ।।२२।।
डरो न सब संसार से, निर्भय हर गुण गाय।
निशि बासर सुमरत रहो, राखो सुरत अडोल ।।२३।।
धीरज धर २ पहुंच ले, पीछे सदा किलोल।
धीरे २ पांव धर, चलो महल के माहिं ।।२४।।
धीरे पहुंचे पलक में, आतुर उलटे जाहिं।
नितानन्द धीरज धरो, आतुर होय न चाल ।।२५।।
धीरज धरें सो अमर है, चढ़ै महल तत्काल।
धीरज धर धुन लाय रहो, दुनिया देख न भूल ।।२६।।
अतुर इत रह जांयगे, भरम कर्म में भूल।
नितानन्द हर याद कर, धीरज धर २ चाल ।।२७।।
अवनासी नेड़े रहै, पल में करै निहाल।
धीरज बीरज ज्ञान का, निपजै नाम प्रताप ।।२८।।
नितानन्द फूलै फलै, जपै अजप्पा जाप।
नितानन्द धीरज धरो, अब क्या सोच विचार ।।२९।।
मिला चहै महबूब को, कूड़े काम निवार।

नितानन्द गोबिन्द पर, धर धीरज विश्वास ।।३०।।
भक्ति पक्ष छोड़ै नहीं, यही हमारे आस।
भक्ति बीज ऊगै जबै, धरै धीर धुनि लाय ।।३१।।
सूरों के मैदान में, कायर सकैं न जाय।
नितानन्द धीरज धरो, करो रैन दिन ध्यान ।।३२।।
चेतन हो चल महल में, सहल जिन्दगी जान।
नितानन्द धीरज गहो, राम चरण चित राख ।।३३।।
सब घट साहेब एक है, नाम रतन रस चाख।
नितानन्द आनन्द से, रहो रैन दिन लाग ।।३४।।
धीरज बीरज ब्रह्म का, गुरु शब्द में जाग।
धीरजवन्त दयाल हैं, राम गुमानी दास ।।३५।।
दुख भंजन सुख के करण, हरन सकल भव त्रास

(इति धीरज का अंग संपूर्णम्)

## 卐 कंकताई का अंग ३६ 卐

।

नमो नमो श्री परम गुरु, परम सुद्ध सुख धाम ।।१।।
सतगुरु चरण प्रणाम कर, संत शरण विश्राम।
तुमही हर गुरु संत तुम, एक अंग त्रिय भाव ।।२।।
नितानन्द की बन्दना, नमो परम गुरु राव।

बसन कनूठा कापड़ा, तापर लगै न ज्ञान।।३।।
पारब्रह्म के महल में, किस विध पावे जान।
बसन बनूठा पास का, चढ़ै न गाढ़ा रंग।।४।।
तजो कनक और कामिनी, समझ ज्ञान परसंग।
नितानन्द महमन्त रह, पारब्रह्म कर याद।।५।।
किस २ को समझाइये, घर २ द्वन्द फसाद।
नितानन्द हर याद कर, तजो जगत की भूल।।६।।
किस २ को समझाइये, सभ जग संभल फूल।
नितानन्द वै परमगुरु, रहियो सदा सहाय।।७।।
मेहर करै तबही मिलै, अलख निरंजन राय।
नितानन्द तज कंकता, धरो धनी का ध्यान।।८।।
कृपा करैं तब पाइये, पारब्रह्म भगवान।
नितानन्द गह आसरा, कर हरि भक्ति निःशंक।।९।।
भक्त कहैं सो कीजिये, कदे न हूजै कंक।
नितानन्द सुख सिंधु के, सदा चरण चित लाय।।१०।।
ये दुनियां दुख की भरी, इस में दिल मत लाय।
परम गुरु के ध्यान में, सदा सुरत मन लाय।।११।।
अजर अमर कर लेहंगे, देंगे धुर पहुंचाय।
नितानन्द हर याद कर, तजो बड़ाई मान।।१२।।
बिना कृपा कहां पाइये, पूरण पद निर्वान।

भरे कंक सभ जगत में, क्या राजा क्या रंक ॥१३॥
जत्त सत्त सुमिरन बिना, मिटें न खोटे अंक।
शीलवन्त सुकृत भजन, करै कंकता दूर ॥१४॥
नितानन्द चित चरण में, हुए खाक से नूर।
जब लग तन में कंकता, मन में विषय विकार ॥१५॥
नितानन्द तब लग सहै, जगत जमों की मार।
कोट कंक कूकर कुटिल, विषयी बिना विवेक ॥१६॥
नितानन्द भवसिंधु में, बूड़े कुटिल अनेक।
कुटिल कंक सभ रंक हैं, उनके नंगे पांव ॥१७॥
रीते हाथों जाहिंगे, क्या राजा क्या राव।
राम भजन बिन कंक हैं, छत्रपति कंगाल ॥१८॥
नितानन्द हर भजन बिन, सभ जग मुआ अकाल।
तजो कंकता आपनी, नितानन्द लग पंथ ॥१९॥
किस २ को समझाइये, गल बल शहर अनंत।
अंधों को चूंधे मिले, नितानन्द जग मांहि ॥२०॥
कंक कंक से हित किया, दोनों रीते जांहि।
नितानन्द इस जगत में, मिले कंक से कंक।२१॥
साध संग गुरु ज्ञान बिन, यमपुर चले निशंक।
नरक पड़न का डर नहीं, निर्भय कुमति कमांहि ॥२२॥
सभै कंक रीते चले, अमृत तज विष खांहि।

राम भक्ति से रुचि नहीं, यही कंक की चाल ।।२३।।
संत जनों से शत्रुता, समझ काल का जाल।
काल फांस गल में पड़ी, तऊ न समझै कंक ।।२४।।
नितानन्द यह अंध नर, भूला फिरै निसंक।
नितानन्द जग अंध के, काल अहेरी लार ।।२५।।
कंकों की गिनती नहीं, लिये देवता मार।
कुकर कंक करंक त्रिय, करैं क्रोध और काम ।।२६।।
आपस में लड़ २ मरें, भूले रमता राम।
कामिनि कंक करंक है, लगे स्वान ज्यों कंक ।।२७।।
राम विमुख रीते चले, नितानन्द नहीं संक।
देह द्वारका कंक की, ताही में करतार ।।२८।।
कंक २ ही रह गये, दिल से दिया बिसार।
जन्म अमोलक जात है, समझ कंकता त्याग ।।२९।।
नितानन्द आवै चली, बड़ी अपरबल आग।
चहूं दिशा आवै चढ़ी, नदी मौत जुलहाल ।।३०।।
नितानन्द वै बच रहे, चिणें पहल से पाल।
कंक ही चेला कंक गुरु, नितानन्द जग मांहि ।।३१।।
वह लोभी वह लालची, दोनों रीते जांहि।
गुरु कंक हर भक्ति बिन, चेले तिनके कंक ।।३२।।
राम नाम से रुचि नहीं, पड़ गये खोटे अंक।

नितानन्द तज कुमति सभ, और कंकता त्याग ।।३३।।
सुबुद्धि शील संतोष से, गह गुरु ज्ञान सुभाग।
कुमति कंकता कुछ नहीं, धरों ध्यान चित लाय ।।३४।।
नितानन्द हर पाइये, मगन होय गुण गाय।
नितानन्द मन सुबुद्धि कर, राम नाम से लाय ।।३५।।
जब मन चाहै कंकता, दे सुबुद्धि समझाय।
सभै संग इक रंग रहै, दिल से दुई बिसार ।।३६।।
उलट महल की सैल में, कुबुधि कंकता डार।
कंक शंक नाहीं करै, तजै न माया मोह ।।३७।।
अंत समय पछतायगा, नितानन्द जग धोह

(इति कंकताई का अंग संपूर्णम्)

## 卐 सामरथाई का अंग ३७ 卐

।
नमो २ हर चरण को, नमो गुरु दातार ।।१।।
नमस्कार सभ संत जन, अब कै ल्योह उबार।
साहेब समरथ एक है, जो कुछ करै सौ होय ।।२।।
नितानन्द सभ कुछ करै, पै गत लखै न कोय।
समरथ चाहे सो कछू, बिना किया सभ होय ।।३।।
सकल भवन भानै घड़ै, जान सकै ना कोय।

नितानन्द पूरा धनी, सभै मडंता हाथ।।४।।
अधर धार जग धर रहा, ऐसा समरथ नाथ।
नितानन्द बाजी रची, एक शब्द के संग।।५।।
हुकुम सीस पर धर रहें, सुर नर कीट पतंग।
जल अधार धरती धरी, धरा अधर आकाश।।६।।
बिना थंब थामे रहै, सामर्थ सुतः प्राकश।
नितानन्द साहेब बिना, कुछ कर सकै न कोय।।७।।
आप करै घट में प्रगट, बन्दे की खसबोय।
धरा अकाश कागज बनै, कलम अठारह भार।।८।।
सप्त सिंधु मसि कर लिखै, सामर्थ अगम अपार।
नितानन्द पूरा धनी, समरथ परम दयाल।।९।।
पलक माहिं भानै घड़ै, संतन करत निहाल।
जिन साहेब पल में किये, धरन गगन आकास।।१०।।
सो हम को बिसरे नहीं, उस समरथ की आस।
चात्रक को जल देत है, सभ की पोखै आस।।११।।
नितानन्द समरथ वही, राखै चरण निवास।
नितानन्द सभ कुछ करै, करत न लावै बार।।१२।।
पल में राखै अमर कर, छिन में डारै मार।
नितानन्द सामर्थ को, निशि दिन करिये याद।।१३।।
अजब अनोखा लाल है, उस बिन सभ बरवाद।

एक पलक में कर धरै, धरन गगन धर धाम ॥१४॥
नितानन्द समर्थ है, वही निरंजन राम।
एक शब्द में सभ किया, धरती जल असमान ॥१५॥
नितानन्द उस अलख का, सदा हमारे ध्यान।
थल में जल पल में भरै, जल में थल कर देत ॥१६॥
नितानन्द सामर्थ है, साहेब सुघड़ सुचेत।
लोहे को कंचन करै, पारस पग परसाय ॥१७॥
अमर मार मृतक करै, मृतक लेत जिवाय।
नितानन्द रीते भरे, भरे उड़ावत धूर ॥१८॥
निर्धन को राजा करै, समरथ सुंदर नूर।
नितानन्द सामर्थ है, साहेब दीन दयाल ॥१९॥
जिन को त्यारै पलक में, लगै न काल अकाल।
जो चाहै सोई करै, जो कुछ करै सो होय ॥२०॥
नितानन्द जिस का किया, मेट सके ना कोय।
पापी पारांगत करै, करै कीट को देव।२१॥
नितानन्द समरथ का, कोई न जानै भेव।
धरती थांबी नीर पर, बिना थंब आकाश ॥२२॥
नितानन्द सृष्टि सभी, पल में दई प्रकाश।
नितानन्द कुर्बान है, तू समरथ करतार ॥२३॥
गुप्त रहै सभ जगत में, सभ को पूरणहार।

नितानन्द समरथ है, बलियों में बलवन्त ।।२४।।
तिन चरणों के आसरे, अमर हुए सभ संत।
नितानन्द समरथ धनी, पार उतारन हार ।।२५।।
भवसागर भयभीत में, वही एक आधार

(इति सामरथाई का अंग संपूर्णम्)

## 卐 कुशब्द का अंग ३८ 卐

।

गुरु गुमानी दास जी, सकल सिद्ध दातार ।।१।।
नितानन्द की बन्दगी, तुम को बारंबार।
परमेश्वर के पग लगूं, संतन सीस नवाय ।।२।।
नितानन्द को राख ल्यो, चरण कमल से लाय।
जैसे धरती सब सहै, कहूं करो कुछ कोय ।।३।।
नितानन्द औगुण तजै, उलट करै गुण सोय।
नितानन्द खोटा बचन, विरला झेलन हार ।।४।।
राम चरण सतगुरु कृपा, सहन शील उर धार।
साधू सहै कुशब्द को, तन मन किया अडोल ।।५।।
यथा समुद्र सूभर भरा, सभ जग जाय झकोल।
नितानन्द दुर्वचन की, सहैं संत जन चोट ।।६।।
औगुण मांह से गुण गहैं, अलख पुरुष की ओट।

अलख ध्यान जिन के हिये, सो नर विरला कोय ।।७।।
नितानन्द पूरा मिलै, सहै कुशब्दहिं सोय।
नितानन्द खोटा वचन, कदे न कहिये आप ।।८।।
जो कोई कहै सो भुगतसी, तीनों बिधी की ताप।
नितानन्द दुर्वचन को, शूरवीर सह लेत ।।९।।
बैठा सन्मुख नूर के, आठों पहर सुचेत।
सहै शब्द संसार का, ब्यापै नहीं विकार ।।१०।।
नितानन्द आनन्द से, रहो राम आधार।
राम शरण सब सुख करण, हरन क्लेश विकार ।।११।।
नितानन्द गह सहनता, उतर जगत चल पार।
नितानन्द चित चेत कर, चलो विचार विचार ।।१२।।
बुरी भली खोटी खरी, कोई कहो गंवार।
सहल चोट हथियार की, नर झेले तन मांहि ।।१३।।
नितानन्द वै धन्य हैं, शब्द चोट सह जांहि।
तीर सहै बर्छी सहै, सहै खड़ग की धार ।।१४।।
नितानन्द दुर्वचन की, विरला झेलै मार।
नितानन्द दुर्वचन को, कोई इक झेलै साध ।।१५।।
साधू झेलै सहज में, मूरख करैं फसाद।
नितानन्द खोटा वचन, मुख से कदे न बोल ।।१६।।
जो कोई बोलै आपको, तो मन राख अडोल।

नितानन्द खोटा कहै, सो नर खोटा खाय ।।१७।।
सब ही की सह लीजिये, नित को हरि गुण गाय ।
नितानन्द खोटा वचन, खोटे घट उपजन्त ।।१८।।
हर जन सहना सहल है, जिन कै ज्ञान अनन्त ।
नितानन्द सभ की सहो, रहो धनी से लाग ।।१९।।
जो कोई कहै सो बहैगा, दुई दिलों से त्याग ।
अनीधार की चोट को, जैसे झेलै शूर ।।२०।।
शब्द चोट हरजन सहैं, मिलैं नूर में नूर ।
नितानन्द को राख लो, चरण कमल की ओट ।।२१।।
मूरख मुख की ना लगै, अन्तरगत में चोट

(इति कुशब्द का अंग संपूर्णम्)

## 卐 सुशब्द का अंग ३९ 卐

।
नितानन्द तन में बजै, बिना बजाया नाद ।।१।।
गुप्त प्रगट सूभर भरा, छुटी भ्रम बकवाद ।
शब्द विवेकी पारखू, नितानन्द कोई साध ।।२।।
बह गये शब्द विवेक बिन, मूरख कर बकवाद ।
नितानन्द घट में बजै, अगम अनाहद नाद ।।३।।
भ्रम कर्म सभ छुट गये, लगी अलख की याद ।

शब्द सैन सतगुरु दई, खुले नैन के नैन।।४।।
घट भीतर पट ऊघरे, नितानन्द मन चैन।
शब्द बाण सतगुरु कह्या, पार उतारनहार।।५।।
नहीं लगै सो बूड़ सी, लगै सो उतरै पार।
नितानन्द निज शब्द को, कदे न दिल से भूल।।६।।
बिना कृपा गुरुदेव की, सभ जग डामाडोल।
शब्द बाण सभ सुख करन, जो कोई सन्मुख लेत।।७।।
सकल पिंड ब्रह्माण्ड की, पलक माहिं सुध लेत।
नितानन्द वे धन्य हैं, जिस घट शब्द समाय।।८।।
शब्द सैन घट पट खुलै, चढ़े महल में जाय।
तर्कस ते नहीं खोइये, बिना निशाने तीर।।९।।
नितानन्द लागै नहीं, जिनका अधम शरीर।
शब्द बाण जिस घट लगै, उठै नींद से जाग।।१०।।
नितानन्द साहेब मिलै, रहे चरण से लाग।
नितानन्द गुरु शब्द की, महिमा अगम अपार।।११।।
एक पलक में कर दिये, भौसागर से पार।
तन तर्कस भर राखिये, शब्द स्वरूपी बान।।१२।।
काल बली से झूझना, नितानन्द धर ध्यान।
शब्द अतीत पुनीत है, पावै जन परवीन।।१३।।
नितानन्द साहेब मिले, जिनका दिल लौलीन।

नितानन्द सतगुरु दई, शब्द बिहंगम बाट ।।१४।।
घट पट में साहेब मिलै, लंघ गये औघट घाट ।
शब्द ब्रह्म का रूप है, धरो सुरत तां माहिं ।।१५।।
नितानन्द आनन्द से, अमरपुरी को जाहिं ।
शब्द मिलावै राम को, लगै सुरत का तार ।।१६।।
शब्द सुरत परचा हुआ, खुल गये ब्रह्म द्वार ।
शब्द अनाहद खुल गये, लगी गगन झनकार ।।१७।।
नितानन्द विकसे कमल, बर्षै अमृत धार ।
शब्द अमर कर देत है, जहां शब्द की लाग ।।१८।।
नितानन्द भ्रम नींद से, उठै पलक में जाग ।
शब्द ब्रह्म परब्रह्म को, तुरत मिलावै जाय ।।१९।।
नितानन्द वह धन्य है, जिस घट शब्द समाय ।
नितानन्द लौ लीन रह, सुरत शब्द में मेल ।।२०।।
अन्तरगत मैदान में, खबरदार हो खेल ।
निशि वासर लाग्या रहै, शब्द सुरत का तार ।२१।।
नितानन्द पल में मिलै, साहेब का दीदार ।
शब्द अनाहद जो सुनै, तिन का मन थिर होय ।।२२।।
मुक्त हुए जीवत मुए, रहे चरण में सोय ।
शब्द मिलावै राम को, जो ठहरै घट माहिं ।।२३।।
नितानन्द पातक सभी, पलक माहिं कट जांहि ।

गुरु बतावे शब्द को, शब्द करै परकास ।।२४।।
नितानन्द हो रोशनी, जहां साहेब तहां दास।
नितानन्द सतगुरु करै, शब्द सुरत इक ठांव ।।२५।।
तो घट ही में पाइये, रमातीत का गांव।
शब्द समावै पिंड में, तहां मन सुरत समोय ।।२६।।
अमर कन्द जुग २ रहै, नितानन्द जन कोय।
नितानन्द दिल देख ले, शब्द दीप धर जोये ।।२७।।
अनंत भवन की साहेबी, अरस उजाला होये।
शब्द बंध आनन्द कर, मन अस्थिर उर राख ।।२८।।
नितानन्द चिन्ता मिटी, छिकै राम रस चाख।
शब्द सुनाय अभय किये, गुरु गुमानी दास ।।२९।।
चरण कमल में लग रहे, नितानन्द गई प्यास।
गुरु गुमानी राम जी, शब्द विभौ दातार ।।३०।।
नितानन्द को कर दिया, भवसागर से पार

(इति सुशब्द का अंग संपूर्णम्)

## 卐 काल का अंग ४० 卐

।
नमो निरंजन परम गुरु, काल हरण करतार ।।१।।
नमस्कार गुरु देव को, भक्त मुक्त गुलज़ार।

सकल संत को बन्दना, नितानन्द कर जोर।।२।।
काल करम सभ मेट कर, गहो आपनी ओर।
काल बली आवै चला, ज्यों कमान का तीर।।३।।
नितानन्द ले जायगा, सूना रहे शरीर।
नितानन्द इस देह में, खबरदार हो खेल।।४।।
पेट सकोड़े क्यों टलै, काल बली का सेल।
निशि वासर आवै चला, सिर पर दिन-दिन काल।।५।।
नितानन्द छूटै नहीं, बिना शरण गोपाल।
नितानन्द नहिं गरभिये, गर्व किये दुख होय।।६।।
काचे बासन जल भरा, सुख नींदड़ी न सोय।
काल नदी निशि दिन बहै, देह वृक्ष ता पास।।७।।
नितानन्द ये रुंखड़ा, जब तब-होत विनास।
नितानन्द नहीं गरभिये, काल पकड़ रहा नाड़।।८।।
कदेक तोड़ पछाड़ सी, नगरी करै उ्जाड़।
जीव मृगला जगत बन, काल अहेरी लार।।९।।
नितानन्द चेते नहीं, मूरख मुगद गंवार।
काल बड़ा बलवन्त है, मारै सकल जहान।।१०।।
देखत सभ ही भख लिये, राव रंक सुलतान।
काल कुहाड़ा देह बन, काटै दिन और रात।।११।।
तरवर ज्यों ढह जायगा, नितानन्द सभ गात।

नितानन्द सभ जिवहुं के, सिर पर गरजै काल ॥१२॥
सभ को पकड़ पछाड़ सी, कठिन काल का जाल।
काल सिंह संसार में, सभ जीवहुं को खाय ॥१३॥
जो हर चरणहुं राखियां, तिन के निकट न जाय।
काल हमारे सीस पर, करै रैन दिन घात ॥१४॥
चरण शरण में उ्बरै, नातर मारै लात।
कठिन चपेटा काल का, हने राव और रंक ॥१५॥
जहां भरोसा चरण का, सो जन सदा निशंक।
नितानन्द बैरी बड़ा, क्या सोवै सुख नींद ॥१६॥
काल सबहुं के सीस पर, ज्यों तोरण पर बींद।
काल सरीखा रिपु नहीं, नितानन्द जग माहिं ॥१७॥
साधन बिन छोड़ै नहीं, ब्रह्मलोक भी माहिं।
नितानन्द इस जगत में, काल न छोड़ै कोय ॥१८॥
विधपुर शिवपुर इन्द्रपुर, भावैं ब्रह्मा होय।
पकड़ वांध बस में करै, पशु पंक्षी नर नार ॥१९॥
राम भक्त से भय करै, सब को खावै मार।
सकल चबीना काल का, नितानन्द जग माहि ॥२०॥
भजन बिन भाजै नहीं, पकड़ चरण की छाहिं।
नितानन्द की लग गई, काल बली से रार ॥२१॥
रैन दिवस झूझत रहो, पकड़ प्रेम तलवार।

नितानन्द बैरी सबल, निर्बल सकल जहान ।।२२।।
सभै बिनासे देखतां, राव रंक सुलतान।
काल बली बैरी बुरा, गिनै स्वांस पर स्वांस ।।२३।।
राम चरण लग ऊबरै, नातर करै बिनास।
नितानन्द सभ सृष्टि पर, पड़ा काल का जाल ।।२४।।
हर विमुख सभ पड़ मुए, हर जन बचें संभाल।
काल नदी आवै चढ़ी, सकल जिवहुं के सीस ।।२५।।
नितानन्द घर ढह पड़ै, नातर भज जगदीस।
काल सरीखा रिपु नहीं, हर सा हितू न कोय ।।२६।।
नितानन्द हर ना भजै, जगत अंधला होय।
नितानन्द सोवै जगत, सिर पर जागै काल ।।२७।।
एक दिन रोके कंठ को, कठिन काल का जाल।
नितानन्द सूता जगत, सिर पर आवै काल ।।२८।।
पकड़ बांध ले जायगा, धरा रहे धन माल।
नितानन्द सोवे जगत, चढ़ै काल का नीर ।।२९।।
महल लखीणां ढ़ह पड़ै, हंस उड़ैगा बीर।
नितानन्द सोवैं सभी, सिर पर आवै काल ।।३०।।
राखण हारा याद कर, बरियां बखत संभाल।
नितानन्द जग अंधला, पड़ा काल के फन्ध ।।३१।।
राम भक्ति सतसंग बिन, बेमुख हो गये अंध।

नितानन्द यह अंध नर, करै काल से प्यार ॥३२॥
कनक कामिनी चित चढ़े, साहेब दिया विसार।
नितानन्द रिपु काल के, कामिनि कनक हिरौल ॥३३॥
सभ जी डालै बंध में, रोक मुक्त की पौल।
बह्या सभी जग जात है, काल नदी असराल ॥३४॥
जिनके सिर पर परमगुरु, सो नर लिये निकाल।
नितानन्द इस काल ते, कैसे उबरै प्रान ॥३५॥
साध संग गुरु ज्ञान से, धरो धनी का ध्यान।
कठिन काल असराल है, सभ जग घालै घान ॥३६॥
राम भक्ति गुरु ज्ञान बिन, कोई न बचै प्रान।
नितानन्द मुख काल के, पड़ै भक्ति बिन अंध ॥३७॥
राम विमुख जुग २ दुखी, यह कुबुद्धि का फन्द।
नितानन्द गुरु ज्ञान बिन, भख्या सकल संसार ॥३८॥
कोई २ साधू ऊबरे, विषिया खाये झार।
काल जाल जग में पड़ा, किस विधि उबरैं जीव ॥३९॥
नितानन्द भज उबरैं, जिनको प्यारा पीव।
नितानन्द सभ के गले, कठिन काल का जाल ॥४०॥
मूरख २ बह गये, काल नदी असराल।
नितानन्द इस जगत में, काल न छोड़ा कोय ॥४१॥
भवन २ मैं गलबला, रह्या रैन दिन होय।

नितानन्द इस काल से, किस विध उबरै जीव ।।४२।।
पकड़ चरण का आसरा, सुमर पियारा पीव।
नितानन्द संसार में, सभ कोइ खाया काल ।।४३।।
चरण शरण जो नर पड़ै, साहेब लिये निकाल।
नितानन्द सभी भखे, काल बड़ा बलवन्त ।।४४।।
सिध साधक जोगी जती, किया सभों का अंत।
कहा पुकारूं परमगुरु, काल पहुंचा आय ।।४५।।
चरण शरण में राखल्यो, अब कै करो सहाय।
काल सभों के सीस पर, करै रैन दिन घात ।।४६।।
बिना कृपा गोबिन्द की, कदे न उबरा जात।
नितानन्द सब जिवहुं पर, काल बड़ा बलवन्त ।।४७।।
विषयी २ भख लिये, बचे राम के संत।
नितानन्द सत संग बिन, कोई न छूटैं जीव ।।४८।।
बचे चरण के आसरे, जिन को प्यारा पीव।
नितानन्द बैठा रहा, काल नदी के तीर ।।४९।।
परम गुरु की मेहर से, हो गया अटल शरीर।
नितानन्द रिपु काल का, कछू भरोसा नांहि ।।५०।।
पकड़ पछाड़ै सकल को, कै घर कै बन मांहि।
कठिन काल की चोट है, राम बचावन हार ।।५१।।
परम गुरु परमात्मा, रहो हमारे लार।

नितानन्द इस जीव पर, कठिन काल की चोट ॥५२॥
सुर नर देवी देवता, कर दिये लोटम लोट।
शेष डरै बासिक डरै, डरै धरनि आकास ॥५३॥
नितानन्द रवि शशि डरै, बुरी काल की त्रास।
शेख मुसायख औलिया, पैगम्बर और पीर ॥५४॥
नितानन्द सभ बस किये, जिन २ धरा शरीर।
काल नदी में ढह गये, बड़े २ बलवन्त ॥५५॥
पर्वत पकड़ उखाड़ते, पड़े काल मुख अन्त।
नितानन्द कंपै सभी, राजा राणा रंक ॥५६॥
चार खूंट चौदह भवन, करैं काल की शंक।
कामी क्रोधी लालची, मारे सभी ढ़ढौर ॥५७॥
नितानन्द संसार में, मचा काल का शोर।
सभ के गल में पड़ रही, अजर काल की पास ॥५८॥
नितानन्द हर भक्ति बिन, दुनिया सहें त्रास।
नितानन्द चेतन रहो, करो रैन दिन ध्यान ॥५९॥
काल पहल ही चल करो, अमर नगर अस्थान।
काल बली सकड़ी गली, फंसे सकल नर नार ॥६०॥
कोई मुख में कोई गोद में, कोइक लिया अहार।
काल कुल्हाड़ा जगत बन, निशि दिन करै प्रहार ॥६१॥
नितानन्द समझै नहीं, मूरख मुगद गंवार।

नितानन्द अवसर चल्या, जथा नदी का नीर ॥६२॥
पड़ैं सभी मुख काल के, जिन जिन धरा शरीर।
परमगुरु परमात्मा, अब कै करो सहाय ॥६३॥
तुमही राखो बांह गह, काल पहुंचा आय।
काल हमारे सीस पर, करै रैन दिन घात ॥६४॥
बिना कृपा गोविन्द की, कदे न उबरा जात।
नितानन्द कटते रहे, काल नदी के तीर ॥६५॥
परम गुरु की मेहर से, हो गया अटल शरीर।
नितानन्द इस काल का, कछू भरोसा नांहि ॥६६॥
न जानूं कद मारसी, कै घर के बन मांहि।
कठिन काल की चोट है, राम बचावन हार ॥६७॥
नितानन्द वै परम गुरु, सदा हमारे लार।
नितानन्द सब नरहूं को, भखै रात दिन काल ॥६८॥
मूरख मरम न लख सकैं, हर जन बचैं संभाल।
काल बली बलवन्त है, डरे मुनीश्वर राय ॥६९॥
सिध साधक जोगी जती, लिये काल सब खाय।
कम्पैं देवी देवता, पैगम्बर और पीर ॥७०॥
नितानन्द सब बस करे, जिन २ धरा शरीर।
काल बली आवे गुप्त, सब जग फिरे अचेत ॥७१॥
नितानन्द भख जायगा, सब जड़ मूल समेत।

भक्ति तेग गह हाथ में, करो काल से रार ।।७२।।
साहेब को धर सीस पर, पांच मवासी मार।
निशि दिन लूटैं सभी को, धाड़ी पांच पचीस ।।७३।।
कुमति रूप दल काल का, भजन न दे जगदीस।
मूरख भजैं न राम को, कुमति मांह भरपूर ।।७४।।
नितानन्द यों देख कर, काल बजावै तूर।
जीव पड़े जंजाल में, नहीं काल की शंक ।।७५।।
पकड़ पछाड़ै पलक में, क्या राजा क्या रंक।
नितानन्द सभ जगत में, पड़ा काल का डंड ।।७६।।
बिना शरण महराज की, भख्या सकल ब्रह्माण्ड।
करडी फांसी काल की, पड़ी सर्व जग मांह ।।७७।।
एक दिन भारी बनैगी, समझ देख मन मांह।
सभी नरहुं के सीस पर, काल दमामा देत ।।७८।।
छिन २ निगले जात हैं, दुनियां फिरै अचेत।
सभ जग सोवै नींद भर, काल न सूझै राम ।।७९।।
नितानन्द ले जायगा, धरा रहै धन धाम।
गफलत खुदी गुमान में, साहेब किया न याद ।।८०।।
काल बली से बनैगी, तब जानेगा स्वाद।
काल अहेड़ी सीस पर, चेतै क्यों नहीं अंध ।।८१।।
फिर जुग २ पछतायेगा, कदे न छूटे फन्ध।

नितानन्द आवै चला, दिन २ बैरी काल ॥८२॥
पकड़ कन्ठ जड़ मूल से, करै नगर पैमाल।
नितानन्द बैरी सबल, निश दिन करै प्रहार ॥८३॥
सदा सर्वदा याद कर, काल हरण करतार।
काल सभन को भखत है, घड़ी २ दिन रैन ॥८४॥
नितानन्द बेमुखहुं के, फूट गये दो नैन।
काल हरण करतार को, करो रैन दिन याद ॥८५॥
चरण शरण में पड़ रहो, गहो बिन्द और नाद।
काल सर्व के सीस पर, चढ़ा दमामा देत ॥८६॥
बिना शरण महराज की, करै रेत में रेत।
काल जगत के कंध पर, सदा रहै असवार ॥८७॥
राम बिमुख सभ बस करे, दिये नरक में डार।
नितानन्द इन जिवहुं को, भखै काल निशि जाम ॥८८॥
तिन पर अदल चलै नहीं, जिन के हृदय राम।
काल स्वरूपी विमुखता, राम स्वरूपी दास ॥८९॥
हर बेमुख परलै हुए, संत महल के पास।
काल बली से तौ बचै, काल हरण भज लेह ॥९०॥
रात दिवस सुमरत रहो, अलख ध्यान में नेह।
नितानन्द कर्ता पुरुष, काल निवारन हार ॥९१॥
बिना बन्दगी अफल है, सहै जुगै जुग मार।

जब लग हृदय गन्दगी, यही काल का जाल ॥९२॥
जिन के उर साहेब बसे, अमर हुए तत्काल।
जिन की मैली आरसी, तहां काल का वास ॥९३॥
नितानन्द हर मन बसै, काल न आवै पास।
साहेब से बेमुख रहे, तहां काल डर होय ॥९४॥
नितानन्द हर मन बसै, काल न लागे कोय।
काल भखै सभ जिवों को, निशि दिन करै बिनास ॥९५॥
बिना कृपा महराज की, सहै जुगों जुग त्रास।
नितानन्द छूटै नहीं, बिना अलख के ध्यान ॥९६॥
काल नदी में जात है, गुरु बिन बह्या जहान।
काल जाल सभ जग पड़ा, संत बतावैं खोल ॥९७॥
भवन २ में पड़ रही, काल बली की रोल।
हर बेमुख परलै गये, पड़े काल के जाल ॥९८॥
चौरासी में भटकते, सदा फिरे बेहाल।
गर्भ अग्नि जुग २ सहे, पड़े काल के फन्द ॥९९॥
नितानन्द गुरु ज्ञान बिन, सब के लोचन अंध।
जिस के सिर पर काल है, क्यों सोवै सुख नींद ॥१००॥
नितानन्द बैरी खड़ा, ज्यों तोरन पर बींद।
नितानन्द संसार में, कठिन काल की त्रास ॥१०१॥
खंड २ ब्रह्मण्ड में, सभ को करै बिनास।

काल मरोड़े देवता, तपी मुनी बहु भेष ॥१०२॥
नितानन्द वै बच रहैं, जिन के हृदय अलेख।
नितानन्द आनन्द से, धरो धनी का ध्यान ॥१०३॥
काल बलीसे झूंझना, अंतरगत मैदान।
नितानन्द डर दूर कर, अंतर सुमर मुरार ॥१०४॥
जिस का कीया काल है, सोई राखन हार।
नितानन्द हर याद कर, पकड़ एक विश्वास ॥१०५॥
काल उन्हों का क्या करे, साहेब जिन के पास।
सभै काल के बस पड़े, जिन के हिये न राम ॥१०६॥
काल बली उन से डरै, चढ़े अमरपुर धाम।
काल अहेड़ी कर रहा, भवन चतुर्दश बीच ॥१०७॥
कनक कामिनी फंद में, लिये प्रान सभ खींच।
काल अहेरी रोपियां, माया रूपी फंद ॥१०८॥
नितानन्द गुरु ज्ञान बिन, फंसा सकल जग अंध।
नितानन्द हर भक्ति बिन, भख्या सकल संसार ॥१०९॥
भवन २ में गलबला, काल मचावनहार।
भवन २ में गलबला, काल करै संहार ॥११०॥
नितानन्द कोई बच रहे, राम चरण उर धार।
नितानन्द सभ सृष्टि पर, काल चलावे जोर ॥१११॥
बिना बन्दगी सकल जीव, हुए मनुष से ढ़ोर।

नितानन्द संसार को, काल मरोड़े आय ॥११२॥
तिहूं लोक सुर नर असुर, काल सभन को खाय।
काल कुसंगत जान ले, अमरपुरी सत संग ॥११३॥
नितानन्द हर जन बचे, राम नाम से रंग।
ग्यान तुरी चेतन चढ़े, लई भक्ति तलवार ॥११४॥
नितानन्द आठों पहर, करौ काल से रार।
नितानन्द चेतन चढ़े, चरन कमल सिर धार ॥११५॥
काल जीत जग जीत कर, पहुंचे महल मुरार

(इति काल का अंग संपूर्णम्)

## 卐 सजीवन का अंग ४१ 卐

।
राम सजीवन अमर गुरु, चिरंजीव सभ साध।।१।।
बार बार मम बन्दना, हरो सर्व भव व्याध।
नितानन्द की बन्दना, गुरु गुमानीदास।।२।।
चरण शरण में राखिये, यही हमारे आस।
नितानन्द इक देश में, बसैं लोग बेदाग।।३।।
सदा सजीवन हो रहे, अमर पुरुष से लाग।
अमरदेश नगरी अमर, अमर रहैं सभ कोय।।४।।
नितानन्द जीवे सदा, नहीं काल डर होय।

नितानन्द जीवैं सदा, निर्वासीक निरास।।५।।
संग लाग्या साहेब फिरे, ज्यों गऊ बच्छ के पास।
नितानन्द के परम गुरु, और न दूजा कोय।।६।।
जिनके चरण प्रताप से, सदा सजीवन होय।
नितानन्द जिस देश में, मरै नहीं जिव कोय।।७।।
अमर करैं श्री परम गुरु, सदा सजीवन होय।
नितानन्द जीवैं सदा, चरण कमल से लाग।।८।।
सदा सजीवन हो गये, विषय वासना त्याग।
सदा सजीवन तो रहैं, राम अमीरस पीव।।९।।
चरन कमल के आसरे, सदा सजीवन जीव।
नितानन्द सतगुरु करै, सदा सजीवन जीव।।१०।।
अमर रहै जुग २ सदा, मिलै सवेरा पीव।
नितानन्द जिस देस में, सदा सजीवन प्रान।।११।।
रैन दिवस लाग्या रहै, अमर पुरुष से ध्यान।
नितानन्द गुरुदेव ने, किये सजीवन जोय।।१२।।
चरन कमल के आसरे, बाल न बांका होय।
नितानन्द मन के मरे, सदा सजीवन होय।।१३।।
अमरकंद जुग २ रहै, काल न लागै कोय।
अंहकार ममता मुई, लगी लगन मन माहिं।।१४।।
नितानन्द जुग २ जीवै, काल जाल डर नाहिं।

नितानन्द सुख सिंधु है, एक निरंजन राय ।।१५।।
सदा सजीवन हो गये, तहां संत जन न्हाय।
अमरकंद अवगत समझ, उलट लिये उर पंच ।।१६।।
नितानन्द जीवे सदा, रहा काल से बंच।
अविनासी के आसरे, सतगुरु ही की ओट ।।१७।।
नितानन्द जुग २ अमर, लगै न जम की चोट।
नितानन्द जीवै सदा, अविनासी उर धार ।।१८।।
काल अकाल जंजाल से, राखै आप मुरार।
नितानन्द आनन्द से, धरो निरंजन ध्यान ।।१९।।
चरण शरण सुख पाइये, अमरपुरी अस्थान।
पारब्रह्म पूरा धनी, रैन दिवस कर याद ।।२०।।
नितानन्द जीवन मुक्त, चले खेप को लाद।
पारब्रह्म पत पाइयां, तौ पाई सभ बात ।।२१।।
नितानन्द जीवैं सदा, जम सिर मारी लात।
पीव पुकारै प्रीत से, जिनका जीव अखंड ।।२२।।
नितानन्द साहेब मिला, किया काल पर दंड।
प्रीतम के पग से लगे, रहे सजीवन होय ।।२३।।
अमर अधर घर चढ़ गये, काल न लागै कोय।
नितानन्द इस जीव को , करै सजीवन नाम ।।२४।।
सुबुधि शील सन्तोष से, मिलै अमरपुर गाम।

जत्त सत्त सुमिरन सदा, हृदय ज्ञान विचार ।।२५।।
नितानन्द जीवै सदा, अलख पुरुष आधार।
नितानन्द आनन्द की, रली मनावैं सन्त ।।२६।।
पूरण मिल पूरे हुए, कदे न आवै अन्त।
नितानन्द जल कुंभ का, मिला समुन्दर माहिं ।।२७।।
जल समुन्दर हो रहा, सो फिर निकसै नाहिं।
नितानन्द महबूब ने, आशिक लिये जिवाय ।।२८।।
आप सरीखे कर लिय, तिन को काल न खाय।
नाम सजीवन जड़ी है, अमर किये जन कोट ।।२९।।
नितानन्द जुग २ रहे, अविनासी की ओट।
नित आनन्द जीवै सदा, जिनके हृदय नाम ।।३०।।
नितानन्द मुक्ता किया, गुरु गुमानीराम

(इति सजीवन का अंग संपूर्णम्)

##卐 साखी भूत का अंग ४२ 卐

।
गुरु गुमानी राम के, भव जल त्यारन पाव।।१।।
नितानन्द की बन्दना, नमो निरंजन राव।
नितानन्द की लीजियो, नमस्कार सभ संत।।२।।
जन्म मरण से मुक्त कर, राखो चरण अनंत।

दुनियां से और देह से, अलग रहैं अवधूत।।३।।
नितानन्द यों जगत में, सूरज साखी भूत।
नितानन्द हर एक है, सकल विश्व के नाथ।।४।।
साखी भूत अनूप मत, कोन जुक्ति तुम हाथ।
नितानन्द सभ में रहूं, अजब खेल मोहिं हाथ।।५।।
लिपूं न विषय विकार से, बंसू संत के साथ।
नितानन्द न्यारा रहूं, सभ दुनियां से पार।।६।।
जथा दीप मन्दिर अलग, लखैं सभी उजियार।
नितानन्द इस जगत में, हो रहे साखी भूत।।७।।
जीवन मुक्ती पाइये, चरण कमल की सूत।
नितानन्द उस पीव का, कर सुमिरन दिन रैन।।८।।
चरण लाग सब से अलग, सदा रहें सुख चैन।
नितानन्द संसार में, हर जन साखी भूत।।९।।
और सकल दुख द्वन्द में, हरि बिन फिरैं कपूत।
नितानन्द न्यारे रहें, सब दुनियां के पार।।१०।।
सदा लीन हर ध्यान में, निशि दिन जपैं मुरार।
नितानन्द संसार से, अलग राम के साध।।११।।
सब ही से न्यारे रहैं, सुमरैं सदा अगाध।
नितानन्द इस जगत में, अलग प्रभू के दास।।१२।।
जथा कमल जल में रहैं, भीतर रवि की प्यास।

राम रत्ता पारंगता, लिपैं नहीं जग माहिं ॥१३॥
जीते विषय विकार को, अमरपुरी को जाहिं।
साखी भूत पुनीत जन, अविनासी से प्रीत ॥१४॥
नितानन्द सो सफल है, रहैं जगत को जीत।
हर जन साखी भूत हैं, सकल विश्व के माहिं ॥१५॥
अष्ट जाम साहेब भजे, साहेब ही हो जाहिं।
साहेब साखी भूत है, कै साहेब के संत ॥१६॥
और सकल जग फन्द में, बहे जीव बेअंत।
नितानन्द महबूब के, कदम धरो दिल माहिं ॥१७॥
साखी भूत सुजान है, उन बिन दूजा नाहिं।
सूरज साखी भूत हैं, जग में करैं प्रकाश ॥१८॥
तसकर आपै डर चलै, दुनियां करै बिलास।
जैसे जल में कमल है, तिमिर माहिं ज्यों दीप ॥१९॥
यों हरजन जग से अलग, जिनके अलख समीप।
नितानन्द वे अजब हैं, साखी भूत सुजान ॥२०॥
लगे रहें महबूब से, आठ पहर गलतान।
नितानन्द न्यारे हुए, धन्य जिन्हों के भाग ॥२१॥
जग में साखी भूत हैं, रहैं निरंजन लाग।
नितानन्द जीवन मुक्त, सभ से साखी भूत ॥२२॥
चरण कमल के आसरे, सुलझा नौमण सूत।

नितानन्द मुक्ता भये, गये बंध से छूट ।।२३।।
बहुरि न लागै कालमा, गई किवाड़ी खूट।
नितानन्द मुक्ता भये, रामचरण की ओट ।।२४।।
जग से साखी भूत हैं, बचैं काल की चोट।
पचों के रस में फंसे, उरझ मुए अज्ञान ।।२५।।
नितानन्द जीवन मुक्त, साखी भूत सुजान।
नितानन्द निर्मल किये, पूरे गुरु परवीन ।।२६।।
जग से साखी भूत हैं, राम चरण लौलीन।
नितानन्द सुखसिंधु से, करो प्रीत मन लाय ।।२७।।
एक पलक की मेहर से, सकल बंध छुट जाय।
नितानन्द न्यारे हुए, लगै न काल अकाल ।।२८।।
अजर अमर बर पाइयां, साखी भूत संभाल।
साखी भूत अनूप मत, जिनका दिल दुर्बीन ।।२९।।
छिके रहैं दीदार में, आठ पहर लौलीन।
जाग उठे जगदीश जप, जग में साखी भूत ।।३०।।
नितानन्द निर्भय भये, हर जन के हर पूत।
वाही मार्ग भूत हैं, वाही मार्ग पूत ।।३१।।
उरझ मुए सो भूत हैं, पूत सो साखी भूत।
साखी भूत सुजान जन, लिपै न काहू संग ।।३२।।
नितानन्द आन्नद से, रंगे रंगीले रंग।

नितानन्द हर याद कर, सभ से न्यारा खेल ॥३३॥
दुनियां द्वन्द सराय में, पल भर चित्त न मेल।
नितानन्द निर्भय हुए, साखी भूत सुचेत ॥३४॥
दुनियां से नहीं दोस्ती, परमेश्वर से हेत।
नितानन्द जग फन्द से, साखी भूत सुजान ॥३५॥
जीवन मुक्ता हो गये, अलख पुरुष के ध्यान।
साखी भूत दयाल घट, अविनासी उणहार ॥३६॥
नितानन्द आनन्द से, उतर गये भव पार।
साखी भूत अद्वैत मत, सभ ही से निरबंध ॥३७॥
नितानन्द आनन्द से, छूट गये सभ फन्द।
नितानन्द सुख सिंधु से, उर में करो मिलाप ॥३८॥
साखी भूत अद्वैत मत, दई परम गुरु आप।
साखी भूत सपूत हैं, सदा रहैं निरद्वन्द ॥३९॥
नितानन्द जो फंस गये, सो मूरख मति मन्द।
परम गुरु परमात्मा, गुरु गुमानी राम ॥४०॥
नितानन्द को दीजियो, चरण कमल विश्राम

(इति साखी भूत का अंग संपूर्णम्)

# 卐 चितकपटी का अंग ४३ 卐

नमो नाथ व्यापक सकल, नमो गुमानी राम।
सभ संतन के चरण को, नमो करूँ निशि जाम।।१।।
धन गोपाल धन धन्य गुरु, धन्य २ सभ संत।
नितानन्द की बन्दना, गहो अपार अनन्त।।२।।
नितानन्द इन जिवहुं के, भीतर कपट अपार।
ताते रीते रहत हैं, चढ़ैं न चित्त मुरार।।३।।
नितानन्द चित्त में कपट, मुख ऊपरली प्रीत।
तिन को कदे न धीजिये, समझ गरज के मीत।।४।।
नितानन्द इस जगत में, कपट भरे बहु जीव।
भाखैं कुछ करते कछू, कहां उन्हों को पीव।।५।।
नितानन्द हर याद कर, तजो कपट की चाल।
कपटी दोजख जायेंगे, हर जन होत निहाल।।६।।
कपट बासना दूर कर, धरो धनी का ध्यान।
नितानन्द इस जगत में, कपटी मुए निदान।।७।।
कपटी दोजख जायेंगे, साध सदा आनन्द।
नितानन्द हर जन मुक्त हैं, कपटी के गल फन्द।।८।।
नितानन्द हर याद कर, तजो कपट की बान।
बिना कृपा कहां पाइये, अलख पुरुष भगवान।।९।।

नितानन्द निर्मल रहो, बुरी बदी की गैल।
बिरला जन कोई करेंगे, सत्य महल की सैल ।।१०।।
कपट किये हर ना मिलै, जब लग शुद्ध न होय।
नितानन्द हर याद कर, कपट बीज मत बोय ।।११।।
कपट कामना दूर कर, सहल पीव घर नाहिं।
हर सा हीरा याद कर, नितानन्द दिल माहिं ।।१२।।
जब लग दिल में कपट है, तब लग दर्शन नाहिं।
बिना कृपा भगवान की, घने नरक को जाहिं ।।१३।।
कपट न हृदय राखिये, हर हीरा कर याद।
परम गुरु की मेहर बिन, घर २ द्वन्द फसाद ।।१४।।
जिन के चित में कपट है, करैं न साहेब याद।
नितानन्द उन जिवहुं की, सभै उमर बरबाद ।।१५।।
नितानन्द डर अलख से, कपट कामना खोय।
निर्विकार को डर नहीं, जब तब दर्शन होय ।।१६।।
कूड़ कपट सभ दूर कर, तन मन निर्मल होय।
नितानन्द जुग २ रहै, जगत मांह खसबोय ।।१७।।
कपट कामना दूर कर, रहो राम से लाग।
खोटे खोटा खांयगे, अमर हुए बड़ भाग ।।१८।।
नितानन्द श्री परम गुरु, कपट बिडारन हार।
राख लेंयगे चरण में, झख मारो संसार ।।१९।।

राख लिये जिन चरण में, कपट कामना धोय।
लाख लोग पचबो करो, बाल न बांका होय ।।२०।।
नितानन्द नेह कपट रह, कोई किधर को जाह।
भला भले से मिल रहै, खोटा खोटी राह ।।२१।।
खोटे खोटी खांयगे, रहै कपट मन माहिं।
नितानन्द जो निर्मले, निर्मल पुर को जाहिं ।।२२।।
नितानन्द चित में कपट, ऊपर किया सिंगार।
ऐसे साहेब ना मिले, अंत पड़ै मुख छार ।।२३।।
कपट बुराई दुख करै, नेकी सुख दातार।
नितानन्द चित शुद्ध कर, बहुत उतर गये पार ।।२४।।
जिन के चित में कपट है, सहै जमहुं की मार।
नितानन्द चित शुद्ध कर, निर्भय उतरो पार ।।२५।।
नितानन्द भीतर कपट, बाहर पहरा भेख।
वै नर नरकें जांयगे, कदे न मिलै अलेख ।।२६।।
चित कपटी के चित्त में, चढ़ै रैन दिल मैल।
चिदानन्द सों क्यौं मिलैं, माह भरे बद फैल ।।२७।।
चित्त कपटी के चित्त में, कदे न आवै राम।
नितानन्द उस अधम का, चौरासी मुक्काम ।।२८।।
बाहर बाना धर लिया, रह्या कपट चित मांहि।
नितानन्द हर भक्ति बिन, साहेब पावे नांहि ।।२९।।

हर हरजन से कपटता, चोरहुं सेती प्यार।
नितानन्द जब जान सी, पड़ै गजब की मार।।३०।।

(इति चितकपटी का अंग संपूर्णम्)

## 卐 गुरु शिष्य हेरा का अंग ४४ 卐

अपनी २ आग में, जलै सकल संसार।
नितानन्द कोई ना मिला, जा सों कीजे प्यार।।१।।
ऐसा जन कोई ना मिला, ले पहुंचावे पार।
नितानन्द करते रहें, साहेब का दीदार।।२।।
ऐसा हरजन कब मिलै, हरपुर दे पहुंचाय।
नितानन्द भवसिंधु में, सब कोई गोता खाय।।३।।
नितानन्द वै कद मिलैं, पार लंघावन हार।
काढ़ैं नाव कुदाव से, दूर करैं भ्रम भार।।४।।
ऐसा कोई न मिलै, हमको दे दीदार।
नितानन्द भवसिंधु से, पकड़ उतारै पार।।५।।
नितानन्द जग जल मुआ, आपा पर की आग।
ऐसा कोई ना मिलै, मेटै दिल का दाग।।६।।
ऐसा कोई ना मिलै, चलै हद को त्याग।
नितानन्द बेहद से, रहै सर्वदा लाग।।७।।

नितानन्द भवसिंध में, पूरा सतगुरु देख।
पूरे बिन कैसे मिलै, निर्मल पुरुष अलेख।।८।।
नितानन्द पूरा मिलै, जब पावै दीदार।
भव सागर भयभीत से, पकड़ उतारै पार।।९।।
नितानन्द इस जगत में, पूरा विरला कोय।
कामी क्रोधी लालची, तिनका आदर होय।।१०।।
पूरा सतगुरु जो मिलै, तो जीव तारै पार।
नितानन्द पुरे बिना, दुर्लभ हर दीदार।।११।।
नितानन्द पूरा मिलै, रहो चरण से लाग।
बिन परचा के गुरु को, निर्भय दीजै त्याग।।१२।।
नितानन्द पूरा गुरु, लीजै तुरत पिछान।
बांह पकड़ कर ले तिरै, भवसागर मैदान।।१३।।
नितानन्द दिल आपना, पूरा सेती लाय।
पूरा सिर पर राखिये, ओछा देह बहाय।।१४।।
नितानन्द कब लग मिलै, वे साहेब के नूर।
जिनका दर्शन देख कर, होय धूर से नूर।।१५।।
नितानन्द कीजै सदा, सत पुरुषों का संग।
पल में पारांगत करैं, जिनका रंग सुरंग।।१६।।
सतपुरुष दाता भक्ति के, साहेब कैसी चाल।
नितानन्द वै कद मिलैं, पल में करैं निहाल।।१७।।

भक्ति मुक्ति पद में रहैं, रिद्धि सिद्धि दरबार।
नितानन्द साहेब मिलैं, जिनका दर्श निहार॥१८॥
दर्श देख पातक कटें, आत्म अमर उजास।
बेहद वासी गैब के, पूरण सुतः प्रकास॥१९॥
काढ़ै दुख दरियाव से, हरपुर दे पहुंचाय।
नितानन्द ऐसे पुरुष, हमको मिलियो आय॥२०॥
कोट जुगहु के पंथ को, पल में देत लंघाय।
नितानन्द की कीजियो, ऐसे आय सहाय॥२१॥
नितानन्द ढूंढत फिरैं, हर मतवाले संत।
कृपा करैं तब पाइये, राम अमल महमंत॥२२॥
नजर निहाल दयाल जन, अमर करैं पल माहिं।
नितानन्द ऐसे पुरुष, पूरब भाग मिलाहिं॥२३॥
नितानन्द पूरा मिलैं, पूर्व जन्म के लेख।
बिना वसीले चाकरी, ऐसे बहुते भेख॥२४॥
पूरा पूरन ब्रह्म है, पावै पूरन भाग।
नितानन्द जग पच मुआ, ओछों सेती लाग॥२५॥
नितानन्द चित चेत कर, पूरा सतगुरु हेर।
पार उतारै पकड़ कर, भव सागर से फेर॥२६॥
नितानन्द कब पाइये, मौला के महबूब।
उन सेती दिल लग रहैं, जहां रोशनी खूब॥२७॥

मिलैं मस्त उस महल के, जहां सलोना यार।
नितानन्द उन कदम से, लग २ उतरै पार ॥२८॥
नितानन्द ढूंढत फिरे, दर्श दिवाने लोग।
उनका पाक जमाल है, करैं नूर का भोग ॥२९॥
नितानन्द वे धन्य हैं, जो आसिक दीदार।
आप मिले महबूब से, करैं और को पार ॥३०॥
नितानन्द कुछ अजब हैं, जिनका पाक यकीन।
ऐसे सतगुरु कीजिये, साहेब की दुरबीन ॥३१॥
नितानन्द वे अजब हैं, दरद वन्द दरवेस।
ले पहुंचावें वे महल में, राखैं अमर हमेस ॥३२॥
जो आसिक अल्लाह के, ऐसे मिलियो आय।
नितानन्द महबूब के, महल सबेरा जाय ॥३३॥
नितानन्द को पाइयो, वही अमोला लाल।
जिसका दर्शन देख कर, नजरा नजर निहाल ॥३४॥
नितानन्द को पाइयो, बेहदपुर के लोग।
राम अमीरस पाय कर, काटें दिल के रोग ॥३५॥
राम रतन जिन घटों में, उन पर जग मग जोत।
नितानन्द वै अटल हैं, मिल्या सोत में सोत ॥३६॥
राम रतन जिन घटों में, उन पर बर्षे नूर।
नितानन्द छानी नहीं, जथा जुद्ध में शूर ॥३७॥

राम रतन जिन घटों में, किया बहिस्त मुकाम।
नितानन्द ऐसे मिलैं, जब पावै वह गाम ।।३८।।
राम रतन जिन के हिये, देखैं और दिखाय।
नितानन्द बल बल सदा, साहेब सत गुरु राय ।।३९।।
नितानन्द सभ बन्ध हैं, पड़े जगत के जाल।
पूरा सतगुरु पाइये, तब रीझे वह लाल ।।४०।।
राम पदारथ पाइयां, मेहर परम गुरु देव।
नितानन्द करते रहो, सदा चरण की सेव ।।४१।।
नितानन्द खेलैं सदा, सूरा गुरु शिकार।
सन्मुख झेलैं संत जन, अमर करें सर मार ।।४२।।
नितानन्द गुरु पारधी, भीतर मारा बान।
अहड़ किया मन मिरगला, अगम शब्द कै तान ।।४३।।
मैं मारा मन मर गया, मुए पांच पच्चीस।
नितानन्द गुरु शब्द का, लाया गुरु कसीस ।।४४।।
मैं मृग भ्रम बियाबान का, सतगुरु किया शिकार।
नितानन्द जीवत मरे, अमर करैं करतार ।।४५।।
नितानन्द घायल किये, संतगुरु शब्द लगाय।
पड़े द्वार महबूब के, अलख उठावै आय ।।४६।।
गुरु मारे चेले मरे, शब्द ज्ञान का तीर।
नितानन्द घायल करे, हो गया अटल शरीर ।।४७।।

नितानन्द मारे गुरु, अमर करे ततकाल।
कसनी दे कंचन किये, जिन पर राम दयाल ॥४८॥
सतगुरु मारे मेहर से, अमर किये बहु जीव।
बाहर दीखैं बावरे, भीतर प्यारा पीव ॥४९॥
शबद बाण गुरुदेव का, जो कोई सन्मुख खाय।
मरे तो पहुंचे अमरपूर, रहै तो अंग समाय ॥५०॥
शबद बाण सतगुरु गह्या, करड़ी करी कमान।
भीतर मारी भेद से, अब क्या करूं बखान ॥५१॥
नितानन्द गुरु शूरमा, जिन का शिष्य शिकार।
मार मिलावै अंग में, ले पहुंचे दरबार ॥५२॥
नितानन्द मारे गुरु, जिन को लगै न काल।
लोहा कंचन हो गया, पारस परस दयाल ॥५३॥
अंतरगत मैदान में, सतगुरु करै शिकार।
जिन के लगी सो लग गया, अलग भये सब हार ॥५४॥
सतगुरु मारै जुगत से, शब्द सैन समझाय।
नितानन्द जिन के लगी, उन के राम सहाय ॥५५॥
नितानन्द घायल गिरे, सतगुरु मारा बाण।
हम जानी हम मर गये, वैद मिलाया आण ॥५६॥
गुरु शिकारी मैं मृग, पड़ा प्रेम के जाल।
आवागमन से छुट गया, मार अमर कर डाल ॥५७॥

गुरु शिकारी अजब है, खेलै गुप्त शिकार।
मार अमर कर लेत है, शब्द शूरमा सार।।५८।।
नितानन्द आठों पहर, गुप्त मार गुरु देत।
पल भर मुख मोड़ै नहीं, चेला सन्मुख लेत।।५९।।
नितानन्द सर प्रेम का, गुरु खूब लगाया।
घायल कर मायल किया, तन मन बौराया।।६०।।
सीस दिया सौदा किया, साहेब दिल भाया।
पकड़ बांह महबूब ने, हँस चरण लगाया।।६१।।
सतगुरु मारे इश्क से, आशिक मस्ताने।
मरैं तो मुख मोड़ैं नहीं, दीदार दिवाने।।६२।।
दई जान जानन को, हो रहे निशाने।
नितानन्द भीतर बिंधे, कोई विरला जाने।।६३।।
मुरसिद मारे मेहर से, मंजिल पहुंचाए।
जीवन मरन का डर नहीं, सभ फिकर मिटाए।।६४।।
किए विदेही देह में, मौला मन भाया।
नितानन्द गुरु मार कर, पद अमर मिलाया।।६५।।
गुरु के मारे मर गये, चेले सर खाया।
सन्मुख झेल्या अंग में, साहेब मन भाया।।६६।।
सीस दिया महबूब को, उलटा न उठाया।
नितानन्द भय तज दिया, निर्भय पद पाया।।६७।।

दीवाने दीदार के, तन मन धन दीया।
सही कसोटी गूरुहुं की, दिल निर्मल कीया ।।६८।।
मारौ भावैं त्यार लो, ब्रत दृढ़ कर लीया।
नितानन्द सन्मुख मरै, सो जुग २ जीया ।।६९।।
नितानन्द मारे गुरु, शिष्य अंग न मोड़ै।
धड़ से सीस उतार ले, तो प्रीत न तोड़ै ।।७०।।
भृंग दिखावै भय घना, भीतर से लोड़ैं।
नितानन्द कसनी कसै, गुरु टूटा जोड़ैं ।।७१।।
नितानन्द के अंग में, सतगुरु सर लाया।
भीतर भेदे बंध कर, डर बहुत दिखाया ।।७२।।
प्रेम जाल में बाँध कर, सभ दुःख छुटाया।
अडर किया जुग २ जिया, घर में हर पाया ।।७३।।
पूरे मारें मेहर कर, तो कसनी सहिये।
दुख सुख चित नहीं आनिये, अज्ञा में रहिये ।।७४।।
सीस उतारै साइयां, तो कछू न कहिये।
मिलो महबूब गुमानियां, दर्शन सुख लहिये ।।७५।।
भल का मारे मेहर सो, गुरुदेव हमारा।
भीतर सेती मर गया, बाहर से सारा ।।७६।।
शंका तजी शरीर की, दिया सीस उतारा।
राख लिये दीदार में, दायम दरबारा ।।७७।।

जो मारे महबूब ने, दीदार दिखाया।
घायल कर मायल किये, प्रीतम मन भाया।।७८।।
मतवाले नहीं मुड़ चलैं, जिन सीस चढ़ाया।
नितानन्द गुरु रीझ कर, सभ दर्द मिटाया।।७९।।
सहै चोट शिष्य अंग में, गुरु साहेब जानै।
जो पीव मारै जीव को, तो मेहर पिछानै।।८०।।
आसिक उजर करै नहीं, कहिये सो ठानै।
नितानन्द महबूब के, तब ही मन मानै।।८१।।

(इति गुरु शिष्य हेरा का अंग संपूर्णम्)

## 卐 हेत प्रीत का अंग ४५ 卐

नमो परम गुरु परम सुख, गुरु गुमानी दास।
सकल संत को बन्दना, करो प्रीत प्रकास।।१।।
नितानन्द जल में कमल, है अकास में भान।
हित चित जिन के मिल रहे, तिन्हें निकट कर जान।।२।।
आत्म बसै बिदेश में, साहेब और मुकाम।
नितानन्द जो हित लगै, जब तब मिल सी आन।।३।।
सिंधु पार सत गुरु बसै, चेला बैले पार।
नितानन्द बिसरै नहीं, जो गुण हिये मझार।।४।।

नितानन्द सतगुरु कमल, शिष्य भंवर रहे होय।
जाय मिलै खसबोय में, हेत हिये का जोय।।५।।
प्रीत लगी परब्रह्म से, जिनकै दिल दरम्यान।
नितानन्द वे धन्य है, उतर गये मैदान।।६।।
चरण कमल से प्रीत कर, नितानन्द लौ लाय।
एक पलक की मेहर में, मिलें परम गुरु आय।।७।।
परम पुरुष के ध्यान में, रहो सदा लौलीन।
पार उतारैं पलक में, वै साहेब परवीन।।८।।
मन इन्द्री सभ हटक कर, प्रेम प्रीत लौ लाय।
अमर पुरी के महल में, मिलै सबेरी जाय।।९।।
नितानन्द जब लग बनै, पीव से प्रीत निभाह।
मेहर करै तो ले चलै, अमर पुरी की राह।।१०।।
नितानन्द उस पीव की, कबहूं प्रीत न त्याग।
जिन पर राजी हर हुये, धन्य जिन्हों के भाग।।११।।
जल में बसैं कमोदनी, चढ़े चन्द आकास।
नितानन्द मन में निकट, ऐसे साहेब दास।।१२।।
जिस का चित हर चरण में, हिये प्रीत प्रकास।
नितानन्द वै धन्य है, साहेब उन के पास।।१३।।
हेत हमारे पीव का, हर दम है दिल माहिं।
नितानन्द की एक दिन, आप गहैंगे बाहिं।।१४।।

जिन के हृदय हेत है, और प्रीत प्रकास।
नितानन्द वैं एक दिन, पहुंच रहैं उन पास॥१५॥
नितानन्द सो निकट है, जिन के हृदय हेत।
सभ जग जो आड़ा पड़ै, तऊ ना होय अचेत॥१६॥
नितानन्द सुख सिंधु की, प्रीत पुरातन हेत।
कृपा करै ता पर अलख, सौ जन किये सुचेत॥१७॥
प्यारी पीहर में बसै, प्रीतम औरै देस।
नितानन्द दिल मिल गया, सो मिल रहैं हमेस॥१८॥
आतम आई विषय में, टूट गया हित तार।
नितानन्द फिर प्रीत कर, दिल ही में दिदार॥१९॥
नितानन्द निज हेत से, पकड़ प्रीत वि श्वास।
असंख जुगों का बीछड़ा, प्रीतम पाया पास॥२०॥
नितानन्द की प्रीतड़ी, नहीं पुरानी होय।
सभ जग जो धोबी बनै, तो भी सकै न धोय॥२१॥
आशिक आलम में रहैं, अरस माहिं वह यार।
नितानन्द वै मिल रहैं, जिन के दिल में प्यार॥२२॥
नितानन्द न्यारे नहीं, कहीं रहो दिलदार।
दिल दा मालीक महल में, भूलै सोई गंवार॥२३॥
आसिक इस मौजूद में, ला मुकाम महबूब।
एक हुये इकलास से, मिल्या तमासा खूब॥२४॥

जिनके दिल में सिदक है, रहै रब्ब इकलास।
नितानन्द जब चाहिये, साहेब उनके पास ॥२५॥
आलम के इकलास से, महल इश्क का दूर।
इश्क महल आसक रहैं, हाजिर सदा हजूर ॥२६॥
लाख कोस साजन बसै, तो भी हिवड़ा माहिं।
नितानन्द खोजो सभी, उन बिन कोई नाहिं ॥२७॥
लख कोसी साजन बसै, जब देखूं जब पास।
नितानन्द को राख लो, भौरी में का बास ॥२८॥
लाख कोस साजन बसे, तऊ न दिल से दूर।
याद करै तब निकट है, नितानन्द वह नूर ॥२९॥
लख कोसी साजन बसै, नहीं प्रीत से दूर।
हेत पिया में मिल गया, जित देखूं भरपूर ॥३०॥
प्रीत पुरानी ना पड़ै, जो दिल भीतर होय।
नितानन्द न्यारे नहीं, जब तब दर्शन होय ॥३१॥
प्रीत पुरानी ना पड़ै, बधत रहै निस जाम।
हेत हिया का देख कर, मिलै निरंजन राम ॥३२॥
नितानन्द नर देह में, करो सकल से प्रीत।
नेकी नेह निभाइए, तज बाहरला गीत ॥३३॥
नितानन्द नर देह में, प्रीतम से कर प्रीत।
प्रीत बिना पावै नहीं, वह मन मोहन मीत ॥३४॥

नितानन्द तन पाय कर, करी न हर से प्रीत।
सो काया निर्फल गई, बिना प्रेम प्रतीत ।।३५।।
प्रीत पिया से ना करी, तो खोई नर देह।
नितानन्द हर निकट है, जो हिय उपजै नेह ।।३६।।
नितानन्द सो जन सदा, भीतर रहे समाय।
जो दर्शन की लालसा, पूर्ण प्रीत लगाय ।।३७।।
प्रीत पुरानी ना पड़ै, दिन २ होय नवीन।
हित चित कर हर हिय धरे, नितानन्द लौलीन ।।३८।।
प्रीत हमारी समझियो, पिव अंतरजामी।
नेह निभान कठिन है, मालिक मुक्कामी ।।३९।।
नितानन्द की प्रित को, पूरी कर दीजै।
राख प्रतिज्ञा हेत सूँ, शरणा गत लीजै ।।४०।।
जो साहेब प्रदेश में, सो हिये मंझारी।
दुलहन के घट प्रीत है, तो पलक न न्यारी ।।४१।।
प्रीत पियाला जब पिया, हो गई मतवारी।
बुरी भली समझे नहीं, चढ़ गई खुमारी ।।४२।।
ज्यों २ पीवै हेत से, हित बढै अपारी।
जिस को हर अपनी करै, सो धन्य दुलारी ।।४३।।
प्रीत लगी परब्रह्म से, वै सभ विध सारी।
नितानन्द चित ना चढ़ै, यों जगत भिखारी ।।४४।।

जिस के दिल में लग्न है, सो मगन मुरारी।
प्रीतम रीझे प्रीत पर, फिर करै न न्यारी।।४५।।
नितानन्द भीतर लगी, कुछ लगन करारी।
दिन २ चमकै चौगुनी, अलमस्त अटारी।।४६।।
नितानन्द चित लग रहे, पिव प्रीत मुझारी।
सोई नार सुलखनी, साहेब को प्यारी।।४७।।
जिस को हर अपनी करै, सो चलै सवारी।
आठ पहर साठों घड़ी, सुख सिंध मझाँरी।।४८।।
तन मन सुरत लागी रहै, नहीं टूटै तारी।
नितानन्द घर हो गया, अवगत दरबारी।।४९।।
प्रीत पुरातम पीव की, बिसरै न बिसारी।
पलक माहिं प्रीतम किये, सभ जग से पारी।।५०।।
नितानन्द जाकी लगी, अवचल वर से प्रीत।
बाहर दीखैं बावरे, माहिं हुवै लौलीत।।५१।।
प्रेम प्रीत स्नेह सुख, जा घर प्रगटै आय।
जगत छेद उर भेद से, पलक माहिं मिल जाय।।५२।।
जिस का हित ता से लगै, सो जुग २ ता संग।
काया कर्कत हो रहो, सुरत रंग में रंग।।५३।।
प्रीत लगी पिव से पगी, रंगी सुरंगे रंग।
हित चित कर जो मिल गये, उनका एकै अंग।।५४।।

नितानन्द भौंरा हुए, उसी फूल से हेत।
जाय रहे खसबोय में, जहां तहां लख लेत।।५५।।
चन्दा बसै अकास में, तरवर मध्य चकोर।
नितानन्द अंतर लख्या, तौ दोनों इक ठौर।।५६।।
नितानन्द कद लग रहै, एक और की प्रीत।
कोई २ सज्जन साचले, घने गरज के मीत।।५७।।
बाहर भीतर एक सी, जिन की प्रीत अनूप।
नितानन्द वै दो नहीं, वै सभ एकै रूप।।५८।।
नितानन्द कुछ अजब है, कर लीजै इकलास।
आलम सभ राजी रहै, चल पहुंचै पिव पास।।५९।।
अवनासी के महल में, प्रीत करै सो जाय।
प्रीत बिहूना मानवी, जुग २ टापा खाय।।६०।।
इश्क मोहब्बत मस्त मन, तलब दर्श दीदार।
नितानन्द वै एक हैं, जिन के प्रीत मुरार।।६१।।
नितानन्द जहां जाइये, जहां प्रीत का धाम।
झूठ कपट छल छिद्र से, नहीं हमारा काम।।६२।।

(इति हेत प्रीत का अंग संपूर्णम्)

# 卐 शूरातन का अंग ४६ 卐

नमो परम गुरु सर्व में, नमो संत बलवन्त।
गुरु गुमानी दास जी, तुम को नमो अनन्त।।१।।
गुरु गुमानी दास जी, महा अटल सावंत।
शूर वीर हर भक्ती में, तेज पुंज पावंत।।२।।
बजे नगारे नाम के, साजे ध्यान निशान।
काम क्रोध से लड़ चलो, नितानन्द मस्तान।।३।।
शूरा सोई सराहिये, लड़ै धनी के काम।
काम क्रोध को जीत कर, मिलै निरंजन धाम।।४।।
नितानन्द वे शूरमा, सन्मुख झेलैं सार।
कायर भाजैं पीठ दे, बंधे विषय विकार।।५।।
मंडे शूर मैदान में, मुख पर झिलकै नूर।
नितानन्द दल देख कर, भाज गई भख भूर।।६।।
चढ़े शूर संग्राम को, धरै न पीछे पाय।
नितानन्द हर पंथ में, जो सिर जाय तो जाय।।७।।
शूरा खेत न छाड़िये, फिर यह अवसर नांहि।
नितानन्द सन्मुख मरो, तो हर पकड़ैं बाहिं।।८।।
जो मरने से डर गये, सोई मर २ जाहिं।
नितानन्द निर्भय झड़ैं, अमर नूर रस खाहिं।।९।।

झड़े ज्ञान मैदान में, अड़े सुभट सावंत।
पड़े द्वार दरबार कै, नितानन्द मह मंत ।।१०।।
खड़े खेत हर हेत में, दड़ैं न जग की ओट।
नितानन्द कैसे छिपैं, लड़ै प्रेम की चोट ।।११।।
अनी धार पर खेलना, कठिन साध की चाल।
डिगै तो पीव न पाइये, रहे तो होय निहाल ।।१२।।
सती शूर से अधिक है, देखत जारे देह।
साध पंथ तासों अधिक, नितानन्द हर नेह ।।१३।।
भक्ति दुहेली राम की, दुर्लभ इस जग माहिं।
नितानन्द धारा खड़ग, शूरा लंघ २ जाहिं ।।१४।।
नितानन्द निर्भय वही, तन मन सीस लगाय।
जग की संका ना करै, अगम ठौर को जाय ।।१५।।
झड़ झेलै औझड़ सहैं, पंच शत्रु दल पेल।
नितानन्द उलटे चढ़ैं, यह शूरों का खेल ।।१६।।
अगम ठौर को चालना, तजो देह की आस।
नितानन्द सिर दे मिलैं, शूर वीर निज दास ।।१७।।
नितानन्द सिर सौंप कर, मिले जाय मन शूर।
सूली सीढी हो गई, मिले नूर में नूर ।।१८।।
चार खूट चौदह भवन, सभ से झूझैं शूर।
दीन दुनी को पेल कर, पहुंचे तखत हजूर ।।१९।।

नितानन्द वे शूरमा, गिनै न राजा रंक।
भक्ति खड़ग कर में लिये, पहुंचै महल निसंक ।।२०।।
शूर भक्त रण खम्भ से, चलैं नहीं मुख मोर।
नितानन्द जो मिट रहो, मिले अगमपुर ठौर ।।२१।।
झलक झेल सन्मुख रहैं, डिगैं न जग की ओर।
परमधाम के तखत पर, बैठे करैं मरोर ।।२२।।
मन इन्द्री प्रकृति से, शूरों जीता जंग।
नितानन्द निर्भय चले, उन मन बांट बिहंग ।।२३।।
बिना अंग हम झड़ रहे, कट गये बिन समसेर।
द्वारे हर महबूब के, नितानन्द भये ढ़ेर ।।२४।।
बखतर झिलम बनाय कर, बहुत चढ़ै दल माहिं।
नितानन्द जब रण मचै, शूर वीर ठहराहिं ।।२५।।
गलियारे बाजार में, सभ कोई अकड़ चलंत।
नितानन्द रण खम्भ में, अकड़ चलै सावंत ।।२६।।
हट पट्टण और सभा में, कायर बैठै जाय।
दिल दुनिया से जीत कर, शूर नूर मिल जाय ।।२७।।
नितानन्द भारी बनी, पड़ी ज्ञान की रार।
घड़ी-२ घायल करै, काम क्रोध की मार ।।२८।।
इन्द्री मन आडा खड़ा, खांडे कैसी धार।
नितानन्द अब कै डिगै, कितहुँ वार न पार ।।२९।।

शूर एक संग्राम में, बैरी लाख किरोर।
नितानन्द हर ना मिलै, जै चालै मुख मोर ।।३०।।
सीस दिया प्याला लिया, चले बाड़ को तोड़।
नितानन्द हर मुखक कर, लख्या दास की ओड़ ।।३१।।
लोह बांध बाना पहर, मांडा जगत से खेत।
अब भागैं कैसे बने, नितानन्द मुख रेत ।।३२।।
नितानन्द है आदि से, भक्त जगत की रार।
सावधान हो मंड रहो, गहो ज्ञान तलवार ।।३३।।
चाकर अवगत राम के, आठों पहर हजूर।
कफन बान्ध निस दिन लड़ैं, नितानन्द वे शूर ।।३४।।
नितानन्द जीवत मरे, अमरपुरी को जाहिं।
संत सिपाही अलख के, दर्श दादनी खाहिं ।।३५।।
पहली सीस लगाय कर, करी अलख से प्रीत।
नितानन्द वह सूरमा, चले जगत में जीत ।।३६।।
नितानन्द देखै धनी, अनी तजैं पत जाय।
काम क्रोध मोह लोभ से, निर्भय जंग मचाय ।।३७।।
बजैं बंब रण खम्भ में, गरजे नभ घन घोर।
साध सुभट सन्मुख लड़ै, भाजैं विषयी चोर ।।३८।।
शूरा साहेब से मिलैं, धरैं ध्यान मन माहिं।
अमर हुए जीवत मुये, भोंदू भाजे जाहिं ।।३९।।

शूरों के संका नहीं, जो कुछ हो सो होय।
भक्ति टेक से ना डिगै, लाख डिगावे कोय।।४०।।
शूरों के शंका नहीं, यह तन जाय तो जाय।
राम मिलन के कारणै, सहै अंग में घाय।।४१।।
शूरों के शंका नहीं, सदा मरन का चाव।
नितानन्द वे क्यों मरैं, अमर लोक के राव।।४२।।
शूरों के शंका नहिं, टूक २ हो जाहिं।
नितानन्द रीझे धनी, बसैं अमरपुर माहिं।।४३।।
शूरों के शंका नहीं, अनी मंड़ैं देह खोय।
डरैं धनी की शरम से, सिर धर सौदा होय।।४४।।
शूरों के शंका नहीं, अनी जुड़ै जा दूर।
सीस दिया साहेब लिया, हुए खाक से नूर।।४५।।
शूरों के शंका नहीं, अनी जुड़ै जब नाहि।
नितानन्द इत उत प्रगट, दिपैं दोऊ दल माहिं।।४६।।
शूरों के शंका घनी, करैं धनी की लाज।
नितानन्द निर्भय झड़ो, भक्ति पक्ष महाराज।।४७।।
नितानन्द धड़ जगत में, पड़ा सीस दरबार।
आप निरंजन रीझ कर, लीन्हें बांह पसार।।४८।।
क्या दिखलावै जगत को, बखतर झिलम बनाय।
नितानन्द मिल अंग में, तन मन सीस लगाय।।४९।।

बाना पहरै शूर का, भीतर का भखभूर।
नितानन्द पारख पड़ै, जब बाजै रणतूर ॥५०॥
राम नाम की तेग कर, राम नाम की ढाल।
राम नाम बखतर पहर, कदे न लागै काल ॥५१॥
नितानन्द शूरा वही, मन से पकड़ै लोह।
इन्द्री अरि दल जीत कर, दूर करै जग मोह ॥५२॥
शूरा सोई सराहिये, रहै धनी से लाग।
चेतन चमका देखकर, कदे न चालै भाग ॥५३॥
शूरा सीस उतार कर, प्रेम पंथ में आव।
नितानन्द साचै मतै, सजन गली धर पांव ॥५४॥
जी का लालच दूर कर, शूरा सिर धर खेल।
नितानन्द रीझै धनी, सन्मुख लोहा झेल ॥५५॥
नितानन्द लोहा पकड़, पीछे पांव न देह।
निकस ज्ञान मैदान में, निर्भय प्याला लेह ॥५६॥
शूरा सुख सागर मिले, कायर रह गये वार।
नितानन्द चल दर्श में, पकड़ प्रेम तलवार ॥५७॥
नितानन्द वै शूरमा, करैं धनी को याद।
बिना चरण चाहैं नही, दुनिया द्वन्द फसाद ॥५८॥
नितानन्द वै शूरमा, करैं धनी को याद।
चरण कमल चित चुम रहे, और वस्तु बरबाद ॥५९॥

शूरा साहेब के महल, एक पलक में जाय।
जगत माहिं चित ना लगै, पीव मिलन का चाय ।।६०।।
शूरा सुख में मिल गये, जी का लालच त्याग।
कायर कूकर नित दुखी, सके न हर से लाग ।।६१।।
शूरा सुख में मिल गये, कायर कूकर दुख।
चरण कमल के आसरे, नितानन्द नित सुख ।।६२।।
नितानन्द वै शूरमा, निशि दिन रहैं निशंक।
चले जाहिं दरबार को, गिने न राजा रंक ।।६३।।
शूरा साहेब के महल, निशि दिन करें किलोल।
मगन हुवे सिर सौंप कर, पाई वस्तु अमोल ।।६४।।
नितानन्द शूरा वही, तजै सकल का संग।
धनी ध्यान पर झड़ रहै, तिन पर बरसै रंग ।।६५।।
सूर लोक शूरा चढ़ै, जी का लालच त्याग।
कायर कूकर मुड़ चलैं, गये भक्ति से भाग ।।६६।।
सीस उतारा शूरमा, चरणों दिया चढ़ाय।
नितानन्द रीझै धनी, अलख निरंजन राय ।।६७।।
शूरा सुख में मिल गये, कायर कूकर दुख।
चरण कमल के आसरे, भाज गई सभ भुख ।।६८।।
शूरा साहेब के महल, निशि दिन करैं किलोल।
मगन हुए दीदार में, पाई वस्तु अमोल ।।६९।।

नितानन्द डर दूर कर, जो चाहै दीदार।
सिर दे मिल महबूब को, यही बहिस्त बहार ।।७०।।
भव सागर भयभीत से, शूरा उतरैं पार।
कायर कोटिक बह गये, लिये कामना मार ।।७१।।
नितानन्द भव फन्द को, ज्ञान खड्ग से काट।
जी का लालच दूर कर, खुलैं महल के पाट ।।७२।।
शूरा मुख मोड़ै नहीं, करै धनी की लाज।
भक्ति तेग गाढी गही, जिनके बस महाराज ।।७३।।
जगत खेत जोधा लड़ैं, दोऊ दलों के माहिं।
जोत मिलै जुग २ अमर, कायर मुड़ २ जाहिं ।।७४।।
नितानन्द सम्मुख झड़ो, मुड़ चालैं घर दूर।
काम क्रोध से झूझणा, तो पावै वह नूर ।।७५।।
नितानन्द निर्भय झड़ो, पड़ो द्वार दरबार।
मरने सेती मत डरो, अमर करै करतार ।।७६।।
नितानन्द सन्मुख झड़ो, मुड़ चालैं पत जाय।
जगत जीत चल महल को, दिल की दुई उठाय ।।७७।।
नितानन्द आठों पहर, गुप्त लड़ाई होय।
काल कटक से झूझना, लड़ै संत जन कोय ।।७८।।
शूरा सोई सराहिये, करै काल पर लोह।
तीन लोक धर धार पर, नितानन्द हर जोह ।।७९।।

तन मन धन अर्पण करै, दूजा तकै न कोय।
नितानन्द महबूब से, सिर धर सौदा होय॥८०॥
दो दल में शूरा लड़ै, करै रैन दिन राड़।
मरै तो मुख मोड़ै नहीं, तोड़ दई सभ बाड़॥८१॥
टरै न हर दरबार से, पड़ै दलहुं में झूझ।
करै लोह जग मोह तज, गया अमरपुर सूझ॥८२॥
डरैं धनी की सरम से, मरने का डर नाहिं।
नितानन्द पर हो गई, राम चरण की छाहिं॥८३॥
मरने से डरना नहीं, निशि दिन धरना ध्यान।
काम क्रोध से झूझना, दिल ही के दरम्यान॥८४॥
कायर हुआ न हर मिले, शूर वीर हो चाल।
मरो महल की राह पर, कर दर्शन तत्काल॥८५॥
निर्भय झड़ो तो पाइये, पीव का अगम मुकाम।
मुड़ चालैं कुछ पत नहीं, कठिन अलखपुर धाम॥८६॥
सीस चढ़ाया ईश को, जग से लिया छुटाय।
पांच पचीसों पकड़ कर, मिलो निरंजन जाय॥८७॥
साहेब को सिर दे मिलो, नातर लेगा काल।
नितानन्द निर्भय झड़ो, जब पावै गोपाल॥८८॥
नितानन्द भीतर लड़ो, भीतर कटक अनंत।
निशि दिन सार बजावना, राम मिलन की चिंत॥८९॥

भीतर के बैरी बुरे, करैं रैन दिन घाव।
ज्ञान खड्ग ले झूझना, अब जीतन का दाव ।।९०।।
नितानन्द वह शूरमा, लड़ैं धनी के काम।
धनी छोड़ रण से मुड़ै, सो नर नमक हराम ।।९१।।
नितानन्द सिर दे मिलै, सो पावे जागीर।
सदा हजूरी हो रहै, सो शुरा दल धीर ।।९२।।
आठ पहर का झूझना, मंड्या मांहि संग्राम।
एक पलक आलस करै, तो लिया लोह बेकाम ।।९३।।
नितानन्द आठो पहर, शब्द सार गह हाथ।
मन इन्द्री सब जीत कर, रहो धनी के साथ ।।९४।।
नितानन्द शूरा लड़ै, दोउ दल करैं सराह।
भक्ति टेक छोड़ै नहीं, काया रहो के जाह ।।९५।।
काया का लालच नहीं, रहै मरन का चाव।
साहेब को सिर सौंप कर, धरै अगमपुर पांव ।।९६।।
नितानन्द शूरा वही, जीतै पांच पंचीस।
उलट चलै संसार से, ताहि मिलै जगदीश ।।९७।।
जालिम जोधा देह में, निशि दिन लूटै राह।
ज्ञान खड्ग ले झूझना, स्वामी धर्म निवाह ।।९८।।
जालिम जोधा देह में, लूट लिया संसार।
नितानन्द निशि दिन लड़ो, पकड़ प्रेम हथियार ।।९९।।

नितानन्द सिर सौंप कर, रहो धनी से लाग।
झड़ने से डरना नहीं, कहां लगावे दाग ॥१००॥
झड़ैं धनी के नाम पर, सहैं अंग में मार।
नितानन्द देखैं सभी, दोऊ दलों मंझार ॥१०१॥
नितानन्द निर्भय रहो, तन का लालच त्याग।
निकसैं जब बाना पहर, मुड़ चालैं तो दाग ॥१०२॥
नितानन्द झूझे बनै, मुड़ चालै पत जाये।
शीश दिया प्याला लिया, रहे दर्श में छाये ॥१०३॥
नितानन्द झूझें बनैं, मुड़ै तो लागै लाज।
सार चमके शूरमा, कदे न चालै भाज ॥१०४॥
नितानन्द झूझै बने, मुड़ै तो हांसी होय।
स्वामी धरम पर मर रहै, असल शूरमा सोय ॥१०५॥
नितानन्द झूझै बनैं, भाज चलै सभ जाय।
कदे न पीठ दिखाइये, नमक धनी का खाय ॥१०६॥
नितानन्द भारी बनी, अनी तजै घर दूर।
काम क्रोध से झूझना, तो पावै वह नूर ॥१०७॥
दोउं ओर बैरी खड़े, सदा करैं संग्राम।
नितानन्द शूरा वही, जीत पहुंचै ग्राम ॥१०८॥
बाहर बैरी जगत सभ, भीतर विषय विकार।
दो दल सेती झूझना, निस दिन बारंबार ॥१०९॥

नितानन्द सन्मुख मरे, वही अमर पुर जाहिं।
मरने सेती मुड़ चलै, सदा मृत्यु मुख माहिं ॥११०॥
नितानन्द को झूझना, पलक पलक के माहिं।
मरने में सुख बहुत है, जीवन में सुख नाहिं ॥१११॥
नितानन्द सुमिरो धनी, अनी घनी सभ ओर।
सन्मुख सार बजाय ले, अलख ध्यान के जोर ॥११२॥
नितानन्द सन्मुख मरै, करै अमर पुर सैल।
पीठ दिखाकर मुड़ चलै, सो दीखन के छैल ॥११३॥
देखन के शूरा घने, बाना पहर पवाहिं।
नितानन्द रण खम्भ से, भौदूं भाजे जाहिं ॥११४॥
बात बनावे मरद की, बांधै सभ हथियार।
भाज चलै रण खेत से, सो नामर्द गवार ॥११५॥
मूत धार पर मर गये, कहैं अगम का ज्ञान।
नितानन्द गिनती नहीं, मरदों के मैदान ॥११६॥
शूर कहाया जगत में, बखतर झिलम बनाय।
भक्ति खेत से भाग चलै, सो जागीर न खाय ॥११७॥
अंग उघारै शूरमा, सहै सेल तलवार।
नितानन्द प्याला लिया, अवगत कै दरबार ॥११८॥
शूर वीर जोधा वही, सहै झड़ा झड़ सार।
नितानन्द जुग २ करैं नूर नगर दीदार ॥११९॥

सार चमक्का देख कर, जिन पर बर्षे नूर।
नितानन्द सभ जगत में, क्यों न कहावैं शूर ॥१२०॥
शूर वीर जो जानिये, उलटा धरै न पाव।
मरै ते पावै अमर पद, रहे तो दल में राव ॥१२१॥
पीवै प्याला नूर का, शूरा सीस नवाय।
जो सिर का लालच करैं, मूत नदी बह जाय ॥१२२॥
नितानन्द दो दलों में, करै शूरमा लोह।
जगत जीत जगमग दिपै, नहीं जगत से मोह ॥१२३॥
नितानन्द नहीं होइये, हर से नमक हराम।
लड़ना विषय विकार से, मिलो महल मुक्काम ॥१२४॥

(इति शूरातन का अंग संपूर्णम्)

# 卐 जीवत मृतक का अंग ४७ 卐

नितानन्द बन्दन करै, अवगत रमता राम।
गुरु साधन के चरण को, नमो २ निशि जाम।।१।।
जीवत मृतक होय रहै, तजै कामना काम।
नितानन्द लाग्या फिरै, साथ निरंजन राम।।२।।
नितानन्द जीवत मरे, जग से हुए निरास।
संग लाग्या हर यों फिरै, ज्यों गऊ बच्छ के पास।।३।।
नितानन्द जीवत मरे, अमर हुए तत्काल।
उन को हर बिसरै नहीं, पल २ करैं संभाल।।४।।
नितानन्द जीवत मरे, करे अमर पुर बास।
अरस परस लख अलख सुँ, जुग २ चरण निवास।।५।।
जीवत मृमक होय कर, सभ से रहै उदास।
साहेब उन के संग रहै, वै साहेब के पास।।६।।
जीवन मुक्ता हो गये, जिनका मन मर जाय।
मरने पहले मर गये, अमर हुए गुण गाय।।७।।
जीवत मृतक होय कर, धरो निरंजन ध्यान।
नितानन्द आठों पहर, पी प्याला गलतान।।८।।
जीवत मृतक हो रहै, जो चाहै दीदार।
नितानन्द पद आसरे, खेलै खेल अपार।।९।।

जीवत मृतक होय कर, तजैं सकल की आस।
उन सों पलक न बीसरै, जो अवगत के दास॥१०॥
नितानन्द जीवत मरै, सोई अमर पुर जाहिं।
अलख दर्श देखत रहैं, बसैं चरण के माहिं॥११॥
नितानन्द जीवत मरो,साहेब से दिल लाय।
चरण कमल की मौज में, मगन होय गुण गाय॥१२॥
आपा पर सभ मर गया, मर गया गर्भ गुमान।
नितानन्द लाग्या फिरे, तिन के साथ सुभान॥१३॥
नितानन्द जीवत मरै, विषय वासना त्याग।
आगे पीछे राम जी, फिरैं प्रीत से लाग॥१४॥
जीवत मर हर याद कर, खुदी बदी को डार।
नितानन्द आ महल में, साहेब कहै पुकार॥१५॥
नितानन्द मन मर गया, तजी देह की प्रीत।
दसों दिसा साहेब फिरैं, अपरम्पार अतीत॥१६॥
नितानन्द जीवत मरे, वै साहेब के लाल।
दलक पहर दिल द्वन्द में, ओगुणा ही बदफाल॥१७॥
खुदी मेट कर मर रहे, दरद मन्द दरवेस।
अल्हा आशिक उन्हो पर, वै महबूब हमेस॥१८॥
मनी मेट मुर्दे हुए, मौला के मस्तान।
नितानन्द दीदार मे, उन को मिलै मुकाम॥१९॥

नितानन्द खुद फना हो, पीवै बका का जाम।
देख जहूरा नूर का, खुसी फजर और स्याम ।।२०।।
फना हुये जीवत मुए, फारिग फरक फकीर।
साहेब सरीखे हो गये, कर दिये बे तकसीर ।।२१।।
मरने पहले मर गये, सर गये उन के काम।
नितानन्द महबूब पर, आशिक हो गये राम ।।२२।।
नितानन्द मरना भला, जो जीवत मर जाय।
पांच तत्व की देह में, पलट नूर हो जाय ।।२३।।
नितानन्द जीवत मरे, जीवन मुक्ता होय।
हरि मिल पावै परम पद, जग में थिर खसबोय ।।२४।।
नितानन्द जीवत मरै, धरै धनी का ध्यान।
करै सैल सभ सृष्टि की, पल फेरत परवान ।।२५।।
जीवत मरना खूब है, खुदी मेट खुद होय।
पहली इश्क लगाय कर, देख दरश खसबोय ।।२६।।
नितानन्द जीवे सदा, जीवत मृतक होय।
देह अंधोरी रैन में, अगम उजाला होय ।।२७।।
नितानन्द जीवत मरै, आपा पर सभ त्याग।
अविनासी अपने किये, दूर हुए सभ दाग ।।२८।।
जीवत मरे अमर करे, मोटे के सिर मार।
मान मैज से पिस गये, जग में जीव गंवार ।।२९।।

मन मृतक इन्द्री मृतक, मृतक चित्त अहंकार।
नितानन्द जीवत मृतक, हो गये अलख अपार ।।३०।।
नितानन्द निर्भय रहैं, जीवन मुक्ता होय।
आतम परमातम मिले, जगत माहिं खसबोय ।।३१।।
निर्मल नगरी नूर की, जीवत मरैं सो जाहिं।
अभिमानी अंधेर में, जुग २ टापा खाहिं ।।३२।।
आप मेट आपै हुए, मुए मनी को मार।
नितानन्द उस महल में, देखैं सदा बहार ।।३३।।
नितानन्द जीवत मरे, आपा पर सभ मेट।
अमर करे सूभर भरे, रहे निरंजन भेट ।।३४।।
जीवत मरना खूब है, जिन की खूबी खूब।
राख लिये दीदार मे, नितानन्द महबूब ।।३५।।
जीवत मृतक हो गये, निर्मल निपट गरीब।
उनके साहेब पास है, त्रिगुण पहर तबीब ।।३६।।
खुदी मेट पावै खुदा, फना फिकर मगरुर।
नितानन्द जीवत मरे, करे खाक से नूर ।।३७।।
मनी मेट मुर्दै हुए, दुनियां तर्क कलूब।
अल्हा आशिक हो गया, नितानन्द महबूब ।।३८।।
नितानन्द मृतक रहे, तज दुनियां का संग।
साहेब अपने कर लिये, दिये नूर से रंग ।।३९।।

आपा मरे तो अमर है, आपा रहे तो मार।
नितानन्द जीवत मरे, तो पावै करतार।।४०।।
नितानन्द जीवत मरे, मिटे मनी के मैल।
अनन्त कोट ब्रह्माण्ड की, एक नजर में सैल।।४१।।
नितानन्द जीवत मरे, जिन को मरना नाहिं।
सदा रहैं आनन्द से, अमर पुरी के माहिं।।४२।।
अमर हुए जीवत मुए, सभ ही मर २ जाहिं।
नितानन्द निर्मल निरख, पकड़ लई हर बाहिं।।४३।।
नितानन्द महबूब पुर, जीवत मर कर जाय।
काल अकाल उलंघ कर, रहे दरश में छाय।।४४।।
नितानन्द दीदार में, जीवत मर कर चाल।
जन सोवै आनन्द से, साहेब करे संभाल।।४५।।
मिल्या चहत महबूब को, तो जीवत मर लेह।
नितानन्द आठों पहर, प्रीतम में मन देह।।४६।।
तन मन सभ अर्पण करैं, सिर भी डारै वार।
नितानन्द जीवत मरै, तिन को मिलै मुरार।।४७।।
गरभ गुमान न मान मद, जीवत मृतक अतीत।
नितानन्द अवगत कहै, आओ महल में मीत।।४८।।
जगत माहिं जीवत मरे, दई कुसंगत त्याग।
नितानन्द जुग २ रहे, राम चरण से लाग।।४९।।

जीवत मृतक जीवन मुक्त, छुटी कामना काम।
नितानन्द साहेब दिया, कदमों मांह मुकाम॥५०॥
नितानन्द जीवत मरैं, करैं नूर की सैल।
मिले जहूरे अर्स के, दूर हुए बद फैल॥५१॥
जीवत मर डरना नहीं, करना हर का ध्यान।
सुन्य महल में रोशनी, धन्य गुमानी राम॥५२॥
राम गुमानी अलख बिनानी, जीवत मृतक पावै।
नितानन्द हर चरण कमल में, सदा छावनी छावै॥५३॥

( इति जीवत मृतक का अंग संपूर्णम )

## 卐 मांस आहार निषेध का अंग ४८ 卐

पांच वक्त की बन्दगी, यह जाने सभ कोय।
जब लग दिल लागै नहीं, फज़ल कहां से होय॥१॥
काजी हुक्म खुदाय का, कद आया तुझ पास।
सूरत साहेब की घड़ी, तैं क्यों दई विनास॥२॥
साहेब के निसान को, मार किया पैमाल।
मेहर न आई जीव पर, होगा बुरा हवाल॥३॥
सब रुह अल्लाहां की, आदम क्या हैवान।
जिबह किया गल काट कर, बड़ा कहर कुफरान॥४॥

कीया मजा जबान का, साहेब दिया विसार।
जीव विनासा और का, हिरस हवा का प्यार ।।५।।
बकरी मुरगी मच्छियां, मार करी संग्राम।
नितानन्द उन जिवहुं को, कहां बहिस्त मुकाम ।।६।।
बेशक मारे बकरी, दीन्हा रब्ब बिसार।
बहुत खराबी होयगी, सुनसी धनी पुकार ।।७।।
खाल निकास परे करी, लिया गोश्त मिल खाय।
दरद न आया जीव का, उनको कहां खुदाय ।।८।।
जैसा तन है अपना, ऐसा सभ का जान।
नितानन्द नहीं ढाइये, साहेब का निसान ।।९।।
घुन आटे में पिस गया, अण्डा कहैं हलाल।
ये सभ मज़ा जबान का, और मकर का जाल ।।१०।।
चढ़ मसजिद पर बांग दे, कहै एक अल्लाह।
जीव हतै जब दूसरा, भूल गया दरगाह ।।११।।
मियां पुकारै क्या चढा, साहेब बहरा नाहिं।
जिसे सुनावे बांग दे, सो तो तुझ ही माहिं ।।१२।।
मुल्ला मुनारै चढ़ कर, कहां सुनावे टेर।
मिला चहै महबूब को, दिल दुनिया से फेर ।।१३।।
मुल्ला मुनारै चढ़ कर, कहै सुनाय सुनाय।
भीतर से साबित नहीं, बांग अजाहां जाय ।।१४।।

मांस खाय मोमन हुआ, किया जिवहुं पर जोर।
नितानन्द दोजख़ पड़ैं, बहुत बन्दगी चोर॥१५॥
मियां स्वाद कै बस पड़या, बहुत बिनासे जीव।
चढ़ मसजिद साहेब कहैं, कहां उन्हों को पीव॥१६॥
दीन गमाया देखते, दुनियां से दिल लाय।
कुफर कमाया करद से, क्यों नहीं दोजख़ जाय॥१७॥
दुनिया से दिल लाय कर, दिया दीन को बेच।
मियां करद को दूर कर, पड़ै कहर का पेच॥१८॥
सूरत घड़ी सुभान की, मार करी पैमाल।
जोर किया मसकीन पर, अहमक कहै हलाल॥१९॥
जिबह किया बेदरद हो, मियां करी बदकार।
जो तू बन्दा हक्क का, हिरस हवा को मार॥२०॥
काजी मुल्ला स्वाद बस, मोमन मुसलमान।
करद लई मिल दस्त में, भूल गये रहमान॥२१॥
जिबह किया बेजोर को, याते नहीं हलाल।
लेखा लेगा साइयां, तुम पर पड़ै जवाल॥२२॥
नितानन्द डर रब्ब से, साहेब सभ ही माहिं।
जो गल काटै और का, वे दोजख़ को जाहिं॥२३॥
जोर जुलम जो कुछ करै, लिखा जाय दरबार।
खूनी करके पकड़िये, पड़ै गजब की मार॥२४॥

जिनके दिल में सांच है, उनका दिल दरगाःह।
नितानन्द जिस रोग दिल, सो दोजख़ को जाह ॥२५॥
जुलम किया बेजोर पर, आगे होय हिसाब।
मार पड़ै दरबार की, जब क्या देगा जवाब ॥२६॥
हवा हिरस को मारिये, कहर फना कर डाल।
पांच पचीसों जिबह कर, पावे रब्ब जमाल ॥२७॥
जो तुझे काम करीम से, नितानन्द चल राह।
साहेब देखो सर्व में, कीजै नहीं गुनाह ॥२८॥
गुमराही गफलत खुदी, गुसा मनी मुरदार।
इन सभ को बिसमिल किये, मिलै बहिश्त बहार ॥२९॥
गला काट कलमा भरै, जिसको कहै सबाब।
बहुत खराबी होयगी, जिस दिन पड़ै हिसाब ॥३०॥
काटें गला गरीब का, जिसको कहैं हलाल।
और कुफर क्या होयगा, मियां गज़ब मत घाल ॥३१॥
साहेब का डर ना किया, खाया गोश्त बनाय।
कलमा बांग आदी सभी, अंध अजाहां जाय ॥३२॥
गला काट कलमा भरै, भीतर से बे याद।
नितानन्द बेमेहर सभ, खोय चले बरबाद ॥३३॥
मनषा देही पायकर, मांसा अहारी होय।
तिनकी संगत बैठकर, नरक पड़ैगा सोय ॥३४॥

मांसाहारी नर नहीं, वै सभ पशु समान।
उनकी संगत जो करै, जिनके ज्ञान न ध्यान ।।३५।।
मांसाहारी मानवी, अफल गमाई देह।
नितानन्द हर भजन का, कदे न उपजै नेह ।।३६।।
नितानन्द तन पाय कर, भखै पराया मास।
जिनका दर्शन पायकर, दया धर्म का नास ।।३७।।
मांसाहारी मद पिया, किया जन्म का नास।
नितानन्द वै सहैंगे, सदा नरक की त्रास ।।३८।।
प्राणघात प्राणी करै, जीभ स्वाद के काज।
भखै बिरानी देह को, यही नरक का साज ।।३९।।
मांसाहारी मनुष का, कदे न दर्शन होयं।
जिब्भा रस के बस पड़ा, चल्या जन्म को खोय ।।४०।।
दया न उपजी जीव की, भख्या पराया मांस।
सो नर रहसी नरक में, जब लग धरणि आकाश ।।४१।।
गोश्त खाय गफलत करी, साहेब का डर नाहिं।
बिना याद उस रब्ब की, खूनी दोजख़ जाहिं ।।४२।।
मांस भखै मदिरा पिवै, शिव शक्ति का दास।
नितानन्द उन जिवहुं को, सदा जमों की त्रास ।।४३।।
जिब्भा रस के कारणे, करै आत्मा घात।
नितानन्द बदला मिलै, संध्या का प्रभात ।।४४।।

जो गल काटै जीव का, भखैं मास कर स्वाद।
फेर कटावैं आपना, किया न जावै वाद।।४५।।
मांसाहारी नरों को, मिलै न हर की ओट।
हर बेमुख परलय हुए, धरी पाप की पोट।।४६।।
मांसाहार विकार है, जिसका पाप असंभ।
नितानन्द वे बन्ध सी, जुग २ ताते खंभ।।४७।।
नेकी नाम बिसार कर, भखी पराई देह।
इन को दर्शन इत न उत, सदा नरक में गेह।।४८।।
मांसाहारी सभी विकारी, धरी पोट सिर भारी।
नितानन्द सिर ऊपर उनके, करे काल असवारी।।४९।।
मांस खाय सो मनुष ना, वे सभ भूत परेत।
नितानन्द वै पड़ै नरक में, कुल परिवार समेत।।५०।।
मांसाहारी मनुष को, नहीं दीजिये ज्ञान।
कालर खेती बोय कर, क्या लुन खाय किसान।।५१।।
हतैं पराई देह को, अपना तन पोखैं।
वे सभ ही बदकार हैं, बूड़ै बहु धोखै।।५२।।
जैसी काया आपनी, वैसी सभ की होय।
जिबह करै नाहिं डरै, बड़ा गजब है सोय।।५३।।

(इति मांस आहार निषेध का अंग संपूर्णम्)

# 卐 अपारख का अंग ४९ 卐

चन्दन वृक्ष विदेश में, कहें काष्ठ सभ कोय।
ज्यों २ पकड़ जलाइये, अधिक उठे खसबोय।।१।।
चेतन चन्दन रूखडा, जलै कुदेशों आय।
नितानन्द घर से बिछुड़, बिकै न महंगे भाय।।२।।
मलागीर मैला हुआ, आय पड़ा पर भोम।
नितानन्द जाने बिना, दिया अगन में होम।।३।।
नितानन्द चन्दन बिड़ा, जम्यां आय परदेस।
सभ कोई कहै पलास है, ऐसे जलै हमेस।।४।।
चन्दन चित में चेत कर, मत विदेश में जाय।
नितानन्द घर पकड़ रह, तो लागै नहिं भाय।।५।।
चन्दन कहै पुकार कर, आया विषम विदेस।
हुकम तुम्हारा ना मिटै, नितानन्द दरवेस।।६।।
चन्दन गया विदेस में, नाम कहाया और।
ईंधन गिन चूल्है दिया, क्यों त्यागी निज ठौर।।७।।
देश त्याग पर भौम में, गया बावना रूख।
नितानन्द इस रूख की, कोई पुरबली चूक।।८।।
जहां फूल फल ना लगै, कहते काठ कठोर।
जो चाहैं सो फूंक दें, कहैं साह को चोर।।९।।

फूल गमाया फल तज्या, नाम न जानै अंध।
नितानन्द उस देस की, कदे न जाय सुगंध ॥१०॥
तन सुगन्ध उजल बरण, शीतल करन शरीर।
प्राणी देस कुदेस के, तऊ न सीचैं नीर ॥११॥
मेटे तप्त भवंग की, शीतल अंग सुवास।
नितानन्द पहचान बिन, मूरख करैं बिनास ॥१२॥
जहां न पिजंर प्रेम का, सो विदेस बेकार।
चन्दन फूंकै काठ कर, उस से भली उजार ॥१३॥
जहां पिछान न नाम की, नहीं सुगंध की जान।
पारस कौ लोहा कहै, ऐसा देस अज्ञान ॥१४॥
चन्दन कहैं पलास है, हंस कहैं बग नाम।
चोर बतावैं साह को, ज्ञानी को अज्ञान ॥१५॥
कीकर चन्दन एक से, विष अमृत एक भाव।
नितानन्द जिस देस का, बहुत ही बुरा स्वभाव ॥१६॥
माया को ठाकुर कहैं, ठाकुर को कहैं नाहिं।
नितानन्द क्यों जाइये, उस विदेस के माहिं ॥१७॥
चन्दन फूकैं काठ कर, सभै कहैं यह ढाक।
समझ न बास सुबास की, सो विदेस नापाक ॥१८॥
चन्दन गया विदेस में, छोड़ आपनी ठांव।
अंग गंवाया आपना, और गमाया नांव ॥१९॥

हंसा उड़ा समुद्र से, पड़ा थलों में आय।
मारा बगुला थाप कर, जिन से कहां बसाय ।।२०।।
चन्दन गया विदेसड़ै, कोई न समझै सार।
मोल तोल सभ ही गया, ऐसा देस गंवार ।।२१।।
नितानन्द आई कहां, कहां गई बह जात।
निशि दिन जगत जंजाल में, हुई दिवस की रात ।।२२।।
चन्दन चूल्हें फूंकिये जब लग नहीं पिछान।
नितानन्द कैसे लखै, जहां विदेस बियाबान ।।२३।।
चन्दन चूल्हे झोकिये, हीरा हाट बिकाय।
बिना नाम नगरी सभै, दीन्ही पंथ चलाय ।।२४।।
नितानन्द इस जगत में, हरजन बिरला कोए।
जैसे चन्दन का बिड़ा, बन बन कही ना होय ।।२५।।
चन्दन के वृक्ष साध जन, जगत ना जाने सार।
अस्तुती तज निन्दा करें, ऐसे अन्ध गवार ।।२६।।
साधु चन्दन का बिड़ा, जिनके अंग सुगन्ध।
तप्त बुझावैं और की, आप रहैं निंद्वन्द ।।२७।।
साधु चन्दन बावना, शीतल जिनका अंग।
तिन से लग शीतल भये, विषहर नाग भुवंग ।।२८।।
चन्दन चुल्हे झोकीये, जब लग नहीं पिछान।
उनकी सोधी वह लहें, जिनके अन्तर ध्यान ।।२९।।

नितानन्द साधु मनुष, जग में विरला कोय।
और सब कीकर ढ़ाक हैं, जिनमें ना खशबोय।।३०।।
साधु जन संसार में, जिनकी उत्तम चाल।
नितानन्द कृपा करें, सो जन हुये निहाल।।३१।।
नितानन्द संसार में, साधु चन्दन जान।
पारस प्यारे राम के, और लोहा पाखान।।३२।।
नितानन्द संसार में, साधु जन कोई एक।
हीरा हर के लाल है, कंकर बहुत अनेक।।३३।।

(इति अपारख का अंग संपूर्णम्)

## 卐 पारख का अंग ५० 卐

जहां लाल की पारखा, सिर भी दीजै लाय।
नितानन्द बिन पारखू, दीजै नहीं गवाय।।१।।
संत जौहरी रतन हर, मंडी देह दुकान।
नितानन्द सौदा करै, जब् कोई मिलै सुजान।।२।।
नितानन्द बिन पारखू, हर हीरा मत देह।
बुद्धी बिहूना मानवी, तिनसों किया स्नेह।।३।।
नितानन्द बिन पारखू, कदे न दीजे लाल।
जब पावै जन जौहरी, सौदा कर ततकाल।।४।।

नितानन्द हर रतन है, संत जौहरी जान।
रात दिवस सौदा रहै, सतगुरु दई पिछान।।५।।
हर हीरा की खान है, सतगुरु दई बताय।
नितानन्द गाहक मिलै, सौदा कर दिल लाय।।६।।
निस दिन सौदा होत है, नितानन्द दिल माहिं।
पूरा सौदा जब हुआ, सतगुरु पकड़ी बाहिं।।७।।
नितानन्द बिन पारखू, सौदा कीजै नाहिं।
परम गुरु परमात्मा, राख चरण की छाहिं।।८।।
परम गुरु की मेहर से, मिली पारखा मोह।
पारस लग कंचन हुआ, बहुरि न परै बिछोह।।९।।
परम गुरु की पारखा, जानै विरला कोय।
नितानन्द पारख बिना, सौदा कैसे होय।।१०।।
गाहक बिन दीजै नहीं, राम रतन धन सार।
नितानन्द गाहक मिलै, जब करिये व्योहार।।११।।
नितानन्द जन पारखू, हर हीरा की खान।
सौदा कीजै समझ कर, जब कोई मिलै सुजान।।१२।।
पारख दीन्ही परम गुरु, कर दिल में दीदार।
कृपासिंधु पूरा धनी, देगें वस्तु अपार।।१३।।
परम गुरु की पारखा, लखै संत जन कोय।
जब लग मिलै न पारखा, चलै जन्म को खोय।।१४।।

परम गुरु की पारखा, समझैं संत सुजान।
नितानन्द बिना पारखा, पच २ मरै अज्ञान ॥१५॥
नितानन्द बिन पारखू, हर धन दीजै नाहिं।
जब मिलेंगे पारखू, राख लेहु गैह बाहिं ॥१६॥
नितानन्द कोई पारखू, जिसको हीरा देह।
बिना पारखू जगत के, पड़ै जन्म में खेह ॥१७॥
नितानन्द हर रतन को, दिल से दूर न डार।
जब दयाल हों परम गुरु, तब देंगे दीदार ॥१८॥
पाया पारख जौहरी, लाल अमोलक माहिं।
नितानन्द बिन पारखा, सभ ही रीते जाहिं ॥१९॥
महाराज सा रतन धन, कदे न दिल से भूल।
सभ काया कंचन करैं, सुक्षम अरु अस्थूल ॥२०॥
नितानन्द बिन पारखू, कदे न दीजै लाल।
जब मिलैंगे पारखू, पल में करैं निहाल ॥२१॥
संत पारखू करत हैं, हीरा का व्योहार।
नितानन्द बिन पारखू, चले जन्म सभ हार ॥२२॥
नितानन्द बिन पारखू, हीरा कदे न खोल।
जब मिलसी कोई पारखू, लेगा महंगे मोल ॥२३॥
नितानन्द हर पुर चलो, बांध गांठ में लाल।
पारख सेती पाइये, सत गुरु करैं निहाल ॥२४॥

नितानन्द पारख बिना, सभै पशु नर नार।
जब मिलैंगे पारखू, तब हर विभव अपार ।।२५।।
पारख पावें लाल की, संत जौहरी कोय।
नितानन्द पारख बीना, चले जन्म सभ खोय ।।२६।।
नितानन्द कोई संत जन, पावे खोजै लाल।
और सभ रीते रहैं, बिन पारख कंगाल ।।२७।।
आप परम गुरुदेव जी, हम पर रहो दयाल।
भवसागर की लहर से, मुझको लेहु निकाल ।।२८।।
महाराज तुम राखलो, हम को चरण निवास।
नितानन्द की बन्दगी, रहों तुम्हारे पास ।।२९।।

(इति पारख का अंग संपूर्णम्)

## 卐 निन्दा निषेध का अंग ५१ 卐

नितानन्द निन्दा बुरी, पापों की सरदार।
पकड़ चलावै नरक को, निश्चय करो विचार।।१।।
जो प्राणी निंदा करैं, वृथा धरी नर देह।
मानव अपनी खांड में, आन मिलाई खेह।।२।।
निदंक नर नान्हा खरा, अवगुण करै असंख।
राम नाम जानै नहीं, टूट पड़ी मत पंख।।३।।
संतन की निंदा करै, डरै नहीं अज्ञान।
नितानन्द कलि में नहीं, निंदक सा शैतान।।४।।
निन्दक पक्का निर्दयी, करै बचन की चोट।
संत स्नेही राम के, जिन में काढ़ै खोट।।५।।
निन्दक पक्का निर्दयी, चला धर्म को त्याग।
साधू के दिल हर बसै, जहां लगावै आग।।६।।
निन्दक जमपुर को चला, निन्दा के संग लाग।
ज्यों जहाज पर बैठ कर, फंसा समुद्र में काग।।७।।
कामी क्रोधी लालची, दगाबाज़ बटमार।
उन में निन्दक यों दिपै, ज्यों दल में सरदार।।८।।
राम विमुख जेते मनुष, पापी अंध गंवार।
निन्दक सभ सेती सरस, ज्यों पैदल असवार।।९।।

निंदक सा साऊ नहीं, इस दुनियां के बीच।
धर्म २ ना छूवै, पाप २ ले खींच ॥१०॥
ज्यों निन्दक निन्दा करै, त्यों २ ऊजल होय।
नितानन्द तन रोग की, ऐसी दवा न कोय ॥११॥
निंदक जीवौ बहुत दिन, परमारथ के भाय।
साधां की निन्दा करै, आप नरक में जाय ॥१२॥
नितानन्द दिल में समझ, कर निन्दक से प्यार।
निन्दक बिन को ले चलै, पापों की बेगार ॥१३॥
नितानन्द सभ जगत में, निन्दक मित्र हमार।
बिन भाड़ै हाजिर खड़ा, लिये पोट पलदार ॥१४॥
मिठे लागैं मसकरे, फीके लगैं फकीर।
निन्दक दोजख़ जायंगे, चौरासी के तीर ॥१५॥
सभ निन्दक बिठलाय कर, दीजे नाव डबोय।
नितानन्द फिर किसी की, निन्दा करै न कोय ॥१६॥
निन्दक सा कोई नहीं, बुरा जगत के माहिं।
और बचैं तो बच रहैं, निन्दक दोज़ख जाहिं ॥१७॥
निन्दक नकटा दुनी में, दरगाह में स्याह।
नितानन्द तुम बच रहो, निन्दा बुरी गुनाह ॥१८॥
नितानन्द इस जगत में, निन्दक का मुख स्याह।
निन्दा दिल से दूर कर, निन्दा बड़ी गुनाह ॥१९॥

निन्दा कदे न कीजिये, होय जन्म की हान।
नितानन्द इस जगत में, निन्दक बेईमान ॥२०॥
निन्दा दिल से दूर कर, पातक गहरा होय।
जेते पाप सब जगत में, निन्दा सा नहीं कोय ॥२१॥
नितानन्द हर नाम भज, निन्दा दिल से त्याग।
निन्दा सा पातक नहीं, भाग सकै तो भाग ॥२२॥
जो नर निन्दा करत हैं, काला उनका मुख।
तीन लोक भरमत फिरैं, तऊ न पावें सुख ॥२३॥
निन्दा कदे न कीजिये, निन्दक सभ से नीच।
नितानन्द तुम बच रहो, सभ दुनियां के बीच ॥२४॥
नितानन्द इस जगत में, निन्दा करो न कोय।
चरण कमल की भक्ति बिन, भला कहां से होय ॥२५॥
निन्दा अपने जीव में, नितानन्द मत आन।
ज्ञान ध्यान सभ खोय कर, करे जन्म की हान ॥२६॥
नितानन्द निंदा बुरी, पापों की सरदार।
जन्म अकारथ खोय कर, निन्दक चाल्या हार ॥२७॥
नितानन्द इस जगत में, निंदा गहरा पाप।
मुख सों कदे न कीजिये, जपो चरण का जाप ॥२८॥
नितानन्द इस जगत में, निन्दा भारी पोट।
अस्तुति निन्दा सभ तजो, रहो चरण की ओट ॥२९॥

निन्दक सभ ही से बुरा, जेते जग में नीच।
ज्ञान ध्यान सभ खोय कर, चल्या नरक के बीच ।।३०।।
नितानन्द निन्दा तजो, निन्दा बड़ा विकार।
निन्दा कर बहुतक गये, जन्म पदारथ हार ।।३१।।
निन्दक काला मुख किया, सभी काल्मा माहिं।
साईं की दरगाह में, निन्दक पहुंचे नाहिं ।।३२।।
नितानन्द इस जगत में, निन्दक मेरा यार।
बांह पकड़ कर ले चला, जहां दर्श दरबार ।।३३।।
नितानन्द निन्दा बुरी, मुख से कदे न बोल।
निन्दा कर नहीं खोइये, मनषा जन्म अमोल ।।३४।।
कलजुग पहरा पाप का, निन्दक जिन में राव।
एक शब्द में घाल दे, सभ के अंतर घाव ।।३५।।
नितानन्द निन्दा बुरी, जिस में पाप अपार।
कोटिक निन्दक लूटिये, तो निन्दक सिर भार ।।३६।।
नितानन्द सभ जगत में, निन्दक का मुख स्याह।
अपने मुख से मत करो, निन्दा बुरी गुनाह ।।३७।।
नितानन्द इस मुख से, निन्दा सभ की त्याग।
अस्तुति निन्दा दूर कर, राम चरण से लाग ।।३८।।
निन्दा विन्दा दूर कर, सदा राम गुण गाय।
निन्दक सा पापी नहीं, गुरु कहैं समझाय ।।३९।।

जेते पाप जगत करै, सो सभ निन्दा माहिं।
नितानन्द निन्दा तजैं, सो सभ चरण समाहिं ।।४०।।
निन्दा दिल से दूर कर, निन्दक नरकों जाय।
नितानन्द तुम मत करो, जब लग पार बसाय ।।४१।।
निन्दक नकटा जान ले, नितानन्द दिल माहिं।
अस्तुति तजि निन्दा करै, वै दोजख को जाहिं ।।४२।।
नितानन्द सभ पाप का, निन्दक है बादशाह।
निन्दा सी पूंजी नहीं, इस जग मांहि गुनाह ।।४३।।
निन्दक जेते जगत में, सभ दोज़ख को जांहि।
इत के हुए न उतके, कहीं ठिकाना नांहि ।।४४।।
निन्दा कदे न कीजिय, जिस में पाप असंख।
साहेब को सुमरै नहीं, फूट गये दोउ अंख ।।४५।।
निन्दा कदे न कीजिये, निन्दा मोटा पाप।
पकड़ चलावै नरक को, जपने दे नहीं जाप ।।४६।।
नितानन्द निन्दा बुरी, अपने दिल से त्याग।
इस दुनियां की कैद से, भाग सकै तो भाग ।।४७।।
निन्दा दिल से दूर कर, राम चरण में चाल।
और जगत अवसर मरे, निंदक मरैं अकाल ।।४८।।
नितानन्द निन्दा तजो, छूट जाहिं सभ पाप।
राम चरण से लग रहो, मिलैं, निरंजन आप ।।४९।।

निंदक पापी सदा का, करे कुमति दिन रैन।
निदंक जांहिगे नरक में, संतन को सुख चैन ।।५०।।
निन्दा कदे न कीजिये, सदा चरण मन लाय।
नितानन्द सभ जगत में, निन्दक जमपुर जाय ।।५१।।
निन्दा कदे न कीजिये, निन्दा सा नहिं भार।
मनषा देही पाय कर, निन्दक चाले हार ।।५२।।
नितानन्द जब लग बनै, निन्दा कीजै नाहिं।
जो कोई निन्दा करे, वही नरक को जाहिं ।।५३।।
नितानन्द इस जगत में, निंदक बेईमान।
एक पलक में बोर दे, सभ ही जगत जहान ।।५४।।
निन्दक की संगत बुरी, कबहूं कीजै नाहिं।
निन्दा सा पातक नहीं, समझ देख मन माहिं ।।५५।।
निन्दा कदे न कीजिये, निन्दा सेती भाज।
नितानन्द की बांह गह, राख ल्यो महाराज ।।५६।।
जेते निन्दक जगत में, सभ साहेब के चोर।
नितानन्द उन से भले, कूकर सूकर ढोर ।।५७।।
परम गुरु की मेहर से, निन्दा को कर दूर।
निन्दक सा पापी नहीं, निन्दक के मुख धूर ।।५८।।
जेते निन्दक जगत में, सभी नरक को जाहिं।
निन्दक कदे न तर सकैं, इस दुनियां के माहिं ।।५९।।

अस्तुति में लाहा घना, टोटा निन्दा माहिं।
नितानन्द सभ जगत में, निन्दक खोटा खाहिं ।।६०।।
निन्दा दिल से दूर कर, निन्दा पक्का दाग।
निन्दक जग में जलैंगे, सदा नरक की आग ।।६१।।
निन्दा भारी भार है, निन्दा मोटा पाप।
निन्दा पैंडा नरक का, नितानन्द ना पाक ।।६२।।
निन्दा कर निन्दक मुए, गये जन्म को हार।
निन्दा ही में पच मरै, एसे अंध गंवार ।।६३।।
साहेब से दिल लाय कर, निन्दा कीजै नाहिं।
जो कोई निन्दा करैं, वही नरक में जांहि ।।६४।।
राम रतन को छोड़ कर, निन्दा करी अघाय।
जन्म पदार्थ हार कर, बंधा नरक में जाय ।।६५।।
जो कोई निन्दा करै, सोई निन्दा जाय।
चौरासी में जायगा, जब मूरख पछताय ।।६६।।
इस जग में जेते मनुष, निन्दक सभ से नीच।
ज्ञान ध्यान सभ खोय कर, चल्या नरक बीच ।।६७।।
निन्दा कदे न कीजिये, निन्दक नरकैं जाय।
ज्ञान ध्यान सभ खोय कर, पड़ा २ पछताय ।।६८।।
नितानन्द हर भजन कर, निन्दा दिल से त्याग।
निन्दा करैं सो जलैंगे, इस दुनियां की आग ।।६९।।

नितानन्द इस जगत में, निन्दक मेरा यार।
हम को हलका राख कर, आप धरे सिर भार ।।७०।।
निन्दा कदे न कीजिये, निन्दा सा नहीं पाप।
नितानन्द जग में जलैं, निन्दक आपै आप ।।७१।।
नितानन्द हर चरण भज, निन्दा कीजै नाहिं।
निन्दक पापी सदा के, जग में आवैं जाहिं ।।७२।।
निन्दक चौरासी गया, भक्त चरण सुख माहिं।
बिना शरण भगवान की, कहीं ठिकाना नाहिं ।।७३।।

(इति निन्दा निषेध का अंग संपूर्णम्)

## 卐 दुनियां निरवैर का अंग ५२ 卐

मेर तेर सभ ही जलै, लगी सिंधु में आग।
क्या कहनी भगवान से, रतन जलै संग लाग।।१।।
नितानन्द इस जगत में, वैरी कोई नाहिं।
वैर विरोध न कीजये, रहो चरण की छाहिं।।२।।
बैर विरोध न कीजिये, रहो चरण की औट।
नितानन्द नहीं लागसी, जम जालिम की चोट।।३।।
नितानन्द इस जगत में, सभ पर रहो दयाल।
वैरी कोई है नहीं, भजो चरण गोपाल।।४।।

नितानन्द नहीं कीजियो, काहू सेती बैर।
प्रीत रीत नहीं छांड़िये, दिल दुनियां से फेर।।५।।
नितानन्द जब लग गिनै, कोई बैरी कोई मीत।
तब लग राम न पाइये, माया ही की जीत।।६।।
दया सभी पर कीजिये, तजिये बैर विरोध।
जो चाहै दीदार को, उलट आप में सोध।।७।।
नितानन्द इस देह में, साहेब का दीदार।
पावेंगे कोई संत जन, तत्व विचारनहार।।८।।
देह धरैं सो सभ दुखी, सुखी न कोई एक।
पुत्र दुखी बन्धु दुखी, धन के दुखी अनेक।।९।।
नितानन्द इस जगत में, सभ से रहो निरबैर।
चरण कमल से लाग कर, करे महल की सैर।।१०।।
जब लग साहेब ना मिलै, मिटै न बैर विरोध।
नितानन्द बैरी नहीं, लिया आप में सोध।।११।।
साधू का मत ऊजला, सभ पर रहे दयाल।
राम चरण नहिं छोड़िये, लगे न काल अकाल।।१२।।
नितानन्द इस जगत में, नहीं कीजियो बैर।
चरण कमल के आसरै, दिल दुनियां से फेर।।१३।।
नितानन्द जग जाल में, आन पड़ा ये जीव।
फंस गया बैर विरोध में, कहां उन्हों को पीव।।१४।।

(इति दुनियां निरवैर का अंग संपूर्णम्)

# 卐 सुन्दर का अंग ५३ 卐

नितानन्द सुन्दर सखी, करै धनी का ध्यान।
पीव पिछाना पुर्वला, कदे न सुमरै आन ॥१॥
नितानन्द सुन्दर कहै, सुनो स्नेही संत।
तू मिलिया कारज सरै, नातर प्रान तजन्त ॥२॥
नितानन्द सुन्दर भई, कंथ परम गुरु देव।
राख लेहगें चरण में, ऐसे अलख अभेव ॥३॥
अंतरयामी परम गुरु, हम पर रहो दयाल।
हम अपराधी जन्म के, तुम लालन के लाल ॥४॥
नितानन्द हैं कैद में, पड़ा तोक गल बीच।
चरण सरन में राख लो, पकड़ निकालो खींच ॥५॥
नितानन्द सुन्दर सखी, कहै कंथ से बात।
कंथ बिना क्या जीवना, भ्रमत फिरूं दिन रात ॥६॥
नितानन्द सुन्दर सखी, पीव बिना बेहाल।
मिलो सबेरी आय कर, साहेब दीन दयाल ॥७॥
साहेब मेरा सबल है, मै अबला बल हीन।
चेरी तेरे चरण की, सभ बातों आधीन ॥८॥

(इति सुन्दर का अंग संपूर्णम्)

## 卐 उपजन का अंग ५४ 卐

नाम न जानूं गाम का, चलूं रैन दिन धाय।
पीछे पांव चलै नहीं, तो पहल सरन लग जाय।।१।।
नितानन्द त्यारन तिरन, साहेब दीन दयाल।
राखो अपने चरन में, जब छूटे जग जाल।।२।।
नितानन्द त्यारन तिरन, तुरत प्रकासन ज्ञान।
उपजै लहर विज्ञान की, पावे पद निर्बान।।३।।
उपजै प्रीत दयाल की, नितानन्द घट माहिं।
एक पलक की मेहर से, सभी भरम मिट जाहिं।।४।।
नितानन्द इस देह में, किस बिधि उपजै ज्ञान।
साधू संगत हर भक्ती, और गुरूओं का ध्यान।।५।।
नितानन्द घट में खुलैं, जब ही ज्ञान कपाट।
उपजै प्रीत दयाल की, लखैं ब्रह्म की बाट।।६।।
नितानन्द हर याद कर, आपा देह मिटाय।
परम गुरु की मेहर से, समझ २ गुण गाय।।७।।

(इति उपजन का अंग संपूर्णम्)

## 卐 कस्तूरिया मृग का अंग ५५ 卐

बन बन मृग ढूंढत फिरे, काया माहिं सुबास।
नितानन्द जाने नहीं, साहेब सभ के पास।।१।।

कस्तूरी तन में बसै, मृगा ढूंढै घास।
ऐसे गुरु के ज्ञान बिन, सभ जग फिरै उदास।।२।।
मृगा भ्रमैं उजाड़ में, काया माहिं सुगन्ध।
नितानन्द यह सकल जग, ऐसे गुरु बिन अन्ध।।३।।
कस्तुरी कुण्डल बसैं, मृग ढूंढै बन मांहि।
ऐसे घट २ राम है, गुरु बिन पावे नाहिं।।४।।
बन २ ढुंढ़त क्या फिरैं, रे मन मृग अज्ञान।
साहेब तेरी देह में, तूही फिरै अनजान।।५।।
साहब तेरे पास है, रे मन मृग अचेत।
राम चरण से लग रहो, क्या ढूंढ़त है खेत।।६।।
साहेब तेरी देह में, तू ढूंढ़ै जग माहिं।
नितानन्द हर चरण भज, तौ पावे हर माहिं।।७।।

(इति कस्तूरी मृग का अंग संपूर्णम्)

## 卐 निगुणा का अंग ५६ 卐

निगुणा कदे न गुण गहै, जो गुण कीजै लाख।
यथा जवासा मेंह की, कदे न गावै साख।।१।।
निगुणा कदे न गुण गहै, जो गुण करै किरोर।
नितानन्द इस जगत में, निगुणा मनुष कठोर।।२।।

निगुणा के गुण कीजिये, कदे न मानै एक।
जिस की जैसी बाण है, सो क्यों भूलै टेक।।३।।
नितानन्द सभ जगत में, निगुणा मानूष है नीच।
ज्ञान ध्यान सभ खोय कर, फंस गया दलदल बीच।।४।।
निगुणा के गुण कीजिये, सभ ओगण हो जाय।
सगुणा के जो गुण करै, लेवै सीस चढ़ाय।।५।।
गुणवंता कै गुण करै, तौ गुण मानै लाख।
निगुणा कै जो गुण करै, तुरत मिलावैं खाक।।६।।
सुका खुन्डर मूढ़ नर, नहीं नवन की चाल।
नितानन्द जो खींचिये, टूट जाय तत्काल।।७।।
केता कैह समझाइय, मूर्ख तजै ना आंट।
नितानन्द हर क्यों मिले, लगी गांठ पर गांठ।।८।।

(इति निगुणा का अंग संपूर्णम्)

## 卐 बीनती का अंग ५७ 卐

मात पिता तुम को गिना, कुल कुटुम्ब परिवार।
नितानन्द कै एक तुम, निराकार आधार।।१।।
ना कुछ किया न कर सकूं, एक तुम्हारी आस।
नितानन्द है बंध में, कीजो बंध खलास।।२।।

भवसागर में बूडते, गहो नाथ मम बांह।
नितानन्द को राख लो, चरण छतर की छांह।।३।।
चरण कमल का आसरा, चरण कमल आधार।
चरण कमल की मौज में, राखो अपरम पार।।४।।
यही दान मांगू सदा, भक्ति प्रेम सतसंग।
क्षमा शील श्रद्धा लिये, रहै तुम्हारा रंग।।५।।
तुम दाता हम मंगता, दया सिधु दातार।
भक्ति भीख नित दास, को दीजै बारंबार।।६।।
अधर धार अवगत अटल, अमर अनंत अपार।
नितानन्द की बीनती, सुनियों बारंबार।।७।।
नितानन्द पर मेहर कर, परम गुरु महाराज।
रख प्रतिज्ञा इष्ट की, अब तुम ही को लाज।।८।।
विषम बाट सलता सबल, आसा नदी उतार।
नितानन्द गहरे पड़ा, तुम को करै पुकार।।९।।
चरण कमल की शरण से, हमें न कीजै दूर।
नितानन्द पर मेहर कर, हे साहेब भरपूर।।१०।।
करणी का किरका नहीं, अवगुण बहुत अपार।
नितानन्द को बख्श लो, समरथ सरजन हार।।११।।
काम क्रोध के बस पड़े, हुए चाकरी चोर।
सो तुम से छानी नहीं, अवगुन लाख किरोर।।१२।।

झूठ कपट छल छिद्र में, रचे रहैं निशि जाम।
कदे न सुमरा प्रीत से, अंतरयामी राम ॥१३॥
तुम ठाकुर सभ जगत के, सभी तुम्हारे हाथ।
जित भावैं तित ले चलो, हे अनाथ के नाथ ॥१४॥
जो तुम त्यारो तो तिरां, मारो तो मर जाहिं।
नितानन्द हाजिर खड़ा, हुकुम तुम्हारे माहिं ॥१५॥
अपराधी सब से अधिक, अधम अंध अज्ञान।
कृपा करो तो छूटिये, भव भंजन भगवान ॥१६॥
नितानन्द गोविन्द जी, अर्ज करां कर जोड़।
जन्म मरन भव फन्द की, बंध हमारी तोड़ ॥१७॥
सकल ताप शीतल करण, शरण तुम्हारी राम।
नितानन्द तुम चरण को, पल २ करै प्रणाम ॥१८॥
त्रिविध रोग खण्डन करन, संकट हरण दयाल।
नितानन्द पर रीझियो, बारंबार कृपाल ॥१९॥
जो सेवक खोटी करै, साहेब रूसै नाहिं।
राम समाई के धणी, बहुत चूक मुझ माहिं ॥२०॥
सदा संगाती जीव के, अब के ल्योहु उभार।
बसो हमारी सुरत में, निराधार आधार ॥२१॥
पलक माहिं परगट हुए, गज की चढ़ी गुहार।
काट फन्द गोविन्द अब, नितानन्द की बार ॥२२॥

नितानन्द गोविन्द जी, अर्ज करां कर जोड़।
जो तुम छोड़ो हाथ से, कौन निबाहै ओड़ ॥२३॥
भक्ति भीर भंजन सदा, चिदानन्द भगवान।
नितानन्द आया शरण, करै चरण का ध्यान ॥२४॥
नितानन्द तुम्हारी शरण, करन करावन हार
केशो हरण कलेश के, कर भवसागर पार ॥२५॥
महाराज मालिक महल, मन मोहन महबूब।
नितानन्द पर मेहर कर, तुम ही खूबां खूब ॥२६॥
हम कुछ कदे न कर सके, अब कुछ किया न जाय।
करन करावन एक तुम, पुरुष निरंजन राय ॥२७॥
तुम से साहेब बीसरे, किये पाप हम घोर।
आदि अंत और मध्य में, रह्यो तुम्हारो चोर ॥२८॥
हमरे अवगुन जो गिने, छुटै न कई जन्म।
जो तुम त्यारो राम जी, पलक न लगे बिलम्म ॥२९॥
मोह अनाथ के तुम बिना, और न दूजा कोय।
नितानन्द चरनन लग्या, जो कुछ होय सो होय ॥३०॥
उतरे पुतरे जगत में, अैबदार बिसयार।
नितानन्द को तुम बिना, को राखै करतार ॥३१॥
उतरे पुतरे जगत के, तौ दास तुम्हारे।
सरन पड़े अवगुन भरे, हम कुटिल करारे ॥३२॥

कामी कूकर कलयुगी, विषयी हत्यारे।
नितानन्द के सभ गुनाह, तुम बकसन हारे ।।३३।।
नितानन्द सभ से बुरा, कहलावे तेरा।
पत बाना की राख ले, सुन साहेब मेरा ।।३४।।
काची मत मोह अंध की, साची कर लीजै।
सदा रहो हर हिये में, ये कृपा कीजै ।।३५।।
भाव भक्ति का खोल दो, भूधर भण्डारा।
नितानन्द को पाइये, दीदार तुम्हारा ।।३६।।
निरखे जुग २ जोत को, तज त्रिगुण पसारा।
परा भक्ति मन मिल रहै, बिन विषय विकारा ।।३७।।
राता माता राख लो, चरणों का चेरा।
नितानन्द की बीनती, हर सुनो सवेरा ।।३८।।
मन गुनाह पल २ करै, तन की यही रसूम।
नितानन्द का बस नहीं, साहेब तुझे मालूम ।।३९।।
एक तुम्हारे आसरै, एक तुम्हारी आस।
एक तुम्हारे चरण में, नितानन्द का बास ।।४०।।
टूक काज घर २ फिरैं, मंगत हमरी चाल।
सभ जीवों से उतरता, नितानन्द कंगाल ।।४१।।
क्रोध मोह अहंकार में, रचे रहां निशि जाम।
नितानन्द से पतित को, पार उतारो राम ।।४२।।

आलसवंत क्षुध्यार्थी, और चाकरी चोर।
रोम २ अवगुण भरे, तन मन निपट कठोर।।४३।।
जिब्भा स्वादी तामसी, अवगुण गिनती नाहिं।
तुमसे साहेब बिछड़िया, फंस्या जगत के माहिं।।४४।।
पड़त फन्द मोह अन्ध में, चढ़ो गुहार मुरार।
चरन सरन तक तिर गये, मोसे पतित अपार।।४५।।
अपने बल छुटूं नहीं, टेरूं बारम्बार।
नितानन्द पर मेहर कर, सरन पड़े न बिडार।।४६।।
कठिन धार संसार की, तुम्हीं उतारो पार।
नितानन्द कैसे निबह, लग्यो झार पर झार।।४७।।
बार २ बिनती करूं, साचे सरजन हार।
भव सागर में बूड़ते, नितानन्द कूं त्यार।।४८।।
बार २ कै कूकणौं, कबहूं सुनो पुकार।
नितानन्द की बीनती, त्यार २ मोहिं त्यार।।४९।।
गह्यो आसरो आन कर, चढ़े तुम्हारी नाय।
नितानन्द की अर्ज सुन, अबकै पार लंघाय।।५०।।
वोही बचन निम्भाइयो, जो तुम राख्यो बोल।
नितानन्द द्वारे खड़ा, अबकै पड़दा खोल।।५१।।
नितानन्द तुम सरण है, हे साहेब बलवंत।
काम क्रोध मद लोभ को, मार करो भसमंत।।५२।।

नितानन्द को चरण में, राखों दीन दयाल।
मेट हमारे दुख को, साहेब करो निहाल।।५३।।
नितानन्द पद सरन में, साहेब सुन्दर नूर।
चरण कमल की छांह में, राखो सदा हजूर।।५४।।
चरण कमल कै आसरै, और नहीं आधार।
नितानन्द भव सिंध से, पकड़ उतारो पार।।५५।।

(इति बीनती का अंग संपूर्णम्)

## 卐 बेली कुबेली का अंग ५८ 卐

जड़ आकाश जामी धरन, मध्य किया विस्तार।
नितानन्द जो काटिये, तो फल लगै अपार।।१।।
आगे पावक पर जलै, पीछे भरा समन्द।
नितानन्द सींचे दुखी, जारि दिये आनन्द।।२।।
नितानन्द इस बेल का, अचरज रूपी खेल।
जरी जराई जुगहुं की, उठी कौंपल मेल।।३।।
नितानन्द वर्षा बिना, चढ़ै बेल आकास।
जो जल बर्षे अति घना, दिन २ होय उदास।।४।।
काया कड़वी बेलड़ी, जन्म मरन फल होय।
इस बेली के गुनहुं को, समझै विरला कोय।।५।।

नितानन्द हर भक्ति बिन, काया बेल कुबेल।
राम नाम को छोड़ कर, सदा करै बद फेल।।६।।
नितानन्द बिष की भरी, कड़वी काया बेल।
लाख बार जो पेलिये, खल में कहाँ फुलेल।।७।।
नितानन्द इस बेल में, अवगुण है गुण नाहिं।
गुणवंती जब होयगी, पकड़ चरण की छाहिं।।८।।
नितानन्द हर चरण में, आठ पहर लौ लाय।
काया कड़वी बेलड़ी, बहुर मीठी हो जाय।।९।।
नितानन्द इस बेल से, कदे न प्रीत लगाय।
महाराज के चरण में, रहो निरंतर छाय।।१०।।
लिपटी काया वृक्ष से, सो सभ बेल कुबेल।
नितानन्द नेह काम हो, पद विदेह में खेल।।११।।

(इति बेली कुबेली का अंग संपूर्णम्)

## 卐 पखा पखी का अंग ५९ 卐

पखा पखी को छोड़ दो, पखा पखी में काल।
नितानन्द निरंबध की, निपट नवेली चाल।।१।।
पख ले भूल्या जगत सभ, चल्या झूट के साथ।
समुद्र माहिं रीता रह्या, रतन न आया हाथ।।२।।

बहुत दिवस हम खो दिया, पखा पखी से लाग।
नितानन्द सतगुरु मिले, तब हम उठे जाग।।३।।
निर्पख हो हर को भजे, जिन की बुद्धि विशाल।
जीवन मुक्ता कर लिया, साहेब दीन दयाल।।४।।
दावा दिल से दूर कर, दावे दाझन होय।
नितानन्द कर बंदगी, रहे जगत खसबोय।।५।।
निरदावा हो मगन रह, दावा दूर निवार।
नितानन्द कर बन्दगी, ये दुनियां दिन च्यार।।६।

(इति पक्षा पक्षी का अंग संपूर्णम्)

## 卐 बेहद का अंग ६० 卐

हद्द तजो बेहद गहो, रहो चरण में छाय।
नितानन्द इस हद्द में, दुनियां गोता खाय।।१।।
नितानन्द साकार से, निराकार हो जाय।
हद्द छोड़ बेहद गया, काल कौन को खाय।।२।।
छुटा भरम शरीर का, पाया तत्व विदेह।
बेहद के बाज़ार में, नितानन्द का गेह।।३।।
वर्ण विवर्जित अतन तन, द्वन्द हद्द से दूर।
पांच तत्व गुण तीन के, परै निरंजन नूर।।४।।

हद में पीव न पाइये, बेहद्दी बारीक।
नितानन्द उस घर गये, जहां फरक फारीक।।५।।
जेते प्रानी हद्द के, तिन से प्रीत न लाय।
नितानन्द बेहद्द से, मिलिये दुई मिटाय।।६।।
अपनी २ हद्द में, हिन्दू मुसलमान।
नितानन्द साधू बसैं, बेहद के मैदान।।७।।
अगम धाम बेहद्द को, सकल हद्द के जीव।
चर्म दृष्टि चित भंग नर, कहां उन्हों को पीव।।८।।
न्यारा सुक्षम स्थूल से, रहे निरंजन लाग।
नितानन्द पश्चिम गया, पूर्व दिशा को त्याग।।९।।
हद्द माहिं हर ना मिलै, बेहद प्रगट मिलाप।
हद बेहद की गत लखी, हो गया आपै आप।।१०।।
हद्द माहिं हर ना मिलै, बेहद तजै न संग।
मिली हद्द बेहद्द में, हर २ जन इक रंग।।११।।
नितानन्द फारिग हुआ, देखा ला मकान।
मिटी खराबी हद्द की, मेहर करी शुभहान।।१२।।
हद्द खराबी खवाब है, बड़ा भरम भै भीत।
नितानन्द बेहदपुरी, चश्म खोल चल जीत।।१३।।
नितानन्द बेहद्द है, परम गुरु महाराज।
और सभी जग हद्द में, करता काज अकाज।।१४।।

हद्द माहिं सभ ही जगत, बेहद पुर में संत।
अमरपुरी आनन्द से, सदा भजैं भगवन्त ॥१५॥
नितानन्द हिन्दू नहीं, मुसलमान भी नाहिं।
दिना चार की सैल कर, फेर अमरपुर जाहिं ॥१६॥
महाराज बेहद्द तुम, सभी जीव हद माहिं।
कृपा करके राख लो, चरण कमल की छाहिं ॥१७॥
जो पहुंचा उस देस में, सभ का एक विचार।
नितानन्द जो बीच के, पड़े उड़ावें छार ॥१८॥
उन की एकै जात है, लगे चरण की सेव।
झीमर की क्या सम्पदा, नारद के गुरुदेव ॥१९॥
एक विष्णु की सम्प्रदा, जेते भक्त अपार
अपनी २ हद्द में, खैंचै मुगद गंवार
दीनबन्धु दरियाव दिल, दयासिन्धु दातार
नितानन्द दरवेश को, प्रीतम मिले मुरार

(इति बेहद का अंग संपूर्णम्)

# 卐 कबेली का अंग ६२ 卐

बकरी न लकड़ी लिई, दिन्हा सिंह विडार।
समुद्र माहीं चरती फिरे, गुरु गम भेद विचार।।१।।
नितानन्द बिन मुल तर, धरती लगे ना आये।
तीन लोक में उग रहा, साधू कह समझाये।।२।।
जिस तरवर मच्छली चढ़े, सतगुरु दिई चढ़ाये।
खान न देवे और को, आपे भोग लगाये।।३।।
तनधारी मोटा मिंही, सब कोई फल खाये।
बिन खाये कोई ना रहे, या को अर्थ बताये।।४।।

(इति कबेली का अंग संपूर्णम्)

दोहा : प्रथम भाग पूरा भया, सत्य सिद्धान्त प्रकाश
प्रिय पाठक पढ़िये मुदित, सहित प्रीत विश्वास

सेठ रामरच्छपाल जी जिनकी
सहायता से यह पुस्तक छपी

# 卐 द्वितीय भाग 卐

दोहाः- द्वितीय भाग आरम्भ है, यामंह वस्तु अनेक।
ब्रह्म स्तोत्र बाराहखड़ी, गुरु बन्दना विशेश।।१।।
तिलक मन्त्र छप्पय अरल, कवित शब्द बहुरंग।
गज़ल कवाली रेखता, होरी मंगल संग।।२।।
पंञ्जाबी और पूरबी, मारवाड़ क चाल।
हेली हेला शब्द अति, वर्णत ग्रन्थ रसाल।।३।।
राग अनेक प्रकार के, ज्ञान जांगड़ा तीन।
बारह मासा आदि सब, पाठक पढ़ो प्रवीन।।४।।

## 卐 ब्रह्म स्तोत्र 卐

छः चौ.-सुमर निरंजन देव, सर्व देवन के देवा।
सुर नर देवी देव, अलख को लखे न भेवा।।१।।
ज्योति रूप भगवान, पुरुष प्रानन को दाता।
पूरण परम निधान, ज्ञान विज्ञान विधाता।।२।।
कमल नाम के मध्य, आदि नारायण स्वामी।
सब जीवन के जीव, सकल घट अन्तर्यामी।।३।।

अलख ईश जगदीश, सकल जल थल में पूरन।
व्यापक ब्रह्म अगाध, अजन्मा निकट न दूरन।।४।।
सनकादिक सुखदेव, और नारद मुनि ज्ञानी।
धरैं ध्यान दिन रैन, सर्व भवनन के प्रानी।।५।।
ब्रह्मा शंकर शेष रुद्र, नित ध्यान लगावै।
गुणातीत गोविन्द, त्रिगुण की दृष्टि न आवैं।।६।।
धरती जल और तेज, पवन और गगन प्रकासं।
तारागण रवि चन्द, सकल चरणन के दासं।।७।।
तपी मुनीश्वर ऋषी, सर्व हर चरणां धावैं।
सिद्ध समाध लगाय, पार तेऊ ना पावैं।।८।।
दो०- चतुर्वेद चक्रित भये, कथ २ कहैं अपार।
नितानन्द गुण का कहे, अवगत अधर अधार।।९।।
छ. चौ. ज्यों अकाश में सर्व, और सब माहिं अकाशा।
घट २ रमता राम, तास में होत बिलासा।।१०।।
चेतन ब्रह्म सजोत, सुन्य निबहै जड़ माया।
जल में जथा तरंग, ब्रह्मतर की जग छाया।।११।।
दृष्ट मुष्ट से दूर, बुद्धि मन की गम नाहीं।
पर वह सब ही माहिं, और सब ही ता माहीं।।१२।।
चरम दृष्टि ते सके न, निरख कोई जग प्रानी।
रूप न रेख न रंग, अंग सरवंग विनानी।।१३।।

अलग रह सो चन्द, पवन लगै हिलै सो नीरम।
परमात्म अलिप्त, परलै उत्पत्ति शरीरम ।।२४।।
यद्यपि आप अलिप्त, बहुर आपै करतारं।
भरता हरता आप, जगत गुरु सिरजनहारं ।।२५।।
अलख निरंजन देव, और दूजा ना कोई।
गुणातीत निर्लेप, आप ही सरगुण होई ।।२६।।
दो०- सभै रंग आपै रंगै, बहु रंगी नेह रंग।
अनमिल सो होय मिल रह्यो, नितानन्द सभ संग ।।२७।।
छ.चौ.- जो कुछ दरशै दृष्ट, स्थूल सूक्षम आकारा।
करै गुप्त से प्रगट, आप अवगत करतारा ।।२८।।
प्रथम ज्योति प्रकाश, फेर बिस्तारी माया।
सत रज तम उपजाय, सर्व कौतुक दिखलाया ।।२९।।
धरती स्वर्ग पताल, चन्द सूरज और तारा।
पानी पवन अकाश, तेज अष्टा दल भारा ।।३०।।
शीत ऊष्ण और मेघ, आन वर्षा बरसाई।
धूप छांह दिन रैन, सृष्टि बहु रंग बनाई ।।३१।।
पशु पक्षी नर नार, भूत और प्रेत बनाए।
देव दैत्य जल जन्तु, और थल में उपजाए ।।३२।।
मूल बेल बन राय, वृक्ष फल फूल अनन्ता।
अन गिन गिने न जाये, विश्व व्यापक भगवन्ता ।।३३।।

थिर चिर कीट पतंग, भृंग पप्पील विहंगा।
कच्छ मच्छ और दच्छ, फेन बुद बुदा तरंगा ।।३४।।
मोती हीरा लाल, लोह कंचन कर दीन्हा।
हंस गरुड़ और काग, स्वात चात्रक लौलीना ।।३५।।
दो०- अति अपार रचना रची, कारीगर करतार।
पलक माहिं सब कर धरै, खोल गुप्त भण्डार ।।३६।।
छ.चौ.-जीव जन्तु उपजाय, संग आहार बनायो।
सब को दे पहुंचाय, अन्न जल उदर समायो ।।३७।।
सूक्ष्म स्थूल शरीर, जिते लघु दीर्घ प्रानी।
गिरवासी गिर मांह, जिते जल थल उद्यानी ।।३८।।
कुंजर को मन देत, और कन कीड़ी ताईं।
सब ही की सुध लेत, नहीं बिसरे सो गुसांईं ।।३९।।
भरे गोप भण्डार, अघट अनगिणात न टूटैं।
कछू वार नहीं पार, करे बेअन्त अनूठैं ।।४०।।
जो प्राणी जेहि जोग, देत ताको हर सोई।
वही देत सब लेत, और दाता नहीं कोई ।।४१।।
जो कोई अज्ञान, मान आनै मन माहीं।
हम ही द्रव्य उपाय, कृत कर करतब खाहीं ।।४२।।
रह्या गर्भ दश मास, तहां कहां द्रव्य कमायो।
जहां कृत कियो कौन, और कुछ संग न लायो ।।४३।।

आपे अलख अपार, एक सभ की सुधि लेवे।
लख चौरासी मांह, तिन्हें बिन मांगे देवे ।।४४।।
दो०-कई कोट ब्रह्माण्ड हैं, बनी सृष्टी बहु रंग।
सब ही नित पोखे भरै, ऐसी बुद्धि अभंग ।।४५।।
छ.चौ.-जो चाहे सो करे, कहीं त्यारै कहीं मारै।
रीते को ले भरे, भरे रीते कर डारै ।।४६।।
पर्वत को कर चूर, धूर ज्यों तुरत उड़ावै।
तृण ले पर्वत करै, नूर में नूर दिखावै ।।४७।।
थल को करे समुद्र, आन जल भरे अनन्ता।
सातव सिन्धु सुखाम करै, छिन में भसमन्ता ।।४८।।
जित कंचन के भवन, जहां ऊजड़ कर डारै।
ऊजड़ लेत वसाय, तहां फेर कंचन ढ़ारै ।।४९।।
करे मूढ़ कूं चतुर-चतुर मूर्ख कर देवै।
देत अन्ध कूं ज्ञान, ताही तीनों पुर सेवै ।।५०।।
नृप कूं कर कंगाल, घरै घर भीख मंगावै।
मंगत के सिर छत्र धार, नृप कर दिखलावै ।।५१।।
ब्रह्मा इन्द्र मुनीन्दर, जन्म और मृत में फेरै।
करे कीट को देव, जाय सुरलोकहीं हेरै ।।५२।।
पण्डित वेद पढ़न्त, पकड़ चोरासी आनै।
पापी पतित अनन्त, तिन्हें पारंगत ठानै ।।५३।।

दो० अमर मार मृतक करे, मृतक लेत जिवाय।
अन होनी होनी करै, होनी देत मिटाय।।५४।।
छ.चौ. ऐसी बल बेअन्त, सर्व जग की ठकुराई।
ता पर छिमा अनन्त, बूझ बुझै अधकाई।।५५।।
जो नर भान्ति हिए धरै, मिले ताकूं तिस अंगा।
दर्स पाय उर लाय, मुक्त कर राखै संगा।।५६।।
जो ईश्वर कर भजै, ताहि ईश्वर पद देवै।
जीव शिव हो जाय, अमर अवचल कर लेवै।।५७।।
जो जन कहे कि पिता, पुत्र को एक ही देहा।
ताको अंग लगाय, पुत्र सम करै स्नेहा।।५८।।
जो कोई कहे कि, एक जाति मेरी और बाकी।
लेवै जात मिलाय, बात मानै प्रभु ताकी।।५९।।
सखा भाव धर भजे, कहे सो सखा हमारा।
ताह सखा कर लेत, संग ते करे न न्यारा।।६०।।
अंश भाव कर भजे, ताही नित अंशी जानै।
एक रूप कर लेत, आप सो नाहीं पिछानै।।६१।।
जो जीव धरे कि मोहिं, ओही में भेद न कोई।
परमात्मा सुँ भिन्न, आत्मा कदे न होई।।६२।।
दो०- ता पर प्रभु दयाल होय, करे जोत में जोत।
सेवक करे बराबरी, प्रभु बराबर होत।।६३।।

छ.चौ. जो समझे निज ज्ञान, एक सर्वंग गुसाईं।
आपे साहेब दास, और दूजा को नाहीं ॥६४॥
चेतन सब ही माहिं, और जड़हू नहीं न्यारा।
सब कुछ रह्या समाय, पिण्ड ब्रह्माण्ड पसारा ॥६५॥
जलहि बुद बुदा होय, नीर पाला बन जावै।
नाम रूप मिट जाय, नीर का नीर रहावै ॥६६॥
जथा मृतका माहिं, भये भाजन बहुतेरे।
चपटा सरवा गोल, नाम धर किए घनेरे ॥६७॥
हुती मृतका आदि, अंत पुनि माटी होई।
मध्यहु नाहीं आन, ज्ञान जो समझे कोई ॥६८॥
जथा कनक से किये, बहुत आभूषण अपारा।
सो कंचन तिहुं काल, नाम बहु न्यारा न्यारा ॥६९॥
ऐसे सब ही ब्रह्म, आप माया हो खेला।
उठ उठ मिटें तरंग, अन्त हर सिन्धु अकेला ॥७०॥
बाजीगर कर ख्याल, सर्व बाजी उपजाई।
पल में धरे उठाय, आप एकै रह जाई ॥७१॥
दो०-निज स्वरूप नित अटल है, निरलिप्त सब माहिं।
नाम रूप जग स्वप्न में, हो हो मिट मिट जाहिं ॥७२॥
छ.चौ.-चेतन जड़ को एक भ्रम, आनै यह कोई।
तऊ बहु है चेतन, जड़ तिहूं काल न होइ ॥७३॥

पै जड़ चेतन माहिं नहीं, चेतन से न्यारा।
जैसे होय न दूर, सूर से दिन उजियारा।।७४।।
मकरी तार निकार, तार संग जैसे खेलै।
बहुर लीन कर जाय, तार आपन में मेलै।।७५।।
ऐसे जो उत्पन्न, अन्त सब परले होई।
सूक्ष्म और स्थूल, रूप गुण रहे न कोई।।७६।।
गुणातीत सरवंग, मध्य सब एकम एका।
नाना रूप बनाय, भाव भ्रम नहीं अनेका।।७७।।
आदि अन्त भगवन्त, और दूजा नाहीं कोई।
जो कुछ मध्य उपाध, भ्रम कर मानो सोई।।७८।।
निराकार आकार धार, सब ही हो खेला।
सब मिट आपे रहे, ब्रह्म चैतन्य नवेला।।७९।।
यह विचार उर धार, एक ही सर्वस जानै।
दुविधा मूल निवार, भ्रम नहीं मन में आनै।।८०।।
दोहा- नहीं द्वैत अद्वैत बिन, वही त्रिकाल वर्तन्त।
विविध भांति आकार धर, एकै भयो अनन्त।।८१।।
छ.चौ.-पै गत अगम अगाध, कृपा बिन लहे न कोई।
बचन बुद्धि मन चित्त, जहां प्रवेश न होई।।८२।।
मति बुधि निस्तम रूप, ब्रह्म दिन यथा उजासं।
जहां कर्म की बन्ध, तहां नहीं मुक्ति निवासं।।८३।।

जहां सुखन का बास, तहां दुख कैसे जावै।
जहां उपजे प्रेम, नेम की बात न भावै ।।८४।।
जब प्रभु होय दयाल, सर्व वानक बन आवै।
द्वैत दृष्ट मिट जाय, आप आपन में पावै ।।८५।।
इतना ही अज्ञान, ब्रह्म को जग कर मानै।
देखे भ्रमत नैन, सर्व को भ्रमत जानै ।।८६।।
जथा दृष्ट के रोग, गगन में दो ससि देखै।
नैन हुए निर्दोष, सर्व परमातम लेखै ।।८७।।
यों देहा अहंकार, रोग से लोचन मूधे।
आंजै अंञ्जन ज्ञान, होत सूधे के सूधे ।।८८।।
मिटे तिमर अज्ञान, बहुर दूजा नहीं कोई।
एकम एक सर्वंग, नीर पाला गलि होई ।।८९।।
दोहा- अग्नि ज्ञान तन काठ से, मथ के लई उपाय।
जथा अग्नि हो तेज में, तथा ब्रह्म हो जाये ।।९०।।
छ.चौ.-जैसी शोभा अति अनन्त, बे अन्त बड़ाई।
तैसी नर कर सके, कौण बरणी नहीं जाई ।।९१।।
अवगत अगम अपार, पार पावै ना कोई।
अवर्ण को निज वर्णन, कौन विध वर्णन होई ।।९२।।
और न वर्णन होत, सर्व व्यापक भगवन्ता।
जो कुछ है सब वही, ब्रह्म बेअन्त अनन्ता ।।९३।।

कहां करे विस्तार, बुद्धि मन बचन न लागे।
जो कुछ कथै संभार, वस्तु आगे ते आगे ।।९४।।
कई कोट ब्रह्माण्ड, पिण्ड कई कोट अनन्ता।
हर पताल मध्य, शेष इन्द्र सुरपुर वर्तन्ता ।।९५।।
ब्रह्मलोक कई कोट, और ब्रह्मा कई कोटम्।
हर ब्रह्मण्ड त्रयदेव, नहीं बाजी का ओरम् ।।९६।।
हर ब्रह्मण्ड के शिव, विरञ्च बहु शारद नारद।
शेष महेश गणेश, कोट कई सुर नर चारज ।।९७।।
रोम २ में रसन लाय, अनभव नित गावै।
हर गुण अगम अपार, पार तेऊ नहीं पावै ।।९८।।
दो० रूम २ मुख करोड़ कर, मुख २ जीभ करोड़।
नितानन्द हर गुण कथे, कदे न आवै ओड़ ।।९९।।

(इति ब्रह्म स्तोत्र संपूर्णम्)

# 卐 बारह खड़ी 卐

दो०- ओंकार कुछ अजब है, सब जीवन का जीव।
वही गुरु चेला वही, वही नार वही पीव॥ १॥

वो अंग अलख अद्वैत, गुरु अमर जोगी, अगम धाम की राह बत्तावते हैं। उन्हों के चरण को नित्य प्रणाम कीजै, जिन्हों की शरण में सन्त सुख पावते हैं॥ स्वामी गुमानी दास जिस महल पहुंचे, सब ही सिद्ध और मुनि मन लावते हैं। नितानन्द गुरु सैन में नैन राखो, जहां अमी के समुद्र बह आवते हैं॥ २॥

दो०- कक्का कामन कनक की, कठिन करारी धार।
कंप गए सो कट गए, चढ़े सो उतरे पार॥ ३॥

कक्का कनक कामन दोऊ कठिन धारा, कोई लंघ गए सन्त बलवन्त भारी। करी अमर स्थान मिल अमर काया, जहां एक ही कवल में कला सारी॥ किया दृष्ट से दूर दर्शन दुलीचा, स्वामी गुमानी दास अनभव अटारी। नितानन्द उस सेज की अकथ बातां, जहां आप महबूब साहेब मुरारी॥ ४॥

दो०- खखा खवरां खूब की, कहे सुने सो खूब।
नितानन्द दिल खूब में, बसे रब्ब महबूब॥ ५॥

खखा खुशी की खबर तुझको सुनाऊं, तेरी देह में खास दीवान है रे। खिवें दामिनि बजें बेहद बाजा, ऊर्ध कमल के बीच स्थान हे रै॥ खुले नैन के नैन जब ईश पाया, स्वामी गुमानी नूर निशान है रे। नितानन्द के मन्त्र की मिटी रजनी, प्रगट शून्य में जगमगे भान है रे॥ ६॥

दो०- गगा गहरा अति घना, गरुवा और गम्भीर।
गुप्त प्रगट सूभर भरा, नितानन्द गुरु पीर॥ ७॥

गगा गहर गम्भीर अवगत गुसांई, कहीं गुप्त कहीं प्रगट घट २ समाया। अधर धार बिन भार करतार सांई सोई, एक ही बीज से जग उपाया॥ कई दीप कई खंड ब्रह्मण्ड केते थके, गुनी मुनी नहीं अन्त पाया। नितानन्द गुरु मिले स्वामी गुमानी, जहां गैब का चांदना नजर आया॥ ८॥

दो०- घघ्घा घट से नीकसी, निद्रा घोर अंधार।
घट २ दिवला देखकर, लग्या सुहंगम तार॥ ९॥

घघ्घा घोर निद्रा गई घट्ट सेती, मिल्या जुगों का बीछड़ा पीव प्यारा। घड़ी २ उत्साह आनन्द घर में सखी, तेज घन पाक दुल्है हमारा॥ हुआ श्वेत मन भंवर हर कमल पाया, किया दूर दिलदार ने दरद भारा। नितानन्द गुरु मिले स्वामी गुमानी, रहे रोशनी माहिं

दर्शन नजारा॥ १०॥

दो० - नन्नानगरी नूर की, निरंकार का राज।

नितानन्द नित मगन रह, सरे तुम्हारे काज॥ ११॥

नन्नानगरी निर्मली नूर की निरंकार राजा, नीके नूर के भवन में गमन कीन्हा। धरा नूर के तख्त पर नूर तकिया, सुन्दर·नूर का कन्त नौरंग भीना॥ नूरी नूर में मिले स्वामी गुमानी, निर्गुण नूर का अंग कुछ अजब झीना। नितानन्द उस नूर में नूर होवै, गह गुरुहुं के नूर की दूरबीना॥ १२॥

दो०-चच्चा चितवो चरण को, चिन्ता चित की खोय।

चिन्त्या मन की चेतकर, सदा सुखाला सोय॥ १३॥

चच्चा चेत कर लंघ चलो विषम घाटी, नितानन्द के चरण मस्तक चढ़ावो। चहुं कुट चौदा भवन कला चारों, चतुर बीस से अधर अनहद बजावो॥ चढ़े गुमानीदास चेतन चौकी, गुप्त दृष्टि सृष्टी से उलट ल्यावो, नितानन्द मस्तान बेगम पुरी को चल्यो जीत मैदान पद अमर पावो। १४॥

दो०- छच्छा छवि में छिक रहो, मिले छबीले पिव।

छाक छिपाई ना छिपे, ज्यों कपड़े में घीव॥ १५॥

छच्छा छाक में छिके सो छिपे कैसे, चढ़े चन्द आकाश जब नहीं छानी। छिपे नहीं आहार उद्गार लावे, करे रूप

का मान सुन्दर अमानी।। छहों ऋतु का भेद प्रत्यक्ष दर्शे, नहीं छीपे जहां प्रकट स्वामी गुमानी। नितानन्द मस्तान छवी छिके रहियो, कोई लाख कुछ कहो दुनियां दिवानी।। १६।।

दो०- जज्जा जग जगमग लगी, जहां पीव जहां जीव।
 जगत माह जगदीश यों, यथा दूध में घीव।। २७।।

जज्जा जगत ही मांह जगदीश है रे, जैसे काठ से अग्नि नहीं होय न्यारा। जहां अग्नि जहां जोत का संग वासा, समझ जोत से नाहीं नैन न्यारा, जज्जा ज्यों नीर के माहिं रस स्वाद सारा, तथा गुमानी राम का सब पसारा। नितानन्द यो जगत पति जगतहि में, खुले गुरों की मेहर से दर्श द्वारा।। १८।।

दो०- झझा झीने महल में, झलके सेज सुरंग।
 झिलमिल झिलमिल हो रही, आठों पहर अभंग।। १९।।

झझा झांकता सजन झिल मिल झरोखे, कई कोट सुन्दरी करें सेवा। झूमें झलक के अंग संग साधू, तपी सिध जोगी कहें देव देवा।। झीने महल के मंझ मंझार मस्तान आलम, बटे खुरदनी नुर की अजब मेवा।। नितानन्द सरवंग साहेब गुमानी, वही आप ही आप छाया क्या कहूं भेवा।। २०।।

दो०- नन्ना नित नेह चल किये, नवे नगर के चोर।
नितानन्द के शीश पर, नवल श्याम सिर मोर॥ २१॥
नन्ना नगर के चोर नित नवन लागे, नवल श्याम घर चाकरी हाथ आई। नवों द्वार भीतर गडा नेह झण्डा, निराकार की फिरै गढ में दुहाई। निरत सुरत निशान निर्वान पद के, अटल भक्त तलवार निर्भय उठाई। नितानन्द की तुरी पर दाग साचा हुआ, अलख की फौज में जगह पाई॥ २२॥
दो०- टट्टा टारे ना टलें, अटल सिपाहीं संत।
टिके भक्ती की टेक पर, जब टेरै भगवन्त॥ २३॥
टट्टा टले ना टेक सिर टूट जावो, भक्त टेक पर टिके मजबूत हैं रे। टाटी कपट की टूक कर फूंक दीन्हीं, आठों पहर अलमस्त अवधुत है रे॥ पटक लोक मर्याद अटके अटारी, उलट २ यही अस्तुति है रे। नितानन्द पट खोल के भेंटे गुमानी, जहां तहां अपरम अद्वैत है रे॥ २४॥
दो०- ठठ्ठा ठाकुर ठबकिया, गये ठगों से छूट।
ठहरे ठौड़ मरम की, जब गया काल सिर कूट॥ २५॥
ठठ्ठा ठगहु को ठबक ठाकुर विराजे, ठांव ठांव से निकस भागी ठगोरी। ठहरे बुद्ध मन चित पहुंचे ठिकाने,

ठगा ठगी की ठौर से तुरत मोरी॥ ठठी मेट कर ठाठ औरै बनाया, लगी शुन्य की शिखर पर सहज डोरी। नितानन्द गुरु मिले स्वामी गुमानी। जिन को मुक्त के महल की खुली पोरी॥ २६॥

दो०- डड्डा डूंगर डगमगे, डिगे धरणि आकाश।
सबै मण्ड जिस दिन डिगै, अडग रहें हरदास॥ २७॥

डड्डा डिगमगे खण्ड ब्रह्मण्ड डिगमग करै, पौन प्रचण्ड जब चले भारी। डिगे अण्ड ब्रह्मण्ड सुम्मेर डूंगर डिगै, काल के डण्ड थर हरे सारी॥ डिगे धरण आकाश नर देव दाना डिगै, अडग हुए एक कला धारी। नितानन्द उस रोज स्वामी गुमानी, सब सन्त मिल रहें सुख की अटारी॥ २८॥

दो०- ढ़ढ़ा ढिग ही ढूढ़ं ले, राम रतन के ढेर।
नितानन्द तन ढूंढ में, कई कोट सुमेर॥ २९॥

ढ़ढ़ा ढील मत करो ढूंढ़ो सबेरा, इसी ढूंढ़ में कई सुमेर हैं रे। ढूले चंवर नौ लाख इस ढूढ़ भीतर, मचै अजब कोतुक चहुं फेर है रै॥ ढोली लाय संग ही विराजे गुमानी, ढूंढो ढूढ में यही गुरु टेरं है रे। नितानन्द ढढोल दरयाव देही, हीरा लाल हर रत्न के ढेर है रे॥ ३०॥

दो०- राणा रण झूझा नहीं, सह्या न सन्मुख घाव।
नितानन्द किस विध हुए, अणी माहिं उमराव॥ ३१॥

राणा रणाहुं की कान में भनक पड़ती, जहां भजन के ताकते दाव हैं रे। टुकड़ खोर कणमंगा जन जना जाने नहीं, भक्त रण चढ़ण का चाव है रे। अणी जीत रण खंभ साहेब गुमानी, जिनको मिल गए लहर दरियाव है रे। नितानन्द दिल गैब के मुलक भीतर, सो तो हो रहे अटल उमराव है रे॥ ३२॥

दो०- तत्ता तीरथ तंत का, अठ सठ से उपरन्त।
तीन शुन्य त्रिर्गुण परे, तपे तेज भगवन्त॥ ३३॥

तत्ता त्रिगुण ते दूर तालिब तुम्हारा, तवक तेज तख्त सतगुरु बताया। तीरथ व्रत तप देहरा घोर तीनों लोक के तन्हों पर तपे माया। तके तुरी धन राज सुख भोग चाहे, इसी भ्रम में बहुत भोंदू भुलाया, नितानन्द तन परे तीरथ गुमानी, जहां जान महबूब का मुलक आया॥ ३४॥

दो० - थथ्था थावर अचर चर, हर पृथ्वी की थंभ।
थरप अस्थूल सूक्षम थरप, रचना रची असंभ॥ ३५॥

थथ्था थरपना थाप आपै गुमानी, तरह तरह के खेल दिखलावते हैं। थूनी थंम बिन धरण आकाश थाम्यां, जला बिम्ब सों जगत उपजावते हैं॥ थलहुमें जलहु में रची बहु रंग बाजी, वार-पार को कहीं नहीं पावते हैं। नितानन्द अथाह की थाह सोधै, सो तो बहुर भव सिंध

नहीं आवते हैं।। ३६।।

दो०- दद्दा दीन दयाल के, दरबार हुं का दीद।
अब दम २ दिल ला रहो, दस्तक हुई रशीद।। ३७।।

दद्दा दिली दरबार को देख दायम, दस्तगह दूर कीन्हीं परदपोश है रे। दिया दस्त के बीच गैबी खजाना, दुनियां दिल द्वन्द्व से फरामोश है रे।। दोनों दीन दरम्यान दर्शन गुमानी, आगै नहीं कुछ दुई अफसोस है रे। नितानन्द दुरबीन दीदार द्वारे, हर दम अमी प्याला करो नोश है रे।। ३८।।

दो०- धध्धा धुर का पहुंचना, अणीधार पर खेल।
सती सिंधेरा धर चली, यों धुन पर सिर मेल।। ३९।।

धध्ध ध्यान धर धनी से धुर लगाओ, धरो धीर धुर पहुंचना दूर है रे। धरी जुगहुं की बाट नौ लाख घाटी, मेरू दंड को लंघै कोई शूर है रे।। धजा गुमानी राम की अधर फरकै, जहां पहुंच नहीं सके भखभूर है रे। नितानन्द धर ध्यान उस महल पहुंचे, सो तो सजन के नूर में नूर है रे।। ४०।।

दो०- नन्ना न्यारा नाम से, किन्हों न देखा नैन।
नितानन्द को कह सके, गूंगे वाली सैन।। ४१।।

नन्ना नहीं कुछ नाम कोई गांव नाहीं, उलट आय कर किन्हो ना कही बातैं। निर्गुण जान लीन्हा हुआ साफ सीना, आगे कहन की नहीं तो कहुं कातै।। निकस नेह के कारणे देह जारी, पूछा सती को जली सीलक ताते। नितानन्द दीवार कह २ गुमानी, गूंगे से नहीं सैन दे गए पाते।। ४२।।

दो०- पप्पा पाला गल गया, पल में पलटा अंग।
पहली था सो हो रह्या, मिल्या रंग में रंग।। ४३।।

पप्पा प्रगट गुरु भान की घाम लागी, पाला पलट पल में गया होय पानी। पानी नाम पाया पिघला बर्फ माया, पीछे बर्फ की ना पाई निशानी। पारस परस ज्यूं लोह आपा मिटाया, रहे होय सरवंग कंचन गुमानी। नितानन्द आपा मिटे आप ही है, कहे आप ही अकह अपनी कहानी।। ४४।।

दो०- फफ्फा फल और भोग की, फिर क्या करनी आस।
फूल फकीरी साहेबी, कही गुमानी दास।। ४५।।

फफ्फा फलों की फेर पहरे न फांसी, रहें फूल फकीर निशि जाम हैं रे। फना फनी का फन्द जग जान लीन्हा, पीछें माल और मुल्क किस काम हैं रे।। फिरैं फरक फारीक तारीक देही करैं, महल बारीक

आराम है रे। नितानन्द बदफेल सब सफा कर के, लेते नफा बेहद पुर गाम हैं रे।। ४६।।

दो०- बब्बा बहु बरियां कहीं, बहुरि कहूं बहु बेर।
बिन्द वचन दोउ बस करो, यही गांठ सौ फेर।। ४७।।

बब्बा बिन्द ब्रह्माण्ड सारा बनाया बान्धै बिन्द ब्रह्मण्ड की खबर पावै। बता बदन ते जो रहैं बीत-रागा, चौदा तबक की बात बैठा बतावै। बाणी बुद्धि विवेक सत्या गुमानी, माया रंग से चित्त चोला बचावै। नितानन्द उस ब्रह्म बेगमपुरी में, सदा रहे महबूब महबूब गावै।। ४७।।

दो०- भभ्भा भग भारी नदी, सब जग दिया बहाय।
भवन २ में भख गई, भग बिन रहा न जाय।। ४९।।

भभ्भा भ्रम भयभीत भग जाल भारी, भूले देवता इन्द्र अवतार हैं रे। भोगी भस्म कर भखे भटकाय भव में, भवन २ भीतर भरी नार हैं रे।। भक्तन होय कर बहूत भक्ता भुलाए, भेषन भेषधारी किए ख्वार हैं रे। नितानन्द जहां संत साहेब गुमानी, करते हाथ जोड़ नमस्कार हैं रे।। ५०।।

दो०- मम्मा मोहन मीत से, मन उनमन कर लाय।
मन मोहन तन मुल्क में, मतलब दिया बताय।। ५१।।

मम्मा मन मुखी राह मन से उठाओ, मगन होय गुरु ज्ञान में तजो माया। मिले मध्य महबूब महरम मुरारी, भ्रम कर्म के मैल तज विमल काया॥ मुर्शद गुमानी राम मुकाम आला लगे, रंग में रंग दिन २ सवाया। नितानन्द मस्तान जग चेहरबाजी, वही एक अद्वैत अस्थिर बताया॥ ५२॥

दो०- यय्या यह मन रत्न है, याका मोल अमोल।
　　काया कंचन की पुरी, तामे करो किलोल॥ ५३॥

यय्या यही तन कनक का भवन है रे, यामे पांच पच्चीस ढिग धोवनी हैं। यामे नरक या माहिं बैकुंठ वासा, या में विकट घाटी कई क्षोहनी हैं॥ या में जुगहुं की डंग पल में उलंघै, या में गुप्त माया बहुत सोहनी हैं। नितानन्द या माहिं रमता गुमानी, जहां सिद्ध और मुक्त मन मोहनी हैं॥ ५४॥

दो०- ररा रमता राम को, रट दिन रात निशंक।
　　गुरु गुमानी कह दिया, राम नाम का अंक॥ ५५॥

ररा राव और रंक सब रमांराई, रमता राम ही अन्त ठहरायगा रे। खाखी की राह पर भूख भारी, जिसकी गांठ में होय सो खायगा रे॥ राता रंग दिन चार संसार सारा, रमातीत से बिछड़ पछतायगा रे। नितानन्द हर रत्न के रंग राता, सो तो रत्न में रत्न मिल जायगा रे॥ ५६॥

दो०- लल्ला लागें लाल से, वे लालन के लाल।
लाल गुमानी मिल गये, सतगुरु नज़र निहाल॥ ५७॥

लल्ला लाल को भूल कंगाल लागै, मिलै लाल तो सदा को लाल है रे। लिपटे रहो हरदम लगन लाल की में, उसीलाल का अजब कुछ ख्याल है रै। लाली देख जग रंग पर मत लुभावो, रोप्या लाल ने फन्द का जाल है रे। नितानन्द जब लाल पाये गुमानी, रहे लाल फिर काल पैमाल है॥ ५८॥

दो०- वव्वा वादै धरतरी, वादै पर असमान।
वादै रवि शशि चलेंगे, रहे आप रब्बान॥ ५९॥

वव्वा उर के बीच वादा बनाया, वही रोज सिर पर चला आवता है। उरले वार से रोयकर चलेगा रे, कदम २ जम त्रास दिखलावता है॥ वाकिफ होय कर वक्त सिर सुमर वाली, ऊक गय वार कहां पावता है॥ नितानन्द वादे पहल वतन पहुंचो, स्वामी गुमानी दास फरमावता है॥ ६०॥

दो०- शशा शब्द अतीत है, शब्द सहंसर धार।
शब्द निशानी गैब की, ज्यो मकड़ी का तार॥ ६१॥

शशा शब्द आकाश पाताल छाया, शब्द राग छत्तीस को गावता है। शब्द ब्रह्म के संग बहु रंग बाजी, शब्द

मन्त्र होय शक्ति उपजावता है॥ शब्द शास्त्र वेद से परे खेलै, शब्द गैब के बीच पहुंचावता है॥ नितानन्द यूं शब्द की रोशनी में, स्वामी गुमानी दास फरमावता है॥ ६२॥

दो०- षषा खोय न खुदी में, मोती कैसी आव।
खशबोई खूबी खुशी, वे महबूब गुलाब॥ ६३॥

षषा खुदी खर्च खूबी खरीदो, खूबी बीच कुछ खूब खुशबोय है रे। खानी खवानी खाक दरखाक खेलै, अमर दीखता नहीं कल कोय है रे॥ खता मत करो खूब की बन्दगी में, ऐसा वक्त फिर नहीं होय है रे। खूबीगंज खुशनूर साहेब गुमानी, सुमर यही मैदान यही गोय है रै॥ ६४॥

दो०- सस्सा सैन सती करै, जग से सुरत उठाय।
सिर साहेब को सौंपदे, सो उस घर को जाय॥ ६५॥

सस्सा समझ जगदीश को सीस सौंपै, चलो समझ के द्वार दीदार है रे। स्वप्नसाज धनराज और बादशाही, राव रंग सब एक दिन छार हैं रे॥ स्वामी गुमानीराम सरबंग ब्यापी, करैं पलक की झलक में पार है रे। नितानन्द उस नगर पहुंचो शिताबी, जहां बसै सतगुरु निरंकार है रे॥ ६६॥

दो०- हाहा हर हासिल हुआ, छूट गया मासूल।
नितानन्द की हाजरी, हरदम हुई कबूल।। ६७।।

हाहा हिये आनन्द हर रोज हाजिर रहे, हुकुम के बीच हाली मवाली। हासिल हुआ महबूब हर खूब खूबां, छूटा महसूल हरदम खुशहाली।। हुंडी पट गई हाट सतलोक की में, हरगिज़ होय ना फेर फांसिद खयाली। नितानन्द हमेश हीरा गुमानी, वही रह्या भरपूर साहेब जमाली।। ६८।।

(इति बारह खड़ी संपूर्णम्)

# 卐 गुरु वन्दन स्तोत्र 卐

नमो सद्‌गुरु परम स्वामी गुमानी, नमो सर्व सन्तन नमस्कार बानी। तुम्हीं चरण शरणं मम बुद्धि वालं, नमो गुरु दयालम् नमो गुरु दयालम्॥ १॥ अखंड अदंड प्रचंड प्रकाशं, अकाशं विकाशं सुवासं निवासं। अधारं मुरारं विशालं रसालं, नमो गुरु दयालं नमो गुरु दयालम्॥ २॥ नमो देव देवम् नमो गुरु अभेवम्, नमो गुरु अनूपं नमो सुख स्वरूपम्। नमों द्वन्दहर्ता सुकर्ता निहालं, नमो गुरु दयालं नमो गुरु दयालम्॥ ३॥ नमो पावनं करण करुणा निधानं तुम्हीं भक्ति दाता तुम्हीं जोग ज्ञानं। तुम्हीं जीवन मुक्त संयुक्त मालम्, नमो गुरु दयालं नमो गुरु दयालम्॥ ४॥ नमो निज पदं अनहदं निर्विकारं, नमो राम रमता रमातीत सारम्। नमो गहर गम्भीर निर्गुण गोपालम, नमो गुरु दयालम् नमो गुरु दयालम्॥ ५॥ नमो धुन अजप्पा नमो नाद तूरम, नमो सच्चिदानंद निर्वाण नूरम्। नमो सिन्ध आनन्द झलकन्त झालम्, नमो गुरु दयालं नमो गुरु दयालम्॥ ६॥ नमो गुरु परम जोत अद्वैतकारी,

नमो शील सागर नमो धर्म धारी। नमो ज्ञान विज्ञान जगमग उजालम्, नमो गुरु दयालं नमो गुरु दयालं।। ७।। नमो गुरु निरंकार ओवं अपारम्, नमो श्वासं सोहं सोहं नमो द्वारम्। नमो सर्व व्यापी अकाशं पतालम्, नमो गुरु दयालं नमो गुरु दयालम्।। ८।। नमो गुरु निगम नेत अवगत अटारी नमो जत सत्तम नमो ब्रह्मचारी। विध्वन्सन कलह कर्म कालं अकालम् नमो गुरु दयालं नमो गुरु दयालम्।। ९।। नमो गुरु परम गुरु अमर वास देवं, नमो गुरु निजानंद भेवान भेवम्। अखिल पिण्ड ब्रह्मण्ड कर्ता कुलालम्, नमो गुरु दयालं नमो गुरु दयालम्।। १०।। नमो गुरु निराधार नित्तं निशंका, निरालं निरविषम विभं बाट बंका। तुम्ही गुरु गुफा भंवर तुम बंक नालम्।। नमो गुरु दयालं नमो गुरु दयालम्।। ११।। नमो गुरु अडम्बर अगम गत अनन्ता, नमो भीर भंजन निरंजन निचन्ता। नमो हद बेहद सद गत संभालम् नमो गुरु दयालम् नमो गुरु दयालम्।। १२।। नमो गुरु जगत पति जगन्नाथ कृष्णाम्, नमो ईश जगदीश व्यापक विष्णाम्। पवन नीर पावक गगन धर गवालम्, नमो गुरु दयालम् नमो गुरु दयालम्।। १३।। नमो गुरु गगन मध्य मार्ग बिहंगा,

अधर धार भव पार दुतिया न संगा। नमो तेज झिलमिल सोहं सुढालं, नमो गुरु दयालम् नमो गुरु दयालम्।। १४।। नमो गुरु धजावन्त रिद्ध सिद्ध नाथम्, चतुर मुक्त चेरी फिरै चरण साथम्। तुम एकम् अनेकम् अलेखम् अचालम्, नमो गुरु दयालम् नमो गुरु दयालम्।। १५।। तुम्हीं गुरु कल्प वृक्ष तुम्ही कामधेनं, सकल कामना सिद्ध आनन्द चैनं। दरश देखकर होत कागा मरालम्, नमो गुरु दयालं नमो गुरु दयालम्।। १६।। स्वामी गुमानी चरण तिरण त्यारन, नगर तावड़ी नमस्ते बार बारम्। सकल सन्त शरणागति पग प्रछालम्, नमो गुरु दयालं नमो गुरु दयालम्।। १७।। भक्ति भाव पग प्रीत प्रतीत दीजै, ऋषिकेश जोगेश आदेश लीजै। नितानन्द भिक्षक भिखारी कंगालम्, नमो गुरु दयालं नमो गुरु दयालम्।। १८।।

(इति गुरु वन्दन स्तोत्र संपूर्णम्)

# ॐ तिलक मंत्र ॐ

साखी-तत्त तिलक त्रिगुण परै, हेमल हर दरियाव।
नितानन्द सिर धार कर, सदा मग्न गुण गाव।।१।।
तिलक बन्या जूग चार से, निन्दा करैं कपूत।
शुन्य माथा चण्डाल का, तिलक ब्रह्म अदूत।।२।।
सुन रे पंथ कुपंथिया, कहा तिलक में खोट।
तिलक साध की ढाल है, नहीं लगे जम चोट।।३।।
छप्पय-तिलक किए जम डरे, तिलक से विघ्न विनासै।
तिलक किए दुख टरे, तिलक से तेज प्रकाशै॥
तिलक साध का रूप, तिलक सब विध सुखदाई।
नवैं रकं और भूप, चढ़े मुख जोत सवाई॥
राम गुमानी कृपा कर, चरण कमल मस्तक धरे।
नितानन्द श्री परम गुरु, भव जल पारंगत करे।।१।।
ब्रह्मा कीन्हा तिलक, तिलक ले विष्णु बनाया।
शिव के मस्तक तिलक, तिलक वेदों में गाया॥
सनकादिक के तिलक, तिलक सोभै प्रहलादा।
ध्रुव के मस्तक तिलक, तिलक बिन तन बरबादा॥
स्वामी गुमानी तिलक कर, नितानन्द मस्तक दिया।
काल अकाल लागे नहीं, सन्तों का शरणा लिया।।२।।

निज मुख कहा कबीर, तासु गुरु रामांनन्दा।
मस्तक तिलक बनाय, मिले अवगत गोविन्दा॥
नामदेव रैदास, तिंलक कीन्हां हर दासा।
सुखदेव श्री भगवन्त, बचन भाषै मुख ब्यासा॥
नितानन्द गत तिलक की, अगम अगाध बताइये।
गुरु प्रताप सतसंग में, भाग बड़हुं से पाइये।।३।।
तिलक करै तो साध, तिलक बिन तुरक दिखावै।
तिलक बिना चंडाल, जगत में नीच कहावै॥
तिलक न करै चमार, और जेती चौरासी।
तिलक तजे गत होय ना, कटै क्यों उन की फांसी॥
मुरख निन्दैं तिलक को, कुबुध माहिं बूडे फिरैं।
कहैं नितानन्द रे प्रानियां, साध तिलक क्यों ना करैं।।४।।

(इति गुरु वन्दन स्तोत्र संपूर्णम्)

## 卐 छप्पय-कबित्त तथा अरल 卐

छप्पय-सतगुरु मिले दयाल, प्रेम प्याला भर प्याया।
दिए अमरपट खोल, मुक्त का महल दिखाया॥
सुने अनाहद नाद, आदि घर भया ठिकाना।
छूटे द्वन्द्व फसाद, काल ने किया पयाना॥
गुरु गुमानीदास जी, लहर मेहर मोटी करी।

नितानन्द की आत्मा, सदा अमर सूभर भरी।।५।।
गुरु तीर्थ निज धाम, खोज कीजे सतसंगा।
जिनके चरणो माहिं, कोटि काशी और गंगा॥
ज्ञान निर्मला नीर, न्हाय मन ऊजल कीजे।
सकल ताप मिट जाहिं, भक्त चरणामृत लीजे॥
एकै तीरथ तंत का, तासे भाव बड़ाइए।
नितानन्द सब द्वन्द्व है, भ्रम भ्रम क्या पाइए।।६।।
क्या कीजे गुरु भेंट, विभव पूरण दातारम्।
भक्त ज्ञान विज्ञान, प्राण सुख देत अपारम्॥
सत्य शील सन्तोष, त्याग वैराग बताया।
किए धूर से नूर, सकल में अलख लखाया॥
असंख जुगहुं की बन्ध से, फन्द काट मुक्ता करे।
श्री स्वामी गुमानीराम जी, नितानन्द सूभर भरे।।७।।
हृदय सो हीरा भोम, प्रेम पारस के पर्वत।
रत्न जड़त फूलवार, भार अठारा फल अमृत॥
भाव भक्ति की सुधा, सात सागर भर दीजै।
मणि माणिक जड़वाव, लाल लौं मन्दिर कीजै॥
तेज स्वरूपी नगर रच, करूं भेट गुरुदेव की।
नितानन्द सरवर नहीं, एक नाम निरंजन सेव की।।८।।
पाणी फूटी पाल, नीर नाहीं ठहराया।

सूख गया तन ताल, कमल सहजे कुमलाया ॥
हंसा भया उदास, .भंवर को गंध न पावै।
पंछी मिटै न प्यास, तहां काहे को जावै ॥
गुरु शब्द मानै नहीं, नहीं अंग सतसंग का।
नितानन्द उड़ जायगा, मूरख रंग पतंग का।।९।।
मिली हलद की गांठ, मूसटा भया पसारी।
खोटा पैसा हाथ, बना मन में व्योपारी ॥
पारख करे सराफ, मोल कौड़ी नहीं पावै।
पैंठ उठंती वार, फेर पीछे पछतावै ॥
नितानन्द तन नगर में, साचा सौदा ना किया।
झूठ कपट बदफेल का, और बोझ सिर पर लिया ।।१०।।
राम रतन के राह, कूड़ कौड़ी नहिं लावै।
लगे गजब की धौल, तीस के धक्के आवै ॥
जहमत पड़ कर लुटै, देवता भूत मनावै।
पापी नर का माल, पाप के मारग जावै ॥
साहेब लेखे ना लगे, साध नहीं व्यवसाहिंगे।
नितानन्द वे विमुख नर, दोजख़ पड़ पछताहिगे ।।११।।

(इति छप्पय)

कवित्त-द्वन्द्व बाज दोजख का दगड़ा, कर विचार मन ज्ञान गहो रे। बहते संग आप ना बहिए, रमता २ तत्व लहो रे॥ मर्द सोई जो आप उबारै, नामरदां ते कछु न कहो रे। नितानन्द गुरु चरण शीस धर, अवगत में गलतान रहो रे॥ १॥ दया धर्म और भजन बन्दगी, क्षमा धार दुर्वचन सहो रे। तू मिजमान रैन का बासी, रैन बास पर वृथा फवौ रे॥ पंछी प्राण पींजरा देही, उडै अचानक समझ रहो रे। नितानन्द गुरु चरण शीस धर, अवगत में गलतान रहो रे॥ २॥ दूर देश बालक की नगरी, अब के चूके कहां मिलो रे। ठहर न सके जरुर चालबो आलस माहीं जग उलझो रे॥ आशा नदी अथाह भंवर में, पड़ी जहाज कुछ जतन करो रे। नितानन्द गुरु चरण शीस धर, अवगत में गलतान रहो रे॥ ३॥ तन मन धन सन्मुख साहेब के, सुक्षम सेज धुन ध्यान धरो रे। तत्व विचार सम्भार सुहंगम, तवक तेज के चल पहंचोरे॥ दसमें द्वार उघार किवारी सजन निरंजन को निरखो रे। नितानन्द गुरु चरण शीस धर, अवगत में गलतान रहो रे॥ ४॥

अरल साखी

खाखी यह तन खाख, पाक से लाग रे।

तेरा अवसर बीत्या. जाय, सवेरा जाग रे॥
फना फनी के बीच, सकल संसार है।
अरे हां नितानन्द महबूब, मिलो तो पार है।।१।।
सूत्या पांव पसार, नींद अज्ञान में।
समझे नहीं गंवार, खुदी अभिमान में॥
तेरा जन्म जवाहर जाय, फेर कहां पाइये।
अरे हां नितानन्द महबूब, चरण चित लाइये।।२।।
धरे भार पर भार, हार माने नहीं।
करे पाप से प्यार, तार जाने नहीं॥
माया मोह कुटुम्ब, बिटम्ब विकार है।
अरे हां नितानन्द महबूब, खूब करतार है।।३।।
जो चाहो सो करो, साध नहीं निंदिये।
जिन पर खुशी खुदाय, उन्हों को बन्दिये॥
औगुण करैं जो लाख, गुणों कर गाइये।
अरे हां नितानन्द यह लक्षण, महबूब कृपा से पाइये।।४।।
हर दासों के बीच, निकासे खोट रे।
लिए फिरे अभिमान, पाप सिर पोट रे॥
वे बूड़ें काली धार, मनी मुरदार में।
अरे हां नितानन्द महबूब, वे नहीं सुहंगम तार में।।५।।
झगड़ा वाद क्लेश, चलन हैवान का।

करे दास से द्रोह, भूत शैतान का॥
जग की जूती खाय, सन्त से द्वन्द्व रे।
अरे हां नितानन्द महबूब, वै श्वान न होहिं गयंदरे।।५।।
वेश्या करे सिंगार, लगे अति सोहनी।
पैसे का परमोध, के भीतर धोहनी॥
दुनियां लई रिझाय, न रीझा राम रे।
अरे हां नितानन्द दिल बीच, सुमर हर नाम रे।।६।।
लोभ लहर ब्योपार, चलावै ब्याज रे।
वे साध धरावें नाम, न आवे लाज रे॥
चोरी जूआ लूट, माल मुर्दार है।
अरे हां नितानन्द न खाय, साहेब का यार है।।७।।
क्या दिखलावै जगत, बड़ाई मान है।
जिस पर रीझे यार, दूर वह ज्ञान है॥
विषया नर परमोध, करी दुक्कान है।
अरे हां नितानन्द महबूब, यह सब कलियुग का तोफान है।।९।।
जहां बहिस्ती नूर, पहुंच नहीं पवन है।
दृष्ट मुष्ट से दूर, दास का भवन है॥
और सब गन्दे लोग, पींजरा चाम को।
अरे हां नितानन्द महबूब, सिर धरो स्नेही राम को।।१०।।

(इति छप्पय कवित्त तथा अरल संपूर्णम्)

# शब्द

## 卐 मँगलाचरण शब्द १ 卐

राग विलावल गाइये सतगुरु जग तारन।
मंगल करन कलेश निवारन।।टेक।।
भव सागर में भक्ति जहाजा।
तारन तिरन परम गुरु राजा।।१।।
परम धर्म बुद्ध ज्ञान विधाता।
क्षमा शील जत सत के दाता।।२।।
दर्शन किए अघ रहै न नेरा।
ज्यों रवि ऊगै भगै अन्धेरा।।३।।
रिद्ध सिद्ध चरणों संग दासी।
मुक्त खड़ी दर्शन की प्यासी।।४।।
चौरासी से बन्ध छुटावन।
अजर अमर घर में पहुंचावन।।५।।
जिन के मिले होत सुख भारी।
अंतरगत की खुलै किवारी।।६।।
भरम निशा से लेत जगाई।
प्रगटै जगमग जोत सवाई।।७।।

स्वामी गुमानी गुरु सुखदाई।
नितानन्द के सदा सहाई।।८।।

## 卐 मंगल आरती शब्द २ 卐

मंगल आरती राम जी को प्यारी।
उपजी भक्ति भयो सुख भारी।।टेक।।
प्रगट्यो प्रथम प्रेम प्रभात, जन्म २ की मिट गई रात।
घट उजियारा सूझन लागा, भरम नींद से सोवत जागा।।१।।
मन मन्दिर परमात्म देव, करे आत्मा जुग २ सेव।
जगमग जोत भई चहुं ओर, सहजे गए नगर तज चोर।।२।।
सुरत सिंहासन समता सेज, तापर दिपै निरंजन तेज।
घण्टा झालर शंक मृदंग, अनहद बाजा बजै अभंग।।३।।
दीपक ध्यान भावना थाल, बाती पांच जुगत से बाल।
अन्तरगत में आरती होय, यह सुख देखै विरला कोय।।४।।
मंगल रूपी मिले मुरार, सब मिल गाओ मंगल चार।
मंगल दिया मंगल घर डेरा, घट २ दीखै साहेब मेरा।।५।।
मंगलमई गुमानी राम, मंगल करत अमर पुर धाम।
नितानन्द के जागे भाग; निर्भय रहे चरण से लाग।।६।।

## 卐 आरती शब्द ३ 卐

नमो निरंजन नमो निरंजन नमो निरंजन स्वामी।
तुम सदा विराजो मेरे उर में अवगत अन्तर जामी।।टेक।।
निरंकार निर्लेप निरंतर निर्गुण सर्गुण नामी।
चिदानन्द चैतन्य चहूं दिश परम गुरु परनामी।।१।।
सर्वंगी सम्पूर्ण सब घट संत्त रूप सुख धामी।
जगन्नाथ जगपति जगजीवन तुही कृष्ण तुही रामी।।२।।
व्यापक विष्णु विश्व बहुरंगी व्याप रहे सब ठामी।
अगम अपार अधर अविनासी अटल पुरुष वरयामी।।३।।
मन मोहन मनहरण मनोहर गुप्त गुरुड़ के गामी।
गुणातीत गोविन्द गुसाई निर्मल नित नेह कामी।।४।।
तेज पुंज पारस परमेश्वर तुम महबूब गुमानी।
नितानन्द झड़ लगे मेहर के हो रही आमीं आमीं।।५।।

## 卐 शब्द ४ 卐

हर हर जपता नाहीं रे। यह मन भयो दिवाना।
काम क्रोध मद लोभ मोह का घट ही में कुफराना।।टेक।।
बाहर बगुला ध्यान लगावै भीतर पाप समाना।
भला बुरा भीतर बाहर का साहेब से नहीं छाना।।१।।

सुर नर असुर ऋषीश्वर लूटे मुनियर मार गिराना।
जोगी जती तपी सन्यासी भूले भक्त ठिकाना।।२।।
प्रेम पंथ पग धरन न देवे तज्या ज्ञान और ध्याना।
कुमति कूप में यों ढर जावै जैसे नीर निवाना।।३।।
मन मुख पंडित मन मुख मुंडित मन मुख राजा राना।
नितानन्द जिस महल गुमानी गुरु मुख मारग जाना।।४।।

## 卐 शब्द ५ 卐

और बात कुछ काम न आवे, रमता सेती लाग रे।
क्या सोवे गफलत के माते, जाग जाग उठ जाग रे।।टेक।।
तन सराय में जीव मुसाफिर, करता रहे दिमाग रे।
रैन बसेरा कर ले डेरा, चलै सवेरा त्याग रे।।१।।
उमन्दा चोला बड़ा अमोला, लगैं दाग पर दाग रे।
दो दिन की गुजरान जगत में, क्यों जरे बिरानी आग रे।।२।।
कुबुध कांचली चढ़ी चित्त पर, हुआ मनुष से नाग रे।
सूझे नहीं सजन सुख सागर, बिना प्रेम बैराग रे।।३।।
हर सुमरे सो हंस कहावें, कामी क्रोधी काग रे।
भौंरा भरम ना विष के बन में, चल बेगम पुर बाग रे।।४।।
शब्द सेन सतगुरु की पिछानी, पाया अटल सुहाग रे।
नितानन्द महबूब गुमानी, प्रगटे पूरन भाग रे।।५।।

# 卐 शब्द ६ 卐

साधां को बादशाही, नित उठ साधां को बादशाही रे।
अगम धाम का अजब तमासा, बख्शा तख्त इलाही रे।।टेक।।
तकिया तेज मेहर की मसन्ड, फिरे छत्र दरगाही रे।
खुशी ख्वास नूर के नाजर, बेगम बेपरवाही रे।।१।।
लावें माल सभी सूबों का, गहें गनीम गुनाही रे।
काया महल हवस की हुर में, सन्मुख लिए सुराही रे।।२।।
आब हयात ने किया नियामत खाते शाम सुबाही रे।
अदल वज़ीर बन्दगी बख्शी, दम दीवान सलाही रे।।३।।
चेतन चोबदार दरवाज़े, करता अटक मनाही रे।
मन सहज़ादा नज़रबन्द कर, राखै संत सिपाही रे।।४।।
शैदी शब्द शहर का भेदी, कर न सकै कोताही रे।
खासे खान अमीर अरस के, लिये मरातब मांही रे।।५।।
दिल दिल्ली विच किला कदम का, चौदह तबक तबाही रे।
अजब ऐश हमेश रोशनी, यह सुख कहूं न काही रे।।६।।
नजर निहाल स्वामी गुमानी, सतगुरु बडे अचाही रे।
नितानन्द बेऐब गैब में, कीए अमर सदाही रे।।७।।

## 卐 तरज गजल शब्द ७ 卐

तेरे चरण से प्रीत लागी, दिल दिवाना हो रह्या।
अब सोचें कहो क्या बन आवे, लोकलाज सब खो रह्या ।।टेक।।
देखा निर्मल दरस तुम्हारा, जगत भोग से सो रह्या।
ब्रह्म बहार निहार चमन में, मन भौंरा खुशबो रह्या ।।१।।
महबूबां दे महल पहुंचकर, हाथ सीस से धो रह्या।
प्रेम प्याला दिया मेहर का, नहीं एक नहीं दो रह्या ।।२।।
अजब नूर महबूब गुमानी तुमरे गुण मन पो रह्या।
नितानन्द तुम हाथ बिकाया, नहीं संशय अब को रह्या ।।३।।

## 卐 शब्द ८ 卐

भक्त वत्सल भक्तन सुखदाई, अटल नाम मोरे हिय धरो।
जन्म मरण और गर्भ बसेरा, यह दुख मेरा दूर करो ।।टेक।।
लख चौरासी गहरी फांसी, तामें कई एक बार फिरो।
भवजल भेरा पार उतारो, पल २ औसर जाय टरो ।।१।।
अहो मुरारी शरण तुम्हारी, दरिया भारी देख डरो।
पतित उभारण वृद्ध तुम्हारो, दीन जान कर विपत हरो ।।२।।
राम गुमानी नूर निशानी, भाव भक्ती भंडार भरो।
चरण कमल में राख लीजिये, नितानन्द दरबार परो ।।३।।

## 卐 शब्द ९ 卐

जगन्नाथ जगजीवन जोगी, सकल जगत से न्यारा।
पोखै भरै करै प्रतिपालै, अवगत अगम अपारा।।टेक।।
शेष महेश रसना ले गावैं, तो भी लखैं न पारा।
शिव बिरंच नारद मुनि ध्यावैं, वेद पुराण पुकारा।।१।।
जठर अग्नि में देह उपावै, नित प्रति देत आहारा।
आपै सुध कर २ पहुंचावै, जेतिक जिव संसारा।।२।।
स्वर्ग पताल मृत मण्डल में, पसरो बहु विस्तारा।
सभ से दूर सभन को संगी, नाम रूप आकारा।।३।।
तुम अपार गुरु स्वामी गुमानी, हमरी कहां शुमारा।
दीन जान अपना कर लीजै, नितानन्द बलहारा।।४।।

## 卐 शब्द १० 卐

दरस देख दिल में छिके, संसार न भावै।
भव सागर भयभीत, फेर साहब नहीं ल्यावै।।टेक।।
रोम २ रटना लगी, महबूब सुहावै।
गूंगे ने गुड़ खा लिया, जब किसे बतावै।।१।।

गरक हुए दीदार में, कोई नहीं पावै।
मानसरोवर मिल गया, जहां हंसा न्हावै।।२।।
प्रीतम की छवि का छिका, मस्तान कहावै।
जो पहुंचै उस देस में, उल्टा नहीं आवै।।३।।
अनहद उपजै गगन से, तन तुर बजावै।
अगम धाम के चौक की, सतगुरु फरमावै।।४।।
नून नदी के नीर को, नित शिखर चढ़ावै।
अमृत के दरियाव में, आपै मिल जावै।।५।।
पांच पचीस परपंच से, मन पकड़ छुड़ावै।
सन्मुख बैठा नूर के, अनभव गुण गावै।।६।।
सुनै गर्ज ब्रह्मण्ड की, जमदण्ड उठावै।
अधर अधार मुरार के, आसन ठहरावै।।७।।
स्वामी गुमानी दास जी, पारस परसावै।
कंचन कर २ मोह्य को, दरबार दिखावै।।८।।
तेज पुंज जगमग करे, सुख सागर पावै।
नितानन्द घर अमरपुर, सतगुरु पहुंचावै।।९।।

## 卐 कवाली शब्द ११ 卐

फिरूं प्यासी दरश की मैं, कहां महबूब मेरा है।
मूझे सरता नहीं उस बिन, अगर पाऊं सवेरा है।।टेक।।
मुझे अलबत चलना है, पिया से जाय मिलना है।
बिना दीदार कलना है, कहां प्रीतम का डेरा है।।१।।
अंधेरी रनै कारी है, विरह बैरन हमारी है।
इसी से बेकरारी है, करो टूक आय फेरा है।।२।।
सजन तुझ बिन दिवानी मैं, रहूं निशि दिन निमानी मैं।
बिना दामों बिकानी मैं, चरण में दो बसेरा है।।३।।
पड़ी हूं कैद तेरी मैं, बहुत दुख आय घेरी मैं।।४।।
सदा दरबार चेरी मैं, छुड़ाओ जाल घेरा है।
कभी तो लाल पावेगा, तपन तन की बुझावेगा।।५।।
दरश सुन्दर दिखावेगा, रहे नैनों से नेरा है।।६।।
गुमानी लाल प्यारा है, नितानन्द तुम्हारा है।
इशक दरियाव भारा है, उतारो पार भेरा है।।७।।

## 卐 शब्द १२ 卐

जग त्यारन आई, सुखदायक गंगा।।टेक।।
सेवा करै सो मेवा पावै, साधन के सतसंगा।।१।।

जाकी लहर लगे अघ नासै, निर्मल हो सभ अंगा ।। २ ।।
राम नाम का बेड़ा बांधो, उपजै भक्ति तरंगा ।। ३ ।।
नितानन्द महबूब गुमानी, करो सकल भय भंगा ।। ४ ।।

## 卐 शब्द १३ 卐

हर प्रीतम से प्रीत लगा कर, अब क्यों जग में सोवै री ।
प्रभु बिसार भार सिर लीन्हा, जन्म अमोलक खोवे री ।।टेक।।
जो जागी सो चरणों लागी, जो सोवै सो खोवै री ।। १ ।।
अमृत अमर छोड़ कर बोरी, विषय बीज क्यों बोवैरी ।। २ ।।
ऐसी बेर फेर कहां पाइये, मूंड़ पकड़ कर रोवै री ।। ३ ।।
प्रेम नगर की डगर चले, जो प्रभु के गुण मन पोवै री ।। ४ ।।
येरी प्यारी मन मतवारी, रंग में रंग समोवै री ।। ५ ।।
चरण चन्द चित माहिं चेत कर, चादर क्यों ना धोवै री ।। ६ ।।
नितानन्द महबूब गुमानी, दिल बिच दर्शन होवै री ।। ७ ।।

## 卐 शब्द १४ 卐

सुख सागर प्यारे, हमरी शुद्ध लीजै ।।टेक।।
तन मन धन सभ पेश तुम्हारे, जो चाहै सो कीजै ।। १ ।।
छोड़ देहु तो जगह न कोई, बाहिं गहो तो धीजै ।। २ ।।

प्रेम की बून्द नैन झड़ लावै, सुरंग चुनरिया भीजै ।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, सन्मुख दर्शन दीजै ।।४।।

## 卐 आसावरी शब्द १५ 卐

महबूब हमारे बिलंमे हो, किस देशा ।।टेक।।
पन्थ निहारत बदन पलटिया, श्वेत भये सभ केसा ।।१।।
हुई वैरागन दर २ ढूंढु, हर प्रीतम किस भेसा ।।२।।
जिस नगरी मेरा साहेब बसदा, सो बेगमपुर कैसा ।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, मिलते रहो हमेसा ।।४।।

## 卐 शब्द १६ 卐

उठ शून्य सिखर को चाल, दिखाऊं तोहिं हर नगरी ।।टेक।।
जहां तुरिया पद निज धाम, लगी निर्गुण की झड़ी ।।१।।
पांचों रोक रही हैं बाट, मार्ग में जा पकड़ी ।।२।।
सतगुरु मिले गुमानीराम, भ्रम की फोरी गगरी ।।३।।
हुए नितानन्द गलतान, आत्म से देह बिसरी ।।४।।

## 卐 शब्द १७ 卐

ठाढ़े मतवारे दरबार तुम्हारे ।टेक।।
और ठौर कहीं जगह न हमको, मिलो निरंजन प्यारे ।।१ ।।
दुनियां दीन भिस्त नहीं भावे, जोग भोग से हारे ।।२ ।।
तीर्थ व्रत वेद मर्जादा, एकै बर सभ टारे ।।३ ।।
लोग कुटुम्ब बिटम्ब जगत सभ, बीच बसैं बटमारे ।।४ ।।
निर्गुण पीव जीव के संगी, तुम बिन सभी निकारे ।।५ ।।
प्रेम पियाला अगम उजाला, और सुख लागैं खारे ।।६ ।।
नितानन्द महबूब गुमानी, बिसरत नाहिं बिसारे ।।७ ।।

## 卐 राग बिलावल शब्द १८ 卐

जाग २ नर जाग सवेरा, मनषा जन्म मुक्त का डेरा ।टेक।।
पहले पहल समझ न आई, मात पिता से प्रीत लगाई ।।१ ।।
लोग कुटुम्ब बन्धु और भाई, बालापन यों गयो बिहाई ।।२ ।।
दूजे पहरे चढ़ी जवानी, त्रिया देख बुध सुध बौरानी ।।३ ।।
विषय बीज निर्भय हो बोया, तरुणा पन ऐसे कर खोया ।।४ ।।
तीजे पहरे लागी चिन्ता, मन इन्द्री डोलैं महमंता ।।५ ।।
काल बली सिर पर फरराया, मूरख चेत बुढ़ापा आया ।।६ ।।
चौथे पहर चलत जब रोया, हीरा जन्म हाथ से खोया ।।७ ।।
नितानन्द कुछ अजहूं चेत, राम गुमानी से कर हेत ।।८ ।।

## 卐 राग पुरवी शब्द १९ 卐

तोरे संग जागी मोरे मितवा तोरे संग जागीरे ।।टेक।।
तौरे संग जागत भोर भयलवा, मोरी अजहुं पलक नाहीं लागी ।। १ ।।
तोरे दर्शन की भिक्षा कारन, मोरे नैन भये वैरागी ।। २ ।।
स्वामी गुमानी नूर निरंजनवा, तोरे प्रेम रस पागी ।। ३ ।।
नितानन्द इस अंग संग मिल, मोरे दिल की उलफत भागी ।। ४ ।।

## 卐 रेखता शब्द २० 卐

सजन ये प्रेम की घाटी, निबाहो तो गुज़ारा है ।।टेक।।
कठिन मारग विकट चलना, नहीं तकवा हमारा है ।। १ ।।
अरस के चौक के भीतर, बजे बेसुर नगारा है ।। २ ।।
जहां मंसूर मस्ताना, अनलहक कह पुकारा है ।। ३ ।।
दिवाने लोग मरदाने, जिन्हों को खुश बहारा है ।। ४ ।।
गली साहेब कमालों की, मिले महबूब प्यारा है ।। ५ ।।
नजर गुलजार दिलवर से, दरश पा के नजारा है ।। ६ ।।
रहे क्यों होश तन मन की, अगर गह २ निहारा है ।। ७ ।।
गुमानी दास नूरी में, हुआ रहना हमारा है ।। ८ ।।
मेहर कर खोल दे परदा, नितानन्द विचारा है ।। ९ ।।

## 卐 शब्द २१ 卐

मुझे महबूब प्यारा है, उसी का सब पसारा है।।टेक।।
दिया दिल हाथ तेरे में, पड़ा हूं इश्क घेरे में।।१।।
सजन मेरा सजन मेरा, कहां जाऊं कहां पाऊं।।२।।
हुवा मस्तान फिरता हूं, मिलो दिल जान मरता हूं।।३।।
मिरी दारू मिरी दारू, दरश दीजै मेहर कीजै।।४।।
पिया के देश को चलना, गुमानी लाल से मिलना।।५।।
अरे दिलवर अरे दिलवर, नितानन्द तेरा बन्दा।।६।।

## 卐 तर्ज गजल शब्द २२ 卐

अरे बेखबर गवार, तुझे राम ना भाया।
इस गन्दगी के हौज से, दिल बहुत लगाया।।टेक।।
जामा किया नापाक, हवासों के मजे में।
इस नूरी अरवाह को, दरखाक मिलाया।।१।।
दरियाव की लहर में, दरूना ना लिया धोये।
उलटा किया गलीज़, ज़िगर दाग चढ़ाया।।२।।
दम २ उमर तेरी, चली जाय हाथ से।
ये गैब का खजाना, बेराह लुटाया।।३।।

गुमराह हो बदी में, खुश हो सिर दिया।
साहेब की गली छोड़कर, बद अमल कमाया।।४।।
दिलदार की मुहब्बत, करता न बेवकूफ।
तेरे दिल में है दीदार, सजन याद न आया।।५।।
कहते गुमानी दास, नितानन्द खबरदार।
चोला बड़ा अमोला, गुरु भेद बताया।।६।।

## 卐 तर्ज गजल शब्द २३ 卐

यह ख्वाब का तमाशा, क्यों भूलता है राम।
मादर पिदर बिरादर, चलते न आवे काम।।टेक।।
तू बेशहूर होकर, खोता है रात दिन।
कर बन्दगी शिताबी, यहां रहना नहीं मुदाम।।१।।
इस खाक के महल में, कोई दिन की ज़िन्दगी।
पीछे है वही राह सो, जाने मुलक तमाम।।२।।
नेकी के दम बिसार के, बदियों में दिल दिया।
करनी चलेगी संग में, खबर हो रही है आम।।३।।
मादर के सिकम बीच, किया कौल रब्ब से।
आया जगत के बीच, यहां हो रह्या गुलाम।।४।।
फांसी गुरों के संग में, रहना न एक दम।
समझै नहीं ज़रा, पीवै ज़हर का जाम।।५।।

चलना है तुझको दूर, समझ देख जीव में।
पहुंचे तो चल सबेरा, पीछे पड़ेगी शाम।।६।।
मरना खड़ा है सिर पर, सौ बात की एक बात।
इसी में तेरी खैर है, साहेब का सुमर नाम।।७।।
स्वामी गुमानी दास, नितानन्द से कहा।
पी नूर का प्याला, कर चरण में मुकाम।।८।।

## 卐 शब्द २४ 卐

परम गुरु दिया, मुक्ति का झण्डा,
जल जल मरैं पतित पाखण्डा, बेमुख बावन गण्डा।।टेक।।
निन्दक नुगरे नरक पड़ैंगे, बकते फिरैं बितंडा।
भोंस श्वान अभिमान भरें, बहु लोभी लंपट लंडा।।१।।
जग से मोह द्रोह भक्तन से, मोहतड़ा ले रंडा।
निपट हराम राम से झूठे, बसें डिम्ब पाखण्डा।।२।।
केतक दूत कपूत कुबुद्धी, देते दास को दंडा।
जन प्रहलाद प्रगट कर राखे, सोकर भंडक भंडा।।३।।
जोर जुलुम कर जाते देखे, जिन के बस ब्रह्मण्डा।
साध सताएं कौन सुख पाए, ऐरे मुगद मुसंडा।।४।।
गर्भ किया सो सरबस हारे, चेत २ निरबंडा।
जरासिंध कौरव दुरयोधन, पड़े नरक के कुण्डा।।५।।

हिरनाकुश शिषपाल लंकपति, जग में भये प्रचण्डा।
अहंकार कर मिले गरद में, पड़े भूमि पर पिण्डा।।६।।
अपने जन को ऐसे राखै, ज्यों विरही के अण्डा।
नितानन्द सुख सिंधु गुमानी, निश्चय विषय बिहंडा।।७।।

## 卐 होरी शब्द २५ 卐

मेरे मन बस गयो री, सुन्दर सजन सांवरो।।टेक।।
मन में तन में और नैनन में, रोम २ में छायो।
ज्यों काहू को डसे भुवंगम, ऐसो अमल चढ़ायो।।१।।
सकुचि लाज नहीं कुल की शंका, सर्वस आप लुटायो।
जब से सुनी प्रेम की बतियां, दूजो दृष्टि न आयो।।२।।
जित देखूं तित साहेब मेरा, दूजो नज़र न आवै।
जिन नैनन में रम्या रमइया, जग को जगह न पावै।।३।।
अचरज कैसी बात सखी री, मोहि अब कौन बतावै।
बूंद समंद्र को मिली समंद्र में, अब कुछ कहा न जावै।।४।।
जल में गई नून की मूरत, हो गई सर्वस पानी।
यों हर की छवि हेर २ कर, हेरन हार हिरानी।।५।।
गूंगे न इक स्वपना देखा, किस विध बोलै बानी।
सैन करै और मगन जीव में, जीन जानी तिन जानी।।६।।

जिन देखे महबूब गुमानी, सो भी भये गुमानी।
मैं जाती थी लाहे कारन, उलटी आप बिकानी।।७।।
को समझै ये सुख की बातैं, समझों से नहीं छानी।
नितानन्द अब कासे कहिये, पिव की अकथ कहानी।।८।।

## 卐 ठुमरी शब्द २६ 卐

लगी तेरे पांय राम, लीजै मेरी बन्दगी।टेक।।
चारों दिशा चेत कर चितियां, चिन्ता हरन मुरारी।
हम को ठौर कहूं ना पाई, ताकी शरण तुम्हारी।।१।।
भावैं मार भावैं त्यार गुसाइया, हम कुत्ते दरबारी।
अब कहाँ जाय खाय प्रसादी, पाया टूक हजारी।।२।।
सुख सागर बिच किया बसेरा, जब क्यों दुःख सतावै।
प्रमानन्द तेज घन स्वामी, करो कृपा जो भावै।।३।।
जिन की बांह गहो हित करके, उन को कौन डिगावै।
शरण आय जो जाय निरासा, तो तेरा विरद लाजवै।।४।।
हम को एक अधार तुम्हारा, और अधार न कोई।
जो जग ऊपर धरूं धारना, चलता दीखै सोई।।५।।
खिलैं फूल सोई कुम्हलावैं, फिर न रहै खुशवोई।
अब तो लगन लगी साहेब से, जो कुछ होय सो होई।।६।।

पड़दा खोल बोल टुक हंस कर, हे महबूब गुमानी।
घट पट खोल मिले तुम जिन से, अमर हुए वह प्रानी।।७।।
नितानन्द को दर्शन दीजै, दिल महरम दिल जानी।
तन मन धन सब करूं वारना, मैं दीदार दिवानी।।८।।

## 卐 ठुमरी शब्द २७ 卐

पीव क्यों ना लेवै, खबरिया हमारी।।टेक।।
निशि वासर मेरी पलक न लागे, बढ़ गई बेदन भारी।।१।।
आंगन भयो विदेस सखी री, प्रीतम लई अटारी।।२।।
मैला भेष उनमने लोचन, झुर २ हो गई कारी।।३।।
पलक २ मोहि जुग सम बीते, जब से नाथ बिसारी।।४।।
आप अगम पुर जाय विराजे, हम भव जल बिच डारी।।५।।
हम से चूक हुई या तुम ही चूके, मोहे मित्र मुरारी।।६।।
नितानन्द महबूब गुमानी, तुम जीते हम हारी।।७।।

## 卐 होरी शब्द २८ 卐

है कोई मन मूरख समझावे,
यों मन मुग्द कहा नहीं मानै, राम भक्ति नहीं भावै।।टेक।।
प्रेम की बाट पिछानै नाहीं, दसों दिशा उठ धावै।
भाव प्रीत गुरु ज्ञान कान तजि, जित बरजों जित जावै।।१।।

सत्य शब्द से सुख नहीं मानै, आल जाल उठि गावै।
जै धुन लाय ध्यान में राखूं, आतुर अति अकुलावै।।२।।
कबहूं चढ़ै अकाश शिखर को, दीर्घ देह बढ़ावै।
पल में होय पवन से पतला, ढूंढ़ रहूं नहीं पावै।।३।।
विषय विकार डार बगुलौं की, तिन का संग सुहावै।
मानक मान सरोवर त्यागै, भवजल गोता खावै।।४।।
माया के मध में महमन्ता, निसदिन द्वन्द मचावै।
निर्मल नाम अमर अमृत तज, यों ही जन्म गंवावै।।५।।
अस्थिर करत बहुत दिन बीते, चेतन घर नहीं आवै।
नितानन्द महबूब गुमानी, तुम बिन कौन छुटावै।।६।।

## 卐 राग गौरी शब्द २१ 卐

गुरु हम को पार लंघाओ जी,
त्रिविध ताप के फन्द काट कर, अपने चरण बसावो जी।।टेक।।
महा प्रबल ज्वाला तन की, सो तुम बरस बुझाओ जी।
अनेक जन्म के विघ्न निवारन, विष के द्वन्द नसाओ जी।।१।।
गर्भ अग्नि में राख लिये थे, हम से कहा दुराओ जी।
दिन २ आप जतन कर पोखे, साहेब अब न छिपाओ जी।।२।।
नितानन्द है दास तुम्हारा, हर हृदय में आओ जी।
स्वामी गुमनी नूर निशानी, सुख की लहर दिखाओ जी।।३।।

## 卐 राग गौरी शब्द ३० 卐

जब कोई राम भक्त गत पावै,
तन मन शीस ईश अपने को, पहली चोट चढ़ावै ।टेक।।
सतगुरु तिलक अजप्पा माला, जुगत जटा रखवावै ।
जत कौपीन सत्य का चोला, भीतर भेख बनावै ।।१।।
लोक लाज मरजाद जगत की, त्रिण ज्यों तोड़ बगावै,
कामन कनक जहर कर जानै, शहर अगम पुर जावै ।।२।।
ज्यों पतिव्रता पीव सों राजी, आन पुरुष नहिं भावै,
बसै पीहर में प्रीत प्रीतम में, यों जन सुरत लगावै ।।३।।
अस्तुति निन्दा मान बड़ाई, मन से मार गिरावै,
अष्ट सिद्ध की अटक न मानै, आगे कदम उठावै ।।४।।
आसा नदी उलट कर फेरै, आडा बंध बंधावै,
भव जल खार समुंद्र भीतर, फेर न फोड़ मिलावै ।।५।।
गगन महल गोविन्द गुमानी, पलक माहिं पहुंचावै,
नितानन्द माटी का मन्दिर, नूर तेज हो जावै ।।६।।

## 卐 राग गौरी शब्द ३१ 卐

पिया नेक चितौ हम चेरी रे ।टेक।।
तूं बेदरद दरद नहीं समझत, हम विरहन आघेरी रे ।।१।।

अन्तरयामी नाथ हमारे, कठिन प्रीत की सेरी रे।।२।।
सीतल सजन सर्व सुख सागर, मोह तन तप्त घनेरी रे।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, जनम जनम की चेरी रे।।४।।

## 卐 शब्द ३२ 卐

सतगुरु संत सुजान, तुम से नैन लगे हैं।।टेक।।
नूरी दिल हुशियार हजूरी, परम सुन्य में ध्यान।।१।।
आठ पहर अमृत रस बरषै, गगन महल मस्तान।।२।।
नितानन्द महबूब गुमानी, साहेब नूर निसान।।३।।

## 卐 शब्द ३३ 卐

क्यों कर मिलूं, पिया अपने को।।टेक।।
पिया विसर मोरी सुध बुध बिसरी, विथा बढ़ी तन तपने को।।१।।
भवन न भावै विरह सतावै, क्या करिये जग स्वप्न को।
दूखत देह नेह नहीं छूटै, माला ले रही जपने को।।२।।
बन २ ढुंढ़त फिरूं दिवानी, कहीं न ठौर पाई छिपने को।
नितानन्द महबूब गुमानी, को समझावै नपने का।।३।।

## 卐 तर्ज कव्वाली शब्द ३४ 卐

निभाओ प्रेम की घाटी, सजन हम से बिछुड़ना क्या ,
उठाओ बीच की टाटी, मेहर कर फेर फिरना क्या ।।टेक।।
विरह की चोट भारी है, नहीं जाती संभारी है।
जिगर बिच ताक मारी है, निभाई खूब यारी है ।।१।।
मेरा महबूब गुमानी है, दिलों का जान जानी है।
रटा पी २ पिरानी है, तुम्हीं से नाहिं छानी है ।।२।।

## 卐 शब्द ३५ 卐

हर बिन यहां नहीं कोई तेरा ।।टेक।।
हर्ष सोग और मान बड़ाई, झूठा सकल बखेरा।
तन मिजमान जान जग भीतर, चार दिनों का डेरा ।।१।।
माया मोह धोह की फांसी, यही काल का घेरा।
अजहुं चेत समझ कर अंधे, दुनियां रैन बसेरा।।
नितानन्द महबूब गुमानी, मिल ले सजन सबेरा ।।२।।

## 卐 शब्द ३६ 卐

हर हर जप ले बारंबार, अब तनै जन्म अमोलक पाया ।।टेक।।
काल बली तोहिं कबहुं न छोड़े, समझै क्यों न गंवार ।
साहेब संगी है बहु रंगी, सो तैने दिया बिसार ।।१।।

धोके की बाजी मत भूले, पड़सी मोटी मार।
भाई बंध और कुटुम कबीला, ये सब सिर पर भार।।२।।
चलती बरियां कोई न तेरा, बिना सरजन हार।
जगत भोग और मान बड़ाई, दिल से दूर उतार।।३।।
चले सबेरा उठसी डेरा, करले मीत मुरार,
प्रेम नगर बिच पैंठ लगी है, सौदा करो बिचार,
नितानन्द महबूब गुमानी, कर निर्भय दीदार।।४।।

## 卐 शब्द ३७ 卐

मनखा जन्म बिगारा, योह तैने सितम गुजारा,
काल बली तेरे सिर पर ठाड़ा, लिये जो मुगदर भारा।।टेक।।
बालापन और तरुण अवस्था, क्यों नहीं राम संभारा,
वृद्ध भया जब कोई न कबूले, सभही कहै निकारा।।१।।
मैड़ी मंडप छुट गये पल में, आन पौल बिच डारा,
साऊ थे सो भये तिहायत, लुटन लगा घर बारा।।२।।
धरे ढके को सब मिल पूछैं, कुल कुटुम्ब परिवारा,
दुःख दर्द की कोई न समझै, दगाबाज़ संसारा।।३।।
राम रत्न धन खोया हाथ से, भर लिया विषय विकारा,
नर नारायण नगर छोड़ कर, लाद चल्या बंजारा।।४।।

नंगे पांव कटीला मारग, अति उद्यान अपारा,
आप अकेला संग न कोई, जमपुर भया उतारा।।५।।
लख चौरासी पहरी फांसी, बिसरा सजन सुखारा,
नितानन्द ना भज्या गुमानी, साहेब सिरजन हारा।।६।।

## 卐 राग बसन्त शब्द ३८ 卐

साधू बसंत खेलैं हमेश,
जहां तन मन धन कर हर की पेश।। टेक।।
काया बाड़ी प्रेम फूल, जहां बहुतक भोरे रहे भूल।। १।।
निर्मल बाणी अति सुगन्ध, जहां पीवत तन मन हो आनन्द।। २।।
सुरत सखी रंगी पिया के रंग, सब सखियां कर लीन्ही संग।। ३।।
पिचकारी लई प्रीत हाथ, सन्मुख बरसे प्रान नाथ।। ४।।
चित चोवा चन्दन लियो मंगाय, तहां गरभ गुलाल दियो उड़ाये।। ५।।
जीव शिव मिल भयो पीव, जहाँ दुध मथे से निकस्यो छीव।
गगन महल में अगम खेल, जहां फल फूल निकसैं फुलेल।। ६।।
नितानन्द उस महल माहिं गुरु राम गुमानी गही बाहिं।। ७।।

## 卐 राग बसन्त शब्द ३९ 卐

मिलना किस बिध होय सखी री, पिया चतुर हम कूर ।।टेक।।
आयो बसंत मेरो कंत दूर, भवन न भावै तन न
सुहावै, हिवरे उठत हिलोर ।।१।।
झिल मिल बदन सजन मन अटक्यो, चलना मोहिं जरूर ।
प्रीतम प्यारे हितु हमारे, तुम सभ गुन भरपूर ।।२।।
मो तन चाहो वो रै निबाहो, नातर मरहूं झूर ,
अधर अटारी पैंडो भारी, विरह बजावत तूर ।।३।।
चित में चाव चरण परसन को, साहेब सुन्दर नूर ,
जी को जक न पड़े जग भीतर, रहूं बिशुर बिशुर ।।४।।
नितानन्द महबूब गुमानी, तुम बिन चकनाचूर ।।५।।

## 卐 राग होरी शब्द ४० 卐

अरी इस मोहन पास ठगाई,
पिया विदेश अंदेशा मोको, बैरन होरी आई ।।टेक।।
हर दर्शन की प्यास हमारे, चित चात्रक लौ लाई ।
कब लग कंत मेरे घर आवैं, जिवड़ा तड़फै माँई ।।१।।
उन मन नैन बैन कहा उचरूं, विरह व्यथा तन छाई ।
तृष्णा भूख काया की भागी, हम विरहन बौराई ।।२।।

प्रीत की रीत महा सुख समझा, दुख में देह फसाई।
अब तो प्रेम पंथ में उरझी, यह दुख सहा न जाई।।३।।
नेह न टूटै लगन न छुटे, उन्हरो बिछोह सताई।
जैसे परत अग्नि में ईंधन, होत सवाई सवाई।।४।।
होरी आई बजी बधाई, विरह विथा संग लाई।
हम जानी यहु सखा लाल की, उलटी अग्नि जगाई।।५।।
और बात मेरे चित्त न भावै, एकै वस्तु सुहाई।
नितानन्द महबूब गुमानी, मैं तुम हाथ बिकाई।।६।।

## 卐 राग होरी शब्द ४१ 卐

होरी के खेल में गुमान न कीजै
जाओ जी जाओ पिया घर अपने, तुम्हारो हंसन
मेरो तन छीजै ।।टेक।।
पहली मार प्रीत पिचकारी, खेल कहां अपनी बर खीजै।।१।।
डार अवीर अपन पो राखत, ऐसे लगरे को कौन पतीजै।।२।।
गागर भरे भिजोवत औरन, मरद वदूं जो सन्मुख भीजै।।३।।
रे चित चोर कहा मुख मोरत, लाख कहो कारो नहीं रीझै।।४।।
अजहुं समझ महबूब गुमानी, नितानन्द को फगवा दीजै।।५।।

## 卐 राग होरी शब्द ४२ 卐

पिया तुम मानत ना हम जानी, हो जी हो कहां होरी खेलीये ।।टेक।।
डारत मुठी गुलाल अंखियन में, मारत हो पिचकारी ।। १ ।।
अब कै समझ मेरे ढिग आओ, बाबा की सुं दूंगी गारी ।
हाथ अबीर लिये मुख मीड़त, और बजावत तारी ।। २ ।।
अपनी बेर कहा मुख मोरत, हम देखी है प्रीत तुम्हारी ।। ३ ।।
रंग में रंग भरे संग डोलत, सो हम से नहीं छानी ।
नितानन्द से अंग बचावत, हे महबूब गुमानी ।। ४ ।।

## 卐 राग होरी शब्द ४३ 卐

अरी एरी सखी मोको कबहूं तो मिले हर सांवरो
योही फागुन बीतो जाय ।।टेक।।
लाज कानि ज्ञान बिसरी सगरी, कुल के लोग रिसाहिं री ।
नेह बिसार भोग सुख लीजै, तो प्रीत बेल मुरझायरी ।। १ ।।
चार दिना जग जीवन ऊपर, पच २ मरे बलायरी ।
खांडा धार धरी है मग में, तापर धर २ चलना पाय री ।। २ ।।
तज्या न जाय लाल जग कारन, कठिन बनी है आय री ।
मुख मोरूं तो पीव न परसै, स्वामी गुमानी साहे री ।। ३ ।।
नितानन्द महबूब बुलावै, सीढ़ी शीश लगायरी ।। ४ ।।

## 卐 राग होरी शब्द ४४ 卐

सदा रंग हो हो हो होरी ।।टेक।।
घूंघट जगत लगाय बीच में, तन की ओट छिपोरी।
मिल २ सखी महल की सगरी, हर दरबार चलोरी।।१।।
नवल नेह लालन रंग भीनो, आज को दिवस भलोरी।
हम में पीव पीव में हम हैं, ढूंढ़त फिरूं कहीं ओरी।।२।।
घूंघट को पट उघड़ गयो जब, सन्मुख पीव मिलोरी।
साजन सखी सखी सो साजन, ऐसे ही कुछ थो री।।३।।
कंचन गहना गहना कंचन, होना था सो हुयोरी।
हम ही गई हाथ से सजनी, एक लाल सभ ठोरी।।४।।
नितानन्द महबूब गुमानी, प्रगट गुप्त बस्योरी।।५।।

## 卐 राग होरी शब्द ४५ 卐

राम रंग होरी हो होरी,
पगरी अंग संग साहेब के लगी प्रीत की डोरी।।टेक।।
गुरु प्रतीत घट गहरी उपजी, अगम पंथ को दोरी।
गागर सुरत समाय शब्द में, अद्‌भुत खेल मच्यो री।।१।।
रोम २ रंग रली रंग में, तन अभिमान किसो री।
गुप्त वस्तु सो प्रगट पाई, हीरा हाथ चढ़ोरी।।२।।

स्वामी गुमानी दास नूर में, सजनी अवचल राज करो री।
नितानन्द साहेब सुख सागर, अंतरगत उमँग्यो री।।३।।

## 卐 राग होरी शब्द ४६ 卐

लगी लगन हर सुन्दर बरसै, भली बनी यही होरी।।टेक।।
रंग गई रंग अंग साजन के, खड़ी प्रेम को पोरी।
पांच पचीस मोहनी नारी, चेत चीर पहरो री।
गगन माहिं जुर  मिल सब आंई, अनहद बाज बज्योरी।।१।।
गागर ज्ञान प्रीत पिचकारी, नेह को नीर भरो री।
चोवा चित चेतन चन्दन को, प्रीतम ले छड़क्यो री।।२।।
अभय अबीर लगाय मुख से, गरभ गुलाल ऊड़ो री।
घट पट उघर तेज घन मिलियो, अब के कहा ठगोरी।।३।।
अवगत अलख अमर वर पाये, सुधा रंग बरस्योरी।
नितानन्द महबूब गुमानी, हम में हम निरखो री।।४।।

## 卐 राग होरी शब्द ४७ 卐

फागन आयो री मोहन मंगल चार चहुं दिश
सजनी बड़े भाग से पायो यह दिन ।।टेक।।
बर्षत रंग प्रीत के आली, आनन्द उपजत पल २ छिन छिन।
पिचकारी भर लई प्रीत की, गह मारी सुन्दर घन।।१।।

महल महल से कामिन निकसी, प्रीतम सन्मुख जाती बन ठन।
अधिक पियारा पीव पुर्वलो, पूर्ण पूरी रहे सभी गुन।।२।।
उड़त गुलाल अबीर कुमकुमा, मच्यो खेल यह अवसर धन २।
बगड़ २ और डगर २ में, सब सखियन बीच एक ही साजन।।३।।
नख सिख सब ही पिव पर वारूं, मिटे विछोह
मिले अब लालन ।
नितानन्द महबूब गुमानी, निरख २ शीतल तन मन।।४।।

## 卐 राग होरी शब्द ४८ 卐

भर मारी पिचकारी, मेरी अंगिया धरक गई सारी।टेक॥
गुप्त गुलाल हाथ लिये डोलत, रोकत बाट हमारी।
रंग में अंग भिजोय दियो सभ, लोक की लाज बिसारी।।१।।
घूंघट को पट कहा उघारत, अब खाओगे गारी।
अपनी बेर फेर मुख भाजत, देखे अजब खिलारी।।२।।
होय निसंक न अंक भरो अब, मोरे संग सखी रखवारी।
सास ससुर के बोल सहूंगी, पीहर को डर भारी।।३।।
दोउन को डर डारि दियो, मन मोहन प्रीत तुम्हारी।
होरी को खेल भली विध खेलो, गोपाल दयाल मुरारी।।४।।
नितानन्द महबूब गुमानी, तुम जीते हम हारी॥

## 卐 राग होरी शब्द ४९ 卐

मारी प्रीत पिचकारी में सगरी भिजो दई, घूंघट खोल
नैन भर देख्यो, तो ठाढ़ो निकट मुरारी ।।टेक।।
प्रेम अबीर पिया पढ़ डारो, मोहि लई सभ नारी ।
होरी को खेल मचाय दियो, इन्ह चेतन चतुर खिलारी ।। १ ।।
ज्ञान गुलाल लगाय हिये सों, फेर बजावत तारी ।
मोहन क्यों मुख मोरत अजंहु, अब आई है बेर हमारी ।। २ ।।
आपै चोवा आपै चन्दन, आपै रंग अपारी ।
आपै केल करे सभ ही में, केवल कुंज बिहारी ।। ३ ।।
पाए हैं लाल निहाल भई हौं, गोपाल की शोभा भारी ।
नितानन्द महबूब गुमानी, मैं देख भई मतवारी ।। ४ ।।

## 卐 राग होरी शब्द ५० 卐

खेलो प्रभू मोसो होरी, जी संग लाग तुम्हारे ।।टेक।।
दुनियां दीन बिहस्त ना भावै, एक निरंजन प्यारे ।। १ ।।
मिलवे सा सुख और नहीं कोई, बिछुरन के दुख भारे ।। २ ।।
मोहन से मन लाग रह्यो है, मोरे नैन भये मतवारे ।। ३ ।।
नितानन्द महबूब गुमानी, बिसरत नाहिं बिसारे ।। ४ ।।

(इति शब्द होरी संपूर्णम्)

## 卐 शब्द ५१ 卐

अधिक वर पाये अपरम्पार,
मंगलचार करो री सजनी, मिले राम भरतार।।टेक।।
जन्म २ के कटे प्राश्चित, हुई निहाल निहार।।१।।
तप्त मिटी शीतलता उपजी, देख अजब दीदार।।२।।
भूली दर्द खुला जब परदा, प्रीतम किया प्यार।।३।।
जहां राम तहां सेवक सन्मुख, अब नहीं छांडूं लार।।४।।
जीव पीव के अंग समाना, देह रही संसार।।५।।
जित की सखी सभी मतवारी, तन की नहीं संभार।।६।।
स्वामी गुमानी सजन सलौने, नूर तेज निरंकार।।७।।
नितानन्द सतगुरु के शरनै, जागे भाग हमार।।८।।

## 卐 शब्द ५२ 卐

कृपा करी सांवरे सिरताज,
भवसागर में डूबत राखे, बड़े गरीब निवाज।।टेक।।
शरणागत की रख प्रतिज्ञा, अब तुमही को लाज।।१।।
मुक्त आदि बैकुंठ सिद्धि लों, तुम सभ के महाराज।।२।।
पतीत जीव निर्मल कर लीन्हे, ऐसे जगत जहाज।।३।।
स्वामी गुमानी मिले दया कर, सफल जन्म भयो आज।।४।।
एक पलक में नितानन्द के, सर गये सभ ही काज।।५।।

## 卐 शब्द ५३ 卐

सतगुरु ब्रह्म अखण्ड तेज घन, देख दिवाने हो रहे ।
घट २ चेतन व्याप रह्यो है, नौतम सुन्दर नित्त नये ।।टेक।।
अविनासी सरबंग रंग में, छिके रहत नित प्रेम मय ।। १ ।।
सदा बसन्त अनन्त तंत में, मतवारे दरबार छये ।। २ ।।
स्वामी गुमानी नूर निशानी, नितानन्द तुम शरण रहे ।। ३ ।।

## 卐 शब्द ५४ 卐

आप परमगुरु दया करी जब, जन्म मरण की ताप गई ।।टेक।।
एक पलक में त्रिभुवन तारन, मंगल अति आनन्दमयी ।। १ ।।
लाई कसोटी खोट निकासै, ब्रह्म अग्नि की आंच दई ।। २ ।।
ताय २ कञ्चन कर लीन्हे, मन मलीनता दूर भई ।। ३ ।।
पलटत अंग वार नहीं लागी, कलह कल्पना सोध लई ।। ४ ।।
बन्धन काट अटल कर लीन्हें, आदि अंत की सूझ पई ।। ५ ।।
परमपुंज पल माहि दिखाया, ऐसी अद्भुत सैन नई ।। ६ ।।
सुन्य समाय गगन जहां गरजै, बाजे बजैं अनन्त कई ।। ७ ।।
जीवन मुक्त अभय पद पाए, परा भक्ती में किये सही ।। ८ ।।
पूरण ब्रह्म स्वामी गुमानी, नितानन्द की बाह गाही ।। ९ ।।

## 卐 शब्द ५५ 卐

परम गुरु के चरण सिंधु को, जो परसे सो प्रेम पगै।
परसत ही चित चढ़े गगन को, परम पुरुष का ध्यान लगै।।टेक।।
बाजा अनंत अनहद बाजै, रोम २ झनकार बगै।।
झिलमिल झलक महासुख उपजै, जगमग जोत
अखण्ड जगै ।।१।।
अविनासी अविचल वर पावै, त्रिविध ताप सभ दूर भगै।
उलट ऊर्धमुख अमृत पीवै, स्थिर होत जुगान जुगै।।२।।
होय निसंक मगन हो नाचै, तिनको विषय डस न सकै।
स्वामी गुमानी नूर निशानी, नितानन्द निज रंग रंगै।।३।।

## 卐 शब्द ५६ 卐

प्रेम प्रीत की रीति दुहेली, जो जानै सो जानै री।
सिर देवे सो प्याला लेवे, मूरख क्या पहिचानै री।।टेक।।
कायर का यह काम नहीं है, वह महबूब न मानै री।
तन मन अपना सर्वस सौंपै, साहेब हाथ बिकानै री।।३।।
नितानन्द मिले स्वामी गुमानी, लग गई चोट निशानै री।।४।।

## 卐 शब्द ५७ 卐

प्रीत लगा कर प्रीतम पावै, सो विरहिन बड़ भागी रे।
प्रेम पुनीत नीत भई निर्मल, सुरत सोयकर कर जागी रे।।टेक।।
हो लौलीन दीनता उपजी, विषय भोग के त्यागी रे।
प्याला पी मतवाला हुआ, छूट गई जग आगी रे।।१।।
लगी खुमारी लज्या डारी, तन मन से वैरागी रे।
सौंप्या सीस ईश अपने को, भये हजूरी दागी रे।।२।।
स्वामी गुमानी राम दया से, सर्वमयी मत पागी रे।
नितानन्द परम गुरु भेटे, सदा रहें लौ लागी रे।।३।।

## 卐 शब्द ५८ 卐

कैसे हो हर मेला रे, तनै अमृत में विष घोला रे।।टेक।।
यह मन भया दिवाना रे, काम क्रोध लपटाना रे।
माया का रस पिया रे, कौड़ी को कंचन दिया रे।।१।।
अमोलक जन्म गंवाया रे, तैने अमृत तज विष खाया रे।
जन्म २ का सूता रे, कामन कनक का कूता रे।।२।।
विषय ते नहीं भाजै रे, जाके काल शीश पर गाजै रे।
दुनियां में सुरत पसारै रे, जम पटक २ कर मारे रे।।३।।
यह ऐसा जिव अभागी रे, हर छोड़ जगत लौ लागी रे।
कोई संगी नहि तेरा रे, तुने दिन दस लिया बसेरा रे।।४।।

तू झूठे मोह भुलाना रे, फिर पीछे दूर पयाना रे।
जब पहुंचे आय चलावा रे, तब करै बहुत पछतावा रे।।५।।
मैं कहा सन्देश बिचारी रे, हर हीरा हाट तुम्हारी रे।
जो स्वामी गुमानी गावे रे, सो नितानन्द वर पावे रे।।६।।

## 卐 शब्द ५९ 卐

नेह लग्यो जब लाज कहां री,
पटक संकोच रही अटक लाल सों, कुल की
कानि हम हाथ बिसारी ।।टेक।।
जगत तजूं न भजूं साहेब को, लाख कहो किन बुरी हमारी।।१।।
अब तन मन कुछ और न भावै, रोम २ रम रह्या मुरारी।।२।।
जित देखूं तित स्वामी गुमानी, और बात सब चित से टारी।।३।।
नितानन्द इस प्रेम पंथ में, नेह निशान लाज बुध मारी।।४।।

## 卐 शब्द ६० 卐

नाहीं रे कोई धुर का मीता,
मात पिता सुत बन्धु स्त्री, भवसागर सब ही भय भीता ।।टेक।।
स्वारथ के संगी बहुतेरे, धुर का साथी कोई न कीता,
दुनियां देख न भूल दिवाने, जन्म ठगाय चलैगा रीता।।१।।

माया मोह धोह की फांसी, मूरख मुग्द कहा मन दीता ,
जन्म जवाहर जाय जगत में, चरण कमल गह रह लौलीता ।।२।।
साथ त्याग पर हाथ बिकाया, अन्ध धुन्ध में अवसर बीता ,
गरभ किया सोई सभ हारे, राम भजै सोई नर जीता ।।३।।
एकै नाथ साचलो साथी, ताही की करो रैन दिन चिंता ,
नितानन्द महबूब गुमानी, दर्शन कारण भये अतीता ।।४।।

## मंगल १

परम गुरु की मौज खोज सत लोक का।
उनमन बाट विहंगम मारग मोक्ष का।।१।।
दरियाओं की लहर चढ़ी आकाश हैं।
अनेक चन्द और भान पुञ्ज प्रकाश हैं।।२।।
गगन माहिं मिल मगन धरन नहीं आवहीं।
अनल पंख की रीति सुन्य मन लावही।।३।।
द्वादस लख सोखंत करै सभ घाट हैं।
सोलह लख पोखंत उघाड़ें कपाट हैं।।४।।
चार लाख पीवंत ध्यान अस्थान में।
अनंत किरण उघरन्त मगन गुरू ज्ञान में।।५।।
अधर चाल चढ़ जाहिं महल सुख धाम में।
कायर का नहीं काम सूर संग्राम में।।६।।

तन मन सीस लगाय मिलैं सावंत हैं।
गहैं बांह मुसकाय आप भगवंत हैं।।७।।
अवचल प्याला प्रेम नैन दुर्बीन हैं।
झलकैं सुख के सिंधु संत लौलीन हैं।।८।।
बिन जिभ्या गुण गाय नैन बिन देखना।
बिना अंग मिल जाय अमरपुर पेखना।।९।।
मैं मिटाय कर जाय भवन बारीक में।
जोत में जोत समाय नगर तारीक में।।१०।।
बिना चन्द बहु चन्द सूर बिन सूर है।
झिलमिल २ होय अजायब नूर है।।११।।
जहां दिवाने लोग भोग दीदार का।
पीवै नूर अघाय दत्त दरबार का।।१२।।
सुन्दर तेज स्वरूप नवेला कंत है।
निपट रंगीली सेज नवीन बसंत है।।१३।।
कुंज २ के संग अखंड विलास है।
कुंज २ में तेज पुंज का बास है।।१४।।
पावक बाति न तेल सुदीप असंख है।
सुरत स्वरूपी हंस जाहिं बिन पंख है।।१५।।
ब्रह्म सहर विज्ञान ध्यान मस्तान हैं।
अष्ट सिद्ध नव निद्ध द्वार दरबान हैं।।१६।।

जग मग जोत अनंत ब्रह्म दरसंत हैं।
बजैं अनाहद बंब भरम भसमंत है ॥१७॥
सो साहेब सो दास एक सा अंग है।
परा भक्ति के मध्य सदा सरवंग है ॥१८॥
सतगुरु की उणहार अलख सरबंग है।
सदा मंगलाचार सुहाग अभंग है ॥१९॥
स्वामी नूर निसान गुमानी दास है।
नितानन्द मुक्काम चरण के पास है ॥२०॥

## मंगल २

सतगुरु गहर गम्भीर ज्ञान जिन को दिया।
अंतर भया उजास बास अनहद किया।।१।।
मिले ध्यान धुनि दोय गगन में आय के।
तन मन उज्वल होय त्रिवेनी न्हाय के।।२।।
जपै अजप्पा जाप पाप सब खंड है।
लगै न तीनों ताप काल को डंड है।।३।।
खुली सुरत की पंख चले उस देस है।
उघर गई वै अंख दरस हमेस है।।४।।
निश्चल बंध लगाय थंभ दरियाव है।
राम रतन धन पाय रंक से राव है।।५।।

द्वादश उलटा फेर सहस प्रकास हैं।
नौलख चन्द्रा हेर अमरपुर बास हैं।।६।।
जीवन मुक्त अस्थान देह में पाइयां।
ताली लगी अखंड सुन्य मन लाइयां।।७।।
विषम बाट बारीक पहुंचना महल है।
भाज गई भखभूर सूर को सहल है।।८।।
सीढ़ी लावैं सीस सुभट चढ़ जायंगे।
पट खोलैं जगदीस प्रेम रस खायंगे।।९।।
ब्रह्मा शंकर शेष मुनीश्वर ध्यान हैं।
नारद ध्रुव शुकदेव संत प्रमान हैं।।१०।।
अति शोभा प्रहलाद नाम की टेक में।
नामदेव कबीर मिले उस एक में।।११।।
नानक दादूदास बड़े सावंत हैं।
सब ही सन्त सुजान जान भगवंत हैं।।१२।।
जगमग जोत अपार तेज का भवन है।
संतो लिया निहार हमारा गवन है।।१३।।
अक्षर के प्रताप निहक्षर लीजिये।
साहेब आपै आप नूर भर पीजिये।।१४।।
परम धाम की झलक परम गुरुदेव है।
अवचल मस्तक तिलक अखंड अभेव है।।१५।।

कहा गुमानीदास पीव परवीन हैं।
नितानन्द मस्तान सदा लौलीन हैं ॥१६॥

## मंगल ३

अमरपुरी अस्थान तेज घन पीव है।
सतगुरु प्रगटे भान जगाया जीव है॥१॥
दिये पट्टन खोल अरस दरबार है।
पड़ी नगर में रोल नूर झनकार है॥२॥
बंके औघट घाट दूर की चाल हैं।
पहुंचेंगे कोई संत साहेब के लाल हैं॥३॥
कायर धरैं न धीर अधर की राह में।
सूरा लंघ २ जाहिं समुद्र अथाह में॥४॥
भाटी चवै अनेक कलाल दुकान हैं।
गिर २ पड़े अचेत पंथ निर्वान हैं॥५॥
पीवैं प्याला संत सुराही सोहनी।
खड़ी पिलावैं हूर मुक्त मन मोहनी॥६॥
मिहीं महल बारीक बसै जहां राम है।
दुनियां से पारीक हमारा गांम है॥७॥
शोभा लगी अपार सहर सुख चैन का।
तिल ओल्है बहु द्वार फेरना नैन का॥८॥

खुल्या दरीबा देश ब्रह्म बाज़ार है।
सौदा करैं सुजान पाक दीदार है।।९।।
दिल दुरबीन निहार चांदना गैब है।
मकर तार गह पार सजन बे ऐब है।।१०।।
हर पुर रहैं हजूर नूर के लोग हैं।
नूर ही पीवैं खाय नूर के भोग हैं।।११।।
साहेब की छवि देख छिपैं बहु भान हैं।
अनेक चन्द और भान एक तिलमान हैं।।१२।।
भंवर सेत सुख लेत केतगी फूल है।
परस अंग में अंग देह की भूल है।।१३।।
चमकैं किरन असंख रूप छबि लख रही।
अधर धार निरंकार जोत जगमग रही।।१४।।
कैसे करूं बयान अकह मक्कान का।
अचरज कैसी बात भवन हैरान का।।१५।।
सुक्षम सेज महबूब गुमानी दास है।
नितानन्द धन भाग अलख इकलास है।।१६।।

## मंगल ४

राम नाम की मौज गुरु से पाइये।
हीरा हाथ चढाय फेर न गमाइये।।१।।

प्रेम प्रीत परतीत स्नेह बढ़ाइये।
अवगत अंतरधार सभै बिसराइये।।२।।
जतन २ कर राख रतन सी देह को।
इस तन सेती त्याग जगत के नेह को।।३।।
चला चली को देख सवेरा चेत रे।
अमर पुरी मुक्काम जाय क्यों ना लेत रे।।४।।
इस दुनियां के बीच बसेरा रैन का।
करो महल की सैल जहां घर चैन का।।५।।
चला जाय तो चाल दाव यह खूब है।
पहुंचेंगे उस देस जहां महबूब है।।६।।
अष्ट सिद्ध नौनिद्ध नाम की दास है।
सुख सम्पति सब भोग भक्ति के पास है।।७।।
गुरु गुमानीदास ब्रह्म उज्जास हैं।
नितानन्द भज लेह तो कारज रास हैं।।८।।

## मंगल ५

तज दुनियां की प्रीत पीव घर चाल रे।
जग देख्या झाड़ पिछोड़ यहां न लाल रे।।१।।
सुख सागर का हंस के विरला कोय रे।
हम से छानी ना जो वहां का होय रे।।२।।

हंस समन्दर त्याग तलाब न जायसी।
बहु बगुलों की डार डोभियां पायसी।।३।।
मलागीर के वृक्ष के बन २ नाहिं रे।
आक ढाक बबूल जगत बन माहिं रे।।४।।
मणधारी कोई संत शिरोमणि अंग है।
विष के भरे भुवंग सो कीट पतंग हैं।।५।।
अनल पंख की सेज गगन आकास है।
पंछी कई हजार हद्द में बास है।।६।।
कूकर काग अनेक मिलैंगे आय रे।
अर्ब खर्ब में एक महल को जाय रे।।७।।
स्वामी गुमानीदास कह्या समझाय रे।
नितानन्द होय नूर में नूर समाय रे।।८।।

(इति मंगल संपूर्णम्)

## 卐 शब्द ६१ 卐

हृदय बीच हरी है साधो, हृदय भीतर हरी है,
तुझ ही भीतर साहेब तेरा, सतगुरु खबर करी है ।।टेक।।
धर दुरबीन चशम को फेरो, जग मग जोत जरी है।
कहीं २ गुप्त किसी से प्रगट, सब घट वस्तु भरी है।।१।।

साहेब नूर २ के सेवक, नूर ही की नगरी है।
सुक्षम सेज पर तेज चमके, सो घर परापरी है।।२।।
सूरज क्रोड़ रोम की शोभा, सो छवि अधिक खरी है।
देवी देव भेव नहीं पावत, आतम ब्रह्मबरी है।।३।।
गंगा जमुना मिली सरस्वती, धारा अधर धरी है।
मारग मीन जाय घर पहुंचै, जिनकी भली सरी है।।४।।
मकर तार पर मुरली बाजै, बरसत रंग झरी है।
तिल की ओट तमासा देखैं, हाजिर घड़ी घड़ी है।।५।।
किये निहाल स्वामी गुमानी, जिनपर मेहर फिरी है।
नितानन्द चरनाबिन्द भज, तीनों ताप टरी है।।६।।

## 卐 शब्द ६२ 卐

बहुत दूर वह घर है साधो, बहुत दूर वह घर है,
क्या गावे कुछ समझ दिवाने, मुशकिल गैब सिरर है।।टेक।।
धुरू प्रहलाद धनी की धुन पर, तजा देह का डर है।
महादेव ने भख्या हलाहल, बौरा आठ पहर है।।१।।
गोरख गोपी चन्द भरतरी, लिया ठेकरा कर है।
दास कबीर सत्य नहीं छोड़ा, दीया सभ वस्तर है।।२।।
मनसूरा सूली पर चढ़ियां, जब पहुंचा उस दर है।
शेख फरीद कुएं के अन्दर, काया गया बिसर है।।३।।

सुलतानी साहेब मिलने को, तज्या माल और जर है।
घर २ भीख मगन हो मांगी, रब्ब इशक ऊपर है।।४।।
नामदेव तन त्यागन लाग्या, पिया दूध पत्थर है।
पीपा जाय द्वारका पर से, कूद पड़ा सागर है।।५।।
सेऊ सम्मन सांचे सेवक, जिनकी बात अमर है।
दादू दोनो हद्द छोड़कर, राखी आस अधर है।।६।।
जैसे सती न फिर घर आवे, यूं सिर दे तो नर है।
नितानन्द महबूब गुमानी, यहीं कहीं बरबर है।।७।।

## 卐 शब्द ६३ 卐

ज्ञान के ज्ञान गलतान ज्ञानी, नैन के नैन निरखें गुमानी ।।टेक।।
प्रेम के प्रेम प्याला पिलाया, सीस को ईश के सिर चढ़ाया ।।१।।
शब्द के शब्द अनहद बजाई, जन्म के जन्म की खबर पाई ।।२।।
सुरत की सूरत से तार लागा, जीव के जीव में भरम भाग्या ।।३।।
देह की देह दरबार दासी, जोत की जोत जगमग प्रकासी ।।४।।
नूर के नूर का नगर पाया, प्राण के प्राण प्राणी समाया ।।५।।
महल के महल महबूब मेला, अगम के अगम अवगत अकेला ।।६।।
गुमानी लाल साहेब समन्दा, दास का दास नितानन्दा ।।७।।

## 卐 शब्द ६४ 卐

लगनरी अकथ कहानी हो ।टेक।।
जोग जुगत साधन नहीं करनी, जिन जानी जिन जानी हो।
व्रत नेम तीरथ जप तप से, अगम ब्रह्म की बानी हो ।।१।।
पंडित मुंडित मरम न पावैं, बहे जात बहु ज्ञानी हो।
अष्ट सिद्ध नौनिद्ध वापरी, आपै आय बिकानी हो ।।२।।
विषय भोग रोग सम लागे, प्रीत की रीत पिछानी हो।
कौन करे जंजाल हमारे, पिव कारन बौरानी हो ।।३।।
रोम २ चात्रक ज्यों चाहे, दर्शन काज दिवानी हो।
नितानन्द कुछ और न चाहिये, मिल महबूब गुमानी हो ।।४।।

## 卐 शब्द ६५ 卐

राम भजन की बरियां तेरी, राम भजन की बार।
पल में पंछी प्रान परेवा, उड़ चालै रे गंवार ।टेक।।
ना कर ईर्ष्या ना कर निन्दा, ना काहू से प्यार।
देखत ही चल जायगा रे, जगत स्वप्न व्यवहार ।।१।।
काया राज करी बादशाही, सो चौड़े दीजैगी जार।
काहे को तूं खोवै कुबध में, ऐसा मनुष्य अवतार ।।२।।
चेत सको तो चेतो अबहो, आगे घोर अंधार।

काल करोंत धरा सिर ऊपर, कबहूं होय दुसार ।। ३ ।।
लौ से लाल नजीक जो है रे, प्रेम की पीर पुकार।
नितानन्द भज स्वामी गुमानी, तू भेट ले ब्रह्म मुरार ।। ४ ।।

## 卐 शब्द ६६ 卐

धनवै अलख रंग महमंता,
सदा अचाह लाल को परसै, निरवासीक निचन्ता ।।टेक।।
पावन पतित होय पग परसे, उघरत नैन अनंता,
अष्ट सिद्ध सन्मुख कर जोरे, झिलमिल नूर झिलंता ।। १ ।।
नजर निहाल दयाल संत जन, अमृत सुख बरषंता ।। २ ।।
परमहंस हर सरवर बासी, मोती हीरा चुगंता,
स्वामी गुमानी राम सरीखे, सो सब सतगुरु संता ।। ३ ।।
नितानन्द कोई ढूंढ़े पाइये, अवगत माहिं छिकंता ।। ४ ।।

## 卐 शब्द ६७ 卐

प्यास दरस की लाग रही, कोइ रमता राम बतावैरी।
चेरी होय रहूं चरणों की, जो कोइ हमें मिलावैरी ।।टेक।।
नैनन में राखूंरी सजनी, जै कहीं प्रीतम पावैरी।
सेवा करूं एक पग ठाढ़ी, अब कै हर घर आवैरी ।। १ ।।

अब तो लगन लगी साहेब से, वही एक छवि भावैरी।
हार सिंगार सभ ही तज दीन्हा, पल पल ध्यान लगावैरी।।२।।
विरह रोग की दर्शन दारूं, वैद मिले तो खवावैरी।
क्षीर नीर जैसे मिल रहिये, जोत में जोत समावैरी।।३।।
स्वामी गुमानी राम हमारे, पलक बिछड़ नहीं जावैरी।
नितानन्द मन मोहन मिल २, सभ दुख दूर हटावैरी।।४।।

## 卐 शब्द ६८ 卐

हर अवनासी मिलिया री, जिन की भली बनी।
सूरा चढ़ै महल मेंरी, दुरमत फना फनी।।टेक।।
पांचां ऊपर बन्ध लगावै, और पच्चीस समेटै।
बत्तीसों को मारे धर कर, अलख भवन जा भेटै।।१।।
चेतन होय चौक के भीतर, नौलख नगर बसाया।
अठारह कोट एक ढिग कर, कर अनहद नाद बजाया।।२।।
पिया पियाला हुआ उजाला, रोम २ सुख चैना।
उनचास कोट एक पल में दरसे, खुले रहैं वै नैना।।३।।
अमृत पी छिक रहे छाक में, सुरत स्वरूपी देही।
झिलमिल २ लगी एक रस, परसे राम स्नेही।।४।।
मुर जीवा सरजीवन होवै, दरिया लहर समाई।
लहर लहर में मोती ऊगै, अजब साहेबी पाई।।५।।

तेज पुंज में दरस गुमानी, नितानन्द नित चेरा।
दीन दयाल दया कर दीन्ही, रहे चरण में डेरा।।६।।

##卐 शब्द ६९ 卐

साधू सदा सुखाले हो, दिल दिलदार गली।
जिन के हर रखवाले हो, उन की सदा भली।।टेक।।
आसन अगम भवन चौदह से, जगत न जानै भेवा।
जिन के चरण कमल की रज को, इच्छैं देवी देवा।।१।।
परम हंस दर्शन के दाता, पीव प्रेम का प्याला।
माया परै अगम से आगे, कम्पै काल अकाला।।२।।
नूरी छत्र तेज सिंहासन कहिये, अनंत भवन के राजा।
जरना कियो निरंजन रूपी, बड़े गरीब निवाजा।।३।।
चारों मुक्त सिद्ध चौबीसों, सतगुरु करके ध्यावै।
चेरी होय रही मुख आगे, गत गम्भीर न पावै।।४।।
रंग सुरंग संग ले उतरे, कदे न होय कुरंगा।
शोभा लिये हुए सुख सागर, सभ ब्रह्माण्ड तरंगा।।५।।
दरस खूब महबूब राम के, नेह कलंक उजियारा।
नितानन्द निरंकार गुमानी, धरे भक्त अवतारा।।६।।

## 卐 शब्द ७० 卐

म्हारे गुरु गोविन्द बताया है,
संत वचन अमृत रस बरसे, मिलकर मैल बहाया है ।टेक।।
ऊरझा सूत अनेक जन्म का, तार २ सुरझाया है।
माया बंध फन्द खंडन कर, जीवन मुक्त कहाया है।।१।।
उलटी बाट घाट बहु औघट, जहां से जग में आया है।
अंजन आंज मांज दिल दर्पण, नूरी दर्श दिखलाया है।।२।।
सुखमन सेज सिलोना साह, अवगत अलख लखाया है।
सुख उपज्या दुख किया पयाना, अजर अमर घर पाया है।।३।।
झीना महल नगर बेगमपुर, स्वामी गुमानी छाया है।
नितानन्द चरणों का बासी, उनमन होय मन लाया है।।४।।

## 卐 शब्द ७१ 卐

हर नाम बिना मन मैला है,
विनसै देह खेह मिल जावै, फिर चौरसी गैला है।टेक।।
पल २ आयु घटै नर तेरी, ज्यों दीपक में तेला है।
बुझे जोत तन भवन अंधेरा, क्यों इतने पर फैला है।।१।।
बिसरो राम काम बहु बिगरो, भयो बाट को ढेला है।
जन्म मरन की ठोकर लागै, दिन चार का छैला है।।२।।

जगत नहीं ये देस कामरू, नर माया का बैला है।
बंध्या फिरै मोह की डोरी, गुरु बिन छुटन दुहेला है।।३।।
रतन गमावै फिर पछतावै, भानमती का खेला है।
धोखे की बाजी मत भूलै, पीछे दुख का रेला है।।४।।
नितानन्द भज राम गुमानी, तो हर पंथ सुहेला है।
अवनासी अवचल पर पाऊं, अमर महल की सैला है।।५।।

## 卐 शब्द ७२ 卐

म्हारे मन्दर मंगलचार सतगुरु आए जी।
करी अनुग्रह सुख के सागर, सुन्दर दर्श दिखाए जी।।टेक।।
अधिक उछाह दास की नगरी, बिछड़े सजन मिलाए जी।
दीन दयाल विराज रह्यो, इन नैंनन माहिं समाये जी।।१।।
मन मोती भर भाव थाल में, चित्त चन्दन चौंक पुराए जी।
होत आरती अंतरगत में, निरखत रूप लुभाए जी।।२।।
पांच पचीस प्रवीन सिलोने, नेह चीर पहरायोजी।
सुरत सुहागन संग सहेली, गगन मगन गुन गायो जी।।३।।
प्रीत प्रकमा नमो हमारी, मस्तक चरण चढ़ायो जी।
तन मन तुम पर करूं वारना, बड़े भाग से पायो जी।।४।।
पुंज प्रकाश उजास भवन में, पहुप प्रेम बरसायो जी।
सभ कोई सखियां रहो राम संग, दिन २ रली बधायो जी।।५।।

स्वामी गुमानी नूर निशानी, हम को बहुत सुनायो जी।
नितानन्द हर चरण कमल पर, बिन ही मोल बिकायो जी।।६।।

## 卐 शब्द ७३ 卐

पिया मैं चेरी रे तेरी, ज्यों त्यारै ज्यों त्यार।।टेक।।
दूर दर्श दरवेश तुम्हारे, रहूं चरण से नेरी रे।।१।।
जो गहिये सो पूरण लहिये, कठिन प्रीत की सेरी रे।।२।।
प्रीत लगा कर रूठ न रहिये, यही बिनती मेरी रे।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, कीजै मेहर सवेरी जी।।४।।

## 卐 शब्द ७४ 卐

नर जन्म अमोलक खोया रे,
सुधा समुन्दर के ढिग आकर, दिल का दाग न धोया रे।।टेक।।
जम का जाल काल मग भारी, तैं क्यों मूल बिगोया रे।।१।।
स्वप्न स्वरूप कनक और कामन, इनहीं में सुख सोया रे।।२।।
अंत समय अमृत कहां पाइये, राम बिसर विष बोया रे।।३।।
नितानन्द बिन भजन गुमानी, सो नर जुग २ रोया रे।।४।।

## 卐 शब्द ७५ 卐

हर नाम भजन लौ लाओगे ।।टेक।।
लख चौरासी तन बहुतेरे, मनखा देह न पाओगे ।।१।।
ऐसा समय बहुर ना पाइये, निर्भय हो गुण गाओगे ।।२।।
यह संसार चार दिन स्वप्ना, चलते बर पछताओगे ।।३।।
स्वामी गुमानी राम सरीखे, हृदय माहिं बसाओगे ।।४।।
नितानन्द हर चेत सवेरा, जोत में जोत समाओगे ।।५।।

## 卐 राग कल्याण शब्द ७६ 卐

जै जै सतगुरु मेरे की,
सदा साहेबी सुख में रहिये, अमरपुरी के डेरे की ।।टेक।।
ऊंचा महल अरस से ऊपर, नजर नूर के नेरे की ।।१।।
तेज पुंज आनन्द चन्द घन, भेटै समय सवेरे की ।।२।।
झलकैं क्रोड़ सूर तिल तिल पर, नहीं गम भरम अंधेरे की ।।३।।
दिन और रैन अखंड रोशनी, अकथ कथा उस डेरे की ।।४।।
स्वामी गुमानी राम दया कर, हिये राखलो भेरे की ।।५।।
नितानन्द दीदार दिवाना, खुशियां दर्शन तेरे की ।।६।।

## 卐 शब्द ७७ 卐

मतवारो पैंडो राम को,
कामी क्रोधी कुटिल कुबुद्धी, यह पैंडो नहीं काम को ।।टेक।।
साहेब का घर सभसे दूभर, लोभ तजै धन धाम को ।
होय निसंक महल को चाले, मोह नहीं सुत बाम को ।।१।।
शूरवीर मुख मोड़त नाहीं, सती न लालच चाम को ।
अपने हाथ मिटाय आप को, दर्श करै निज धाम को ।।२।।
तन मन शीस ईश को अरपै, धरम निम्भाव स्वामी को ।
पहुंचै अरस अमर रस पीवै, गलपत रहे निशि जाम को ।।३।।
जगत जीव से प्रीत न जोड़ै, इश्क अगमपुर गाम को ।
नितानन्द मिले स्वामी गुमानी, बज्यो नंगारो नाम को ।।४।।

## 卐 शब्द ७८ 卐

दर्शन सदा राम मोहिं दीजै,
चरण कमल के शरने राखो, कबहु जुदा नहीं कीजै ।।टेक।।
कृपा सिंध गोबिन्द गुसाई, भक्ति बिना तन छीजै ,
अंतरगत गुण गाऊं तुम्हारा, यही मोज कर लीजै ।।१।।
नैन हमारे भये चकोरा, निरख चन्द मुख जीजै ,
परदा खोल मगन होय मिलिये, जब ये प्रान पतीजै ।।२।।

चेतन चोला बड़ा अमोला, विरह की बूंद में भीजै ,
नितानन्द महबूब गुमानी, अरस परस रस पीजै ।।३।।

## 卐 शब्द ७९ 卐

रावरी कुछ अक्थ कहानी,
हर हेरत हैरान भई हूं, गूंगे का सुख कहे न बानी ।टेक॥
कंकन गाल किया जब कंचन, फिर कंकन की रही न निशानी ।
फूटा कुम्भ मिल्या जल सागर, सोई दरियाव सोई भया पानी ।।१।।
सुन्य महल बुध वचन न पहुंचै, जल तरंग जल माँहि समानी ।।२।।
थक गई सुरत थाह नहीं पाई, तुम अपार गुरु स्वामी गुमानी ।।३।।
नितानन्द उस अकथ देश में, हर हेरत हम आप हेरानी ।।४।।

## 卐 शब्द ८० 卐

रावरी गत अगम बखानी,
मन और बुद्धि चित नहीं पहुंचै, थकित भये योगेश्वर ज्ञानी ।टेक॥
दिव्य दृष्टि सभ मगन भये हैं, चर्मदृष्टि बहु कहैं कहानी ।
जैसे बूंद समुद्र से मिलकर, हुई सिंधु सुख माहिं समानी ।।१।।
कह २ निरख कौन सुधि ल्याए, रहे यार के हुई दिवानी ।
हेरत भई सत के माहिं, नितानन्द महबूब गुमानी ।।२।।

## 卐 शब्द ८१ 卐

कब मिल हो मिलना,
जी घड़ी २ पल २ तन छीजै, बिन दर्शन कल ना ।।टेक।।
जोगन भई सजन तोरे कारण, हुआ देश चलना।
सभ संसार चेहर की बाजी, बिना अग्नि जलना।।१।।
अर्ज हमारी सुनो मुरारी, छोड़ देव छलना।
अबकै टेक एक यह अटकी, पद रज में रलना।।२।।
कृपा करो गोविन्द गुसाई, हममें कुछ बलना।
नितानन्द महबूब गुमानी, दर तज ना टलना।।३।।

## 卐 शब्द ८२ 卐

जो कुछ कीजे रजा तुम्हारियां ।।टेक।।
सभ सखियन को पीव अकेलो, दर्श पियासी सारिया।।१।।
वै बड़ भागिन धसी महल में, जो २ पिव की प्यारियां।।२।।
औघट घाट बाट रपटीली, हम सिर गागर भारियां।।३।।
हमरे संग की भर २ पहुंची, भूल पड़ी हम न्यारियां।।४।।
मेहर करो महबूब गुमानी, नितानन्द की बारिया।।५।।

## 卐 शब्द ८३ 卐

जगत तज चलना है नादान
मैल भरी इस खाल का रे, मूरख करै डफान ।।टेक।।
भाई बन्धु और कुटुम्ब कबीला, सभ मिल धरैं मसान।
जो आया सो रहन न पाया, क्या राजा क्या रान ।।१।।
जैसे स्वप्न रैन का रे, रहसी नाहिं निदान।
दिन दस के ब्योहार में रे, हर न विसर अज्ञान ।।२।।
पिंजरे से उड़ जाय अचानक, पल में पंछी प्रान।
नितानन्द भज राम गुमानी, मिट जाय आवन जान ।।३।।

## 卐 शब्द ८४ 卐

सतगुरु दीन दयाल राम रस प्याया है ।
दिल दरियाव जहाज प्रेम का, परले पार पहुंचाया ।।टेक।।
जन्म मरण का रहा न संसा, ऐसा रंग लगाया है।
खुली किवारी भरम की, लागै नहीं माया है ।।१।।
महल माहिं मिल गया मनोहर, चरणन लिपटाया है।
नूर झरोखे झांखी लागी, सजन मन भाया है ।।२।।
स्वामी गुमानी अलख निशानी, लाल लखाया है।
नितानन्द गुरु पूरे परसे, गगन घर छाया है ।।३।।

## 卐 शब्द ८५ 卐

सुन सुरत सयानी हे, रंगी हर प्रेम मई।।टेक।।
मत होय दिवानी हे, नवेली प्रीत नई।।१।।
रंग भीनी रजनी हे, निकट दयाल दई।।२।।
वै सभी बतावैं हे, जो हर महल गई।।३।।
जहां रिंचक सुख के मांह, बीते कलप कई।।४।।
स्वामी गुमानी है जहाँ, चरणों हम लाय लई।।५।।
कहै नितानन्द बड़ भाग, सवेरे भेट भई।।६।।

## 卐 राग हेली शब्द ८६ 卐

मिल बिछड़न की पीर री हेली,
मिल बिछड़ै सोई लखै हर से बिछड़ी।
आत्मा री हेली, जग में धरो शरीर।।टेक।।
बोरी हो डोरी लगीरी हेली, पिछली बात संभाल।
हम से किस विध बीछड़ेरी हेली, वह हर दीन दयाल।।२।।
अब हम अपने बस नहीं री हेली, परी जगत बन माहिं।
साध संदेशा दे गयेरी हेली, समझ २ पछताहिं।।३।।
जा दिन से हर बिछड़े री हेली, तन मन धरै न धीर।
हमरी गत ऐसी भई री हेली, ज्यों मछली बिन नीर।।४।।

विसर गई हम देह को री हेली, लाग्या उनमन ध्यान।
तन जग में मन पीव में री हेली, छिन इत छिन उत प्रान।।५।।
स्वामी गुमानी एक है री हेली, मन मन्दर के माहिं।
नितानन्द की गह लई री हेली, आप निरंजन बाहिं।।६।।

## 卐 शब्द ८७ 卐

कबहुं न रहिये सोय री हेली, अपनो पीव संभार।
जीवतड़ा मेहमान है री हेली, बार २ नहीं होय।।टेक।।
देह देख न फूलिये री हेली, काचे बासन नीर।
ठबका लागै काल का री हेली, जब कहो कहां शरीर।।१।।
तब लग सुख की रैन है री हेली, प्रीत पीव से लाय।
फिर पीछे पछतायगी री हेली, रतन हाथ से जाय।।२।।
घर घर भ्रमत क्यों फिरै री हेली, भर २ हरी रस पीव।
बार २ कंथ न पाइयें री हेली, धर-धर अपने जीव।।३।।
सांचो रंग दिन-दिन बढेरी हेली, रंगी रहो निश जाम।
प्रेम बिना पहुंचे नही री हेली, कठिन पीव का धाम।।४।।
स्वामी गुमानी मिल गये री हेली, बड़ा तुम्हारा भाग।
नितानन्द छवि लाल की री हेली, निरखत अचल सुहाग।।५।।

## 卐 शब्द ८८ 卐

बिन पायन का पंथ है री हेली, अगम गवन कैसे करूं।
पांच तत्व गुण तीन से री हेली, पूरण ब्रह्म इकंत।।टेक।।

बाट घाट सूझै नहीं री हेली, निपट विकट वह पंथ।
रजनी माया मोह की री हेली, ता मैं मन महमंत।।१।।
उरझी अनेक जन्म की री हेली, देह मध्य बिसरंत।
लागी विषय विकार से री हेली, कठिन भयो भगवंत।।२।।
मारग में नदियां बहैं री हेली, लख चौरासी धार।
भरम भंवर ता में फिरैं री हेली, जहाँ उतरवो पार।।३।।
साध संगत भेरा करो री हेली, गुरु के शब्द विचार।
प्रेम उमंग तरंग में री हेली, उतरत लगै नै बार।।४।।
पार पिया को देश है री हेली, बारह मास बसंत।
परम जोत आनन्द मेंरी हेली, स्वामी गुमानी संत।।५।।
चलो सखी उस देश को री हेली, जहां बसैं गुरु देव।
नितानन्द आनन्द में री हेली, परसो अलख अभेव।।६।।

## 卐 शब्द ८९ 卐

क्या सोबै सुख नींदड़ी री हेली, जागे पीव तुम्हार।
रजनी बीती जात हैरी हेली, अपने जीव विचार।।टेक।।
तुं उलझी जंजाल में री हेली, जग स्वप्ने की आस।
मत जाने पिव दूर है री हेली, प्रीतम तेरे पास।।१।।
धन जीवन मेहमान है री हेली, झूठे रंग न भूल।
सुमर स्नेही आपना री हेली, कर चलने का सूल।।२।।

हर से हिल मिल खेलिये री हेली, जो तेरे सिर भाग।
आज की रैन सुहावनी री हेली, जाग सके तो जाग।।३।।
भोर भये पछतायगी री हेली, फिर मिलाप नहीं होय।
औसर चूक्यां ना मिले री हेली, जानते है सभ कोय।।४।।
पाया कंथ न खोइये री हेली, साची प्रीत लगाय।
कूड़ कपट सभ छोड़ कर री हेली, रंग में रंग मिलाय।।५।।
राम गुमानी महल में री हेली, उर के नैन उघार।
निरख चान्दना ज्ञान का री हेली, नितानन्द यह बार।।६।।

## 卐 शब्द १० 卐

क्या सोवै अज्ञान में री हेली, राम मिलन की बार।
पल २ औसर जात है री हेली, गह लिया मुगद गवार।।टेक।।
बार बार ये तन नहीं री हेली, लीजै तत्त्व विचार।
राम नाम लौ लाय कर री हेली, निर्भय उतरो पार।।१।।
तुं जानै अस्थिर रहूं री हेली, ये स्वप्ना संसार।
सतगुरु सरने लाग कर री हेली, चढ़ो महल मंझार।।२।।
गुरु बिन पंथ न पाइये री हेली, कहाँ पुरुष कहाँ नार।
जो सुमरै सोई बड़ा री हेली, पावै हर दीदार।।३।।
असंख जुगहुं का बीछड़ा री हेली, भूला मित्र मुरार।
सभ जग रीता जात है री हेली, जन्म जवहार हार।।४।।

स्वामी गुमानी गायले री हेली, वह साहेब निरंकार।
नितानन्द आनन्द से री हेली, चरण कमल उर धार।।५।।

## 卐 हेला शब्द ९१ 卐

हेला।। सतगुरु हेला देत हेला सुन गैला गहो।
तज अज्ञान की नींद हेला, ज्ञान गली बिच चेत हेला।।टेक।।
भवसागर की लहर में हेला, पड़ी तुम्हारी नाव।
फेर सके तो फेर हेला, बहुर न ऐसो दाव।।१।।
नर नारायण नगर में हेला, धर नारायण ध्यान।
तिल कै ओल्है राम है हेला, जान सकै तो जान।।२।।
साध संगत में बैठ कर हेला, प्रेम पियाला पीव।
अमरपुरी आनन्द की हेला, पल में पहुंचै जीव।।३।।
नितानन्द गोविन्द की हेला, निज मूरत उर धार।
राम गुमानी दंश में हेला, जुग २ रहे बहार।।४।।

(इति हेली हेला संपूर्णम्)

## 卐 मारवाड़ी शब्द ९२ 卐

लगन रो पंथ हमारो हो,
ध्यान समाधि न तप करैं, नहीं व्रत आचारो हो।।टेक।।

बेद न खेद न भेद कछु, नहीं सार असारो हो।
तीर्थ देवल रती दिल नाहीं, एकै आधारो हो।।१।।
अष्ट सिद्ध नौ निद्ध लौं, सुख लागे खारो हो।
जोग भोग दोऊ रोगन से, वो पीव पियारा हो।।२।।
कुल क्रिया करनी नहीं, जग कौन चिकारो हो।
हर प्रीतम के प्रेम में, तन मन मतवारो हो।।३।।
राम गुमानी मन बस्यो, पल होत न न्यारो हो।
नितानन्द आनन्द भये, घट माहिं नजारो हो।।४।।

## 卐 शब्द १३ 卐

लागी हर भक्ति खुमारी हो, अलमस्ताने
हाल में चढे गगन मंझारी हो।।टेक।।
शुन्य माहिं चेतन हुए, भाठी पर जारी हो।
अमृत गुरु चवाइया, यह मद मतवारी हो।।१।।
पीया प्याला प्रेम का, उपजा, सुख भारी हो।
नैन छिके हर रूप में, दिलवर दीदारी हो।।२।।
सेज सजन तन पाक की, हों निपट सुखारी हो।
झलके झलका तेज का, सब अंग बहारी हो।।३।।
हलन चलन से थक गई, जहां पांचो नारी हो।
निरखत छवि उस लाल की, मिले मोही सारी हो।।४।।

रंगी रंगीले रंग में, अवगत दरबारी हो।
रोम २ सुख हो गया, जब मिले मुरारी हो।।५।।
असंख जुगों के बीछड़े, वह बात संभारी हो।
ले पहुंचाए पलक में, गुरु नजर निहारी हो।।६।।
स्वामी गुमानी राम पर, तन मन धन वारी हो।
नितानन्द उस देश की, बातां कुछ न्यारी हो।।७।।

## 卐 शब्द ९४ 卐

थैं तो म्हाने लागो हो राजा प्यारा,
थारा तो दरश परश सरवस वारा हो,
थे तो म्हारा प्राण अधारा ।।टेक।।
साजन तेरी बन्दी चेरी, अब क्यों हूजो म्हासें न्यारा।।१।।
सोहनी सूरत मोहनी मूरत, अटक्या नैन हमारा।।२।।
नितानन्द महबूब गुमानी, चरण कमल निस्तारा।।३।।

## 卐 शब्द ९५ 卐

त्यार लीजो हो साहिबां,
हो जी म्हाने थारे तो दरश की प्यास ।।टेक।।
रात दिना लागी रहां जी, हर दर्शन की आस।
कृपा कर दीजियो जी, म्हाने चरण कमलरो बास।।१।।

भवन दुआरे म्हें खड़ी जी, ऊभी २ जोहां थारी बाट।
चेरी अपनी जानके जी, म्हाने मिलियो खोल कपाट।।२।।
परलै पार म्हारो साहेबां जी, म्हें अटकी मझधार।
अर्ज बन्दी की चेत कर जी, म्हाने लीजो बाहिं पसार।।३।।
तुम बिन संगी को नहीं जी, सबै बटाऊ लोग।
नितानन्द महबूब गुमानी, थारो दर्श अमी रस भोग।।४।।

## 卐 शब्द ९६ 卐

दरश दीजो हो राजा
साजन प्यारा हो राजा
हो जी थे तो आ जो म्हारे देश जी ।।टेक।।
मैं तो थारी दासी थे तो म्हारा सहिबा जी ।।१।।
तन मन कियो छय जी थारी पेंस जी ।।२।।
नितानन्द महबूब गुमानी, मिलते रहो जी हमेश।।३।।

## 卐 शब्द ९७ 卐

लारा लागी हो राजा, म्हें तो साहिबां थारे,
तुम ठाकुर हम चाकर थारी, म्हारी बांह गहे की लाज ।।टेक।।
भव जल पार उतारियो जी, साचे सरजन हार।
खेवट होकर खेइयो जी, म्हारी नाव थकी मझधार।।१।।

देखो नजर पसार कर जी, म्हारे तुम बिन नाहीं कोय।
जासों मोह लगाइये जी, सो गलरो फन्द होय।।२।।
काया माया बन्ध छय जी, भक्ती भुलावनहार।
मन इन्द्री बुध वासना जी, सब धरा शीस पर भार।।३।।
सभी बटाऊ बाट का जी, कासे करूं स्नेह।
सजन संगाती साइयां जी, म्हाने भक्ती प्रेम पद देह।।४।।
चला चली जग देख कर जी, यह दिल हुआ उदास।
नितानन्द गोविंद गुमानी, म्हाने राखो चरण निवास।।५।।

## 卐 शब्द १८ 卐

मनमोहन मन भावै, म्हानै जग न सुहावै हो।।टेक।।
कबहूं झलक दिखाय आपनी, भुरकी डार भुलावै हो।
नैन पहरवा पंथ निहारैं, साहेब दरश दिखावै हो।।१।।
सुन्दर सजन सलोना कबहूं, मन्दर म्हारे आवै हो।
हम से कहै रहो सन्मुख, फिर २ बान चलावै हो।।२।।
अंतरगत में अंतरजामी, अनहद बीन बजावै हो।
घट पट खोल मिलै जो हम को, जन्म मरन दुख जावै हो।।३।।
स्वामी गुमानी राम हमारा, बारंबार बतावै हो।
नितानन्द ये भेद कठिन है, सिर के बदले पावै हो।।४।।

## 卐 शब्द ९९ 卐

लाल का मिलन उपाय करां,
चरण शरण गुरुदेव सेव में, निर्भय सीस धरां ।।टेक।।
मन मोहन मन माहिं बसावां, दर तज नाहिं टरां।
उनमन रहां लगन नहीं छूटै, तन मन रांख करां।।१।।
नेह निबाह लेहिं सिर देकर, याही गली फिरां।
सकुचि लाज सभ तोड़ मरोड़ां, चित से ना बिसरा।।२।।
ब्रह्म लोक लों सुख नहीं चाहिये, प्रीतम संग बिहरां।
अब कै ठीक होय सो होई, दूसर नाहिं बरां।।३।।
मेहर करो महबूब गुमानी, तो भव सिंधु तरां।
नितानन्द इस ब्रह्म पंथ में, काहू से नाहिं डरां।।४।।

## 卐 राग सौरठा शब्द १०० 卐

भजन कर भजन कर जीवना सहल है,
महल की खबर क्यों नहीं लेता।
दरूंने बीच दीदार है अलख का,
मान रे मान मैं कहा केता।।टेक।।
बन्दगी किया कर रिन्दगी छोड़ दे,
ईर्ष्या द्वेष की बान भूंडी।

लाख का महल मिल जायगा खाक में,
पाक के मिले बिन कहा गौंडी।।१।।
लाल को भूल के धूल में चित्त दिया,
फिरे कंगाल अन्दर खजाना।
खोल दे द्वार भण्डार भारी भरा,
साच को समझ मूरख दिवाना।।२।।
हिरस हवास नुकसान है जीव का,
होयगा जमपुरी जाय डेरा।
नरक के कुंड जहां अगन धंधकै खड़ी,
राम की भक्ति बिन वहां बसेरा।।३।।
ऊपर पांय लटकाय औंधा किया,
पड़ा पछताय कछू हो नहीं आवै।
पहल से चेत हर राह खोटी न कर,
बदी ही बदी तुझ को सुहावे।।४।।
चलन की बात दिन रात ना भूलनी,
घड़ी ही घड़ी दिन निकट आवे।
आप जाने नहीं कहा माने नहीं,
पीव को बिसर दिल कहां लावे।।५।।
गहो परतीत हर प्रीत हृदय धरो,
नित्यानित्य को समझ लीजे।

रहो लौलीन जब चित्त उज्ज्वल रहे,
अगम पुर पंथ पग वेग दीजे।।६।।
सतगुरु गुमानी दास मिले भाग से,
प्रेम की गली सीधी बताई।
नितानन्द प्याला पीवे सज्जनों से लग जीवे,
अनहदी ध्यान में बुद्ध आई।।७।।

## 卐 राग सौरठा शब्द १०१ 卐

भजें भागवन्त सो सन्त अवचल
सदा काल के जाल फिर नाहिं आवैं।
अधर पर आस विश्वास धीरज पकड़,
जुगत कर अटल आसन लगावैं।।टेक।।
भक्ति की शक्ति से बन्ध आपै बंधै,
सुन्य बिच प्रकट तुत्कार लागै।
पवन ले प्राण ब्रह्मण्ड को चढ़ चले,
आप ही आप सब कला जागै।।२।।
ईड़ा और पिंगला सुखमना उलट कर,
निरत निरधार में सुरत लावै।
ज्ञान गम्भीर घट उझल अनभव उठे,
अगम की बात प्रत्यक्ष गावै।।३।।

पांच मुंदरा छः चक्र अष्ट कमल,
चतुर विध ध्यान त्रिकुटी झरोखा।
गुरों की मेहर एक पलक में पट खुलें,
नाम निर्वान निर्गुण अनोखा।।४।।
स्वप्न का लोक तज सहज मन शुद्ध हो,
जाग्रत घर सुसोपत मेला।
योग निंद्रा तहां भोग अमृत जहां,
तुर्यापद पर नित रंग रेला।।५।।
सन्त प्याला पीवैं अमर जुग २ जीवैं,
देह तैं दूर आतम बिचारी।
नगर बेहदपुर पहुंच मंगल करे,
पांच पच्चीस सभ घोर मारी।।६।।
गैब के तुर अनहद निशि दिन बजै,
बिना रवि चन्द उज्जास भारी,
शास्त्र वेद से परे प्रचार है,
महल में मिले अवगत मुरारी।।७।।
बिघन बिन जोग सिद्धान्त पै लग रहे,
निर्गुनी भक्तनी साहेब गुमानी।
दास नितानन्द दुर्बीन की झलक से,
हुए जीवन मुक्त पतित प्रानी।।८।।

(इति सौरठा संपूर्णम्)

# 卐 ज्ञान जाँगड़ा शब्द १०२ 卐

गहै गुरु टेक से अटल सूरा सही,
डिगे धरन गगन जो सुभट भाजै।
स्वामी के हेत धड़ सीस तजै,
खेत में करे ना संक महमंत गाजै।।१।।
चढे जब तुरी चेतन असवार हो,
धनी के धाम की सुरत कीन्ही।
सुनत ही सकल सेना सजी कर्म की,
घाट और बाट सब घेर लीन्ही।।२।।
काम अति बलि जो जगत जीतें फिरे,
रूप स्पर्श को लिये ठाढ़ा।
असुर सुर देवता मनुष गह बश किये,
मन मुखी फौज में बड़ा गाढ़ा।।३।।
झूठ और कपट छल छिद्र अघ मानसी
चपलता कुटिलता भिष्ट लाई।
अबुद्ध अज्ञान अन्धेर आतुरी,
काम की कटक मिल सरस आई।।४।।
क्रोध विकराल निर्दया महा काल,
डाल कर जाल जिन जग नचाया।

ईर्ष्या द्वेष कुभाव पर निंदता,
बहुत ही सिपाह अंग संग लाया।।५।।
काम की कुमक में आय शामिल हुआ,
तेज की आंच तप माहिं डारी।
गज गजा वीर बहु भीर भारी लिए,
द्वन्द मन फन्ध फरसी संभारी।।६।।
लोभ के पास ठाढ़ी रहे कामना,
धावना और कल्पना चिंत्या,
भ्रमना आस तृष्णा अधिक चाहना,
और अप्रतीत साथी गिनंता।।७।।
संच प्रपंच प्रमोध मनसा,
सिमट फौज से निकस दीन्ही बधाई।
खड़ग धारा बहे सुभट सन्मुख रहे,
लोभ की बहुत गहरी अवाई।।८।।
मोह ममता मिले आप पर सज चले,
हर्ष पुन शोक की गांठ भारी।
डिम्ब पाखण्ड जम डण्ड बहु,
विकलता राग अनुराग कीन्ही तैयारी।।९।।
संग्रह तिमर आसक्त षट उरमी,
चमकता लिया भय भीत भाला।

चौदहू लोक में चमक की दमक है,
मोह का सभै बलवन्त आला ।।१०।।
चढे अभिमान गुम्मान मुदगर चलें,
मान विपरीत हांसी बड़ाई।
लाज मरयाद कुल लोक अहंकार मिल,
वैर और विरोध मांडी लड़ाई ।।११।।
पिण्ड ब्रह्मण्ड की देव माया सजी
इन्द्रियां जाल मारू बजावैं।
त्रिगुण निशान बहु बान कर में लिए,
भ्रम का फरहरा फरहरावै ।।१२।।
तनमई तापमें मोरचा पाप का,
विघ्न बन्दूक छूटैं अपारा।
विगल भयभीत अकर्म अधर्म मिल,
जुद्ध में चढे जोधा हजारा ।।१३।।
ब्रह्म की बाट पर राड का ठाट कर,
वासना बान भर २ चलावै।
कुबुध और कुमति दो तोप निशि दिन दगें,
विषय गोला सिखार थरहरावै ।।१४।।
दास पर आन कर भीड़ भारी बनी,
प्रथम गुरु नैन दुर्बीन दीन्हीं।

अटक का कटक सो पलक में लख लिया,
गुरुमुखी फौज निज संग लीन्हीं ॥१५॥
शील शोभा घनी सहज शोभा बनी,
सोच तप निर्मलता लिये संगा।
विमलता वीरता जत सत की आणी,
एक से एक सूरा सुरंगा ॥१६॥
अचल उमराव नर जुद्ध का चाव कर,
काम से आए रन खांभ गाड़ा।
मदन बे जोग रस भोग हथियार ले,
उमग्या आए रण पड़ा आड़ा ॥१७॥
छमा सा कुंबर जिस सीस शीतल चंवर,
दीनता सहन गम्भीरताई।
सबुद्ध निरहंस निर्दोष बहु दीनता,
छमा की ध्वजा फरकै सवाई ॥१८॥
भाव आधीनता अस्तुति सदगति
क्रोध के कटक पर कीन्हीं चढ़ाई।
बड़ा बलवीर रणाधीर गाढ़ाबली,
अनी से अनी सन्मुख भिड़ाई ॥१९॥
सुभट संतोष के संग साऊ सजे,
धीरज नेह काम बलवन्त बांका।

सबल प्रतीत नेह कल्प नेह चिंतता,
लोभ से दिया आय भेल नांका॥२०॥
धर्म विश्वास निर आश निर इच्छता,
प्रबल अचाह घोड़ा उड़ाया।
मंडे पोखरेत रण खेत भारी रचा,
गगन धुन अभय बाजा बजाया॥२१॥
मुक्त वैराग निर्बन्ध निर्द्वन्द पद,
दया नेह कर्म का परा लाग्या।
मचा संग्राम निज धाम पर,
नाद सुन सोवता सिंह जाग्या॥२२॥
त्याग सो भाग शमदम एकांगता,
नाम निःशान निर्भय घुर्राया।
करे घमसान निर्वान पद के लिए,
मोह से उमंग मोहरा मिलाया॥२३॥
ज्ञान नेह संग सरवंग परवीनता
प्रीत विब्बेक का साथ लीन्हा।
सुमत सुविचार निरद्रोह निरवासना,
अदाग निर्विघ्नता रंग भीना॥२४॥
टेक का टोप गुरु पक्ष पहरी,
झिलमिला गहर गम्भीर सावन्त चाल्या।

पड़ा ललकार ले सार अभिमान,
सामने आय रण सेल घाल्या ॥२५॥
प्रेम ताजी सुरंग दास सोहै चढ़ा,
काल के कटक से दल लड़ावै।
ध्यान का धनुष खींचा सुरत हाथ से,
शब्द का बान धर धर उड़ावै ॥२६॥
तत्व तलवार की धार तीखी खरी,
शील से काम से लोह बाजै।
क्षमा और क्रोध का गोल झड़ झड़ पड़ै,
फेरता पीठ सावंत लाजै ॥२७॥
लोभ परमार संतोष बबकारियां,
घेर निग्रह करी फौज सारी।
लड़ै वैराग जहां फाग सा,
मच रह्या मोह की सकल सेना विडारी ॥२८॥
ज्ञान अभिमान का परा झूझे खरा
चले समशेर वर्छी कटारी।
थरहरे क्रूर जहां सूर जग मग दिपै,
युद्ध में मंडे गुरु मुख जुझारी ॥२९॥
झड़ाझड़ होय दल होय औझड़ चलैं,
बजैं घनघोर अनहद नगारा।

लगी टंकोर हर पौर भा रथ पड़ा,
खेत के माहिं क्षत्री हंकारा ॥३०॥
मन मुखी फौज संहार परलै करी,
पकड़ियां पांच मन कैद कीन्हा।
काल पर पग दिया अटल आसन किया,
ईश के वास्ते शीश दीन्हा ॥३१॥
देह आशा तजी अगम मुरली बजी,
चाह संसार दिल से मिटाई।
देखिए प्रण निज दास के वर्ण को,
अमरपुर धाम से हूर आई ॥३२॥
भक्त सी अपसरा आय सन्मुख खड़ी,
दिया भर नूर से अमी प्याला।
जुगहुं के बीछरे चले उस महल को,
जगमगे जोत अनुभव उजाला ॥३३॥
खेत को जीत भयभीत को भस्म कर
गुरु प्रताप से फतै पाई।
तख्त के सामने सदा हाजिर रहे,
दादनी मेहर दीदार आई ॥३४॥
अर्स आराम मुक्काम साहेब दिया,
तेज घन पुंज की होत काया॥

फेर नहीं बीछुड़ै जग न फेरा करैं,
अंग में अंग अवगत मिलाया।।३५।।
नूर के माहिं गरकाब सतगुरु सदा,
मिले मुसकाय स्वामी गुमानी।
नितानन्द के सीस पर हाथ अवचल धरा,
परम सुख माहिं आतम समानी।।३६।।

## 卐 ज्ञान जाँगड़ा शब्द १०३ 卐

जमहुं को जेर कर सत्य को शमशेर कर,
गर्व को गेर चल महल माहीं।
दोष को दूर कर भक्ती भरपूर कर,
तख्त को धूर है नूर यहां हीं।।टेक।।
यार को देख ले बुद्ध विवेक ले,
प्रीत से पेख ले पीव तेरा।
सभों से खूब है मस्त महबूब है,
दस्त प्याला लिए सजन तेरा।।१।।
प्रेम के पास है सदा प्रकाश है,
दास को दरश दिल में दिखाया।
हद्द से पार है अजब गुलजार है,
धन्य वह नारि जिन पीव पाया।।२।।

गुमानी राम है अगम पुर गाम है,
सकल में धाम घट २ तेरा।
नितानन्द निज दास है चरण के पास है,
चरण ते रहत है सदा नेरा।।३।।

(इति ज्ञान जाँगड़ा संपूर्णम्)

## 卐 शब्द १०४ 卐

मेरे हिवरै बस गयो रामां,
हर दर्शन की प्यास हमारे,
कद पहुंचें उस गामां ।।टेक।।
प्रेम घटा जब चढी गगन में, भिजन लाग्यो मेरो दामा।
चित चात्रक पी पी लौ लाई, रटत रहे हर नामा।।१।।
नाला नैन हिलोर हिए की, बहत रहे निशि जामा।
रक्त मांस दोउ भेट विरह की, रहे अस्त और चामा।।२।।
स्वामी गुमानी राम दरश में, जाय कही पैगामा।
नितानन्द को हित कर राखो, चरण छत्र की छामा।।३।।

## 卐 शब्द १०५ 卐

म्हारे प्रेम संदेसी आय,
मन्दर भयो उजास सखी री, मंगल बचन सुनाये।।टेक।।

प्रीत बदरिया उमड़ घुमड़, तन नगर मांहि झड़ लाये।
पिया मिलन को आगम उपज्यो, मोतियन मन्दर छाये।।१।।
बर्शैं हीरा झड़ लगाय कर, निपजैं रतन सवाये।
नितानन्द निज नूर गुमानी, म्हाने ऐसे सुख दरसाय।।२।।

## 卐 बारह मासा शब्द १०६ 卐

बेहद बादर गगन उमग्यो, घोर अनहद की सुनी।
आयो आषाढ़ अंदेस उपज्यो, सखी आतम उनमनी।।१।।
बालम बिसारी बिथा भारी, कहो किस विध जी जिए।
आओ सहेली सभै हिलमिल, लाल में मन दीजिए।।२।।
सावन सुरंग बिहंग बोलैं, प्रेम की लगी रिमझिम झरी।
तरवर बिलम्बी बुद्ध बेली, सुमत भूम हरी भरी।।३।।
चात्रक पुकारे पीव सारे, मोर मन तन हेरिये।
दादुर दयाल २ टेरें, दीन दुःख निवेरिये।।४।।
भादों भरम अंधेर रतियां, नाथ दृष्ट न आवहीं।
जल विम्ब जगत असंभ बरसै, बिजली चमक डरावहीं।।५।।
ऊंची अटारी घटा कारी, देख जियरा थरहरै।
घर माहिं बन ज्यों रहे विरहिन, पास पी क्रीड़ा करै।।६।।
आसोज अक्षर अगाध बानी, अगम पंथ न पाइये।
असराल इन्द्री सवल सलिता, पार किस विध जाइये।। ७।।

वरषा बिहानी हर न जानी, भरे सरवर नीर री।
जग जन्म वृथा बिना दर्शन, लदी जात बहीर री॥ ८॥
कातिक कुसंग अनंग घेरी, भूली सुधा समीर री।
परदेश आई पिव पठाई, कठिन उर में पीड़ री॥ ९॥
यह चान्दनी दिन चार प्यारी, शरद रैन सुहावनी।
अवसर गवावै शशि न पावे, अंध निशि अनखावनी॥१०॥
मंगसर सुनी हम माहिं मोहन, चित्त लागी चिन्तरी।
परदा न खोलै हंस न बोलै, हे कठोर सुमिन्तरी॥११॥
व्यापै न शीत न देह कांपै, नेह ने निर्गुण करी।
नहिं नाम रूप न कर्म क्रिया, सहज ही जीवत मरी॥१२॥
इस पोह में अन्धो है आली, प्रीत पिंजर की गई।
लौलीन पंछी प्राण हर में, जगत से न्यारी भई॥१३॥
पांचों पचीसों पीव पुकारैं, लगन में लग पग रही।
जहां शीत पाला कहां ब्यापै, विरह ज्वाला जग रही॥१४॥
अब माह उतर बसंत आई, अर्ध उर्ध बहार री।
सब सखिन मिल सिंगार कीन्हा, गुप्त दरस दुवाररी॥१५॥
दरबार आगे उमंग आई, सुरत निरत संभार री।
गावे सकल गुण ज्ञान सेती, मिलौ प्राण अधार री॥१६॥
फागन में रंग गई रंग भीतर, लोक लाज बिसार कै।
सभ माह एकै कंथ खेलै, छिकी चित्त निहार कै॥१७॥

होरी मचाय खेले खिलावै, बहुर देर भुलायरी।
आपै सुचोवा अगर चन्दन, रह्यो सर्व समायरी ।।१८।।
चैत बन बहु वेलवाड़ी, फूल्यों होय फुलवार जी।
जहां चरण कमल सुबास सुन्दर, सन्त भंवर अपार जी ।।१९।।
कहीं होत कलियां करें रलियां, सजन अधर अधार जी।
दुलहन दिवानी कर गुमानी, छिपे भुर की डार जी ।।२०।।
बैसाख वनिता खोल घूंघट, निकट निरखे नाथ जी।
जब लग न जान्या दूर मान्या, अब न छोड़ो साथ जी।२१।।
गोपाल आए मन पति आए, कुंज केल विशाल जी।
स्वामी गुमानी राम रमता, तेज पुंज प्रकाश जी ।।२२।।
जेठ जगमग जोत जागी, मिटी तीनों ताप जी।
प्रगट गुमानी मैं मिटानी, प्रेम के प्रताप जी ।।२३।।
आपा मिटाया आप पाया, हो गई आप आप जी।
नितानन्द नित आनन्द कर ले, बूंद समंद समाय जी ।।२४।।

(इति बारह मासा संपूर्णम्)

## 卐 शब्द १०७ 卐

तैने रमता राम भुलाना रे,
अज्ञान रमता बिसार के, क्या सुख सोवै नादाना रे।।टेक।।
हर अवनासी घट में तेरे, गफलत माहिं न जाना रे।
मनषा जन्म अमोलक खोया, माया से लिपटाना रे।।१।।

हर सा हीरा कर से डारा, जगत कांच ललचाना रे।
जब जम आय जीव यहों घेरा, तब मूरख पछताना रे।।२।।
प्रभु के भजन बिन जो छिन खोवै, होत मूल में हाना रे।
फिर यो अवसर हाथ न आवै, कैसे फिरै दिवाना रे।।३।।
अनेक जनम विषया सुख लीन्हा, तौ नाहीं तृप्ताना रे।
अजहूं चेत समझ नर अन्धे, आज की काल पयाना रे।।४।।
तिल के ओल्है राम हेर ले, तजो जीव की बाना रे।
स्वामी गुमानी राम सुमर ले, नितानन्द मस्ताना रे।।५।।

## 卐 शब्द १०८ 卐

जगत में जीवन थोड़ा रे, मत विसरै हर नाम।
माया मोह धोह की फांसी, क्या लिपटा धन धाम।।टेक।।
जिस देही का गर्भ करत है, हाड़ लपेटा चाम।
सो सब जल बल खेह मिलैगी, सुमरै क्यों ना राम।।२।।
कोई पहले कोई दस दिन पीछे, चलसी खलक तमाम।
नितानन्द भज राम गुमानी, होगा महल मुकाम।।२।।

## 卐 शब्द १०९ 卐

पट दिये झलक रह्यो है घट २ मुकुट मुरार।
बानी बैन रैन दिन बाजै, महल २ के द्वार।।टेक।।

एक पीव अनेक सखियन में, कौतुक करै अपार।
कुंज २ हर नटवर नाचै, जाने जाननहार।।१।।
नैन में जोत जोत में मोहन, अलबेलो रिझवार।
निरख बिहारी ये सुख भारी, नैन के नैन उघार।।२।।
गुरुमुख होय दूर नहीं देखे, उर में लियो बिचार।
नितानन्द महबूब गुमानी, आतम के भ्रतार।।३।।

## 卐 शब्द ११० 卐

यूं ही नर देह धरी रे, हर नाम भुलाना।
मूरख देह धरी न धरी, ऐसी खोटी बाट करी।।टेक।।
काम क्रोध मद लोभ में, बरियां जाय टरी।
जीव चलसी तन माटी मिलसी, आवत वही घरी।।१।।
कामिन कनक कनक और कामिन, माया से प्रीत करी।
चले अकेला जब कहां मेला, नाहक विप्त भरी।।२।।
हर की भक्ति साधु की सेवा, सो तोसे नांहि सरी।
नर नारायण कंचन काया, करम कै कूप परी।।३।।
स्वामी गुमानी राम बतावै, सुमरो हरी हरी।
नितानन्द तुम सूबस बसियो, साहेब की नगरी।।४।।

## 卐 शब्द १११ 卐

मूरख क्यों गरभाया, धन जोबन मिजमान।
गंदी खोड़ अन्धेरी तैरी, बिना गुरु के ज्ञान।।टेक।।
टेढा चलै मरोड़ दिखावे, करता फिरे डफान।
देह चलावा हंस बटाऊ, जान सकै तो जान।।१।।
रे गंवार हर भक्ति बिसारी, करी जन्म की हान।
आई जबै तंत की बरियां, चूक गया ओसान।।२।।
पीछे छोड़ दोड़ आगे को, मृग जल ज्यों हैरान।
कामिन कनक देख यों ललचै, ज्यों करकं पर स्वान।।३।।
बार २ भज चरण गुमानी, हो रहो धूर समान।
नितानन्द वे सफल फलैंगे, जिनके खेत नवान।।४।।

## 卐 पंजाबी शब्द ११२ 卐

तैंदी वन्दिया हो सञ्जना, दर्श दिखांवदा क्यों नहीं।।टेक।।
ओ दिल जान मान ले विनती, हरदम तालिब तेरा।
पड़दा खोल बोल खुशियों से, कठिन इश्क दा घेरा।।२।।
मरहम यार मार चश्मों से, हुण क्यों चश्म छुपावंदा।
चश्म छुपावंदा दरद न आवंदा, नुण कटे पर लावंदा।।३।।
दोलत माल ख्याल ख्वाब दा, आशिक को न सुहावंदा।
नितानन्द महबूब गुमानी, तुझ बिन और न भावंदा।।४।।

## 卐 शब्द ११३ 卐

जगत दिवाना साडे दिल नहीं भावदा,
तुझ वेखन दा चांव मेरे, रब्ब जी ।।टेक।।
तन भी तेरा वारी, मन भी तेरा वे,
सजन लहर दरियाव, मेरे रब्ब जी ।।१।।
मन्दर मेरे आओ मेहर कर पलकों पर
धर पाव मेरे रब्ब जी ।।२।।
प्रेम समन्दर घट दे अन्दर वेडे नूं पार,
लंघाओ मेरे रब्ब जी ।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी,
अमरपुरी के राव मेरे रब्ब जी ।।४।।

## 卐 शब्द ११४ 卐

सिपाहिड़ा बंगले नूं मोहड़ा मोड़वे ।।टेक।।
देश बिगाना दूर पयाना, दौड़ सके तो दौड़वे ।।२।।
चेत चले सोई घर पहुंचे, नातर ठीक न ठौर वे ।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, टूटी यारी जोड़वे ।।४।।

## 卐 शब्द ११५ 卐

प्रदेशी से प्रीत न जोड़ वे,
सिपाहिड़ा प्रदेशी से प्रीत न जोड़वे।।१।।
काहे को पड़े मोह के फन्दे, सके तो दिल को मोड़वे।।२।।
प्रदेशी की झूठी यारी, नहीं निवाहे ओड़वे।।३।।
मिलते सुख बिछड़ते दुख उपजै, यही इश्क में खोड़वे।।४।।
नितानन्द महबूब गुमानी, तुझ दर्शन दी लोड़वे।।४।।

## 卐 शब्द ११६ 卐

मेरे परदेशिया नूं कोई जाए सुनावै री।।टेक।।
जिस नगरी प्रीतम दा डेरा, हमको उस नगर पहुंचावे री।।१।।
तन मन की सुध रही न सजनी, घर आंगन न सुहावै री।।२।।
प्यास लगाय गए चात्रक को, वही एक छवि भावे री।।३।।
आश लगाकर विछड़े विश्वासी, नैनों नींद न आवे री।।४।।
नितानन्द महबूब गुमानी, कब लग दर्श दिखावे री।।५।।

## 卐 शब्द ११७ 卐

कोई बतलावै री मेरे परदेशिया नूं।।टेक।।
बहुत दिनन से फिरूं पियासी, हम को राह न पावे री।
जा कारण मैं फिरूं दिवानी, सो मेरी नजर न आवे री।।२।।

अपनो लाल लखूं लाखन में, जो वे लाख भुलावे री ।
है कोई ऐसा सखा संग में, इक पल दर्श दिखावे री ।।३।।
भर २ नैन पीव को निरखूं, जब मेरा हिया सिरावे री ।
नितानन्द महबूब गुमानी, वही एक मन भावे री ।।४।।

## 卐 शब्द ११८ 卐

सुन्दर सजन सुजान सांवरे, मुझनूं तुझ दर्शन दा ध्यान ।।टेक।।
लोक लाज हम सभी बिसारी, नहीं किसी की कान वे ।।१।।
कर तकसीर माफ महबूब, हो जावो मेहरवान वे ।।२।।
परदा खोल बोल टुक हंसकर, प्रीतम चतुर सुजान वे ।।३।।
दिल बिच लगी प्रेम की चोटां, जान न सके जहान वे ।।४।।
नितानन्द को मिलो गुमानी, पूर्वली पहचान वे ।।५।।

## 卐 शब्द ११९ 卐

सखी तैं लाल अमोला भुलायानी,
कूड़ मोहबत जन्म ठगाया नी ।।टेक।।
तुझ पर पड़ी न प्रेम की छाया नी,
प्रीतम का सुख मन नहीं भाया नी,
यह तन हाटै हाट बिकाया नी ।।२।।

तूं तो समझी क्यों न सयानी नी,
साहेब छोड़ जगत उलझानी नी,
इनहीं बातन तू भई दिवानी नी।।३।।
तेरे पासे लाल बिराजे नी,
सुरत बिसार कहीं मत भाजे नी,
सन्मुख रहे तो तुरत निवाजे नी।।४।।
तू तो अमर लोंक से आई नी,
स्वामी गुमानी यह खबर बताई नी,
नितानन्द निर्भय लौ लाई नी।।५।।

## 卐 शब्द १२० 卐

दिल दे दिया सतगुरु प्यारे नूं,
सिर दिन्दा सो प्याला लिन्दा,
चलना अमर अखाड़े नूं।।टेक।।
शबद महल मुक्काम हमारा, यहां आए दिन चारे नूं।
घट पट अन्दर देख तमाशा, पटक पाप दे भारे नूं।।१।।
दिल दरयाव इश्क दा बेड़ा, मिलो सजन मतवारे नूं।
नितानन्द महबूब गुमानी, निरखो नूर नजारे नूं।।२।।

## 卐 शब्द १२१ 卐

तू तो बुझदा हाल न मेरा,
मैं तो तोन्दे चरण कमल दा चेरा।।१।।
सानू तुम बिन कौन छुड़ावे, कठिन इश्क दा घेरा।
विरह बन्ध दा दरद जान के, दर्शन देव सवेरा।।२।।
प्रेम नगर को चलां चाव से, बीच लगा उलझेड़ा।
साहेब मिलो मेहर कर अबके, पार उत्तारो बेड़ा।।३।।
तू बेदरद दरद नहीं समझे, हम को दरद घनेरा।
नितानन्द महबूब गुमानी, दरबारों बिच डेरा।।४।।

## 卐 शब्द १२२ 卐

काया नगरी दा साहेब वेली,
चहूं ओड़ दरियाव चढ़ंता, बूड़ी अजब हवेली।।१।।
दुनियां से दिलवे क्या लवन्दा, चल सी जिन्द अकेली।।२।।
लाख हजारां किए इकट्ठे, नाल न चली अधेली।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, हिल मिल क्यों न खेली।।४।।

## 卐 शब्द १२३ 卐

बोल तैंदी रुसनाईया तन विच, बोल तैंदी रुसनाइयां।टेक।।
माल मुलक धोखे दी टाटीं, तापर खलक लुभाईया।।१।।

तन पिंञ्जरे बिच्च बोलता पंछी, सिर पर काल कलाइयां ।।२।।
सब कोई माटी दा भेदी, पीव की खवर न पाइयां ।।३।।
जब लग हंसा सरवर पानी, तब लग सकल खुदाइयां ।।४।।
नितानन्द महबूब गुमानी, समझ २ लौ लाइयां ।।५।।

## 卐 शब्द १२४ 卐

दिलदा महरम यार वे, टुक मिलना प्यारे ।।टेक।।
तोन्दे कदम से प्रीत है मेरी, सजना घर आवरे ।।१।।
पहिले प्रीत लगाय आपही, अब क्या होना न्यारे ।।२।।
सजन सुरंगा सुघर सोहना, सब गुण पूरणहारे ।।३।।
आजिज जान मेहर कर दिलवर, जीवन प्राण अधारे ।।४।।
नितानन्द महबूब गुमानी, बिसरत नाहिं बिसारे ।।५।।

(इति पंजाबी शब्द संपूर्णम्)

## 卐 शब्द १२५ 卐

साधो कीड़ी हस्ती जाया,
उलटा ज्ञान सुलट कर देखा, जब ये मन पतियाया ।।टेक।।
कोठी भरी नाज के भीतर, खेत किसान को बाहै ।
बकरी चढ़ी सिंह सिर ऊपर, गुरु बिन कौन निबाहै ।।१।।

बूंद माहिं से समन्द्र निकास्या, मावस माहिं से चन्दा।
मोती माहिं से सीप निकासी, जब ही भये अनन्दा।।२।।
धागे को उठ गुदड़ी सीमें, नित जोगी को ओढ़ै।
जोगी मंह से मढ़ी निकस, पर पांव पसारे पोढ़ै।।३।।
तरवर में एक बाग लगाया, तामें उपज्या माली।
साह चुरावैं अपने धन को, चोर करैं रखवाली।।४।।
सर्प माहिं से बम्बी निकसी, निर्मल हो गया प्रानी।
तृण में पर्वत उलट समाया, ऐसी अकथ कहानी।।५।।
स्वामी गुमानी सतगुरु पूरा, जो यह सैन बतावै।
नितानन्द या पद को खोजै, आद अंत की गावै।।६।।

## 卐 शब्द १२६ 卐

प्रभु जी दीजे दर्स सुखारा,
नितानन्द पर कृपा कीजे, जीवन प्रान अधारा।।टेक।।
हम अनाथ तुम नाथ हमारे, साहेब अंतर यामी।
भव जल भेरा पार उतारो, निरालंभ नेह कामी।।१।।
भक्त बछल तेरोवृद कहावै, भक्तन के प्रतिपाला।
चरण कमल में राख लीजियो, दीनानाथ दयाला।।२।।
अब कै भेरा पार उतारो, परम गुरु महाराजा।
बांह गहे की लाज तुम्हीं को, साहेब जगत जहाजा।।३।।

नितानन्द महबूब गुमानी, सुनिये साहेब मेरा।
बांह पकड़ कर हम को दीजे, चरण कमल में डेरा।।४।।

## 卐 शब्द १२७ 卐

अब कै भव सागर से त्यारो,
शरण तुम्हारी पड़े मुरारी, कृपा करो उधारो।।टेक।।
तुम साहेब सुख दायक स्वामी, हम आधीन भिखारी।
बांह गहे को लज्जा तुम को, दीजै पार उतारी।।१।।
नितानन्द पर दया कीजियो, लीजै पद की सरना।
चरण कमल की छाया भीतर, कटे जन्म और मरना।।२।।

## 卐 शब्द १२८ 卐

आज तो आनन्द भये कंथ घर आए हैं।।टेक।।
मन्दर उजास भयो साहेब सुहाए हैं।
सभी दुख दूर हुए, दर्शन पाए हैं।।१।।
देखत निहाल कीन्हीं प्रीतम मन भाए हैं।
पपीहा की प्यास गई दया झड़ लाए हैं।।२।।
पांचों नारी मतवारी अनभव गुण गाए हैं।
तेज कों प्रकाश देख सेज मैं समाए हैं।।३।।
स्वामी गुमानी दर्श बड़े पुण्य पाए हैं।
नितानन्द गुरु गोविन्द मृतक जिवाए हैं।।४।।

## 卐 शब्द १२९ 卐

कर महलों दी सैल महल मतवारा है,
नौ दरवाजे प्रगट दीखैं, दस मैं अनहद खेल
सोहंगम तारा है ।।टेक।।
कारीगर करतार उपाया, चिन कर गुप्त प्रकट
कर ल्याया ।
नर नारायण नाम धराया, भीतर निर्गुण गैल
अरस उजियारा है ।।१।।
पांचों तत्व मिलाय बनाया, नैन झरोखा खूब
लगाया ।
अंतरगत में आप समाया, झलके अबगत छैल
जगत से न्यारा है ।।२।।
स्वामी गुमानी राम बताया, महल माहिं
महबूब दिखाया ।
पांच पचीस उलट घर आया, उतर गया सब
मैल ननौ निरख नजारा है ।।३।।
नितानन्द कुछ अजब तमाशा, माहीं धरनी
माहिं आकाश ।
सूरज चन्द्र असंख उजासा, भाज गया बद
फैल मिला पीव पियारा है ।।४।।

## 卐 सन्ध्या आरती शब्द १३० 卐

हर २ शब्द अनाहद घंटा बाजै,
आरती अवचल राम जी की साजै।।टेक।।
पहली आरती प्रेम सों कीजै।
तन मन धन सतगुरु को दीजै।।१।।
दूसरी आरती द्वन्द मिटावे।
साध संगत मिल प्रीत लगावै।।२।।
तीसरी आरती त्रिभुवन नाथा।
सदा सुरत स्वामी के साथा।।३।।
चौथी आरती चरण निवासा।
चित चेतन हो चढ़ै अकासा।।४।।
पांचवीं आरती प्रभु जी को प्यारी।
तेज पुंज में जुग २ त्यारी।।५।।
सुख के सिंधु स्वामी गुमानी।
नितानन्द भज अंतर जामी।।६।।

## 卐 शब्द १३१ 卐

मिट गये सभ जंजाल जन्म के तन मन मंगलचार की।
आरती कीजै श्री अगम अपार की।।टेक।।

भक्ति थाल धरि ज्ञान को दीपक, शोभा निरख मुरार की ।
सूरज चन्द्र करोड़ न सरवर, एक रोम उजियार की ।।१।।
देख दयाल गोपाल लाल छवि, आभा अनंत प्रकार की ।
जगमग जोत अद्वैत परस्पर, मोहन महल मंझार की ।।२।।
अंतर भवन तेज घन स्वामी, नगरी नित्य बहार की ।
बरषत पुहुप अखंड प्रीत से, बाजत अनहद तार की ।।३।।
घंटा ताल मृदंग शब्द धुन, बंसी सुरत संभाल की ।
सकल संत मिल करत आरती, जीवन मुक्त दयाल की ।।४।।
खुल गई पलक झलक घट पट में, अवनासी सुख सार की ।
नितानन्द भज राम गुमानी, अकथ कथा दरबार की ।।५।।

## 卐 शब्द १३२ 卐

गाढ़ी नींद न सोव आगे पंथ दुहेला,
काल बली से राड़ मंडी है, ना जानूं क्या होई ।।टेक।।
औघट घाट कपाट बजर के, गुरु समझावै तोहि ।
निर्मल ज्ञान ध्यान साहेब का, राखो चित्त परोहि ।।१।।
लम्बी बाट दूर घर तेरा, जहां न संगी कोई ।
चार दिनों की जग विच खुशियां, आखिर चलना होई ।।२।।
सुरत निरत धर एकै घर में, दूर कर दिल की दोई ।
नितानन्द भज स्वामी गुमानी, यह मैदान वे गोई ।।३।।

## 卐 शब्द १३३ 卐

जिस नगरी मेरा साहेब बसता, सो बेगमपुर कैसा है ।।टेक।।
है कोई ऐसा जाय मिलावै, हम को यही अंदेसा है ।।१।।
बहुत दिनों से चाव हमारे, हर प्रीतम किस भेशा है ।।२।।
चरण कमल हम कद लग परसां, निरख नूर नरेशा है ।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, मिलते रहो हमेशा है ।।४।।

## 卐 शब्द १३४ 卐

कदम उठाय पांव धर आगे, साहेब का घर नेरा है ।।टेक।।
मिलना हो तो ढ़ील न करिये, तुझ ही में पीव तेरा है ।।१।।
तन मन धन सब वार सजन पर, जब पावै वह डेरा है ।।२।।
नैन उघार निहार नजर भर, दिल दुर्बीन बसेरा है ।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, चल हर महल सवेरा है ।।४।।

## 卐 शब्द १३५ 卐

क्या जन्म जगत से प्यार, हर दम हर दिल लाय ले।
कोई किसी का साथी न संगी, झूठी टेक जहार ।।टेक।।
परले पार प्रीतम का डेरा, पैंड २ पर मार।
प्रेम पंथ की बांकी घाटी, चलना सीस उतार ।।१।।

जीवत मरना डर नहीं करना, अगम महल पग धार ।
नितानन्द महबूब गुमानी, कर निर्भय दिदार ।।२।।

## 卐 राग धनासरी शब्द १३६ 卐

सोई संत सुजान जगत से न्यारा है,
अस्तुति निन्दा मान बड़ाई, तजे खुदी अभिमान ।।टेक।।
छमा अधीनी छक रहे, राख शील सन्तोष ।
निह कामी निर्मल सदा, सो जन जीवन मोक्ष ।।१।।
तत्व तिलक धारे रहें, संत जनों से भाव ।
गगन मगन गुरु ज्ञान में, धरें अगमपुर पाव ।।२।।
इन्द्रियों से अटके नहीं, तन मन पर असवार ।
अंतरगत के चान्दने, सुने अनाहद तार ।।३।।
सुरत निरत संयम रहे, उन मन दशमें द्वार ।
नाद बिन्द अस्थिर करे, बैठे ब्रह्म विचार ।।४।।
अरध उरध में आरसी, निरख गुमानी दास ।
नितानन्द हर चरण में, जुग २ रहो निवास ।।५।।

## 卐 शब्द १३७ 卐

समरथ साहेब मेरा दया कर
दर्शन बिना बहुत दिन बीते, बिसर गया बह डेरा ।।टेक।।

जब से वा घर को भुल्या, किया जगत में फेरा।
माया मोह जन्म बन्धन मिल, लाग पड़ा उलझेरा।।१।।
विषे लहर प्रमोधै मन को, पाचन माहि वसेरा।
तुमको छोड़ जहां चित दीजै, सोई काल का घेरा।।२।।
स्वामी गुमानी नूर निशानी, दर्शन दो इस बेरा।
नितानन्द है दास तुम्हारा, जन्म २ का चेरा।।३।।

## 卐 शब्द १३८ 卐

हर प्रीतम ने म्हारी सुरत बिसारी हो,
देश हो माहिं भये परदेशी, यही अचंभा भारी हो।।टेक।।
बालम बिछड़ विदेश बिलम्बे, विरहिन निपट दुखारी हो।
पंथी पूछे पंथ निहारे, कब लग मिलैं मुरारी हो।।१।।
मन्दर म्हारे आवो दया कर, पलकन डगर बुहारी हो।
अंतरजामी साचे स्वामी, जीवन प्रान अधारी हो।।२।।
मन मोहन की मूरत ऊपर, तन मन धन सब वारी हो।
नितानन्द को मिलो गुमानी, तब हम दास तुम्हारी हो।।३।।

## 卐 राग विहाग शब्द १३९ 卐

होय यारो होय यारो यहां बासा दिन चारा,
आगे चलना दूर है रे, मत लादै सिर भारा।।टेक।।

हाड़ चाम की देह में रे, भरिया अहंकारा।
सो तो जल बल जायगी रे, मिले छार में छारा।।१।।
कोई बैरी कर थरपिया रे, कोई दोस्त प्यारा।
साथी संगी कोई नहीं रे, बिना सरजन हारा।।२।।
फूला २ क्या फिरै रे, नर अंध गंवारा।
कठिन चपेटा काल का रे, सो तो टरै न टारा।।३।।
अमरपुरी में बसत है रे, महबूब तुम्हारा।
नितानन्द भज स्वामी गुमानी, चल भवसागर पारा।।४।।

## 卐 शब्द १४० 卐

अरे विदेशी प्यारे मेरी अखियां जोहैं बाट,
हम परेदशी तुम परेदशी प्यारे, मेरे चित में परम उचाट ।।टेक।।
खबर हमारी लई न मुरारी, हम अटकी औघट घाट।
नेह नगर बिच सौदे आई, प्रेम बनज की हाट।।१।।
तन मन सीस सांई ले लीजे, करो प्रीत की साट।
नितानन्द महबूब गुमानी, म्हाने मिलियो खोल कपाट।।२।।

## 卐 शब्द १४१ 卐

गुमानी गोविन्दा जी थांके चरण कमल पर वारी।
जन्म २ की चेरी तेरी, अब कै मिलो मुरारी ।।टेक।।

भवसागर भयभीत भयानक, अटकी नाव हमारी।
वेग पधारो पार उतारो, तौ साचे गिरधारी।।१।।
अन्तरजामी साचे स्वामी, हम हैं दास तुम्हारी।
मन्दर म्हारे क्यों नहीं आओ, बीत चली निशि सारी।।२।।
मांह अंधेरी सकड़ी सेरी, पांच सखी मतबारी।
अंतर मेट निरंतर राखो, अब दर्शन की बारी।।३।।
जिन के भवन गवन हर कीन्हा, उन पर शोभा भारी।
खोल कपाट महल में लीन्हीं, धन्य २ वह नारी।।४।।
राम गुमानी अलख निशानी, अवगत अगम अपारी।
नितानन्द के फन्द काट कर, राखो शरण सुखारी।।५।।

## 卐 शब्द १४२ 卐

मोहन की मूरत प्यारी रे,
याही से ध्यान रहे निशि वासर, पहुंचै महल मुरारी रे।।टेक।।
बिछुड़न सा दुख और न कोई, मिलवे सा सुख भारी रे।।१।।
जोत स्वरूप तेज घन सुन्दर, अनहद अगम अटारी रे।।२।।
दूर से दूर युगों का मारग, सो हर हिये मंझारी रे।।३।।
किये निहाल स्वामी गुमानी, अन्तर दृष्टि उघारी रे।।४।।
नितानन्द निर्गुण चरणों में, बसियो सुरत हमारी रे।।५।।

## 卐 शब्द १४३ 卐

सहाब से धुन लायरे,
काम क्रोध मद लोभ मोह में, कहाँ रहा ललचायरे ।।टेक।।
बारम्बार कह्यारे जिवरा, मैं तो को समझायरे।
खुदी गुमान न कीजिए रे, ये तनबास सरायरे ।। १ ।।
परमेश्वर की शंक न माने, निर्भय कुमति कमाय रे।
बरियां से चेत्या नहीं मूरख, चलते बर पछताये रे ।। २ ।।
कामिनि कनक जहर के लडुवा, लीन्हें चित्त चढ़ाय रे।
अमृत अमर भक्ति के भोजन, बिना भाग क्यों खायरे ।। ३ ।।
हर की भक्ति साधु की संगति, जिनको देख रिसायरे।
कंकर जगत प्रीत कर पकड़ा, हीरा दिया गंवाय रे ।। ४ ।।
काया हाट आर्बल पूंजी, नाहक दई लुटाय रे।
लेखा होते मार पड़ेगी, पहले कह्या सुनायरे ।। ५ ।।
बिखरी सुरत समेट शोधकर, रहो चरण में छायरे।
नितानन्द जिस महल गुमानी, सो सुख कहा न जायरे ।। ६ ।।

## 卐 राग झंझोटी शब्द १४४ 卐

बनजारन अखियां खोल टांडा तेरा किधर चल्या ।।टेक।।
क्या सोवै उठ जाग दिवानी, आगे गारत गोल।

तू गैहली गफलत की माती, तेरी छीजै वस्तु अमोल ।।१।।
चहुं दिशि लद लद चले मुसाफिर, मैं थक गई दे दे बोल।
पीव विहुनी सभ ही सुनी, नाहक किये किलोल ।।२।।
रैन बिहानी अजहूं न जानी, कहां बजाऊं ढोल।
नितानन्द महबूब गुमानी, रंग में रंग झकोल ।।३।।

## 卐 शब्द १४५ 卐

कर ले न सामान मुसाफिर, वह दिन आया ।।टेक।।
सभ स्वप्ने की सम्पदा रे, मूरख जीव लुभाया ।।१।।
चार दिना के वास्ते रे, हीरा जन्म ठगाया ।।२।।
फूल्या २ क्या फिरे रे, खाक मिलै तेरी काया ।।३।।
नितानन्द जिन्ह भज्या गुमानी, जिन्हें अमर पद पाया ।।४।।

## 卐 शब्द १४६ 卐

नीका दाव रे प्रानी नीका दाव रे,
तेरे जागे मस्तक भाग, सुमर नर नीका दाव रे ।।टेक।।
उमदा चोला बड़ा अमोला, नर नारायन काया।
ऐसी कृपा करी हर तुम पर, आप समान बनाया ।।१।।
तन तंरवंर बिच पंछी बैठा, जब लग दाव तुम्हारा।
पंछी चेत हेत कर हर से, बाजत काल कुहाड़ा ।।२।।

धनी पठाया जग में आया, लाल अमोला लाया।
चतुर २ मिल खरचा खाया, मूरख मूल गंवाया।।३।।
समझ साह से सन्मुख होकर, कर ले साहूकारा।
लेखे के बर मिलै न कोई, पल्ला पकड़न हारा।।४।।
जब जीव होता चोरासी में, फिरता था हैराना।
चेत सके तो चेत पियारे, नातर वहीं ठिकाना।।५।।
तन मन अपना सरवर सौंपो, सुरत साहिब से लाओ।
नितानन्द भज स्वामी गुमानी, भवसागर तिर जाओ।।६।।

## 卐 शब्द १४७ 卐

अहो बिहारी सुनियो बिहारी सुनियो अर्ज हमारी।।टेक।।
दीन दयाल दर्स की प्यासी, हम हैं दास तुम्हारी।।१।।
औगुण चूक माफ मेरी कीजै, राखो चरण मंझारी।।२।।
साहेब सुन्दर कंत हमारे, लागी शरण हम सारी।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, मिल गयो मित्र मुरारी।।४।।

## 卐 शब्द १४८ 卐

चेरी तुम्हारी साहेब अपनी कर क्यों बिसारी।।टेक।।
तुमरो ही ज्ञान ध्यान पुनि सुमरन, मोहिं भरोसा भारी।।१।।

जल बिन मीन कहो कैसे जीवै, चात्रक स्वाति अहारी ।। २ ।।
नितानन्द महबूब गुमानी, तुमसे अर्ज गुजारी ।। ३ ।।

## 卐 शब्द १४९ 卐

परसे ब्रह्म अपारा अवगत दरसे ।।टेक।।
जहां चरण कमल की छाया, तहां मिले निरंजन राया ।। १ ।।
जहां सदा एक रस काया, तहां अटक सकै नहिं माया ।। २ ।।
जहां रोम २ भई माला, तहां लगै न काल अकाला ।। ३ ।।
जहां न जगत जंजाला, तहां खुले महल के ताला ।। ४ ।।
जहां परम पुरुष का मेला, तहां अरध उरध में भेला ।। ५ ।।
जहां नहीं त्रिगुण की गैला, तहां गगन मंडल की सैला ।। ६ ।।
जहां कोतुक होत अपारा, तहां झरै अमी की धारा ।। ७ ।।
जहां झिलमिल जोत उजारा, तहां बाजै अनहद तारा ।। ८ ।।
जहां अधिक राम रस पीवै, तहां अमर जुगों जुग जीवै ।। ९ ।।
जहां २ जीव ब्रह्म मिल जावै, तहां अटल अभय पद पावै ।।१०।।
जहां उपजै निज सुख भारी, तहां चढ़ गये अगम अटारी ।।११।।
जहां नूर तेज गुलजारी, तहां लग रही लगन हमारी ।।१२।।
जहां भव भंजन भगवन्ता, तहां बाजत तार अनन्ता ।।१३।।
जहां मतवाले महमन्ता, तहां बारह मास बसंता ।।१४।।
जहां अगम अजप्पा बानी, तहां दरिया लहर समानी ।।१५।।

जहां चार मुक्त नित चेरी, तहां अष्ट सिद्ध नौ निद्ध नेरी ।।१६।।
जहां परम गुरु गलताना, तहां सभ ही संत सुजाना ।।१७।।
जहां तेज पुंज का धामा, तहां गुरु गुमानी रामा ।।१८।।
जहां नितानन्द नित चेरा, रहै चरण कमल में डेरा ।।१९।।

## 卐 शब्द १५० 卐

हुआ दिल राम से राजी,
माल मुल्क और दुनियां दोलत, सभ ही झूठी बाजी ।।टेक।।
कहा भयो जो महल चिनायो, बांधे तुरकी ताजी ।।१।।
नंगे पावों जाते देखो, बादशाह और पाजी ।।२।।
अंत सम्मय सभ खाक मिलैगे, क्या पंडित क्या काजी ।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, गुरु गरीब निवाजी ।।४।।

## 卐 शब्द १५१ 卐

राम नाम धन पाया अब हम,
सभ दुख हरन करन जन निर्मल, सतगुरु कह समझाया ।।टेक।।
जन्म २ के गये दलिद्दर, सहजै साह कहाया।
हीरा हेत लाल लौ लागी, दिन दिन होत सवाया ।।१।।

काग कुसंगत तजी तिल तिल कर, साध संग मन भाया।
मोती चुगै मगन होय हंसा, सुख सागर बिच छाया।।२।।
अंतर महल उलट कर देख्या, चित चेतन्य समाया।
रोम रोम रटना घट लागी, अदूभुत अमृत खाया।।३।।
स्वासा रटै सुरत बिच रटना, रटै सर्व ही काया।
नितानन्द महबूब गुमानी, साचा शब्द बताया।।४।।

## 卐 शब्द १५२ 卐

यों मोहन प्राण हमारो री, मोरै हिबरै रह्यो समाय।।टेक।।
मोर मुकट धारे रहै जी, कुंडल झलकै कान।
सुन्दर नन्द कुमार सों जी, लग्यो हमारो ध्यान।।१।।
गउवन ग्वाल कहावैं जी, चितवत बांकै नैन।
सुध बुध सभ हर ले गयो जी, मोको कल न पड़े दिन रैन।।२।।
नाटक सो कुछ कर गयो जी, अलबेलो गोपाल।
तन मन की सुध बीसरी जी, मोहिं लगे जग जंजाल।।३।।
भवन गमन भावै नहीं जी, बंधी बरत आकास।
पड़ गई फन्दे प्रेम के जी, मोही रहै दर्श की प्यास।।४।।
पांच सखी बैरन भई जी, बीच बिरह का जाल।
नितानन्द की बीनती जी, सुनो गुमानी लाल।।५।।

## 卐 शब्द १५३ 卐

मन मोहन प्यारो लागै जी, जाकी शोभा वार न पार ।।टेक।।
पीतम्बर पट सोहनो जी, दामन दमक दयाल।
झीनै झिलमिल कंत को जी, मैं देखत भई निहाल ।।१।।
बांकी चितवन लाल की जी, मुख पर झलकै नूर।
अवनासी वर तेज का जी, सभ घट में भरपूर ।।२।।
रंचक आभा देखकर जी, कोट चन्द छिप जाहिं।
सूरज कोट प्रकाश है जी, रोम रोम के माहिं ।।३।।
लाल गुमानी मिल गयो जी, सुन्दर सजन सुजान।
नितानन्द आनन्द से जी, तुम सदा रहो गलतान ।।४।।

## 卐 शब्द १५४ 卐

पिया तुमरे दर्शन की प्यासी हो, पैंडा ऊभी २ पंथ निहारां,
कबहू मिलौ अबनासी हो ।।टेक।।
बिरह बिछोह सतावन हमको, आप भये सुखबासी हो।
हम जाने हरि ओड़ निभावै, देखे बड़े बिश्वासी हो ।।१।।
शब्द संदेश सुनाय कह्यो है, ना जानू कब आसी हो।
मन मोहन की मूरत दरसै, तब ही सभ दुख जासी हो ।।२।।
अजहुं समझ घर आओ पिया रे, तुम ठाकुर हम दासी हो।
नितानन्द महबूब गुमानी, पड़ी प्रेम की फांसी हो ।।३।।

## 卐 राग सौरठा शब्द १५५ 卐

आओ जी सुखदीन सुजन घर, आओ जी सुख देना।
म्हें तो थारी दासी प्रेम पियासी, व्याकुल हैं मेरे नैना ।।टेक।।
अंतरजामी साचे स्वामी, तुम बिन छिन नहीं चैना।
चित में चाव चरण परशन को, सुनो हमारे वैना।।१।।
तुही तुही तू तो घट घट में, मैं नहीं मैं नहीं मैं ना।
सुन्दर बदन सजन सांवरियो, हमरे दूजो हैना।।२।।
दुख भंजन मन रंजन साहेब, साधन की सुध लेना।
नितानन्द महबूब गुमानी, हुई चरण की रैना।।३।।

## 卐 बंगला शब्द १५६ 卐

बंगला अजब दिया करतार,
जिस में झलकै जोत अपार ।।टेक।।
करम गाल कर कंचन गारा, कदे न लागै काई।
पुन पारस से चिने चनावट, मेहर छावनी छाई।।१।।
हीरा हेत सुबुद्धि जवाहर, लौ के लाल लगाए।
मन मनसा मोतिन की झालर, रतन जड़ाव जड़ाए।।२।।
जलें असंख्य तेज के दीपक, रोम २ रली कीन्हा।
चित में चन्द करोड़ों चमकैं, दरसै दिल दुरबीना।।३।।

महाराज नितानन्द जी का वर्तमान मकान साहेब
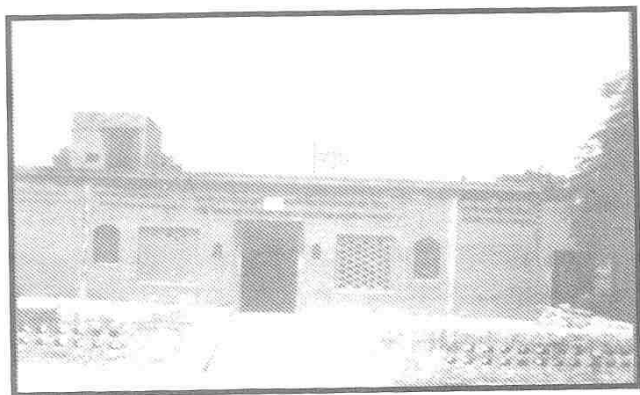
त्रिगुण तिमर की द्वन्द न व्यापै, निर्गुण नूर नजारा।
आठों पहर अखंड रोशनी, धन्य बनावन हारा।।४।।
स्वामी गुमानी सतगुरु मिल कर, जो जो चरणों लागे।
नितानन्द तन बंगले भीतर, भाग तिन्हों के जागे।।५।।

## 卐 शब्द १५७ 卐

बगला अजब बनाया खूब, अवगत पार ब्रह्म महबूब ।।टेक।।
गैब माहिं से गुप्त प्रेम धर, फेर प्रकट कर लाया।
नाद की ईट बिन्द की गारा, ऐसा चरित्र दिखाया।।१।।
भान्ति २ के झुके झरोखे, शोभा भली बनाई।
चौदह लोक द्वार पर चमकैं, चेतन करी चितराई।।२।।
जाग्रत स्वप्न सुसोपति तुरिया, डोढ़ी चार लगाई।
पिंजर पांच पचीसों खिड़की, सुख मन सेज बिछाई।।३।।
सीढी शब्द मुक्त दरवाजा, तीन देव दरवाना।
भीतर निर्गुण नूर बिराजे, निराकार निरबाणा।।४।।
परा पंसती मध्य बैखरी, छुटैं चार फब्बारा।
शब्द कुलावे अमृत उतरे, कौतुक करे पियारा।।५।।
बंगले अन्दर साहेब सुन्दर, बंसी सुघर बजावै।
आठों पहर अखंड एक रस, सोहंग २ गावै।।६।।

इस बंगले में मिले गुमानी, अगम सैन समझावै।
नितानन्द सो सोहंग होय कर, जुग २ रहै समावै।।७।।

## 卐 शब्द १५८ 卐

मतवाला मतवाला रे, रहो अलमस्त गश्त
दिल भीतर सतगुरु दया दयाला रे।।टेक।।
अजपा जाप जपै निशि वासर, शब्द सुरत की माला रे।
जोग जुगत से कुंजी लागी, खुल गये अनहद ताला रे।।१।।
चेतन चित्त चढा चोकी पर, नाम नगर रखवाला रे।
जन्म जंजीर टूट गई पल में, निर्भय पुरुष संभाला रे।।२।।
सुन्य शहर बिच सुख से रहना, देखा अगम उजाला रे।
मकर तार पर महल हमारा, लगे न काल अकाला रे।।३।।
भंवर गुफा पर भंवर बिलंब्या, छूटी भ्रम की चाला रे।
उनमन चढा मगन रस पीवै, केशो कमल सुखाला रे।।४।।
अवगत अटल अलख वर पाया, जग से भया निराला रे।
नितानन्द महबूब गुमानी, नजरां नजर निहाला रे।।५।।

## 卐 शब्द १५९ 卐

नाम के नाम से नेह लाग्या, जुगत की जुगत में जीव जाग्या।।टेक।।
ध्यान का ध्यान धर धनी सूझा, बूझ की बूझ में ब्रह्म बूझा।।१।।

गगन के गगन में हुआ डेरा, चरण के चरण का सदा चेरा।।।२।।
बदन के बदन बेहद बिचारा, दृष्टि की दृष्टि देखा नजारा।।।३।।
मन्त्र के मन्त्र उनमन्त्र मेला, सुन्य की सुन्य का शिखर सेला।।४।।
रैन की रैन में चैन पाया, दिवस का दिवस घट प्रगट आया।।५।।
सूर का सूर दर्शन दिखावै, चन्द्र का चन्द्र अमृत पिलावै।।६।।
रतन के रतन को रतन पावै, नूर के नूर नूरी समावै।।७।।
लाल के लाल साहेब गुमानी, कहें नितानन्द निर्गुण कहानी।।८।।

## 卐 शब्द १६० 卐

मेरे दिल से छुटे नांहि साहेब तेरे दर्शन देखन का चित
चाव है, कोई लगी लगन मांहि।।टेक।।
पल भर के दीदार पर मैं, वारूं तन मन जीव।
रोम २ रम रह्या, वही निरंजन पीव।।१।।
सभ पाकों सिर पाक है, महबूबां महबूब।
सब लालन का लाल है, जी खुशी खूबियां खूब।।२।।
सुख के सागर स्वामियां जी, मुख देखत दुख दूर।
शोभा एकै रोम की जी, कई कोट चन्द्र सूर।।३।।
प्रीतम प्यारे परम गुरु जी, संतन में सरनाम।
ऐसे निर्गुण नाथ के, हम खाने जाद गुलाम।।४।।

अद्‌भुत आभा बदन की जी, बोलै अमृत बैन।
तेज पुंज के पीव को जी, जब देखूं जब चैन।।५।।
चतुर सुधर सुन्दर खरे जी, गुरु गुमानी राम।
नितानन्द को दीजियो जी, चरणों बीच मुकाम।।६।।

## 卐 शब्द १६१ 卐

राम मिलैगे आय कब, चरण कमल चित अटक्यो ,
है और बात न सुहाय ।।टेक।।
विरह की विथा सहै कोई सजनी, बिछुरन बुरी बुलाय।
दर्शन मिलैं तो जीवन हो, नातर यह जीव जाय।।१।।
लाल बिना जंजाल जगत सभ, किस विधि गये भुलाय।
सुरत सहेली फिरत अकेली, तन मन रही लगाय।।२।।
भवन हमारे आओ दया कर, सुख की रली मनाय।
अन्तर गत में दर्शन दिजै, अन्तर जामी राय।।३।।
चढ चोबारै पंथ निहारे, पीव मिलन का चाय।
नितानन्द महबुब गुमानी, कौन देश रहे छायं।।४।।

## 卐 शब्द १६२ 卐

भली निबाही रे पिया तेरे कारण फिरूं दिवानी।
अब तो घर आओ हो आओ ।।टेक।।

मैं तो दरबार आई, प्रभू मेरी करो सहाई।
फिर न मिलन को, ऐसो दाव दाव दाव।।१।।
बीती जात रैन सारी, लग रही चिन्ता भारी।
तुझ दर्शन को, चाव चाव चाव।।२।।
नितानन्द जान जानी, मेरा महबूब गुमानी।
अमरपुरी के तुम, राव राव राव।।३।।

## 卐 शब्द १६३ 卐

सोई जन मस्ताना मस्ताना, जिन पाया पद निर्वाना।।टेक।।
मगन होय चढ़ गये गगन में, अधर धार धर ध्याना।
लगन लाय बिसराय विश्व को, अनहद शब्द पिछाना।।१।।
मान सरोवर मथ्या जुगत कर, मन उन मन ठहराना।
मोती मुक्त उझल अनुभव की, करै हंस अस्नाना।।२।।
लक्ष कला ले चन्द्र प्रकाशा, सहस्त्र कला ले भाना।
जगमग लगी महल के भीतर, देखै दरश दिवाना।।३।।
परम सुन्य में परचा हुआ, चेतन चरण समाना।
निर्गुण सैज तेज की नगरी, बहु अवगत अस्थाना।।४।।
बर्षै पदम दामनी दमकैं, हर हीरों की खाना।
गम से दूर अगम से आगे, अद्भुत अजब ठिकाना।।५।।

खिल गया कमल नवल वर, पाया नितप्रति अमृत पाना ।
अमर कन्द भवबन्ध न व्यापै, जिस घट भरम भगाना ।।६ ।।
पांच पचीस पुरी तज भाजी, जीत लिया मैदाना ।
नितानन्द महबूब गुमानी, अब निश्चय कर जाना ।।७ ।।

## 卐 शब्द १६४ 卐

महबूबां हो दर्शन चलना,
तुझ देखौ बिन दिल कूं कलना वे ।।टेक।।
तोन्दा मिलन मुझे मीठा लागै वे, मेरी दया कर दिलवर मिलना ।
दे दीदार सुन यार हमारे वे, दरवाजे से कदम न टलना ।।१ ।।
तन मन धन सभ तुझ पर वारूंवे, करदे शरद
इश्क दा जलना ।
नितानन्द दिल पाक गुमानी वे,
तेरे चरणकी रज में रलना ।।२ ।।

## 卐 शब्द १६५ 卐

मेरी धुन राम से लागी,
सभ संसार सुप्न का सौदा, दिल की दुर्मत भागी ।।टेक।।
जन्म मरन का नहीं अंदेशा, सुरत सोवती जागी ।
स्वर्ग नर्क बैकुण्ठ और दोज़ख, एकै बर सभ त्यागी ।।१ ।।

तन से तर्क फिरक फारिग हो, अवगत में अनुरागी।
मगन होय मन चढ़ा गगन में, बंब अनाहद बाजी ।।२।।
सजन सुजान प्रान से प्यारे, नित प्रति खेलत फागी।
नितानन्द महबूब गुमानी, किये हजूरी दागी ।।३।।

## 卐 शब्द १६६ 卐

मतवाला गुरु कीन्हा साधो, मतवाला गुरु कीन्हा।
प्रेम पियाला अगम उजाला, पीवें संत प्रबीना।।टेक।।
लोक लाज से काज न कोई, पीव को सरवस दीन्हा।
उलट झरोखे झांखी लागी, पुरुष अनूपम चीन्हा ।।१।।
हद्द पार बेहद तमाशा, नौतम नित्त नवीना।
दिल दरियाव देख दुख भाजे, भंवर कमल रस भीना ।।२।।
धरन धरी आकाश सिखर पर, मकर तार मग मीना।
अमर कंद अमरापुर पहुंचे, जहां नहीं गुण तीना ।।३।।
नैन के नैन खौल कर निरखे, महल झलक्कै झीना।
नितानन्द महबूब गुमानी, हुए ब्रह्म लौ लीना ।।४।।

## 卐 शब्द १६७ 卐

अमल एक हर नाम का, दिल भर २ पीजै।
अमल मैल बद फैल में, चित कदे न दीजै।।टेक।।

हुक्का हिर्स हराम है, भंगी चित भंगा।
ऐब अफीम न लाय रे, चोला खुश रंगा।।१।।
पोशत पक्का पाप है, बिन मिले खराबी।
दारू दिल नापाक है, कुफरान कबाबी।।२।।
सुलफा सिर खाली करे, गांजा गुमराही।
चरस चेतना कोहड़े, सब अकल गमाई।।३।।
कक्कड़ काया को कसे, बेजा बेमारी।
माजूम मुफर्रह खाय कर, हर भक्ति बिसारी।।४।।
माया रस माजूम का, गुलकन्द अकूती।
पिया न प्याला प्रेम का, झूठी अवधूती।।५।।
पान तमाकू मुख भरे, और भोग सुपारी।
इल्लत अमल न लायरे, बीतैगी भारी।।६।।
हर दम हक्क हुलास है, गुरु कहा गुमानी।
नितानन्द जब पाइये, दीदार निशानी।।७।।

## 卐 शब्द १६८ 卐

धन २ गुरु अपरम्पारा हो,
सुख सागर गुन ज्ञान उजागर, ब्रह्म अमल मतवारा हो।।टेक।।
जन्म मरन की बंध निवारी, सहज किया छुटकारा हो।
शब्द बिहंगम चाल चला कर, राखे अधर अधारा हो।।१।।

बिगोवा में चरण जमात के अन्तर्गत सतसंग समय
श्री स्वामी नितानन्द जी का सितार बजाना,
तथा प्रथम शब्द कहना

ज्ञान भान होय घट में प्रगटे, अंतर गत उजियारा हो।
भ्रम निसा से लिये जगाई, अदभूत खेल निहारा हो।।२।।
चला चली से अवचल कीये, आतम अकल बिचारा हो।
अभय धाम निह काम अमरपुर, खुल्हे मुक्त भंडारा हो।।३।।
मारग अगम सुगम कर दीन्हा, मिले दरश दरबारा हो।
मकर तार मन हरन महल में, निर्गुण अलख अपारा हो।।४।।
तिरगुण पार चमकार तेज का, जहां सुहंगम तारा हो।
नितानन्द महबूब गुमानी, सुन्दर सजन हमारा हो।।५।।

## 卐 शब्द १६९ 卐

नितानन्द छिक रहे नूर में, मिल महबूब गुमानी।
दर्शन देख परम सुख पाए, चढ़ गये गह गुन ध्यानी।।टेक।।
सीस चढ़ा कर प्याला लिया, दिया आप दिलजानी।
मतवाले कर लिये महल में, अखियाँ रूप लुभानी।।१।।
जिन्द हमारी पिव पर वारी, भई दरश दीवानी।
परले पार प्रीतम का डेरा, पहुंचें कोई २ प्रानी।।२।।
पाए सजन हुई खुद मस्ती, दुनियां दौलत भानी।
नितानन्द मस्तान रब्ब में, कही अगम की बानी।।३।।

## 卐 शब्द १७० 卐

मतवारो साहिबो लग गई लगन।
मगन मन मांही, बिसरत नहिं बिसारो रे।।टेक।।
पीव विछोह सह्यो नाहिं जावै, चरण कमल आधारो रे।।१।।
वर्षैं पदम दामिनी दमकैं, अनहद को झनकारो रे।।२।।
नितानन्द महबूब गुमानी, सुन्दर सजन हमारो रे।।३।।

## 卐 शब्द १७१ 卐

तेरे घट में झलका जोर, बाहर क्या देखै।
अंतर गत में अंतर जामी, तू हो रहा कठोर।।टेक।।
पांचां ऊपर बंध लगाओ, और पचीसों मोड़।
मन की बाग सुरत घर राखो, प्रीत जगत से तोड़।।१।।
देह नगर का अधभुत मेला, सौदा कर रहे चोर।
आतम राम अमर धन पावै, मगन रहे निस भोर।।२।।
एक पलक के फेर में रे, रहे निरंजन पोर।
उलट अपूठा तज जग झूठा, क्या मचावै शोर।।३।।
प्रेम गली बिच साहेब पावे, नहीं मिले नर ठोर।
पहुंचे साध अगाध अगम घर, बंधे इश्क की डोर।।४।।
कोटिक चन्द्र अमी जहां बरसैं, प्रगटै भान किरोड़।
नितानन्द महबूब गुमानी, जहां अनहद घन घोर।।५।।

## 卐 शब्द १७२ 卐

निरखत गोपाल भई, अखियां मस्तानी।
और कोई लख ना सकै, वा से नहीं छानी।।टेक।।
गगन गरक देह तरक, सुध बुध बिसरानी।
जगत जाल स्वपन ख्याल, तुही है निदानी।।१।।
कछु वस्तु चित ना चढ़ै, एके मन मानी।
लोक लाज गई भाज, दरस की दिवानी।।२।।
कोट सूरज चन्द्र जोत, चरणन लिपटानी।
नित प्रकाश अगम उजास, तहां लौ लगानी।।३।।
अटक गई लटक देख, मोल बिन बिकानी।
मकर तार अधर धार, जानी जिन जानी।।४।।
मूरत महबूब खूब, गोविन्द गुमानी।
नितानन्द सुख सिंध की, कुछ अकथ कहानी।।५।।

## 卐 शब्द १७३ 卐

मेरा साहेब कब घर आवै
दर्शन देख सभी दुख भाजैं, सुख की लहर दिखावे।।टेक।।
काया नगर में करे रोशनी, दिल दा देश बसावे।।१।।
भर २ नैन चैन से निरखूं, अंग में अंग मिलावे।।२।।
नितानन्द महबूब गुमानी, वह शोभा मन भावे।।३।।

## 卐 शब्द १७४ 卐

कर गुजरान गरीबी
कोई दिन, क्या जग में नित रहना है ।।टेक।।
मस्त फकीरां हाल अमीरां, बुरी भली सभ सहना है ।।१ ।।
तत्व विचार समझ पग धारो, विषय लहर नहीं बहना है ।।२ ।।
माल मुलक सपने की सम्पदा, राम रतन निज गहना है ।।३ ।।
नितानन्द महबूब गुमानी, चरण कमल सुख लहना है ।।४ ।।

## 卐 शब्द १७५ 卐

सुरत मेरी साहेब से राजी, पूरे गुरु मेहर से
जी अनहद नौबत बाजी ।।टेक।।
नौ लख घाटी पार दरीबा, चल कर करनी सैला ।
भवन चतुर दस सेती ऊपर, खेलैं निर्गुण छैला ।।१ ।।
गम से दूर अगम से आगे, सहज चम्मका तेज ।
मकर तार मीनी का मार्ग, निरख सजन की सेज ।।२ ।।
मेरूदंड की शिखर उलंघें, दरसे मुक्ति द्वार ।
शब्द बिचारा घट उजियारा, जगमग जोत अपार ।।३ ।।
पांच पचीसों तीन तै न्यारा, एकै अवगत नूर ।
पट को उलट सुलट कर देखा, जहां तहां भरपूर ।।४ ।।

हद पार बेहद तमाशा, बिरला जन कोई पावें।
नितानन्द महबूब गुमानी, पल में पद परसावै।।५।।

## 卐 शब्द १७६ 卐

भज मन सुख सागर अवनासी, हर २ सकल
निरंतर घट घट बासी ।।टेक।।
रमता राम जहां चित लाग्या, पूरब पुन्य सोवता जाग्या।
चहूं दिशा मंगल सुख होय, यह पद पावै बिरला कोय।।१।।
भांति २ के ब्यञ्जन पान, भोगत भक्त रूप भगवान।
निर्मल बानी बुद्ध प्रकाश, सुरज चन्द्र असंख उजास।।२।।
लक्ष्मी रिद्ध सिद्ध भंडारा, हर हर जन जहां जय २ कारा।
विघ्न कलेश न व्यापे जहां, परमानन्द परम पद तहां।।३।।
पूरन पद पंकज आधार, जिनके नाहीं आन विचार।
भौसागर गोपद विस्तार, साध संग उतरैं पार।।४।।
धन २ गुरु गुमानी दास, प्रेम भक्त हर चरण निवास।
नितानन्द आनन्द गुन गाय, अन्तर गत रहिये लौ लाय।।५।।

## 卐 शब्द १७७ 卐

दिल लगे तो दिल लगाइये, अपने सज्जन पर
बल २ जाइये ।।टेक।।

बेदिल को दिल कभी न दिजवो, दिलवर को दिल दे सुख पाइये ।।१।।
देदिलदार दरस बिच डेरावो, तनमनधन सब चरण चढ़ाईये ।।२।।
दमके दिद दरुने अन्दरवो, काबे काशी फिर क्यों जाइये ।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, सीस दिया तब क्या पच्छताइये ।।४।।

## 卐 शब्द १७८ 卐

नितानन्द को दर्शन दिजो, दर्शन का कंगाल है ।।टेक।।
यह दुनिया साडे दिल नहीं भान्धी, झुठा खबाब ख्याल है ।।१।।
इश्क तोक साडे गल बिच पड़या, विरह बड़ा जंजाल है ।।२।।
साडी और निहार नजर भरि, लाल हूं सिर लाल है ।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, नजरां नजर निहाल है ।

## 卐 शब्द १७९ 卐

क्या कहे सैं जानयेगा
दिल बस गया प्रीतम प्यारा जी ।।टेक।।
वै नहीं कहते और किसी से, जिनके इश्क आहारजी ।।१।।
जब दिल म्हरम दिल बिच पाइये, पड़ा रहै जग सारा जी ।।२।।
बाहर कह २ क्या दिखलावे, अन्दर अजब नजारा जी ।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, सहायक एक हमारा जी ।।४।।

## 卐 शब्द १८० 卐

क्या जगत का ध्यान, अपना राम सुमर ले जी ।।टेक।।
सब दुनिया धोखे की टाटी, मत कर गरव गुमान ।।१।।
दोलत माल ख्याल क्या लावन्दा, ता पर खलक लुभान ।।२।।
तन पिंजरे को छोड़ चलेगा, पल में पन्छी प्राण ।।३।।
आगे बाट विषम है बावरे, पूच्छो संत सुजान ।।४।।
नितानन्द महबूब गुमानी, परसो पद निर्वाण ।।५।।

## 卐 शब्द १८१ 卐

गुजर गई गुजरान फकिरा, गुजर गई गुजरान ।।टेक।।
कबहु बाशी टुकड़े में रह जाना, कबहु हलवा लुण ।।१।।
कबहु खासे मलमल पहने, कबहु गजी निदान ।।२।।
कबहु बासा लुखा बरखे, कबहु सर्व दान ।।३।।
नितानन्द महबूब गुमानी, साहिब में गलतान ।।४।।

इति श्री स्वामी नितानन्द जी बिरचित
शब्द वाणी सम्पूर्णम् शुभम्।
सत्य सिद्धान्त प्रकाश द्वितीय भाग समाप्तम्।

# 卐 ग्रन्थ संग्रह कर्त्ता का निवेदन 卐

दोहा- चैत्र शुक्ल तैरस तिथी, भौमवार पहचान।
साल पचासी में छप्यो, गुरु ग्रन्थ सुख खान॥
ग्राम माजरा पोष्ट घर, रोहतक जिला महान।
प्रज्ञा चक्षु नाम मम, भोलादास बखान॥
सेठ रामरिचपाल पुनत, युगल पुत्र गुणाधाम।
जयनारायण गोरधन, ख्याली काशीराम॥
सुमेर सिंह रोहतक शहर, देशराम चन्द्राम।
भये सहायक सब्र ए, छप्यो ग्रन्थ अभिरात॥
धन्यवाद इन सर्व को, कीजिये पाठक वृन्द।
जिनकी कृपा कटाक्ष से, मिल्यो ग्रन्थ सुख कंद॥
गुरु ग्रन्थ संग्रह कियो, पवायो कर प्रेम।
पढ़िये पाठक पाठिका, भूल चूक कर छेम॥
इसके छापन का भी, साहस करो न कोय।
बिक्री का लालच किये, अति उपद्रव होय॥
संग्रह कर्त्ता ने स्वयं, रक्खा सुरचत आप।
भोला दास आज्ञा बिना, सके न कोई छाप॥
परम गुरु कीन्हीं दया, कृपा गुमानी राम।
श्री स्वामी नितानन्द जी, पूर्ण कियो मम काम॥

निम्नलिखित छन्द के द्वारा अपने भेष की प्रणाली पाठकों की दृष्टिगोचर कराता हूं।

छन्द हरिगीतिका

स्वामी गुमानी भये पहले, नितानन्द स्वामी दूसरे।
ध्यान तीजे विचित्र चौथे, बिसन दास पंचम पग धरे॥
छठे गोकुलदास, दानीदास सप्तम गुरु मेरे।
अष्टम लखो मम नाम भोला दास सज्जन उचरे॥

दोहा- मोहको कुछ चाहिये नहीं, बिनबत भोलादास।
आदि अंत पढ़ देखिये, सत्य सिद्धान्त प्रकास॥